आखों
में
आकाश

आखों में आकाश

इस पुस्तक का प्रकाशन
महिला विकास निगम-बिहार, संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष
एवं दैनिक जागरण के सहयोग से किया गया है।
हम इनके आभारी है।

संपादक मण्डल

विष्णु त्रिपाठी

कुमार दिनेश

आनन्द माधव

मुख्य आवारण एवं पृष्ठ सज्जा

पूजा सिंह

मृदुल वैश्य

अस्वीकरण

पुस्तक में प्रकाशित आलेख लेखिकाओं के व्यक्तिगत विचार हैं। आवश्यक नहीं है कि इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में समाहित विचारों से जागरण पहल, महिला विकास निगम, बिहार एवं संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष पूरी तरह सहमत हो।

शुभाकांक्षा

महेन्द्र मोहन गुप्त

नारी सशक्तिकरण की जिन संकल्पनाओं को लेकर जागरण पहल ने सपनों को चली छूने कार्यक्रम का आयोजन किया, वह निश्चित तौर पर जागरण के वृहत्तर सरोकारों का हिस्सा है। किशोरियों के बीच जाकर उनमें नेतृत्व क्षमता की पड़ताल और उनका विकास एक दुरूह कार्य है। मैं प्रत्यक्ष रूप से इस कार्यक्रम का भागीदार नहीं बन सका, लेकिन यूएनएफपीए और बिहार राज्य महिला विकास निगम के सहयोग से संचालित इस अभियान के बारे में पढ़ता-सुनता रहा हूं। श्री पूर्णचन्द्र गुप्ता स्मारक ट्रस्ट के एक अंग के रूप में जागरण पहल ने इससे पूर्व भी लोकहित के कई बड़े काम किये हैं। मुझे इस बात का गर्व है कि अखबारी समूह के रूप में दैनिक जागरण ने 1942 में अपनी स्थापना के समय अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जो सपना देखा था, वह शनैः शनैः आकार पा रहा है। छात्राओं द्वारा लिखे गए आलेखों का यह संकलन, जो प्रकाशित किया जा रहा है, आशा है कि इससे समाज को लाभ मिलेगा। पहल टीम को साधुवाद!

महेन्द्र मोहन गुप्त, सदस्य, राज्यसभा
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक,
प्रबंध सम्पादक- जागरण प्रकाशन लि.
एवं महासचिव, श्री पूर्णचन्द्र गुप्ता स्मारक ट्रस्ट

सपनों का एक नया संसार

संजय गुप्त

भारत जैसे देश में आम लोगों का व्यक्तित्व जिन अनेक कारकों से प्रभावित होता है उनमें सामाजिक परंपराएं, रूढ़ियां और व्यवहार भी हैं। लड़कियों के मामले में तो ये कारण कुछ ज्यादा ही प्रभावी हो जाते हैं। नारी स्वतंत्रता के नारों और लड़कियों को लड़कों जैसा समझने की तमाम नसीहतों के बावजूद यथार्थ यह है कि पुरुष वर्चस्व का सामना करना अभी भी आधी आबादी की नियति बना हुआ है। नेक और भली स्त्री अथवा गुणी किशोरी का मतलब यह मान लिया जाता है कि उसे घर-परिवार और समाज की मान्यताओं की परवाह अवश्य करनी चाहिए। तमाम बदलाव के बावजूद लड़कियों में किशोरावस्था से ही पारिवारिक एवं सामाजिक मान्यताओं के हिसाब से चलने की अपेक्षाएं थोप दी जाती हैं। ये अपेक्षाएं अक्सर हिदायतों और कभी-कभी पाबंदियों का रूप ले लेती हैं। लड़कियों की परवरिश के संदर्भ में इस पृष्ठभूमि से परिचित होने के नाते दैनिक जागरण ने बिहार के छह जिलों में महिला सशक्तिकरण से जुड़े मुद्दों को उभारने के लिए कॉलेज की लड़कियों के बीच 'सपनों को चली छूने' कार्यक्रम का आयोजन किया।

दैनिक जागरण का उद्देश्य समाज के प्रबुद्ध वर्ग, समाजसेवियों और पत्रकारों की सहायता से उन छात्राओं की पहचान करना था, जो रुढ़ियों को तोड़ने और परिवर्तनकारी नेतृत्व की क्षमता रखती हैं। मैं लड़की हूं-मेरा अनुभव विषय पर लेखन प्रतियोगिता के क्रम में बिहार की बेटियों ने अपनी भावनाओं को जिस तरह व्यक्त किया, वह संवेदनाओं को कुरेदने वाला रहा। इस पुस्तक के पन्नों से गुजरते हुए कोई भी इन बेटियों की अनुभूतियों से मर्माहत हुए बगैर नहीं रह सकता, लेकिन इसके साथ ही हर किसी को यह जानकर सुखद आश्चर्य भी होगा कि उनके सपने बेहतर भविष्य की बुनियाद हैं। उनके सपने कुछ उलझे हुए भले ही नजर आते हों, लेकिन वे यह भी आभास कराते हैं कि उनमें उन्हें पूरा करने की ललक भी है और विश्वास भी। कहते हैं कि चेतन सपने इंसान की सुप्त और जाग्रत अवस्थाओं के बीच एक पुल की तरह काम करते हैं। हमारी बेटियों के सपने भी ऐसी ही प्रतीति कराते हैं। उनके सपनों में उनके अरमान तो हैं ही, उनकी अपनी दुनिया भी है और मन की गुत्थियां भी। उनके सपनों के इसी संसार को हमने गढ़ने-संजोने का प्रयास किया है।

यह संकलन लड़कियों के जीवन और उनके उन सपनों को जानने-समझने की कोशिश है, जो अनुभवों को विश्लेषित कर एक नए भविष्य का एहसास कराते हैं। यह जानना सुखद है कि बिहार की बेटियां हर क्षेत्र में लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमें विश्वास है कि बिहार की बेटियों ने अपने रचनाकर्म के जरिये जिन सपनों को छूने का संकल्प व्यक्त किया है, वे आप सभी की संवेदनाओं को स्पर्श करेंगे।

संजय गुप्त,
संपादक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, दैनिक जागरण

संदेश

डा. एन. विजयलक्ष्मी

'सपनों को चली छूने' महिला विकास निगम, UNFPA और जागरण पहल का एक संयुक्त प्रयास है और राज्य के विकास की पहल में किशोरियों के कौशल व प्रतिभा की पहचान और प्रोत्साहन का लक्ष्य प्राप्त करने की अपेक्षा रखता है। यह कार्यक्रम राज्य के चार प्रमण्डलों पटना, मगध, तिरहुत और भागलपुर के छह जिलों में 20 महाविद्यालयों में चलाया गया और स्थानीय स्तर की प्रतिभा को प्रोत्साहित कर राज्य स्तर पर सम्मानित करने की महत्वपूर्ण कोशिश की गई। उत्कृष्ट मानसिक विकास, आत्मविश्वास और कला कौशल के विभिन्न आयामों पर संजीदगी से 50,000 किशोरियों के बीच एक गौरवमयी अतीत और चुनौतीपूर्ण वर्तमान की तस्वीर खींचने की कोशिश इस दौरान की गयी। साथ ही उन्हें एक ऐसा मंच उपलब्ध करवाने का प्रयास किया गया जो लम्बे समय तक उनके स्वविवेक और स्वनिर्णय की क्षमता का सार्थक विकास करे। निश्चित तौर पर इस सफर में महाविद्यालयों की शिक्षिकाए ही सहभागी रहीं हैं। कुल मिलाकर एक ऐसा वातावरण बनाने की कोशिश की गई कि राज्य के छोटे से कस्बे से लेकर राजधानी पटना तक की किशोरियां एक विकासशील बिहार को आगे बढ़ाने के प्रति अपने स्थान और अपनी भागीदारी को सुनिश्चित कर सकें।

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि 'सपनों को चली छूने' कार्यक्रम से संबंधित सफलता की कहानियों का संकलन प्रकाशित किया जा रहा है। मैं आशा करती हूँ कि ये कहानियाँ न सिर्फ बिहार की किशोरियों बल्कि भारत की तमाम किशोरियों के लिए प्रेरणा स्रोत्र साबित होंगी।

सधन्यवाद!

डा. एन. विजयलक्ष्मी,
प्रबंध निदेशक, महिला विकास निगम,
समाज कल्याण विभाग, बिहार सरकार

किशनगंज से पोस्टकार्ड

इना सिंह

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) ने विशेष रूप से महिलाओं और लड़कियों के लिंग और अधिकारों पर मीडिया के लोगों में संवेदनशीलता पैदा करने के लिए 2007 में जागरण पहल (जागरण प्रकाशन का सामाजिक विंग) के साथ एक भागीदारी की शुरुआत की थी। दैनिक जागरण के अनेक पत्रकारों ने किशोरों और युवाओं के बारे में अधिक सक्रिय रूप से लिखना शुरू किया। इनमें से एक लेख से प्रभावित होकर किशनगंज की कॉलेज जाने वाली एक लड़की ने समाचारपत्र को एक पोस्टकार्ड भेजा। उसने बताया कि इस लेख में जैसे उसके अपने ही अनुभव सामने आए। उसने उन लड़कियों के जीवन में बदलाव लाने में मदद की गुहार भी लगाई जो आजादी, स्वायत्तता और अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष करती हैं। वह पोस्टकार्ड ही 'सपनों को चली छूने' (SKCC) परियोजना का प्रेरणास्रोत था।

NFPA के मेरे साथियों और निजी रूप से मेरे लिए, SKCC एक शानदार भागीदारी रही है। युवा लोगों के लिए परियोजनाओं की रूपरेखा बनाने और उन्हें लागू करने के समय, समावेशी दृष्टिकोण, अधिकार देने और निरंतरता बनाए रखने पर व्यापक रूप से विचार-विमर्श तो किया जाता है लेकिन इसे मूर्त रूप शायद ही कभी दिया गया हो। SKCC साफ तौर पर इसका अपवाद है। परियोजना को बिहार के छह जिलों में शुरू करने के डेढ़ साल बाद, आज, युवा लड़कियों को अधिकार देने की प्रक्रिया उत्साह के साथ लगातार आगे बढ़ रही है, जिसमें लोगों का जोश अधिक और बाहरी आर्थिक सहायता कम से कम है। इस चरण में, यह परियोजना बिहार भर के 50 कॉलेजों और करीब एक लाख छात्राओं तक तेजी से अपनी पहुंच बना रही है। संभावना है कि इस अनुभव को किसी दूसरे राज्य में ले जाया जाए।

SKCC को सहयोग देने वाले संगठनों के भीतर, सर्वोच्च प्रबंधन और प्रत्यक्ष रूप से इस परियोजना को चला रहे लोगों ने दिखाई दे रहे बदलावों को देखते हुए, परियोजना के नतीजों पर बहुत ज्यादा जोर दिया है। समय के साथ यह जोर उन अनेक लोगों द्वारा भी दिया गया जो इस परियोजना से जुड़े रहे हैं।

जब शुरू में परियोजना की रूपरेखा बनाई गई थी तो यह खासतौर पर लिंग और अधिकारों के मामले में कॉलेज की लड़कियों के अनुकूल होने वाली घटनाओं के इर्द-गिर्द ही केंद्रित थी। बड़ा फर्क तब आया जब इसे लंबे समय तक स्थानीय मीडिया, सरकार के वरिष्ठ लोगों के साथ छात्राओं के परामर्शी संबंध तक और एक दूसरे के साथ निरंतर संबंध विकसित करने वाले नागरिक समाज एवं नेटवर्कों तक ले जाने का फैसला किया गया। जैसा कि दैनिक जागरण के एक जिला ब्यूरो प्रमुख ने एक बार कहा, हमने सोचा था कि हम कॉलेज की इन लड़कियों को कुछ सिखाएंगे-पढ़ाएंगे लेकिन हमें ही उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला।

SKCC अब केवल उन दो-तीन संगठनों का मामला नहीं रह गया है जिन्होंने इस परियोजना की शुरुआत की बल्कि अब यह उन कॉलेजों, छात्राओं, उनके माता-पिता और उस बड़े समुदाय से जुड़ गया है जो इस प्रयास में शामिल हुए। मैं इस परियोजना से जुड़ी एक छात्रा के इन शब्दों को कभी नहीं भूल सकती कि ''मुझे नहीं पता कि इस परियोजना ने समाज को बदलने में कितनी सफलता हासिल की लेकिन मेरे पिता निश्चित रूप से बदल गए। जब उन्होंने अखबार में मेरा निबंध पढ़ा तो शायद मेरे जीवन में पहली बार, उन्होंने खुले मन से मेरे अस्तित्व को मान्यता दी और वे अड़ोस-पड़ोस में गए और गर्व से हर किसी को मेरा निबंध दिखाया। उन्होंने मुझसे कहा, बेटी, तुम अपने दिल का कहा मानो और तुम जो बनना चाहती हो बनो, मैं हमेशा तुम्हारा साथ दूंगा।''

हमें जहां एक ओर परियोजना के सारे उद्देश्यों के प्रति वचनबद्ध रहना है, वहीं जब तक हम अपने द्वारा किये गए काम को महसूस न करें और इसकी बदलाव ला सकने वाली क्षमता को बहुत बड़ा रूप न दे सकें तब तक यह हमारे लिए छोटे मोटे काम से अधिक और कुछ नहीं हो सकता। SKCC के मामले में, रणनीति संबंधी चिंतन और सक्रिय रूप से ध्यान का संगम रहा है 'दिल और दिमाग के बीच बढ़िया संतुलन'।

SKCC की प्रेरणा देने वाली एक विशेषता यह रही कि जब नेटवर्क का लक्ष्य ताकतवर हो तो दूरीयां किस तरह मिट जाती हैं। तब युवा लोग अपनी पृष्ठभूमि से अलग नहीं रह पाते। उन्होंने संपर्क में रहने और एक दूसरे के अनुभवों से फायदा उठाने के तरीके तलाश लिए हैं। मुझे पता है कि जहां इंटरनेट हमारे देश के दूरदराज के इलाकों में आज एक सच्चाई बन चुका है, वहीं मुझे यह भी स्वीकार करना होगा कि जागरण जंक्शन जैसे ब्लॉगों पर गंभीर बहसें एक चमत्कारिक आश्चर्य के रूप में सामने आईं। मुझे बताया गया कि विभिन्न जिलों के SKCC कॉलेजों की छात्राओं के बीच इधर से उधर खूब SMS भेजे जा रहे हैं क्योंकि वे कार्यकलापों की योजना बनाने, जानकारियों का आदान-प्रदान करने या सिर्फ संपर्क में रहने के लिए इनमें लगी रहती हैं। अगर सिर्फ नेटवर्किंग ही अधिकार प्रदान करने की निशानी है तो यह इसका साक्ष्य है!

SKCC परियोजना को निरंतर लागू करने वाली एक केस स्टडी के रूप में उभरा है। इस परियोजना में सरकारी एजेंसियां, मीडिया घराने, शिक्षण और प्रशिक्षण संस्थान तथा व्यक्ति, अपना समय, धन, विशेषज्ञता और सबसे महत्वपूर्ण, अपने जोश को लगाने और इन युवा लड़कियों के जीवन को समृद्ध एवं व्यापक बनाने के लिए सामने आ रहे हैं। जैसी कि एक पुरानी कहावत है-सफलता जैसा मजा और किसी चीज में नहीं है।

इना सिंह,
सहायक प्रतिनिधि
संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष, भारत

सपनों को चली छूने - मेरे अनुभव

प्रियदर्शनी त्रिवेदी

'सपनों को चली छूने' नारी सशक्तिकरण की परियोजना है, जिसे जागरण पहल और यूएनएफपीए के संयुक्त प्रयास द्वारा नींव दी गई और इस प्रक्रिया में एक नए सहभागी महिला विकास निगम ने भी हाथ मिलाया। 'सपनों को चली छूने' बिल्कुल किसी अन्य परियोजना की तरह था, जिसमें दृष्टि थी, एक लक्ष्य था, उद्देश्य थे और अनेक कार्यकलाप तय किए हुए थे, जिनसे कुछ परिणाम अपेक्षित थे। पर मुझे लगा इन सबके साथ इस परियोजना में 'जीवन' था। यह परियोजना जिंदगियों को बदलने में सक्षम थी। 21 महाविद्यालयों में आयोजित किए गए जेंडर फेयर ने निसंदेह बहुत सी लड़कियों की जिंदगी बदल दी। मैंने सात सितंबर, 2009, जबसे यह परियोजना महाविद्यालयों में शुरू की गई, लड़कियों को खिलते हुए, महकते हुए, एक खुलेपन के साथ देखा। एकाएक मुझे ऐसा लगा कि यह मेरे लिए सिर्फ नौकरी नहीं बल्कि उन लड़कियों के प्रति जो मेरी जिम्मेदारी है, उसे पूरा करने का एक मौका है। और यह सिर्फ मेरी भावनाएं नहीं थी बल्कि परियोजना से जुड़े हुए अनेक अन्य लोगों ने भी ऐसा ही महसूस किया। कुछ था, जिसने उन्हें इन लड़कियों की तरफ खींचा। जिसके फलस्वरूप वे इन कार्यक्रमों में एक अतिथि की तरह, विशेषज्ञ के रूप में शामिल हुए।

छात्राओं की कार्यक्रमों में भागीदारी उल्लेखनीय थी। ऐसा लगा, जैसे कि सूखी मिट्टी पर पानी छिड़क दिया गया हो और उसकी खुशबू चारो ओर फैल गई हो। मुझे उन बहुत सारी लड़कियों की आंखों में झांकने का मौका मिला। उनकी जिंदगियों को करीब से देखा और उनकी महत्वाकांक्षाओं से रू-ब-रू हुई। यह एक परियोजना नहीं बल्कि एक शोध हो गया, जिससे महाविद्यालय जाने वाली इन युवा लड़कियों की स्थिति और उनकी आवश्यकताओं को समझने का मौका मिला। परियोजना ने यह जाहिर कर दिया कि इन लड़कियों में बहुत संभावनाएं हैं और उनके अंदर नेतृत्व के गुण हैं।

इस परियोजना ने यह भी बखूबी जाहिर किया कि सरकार, स्वयंसेवी संस्थाएं, महाविद्यालय और जागरण पहल, जिसके अंदर मीडिया के गुण भी निहित हैं, के जुड़ने से एक बेहतरीन प्रयास की शुरुआत हुई है। इस संयोग से परियोजना के अंत में जो परिणाम मिले वे उम्मीद से ज्यादा थे।

समन्वय-इस परियोजना का मूल मंत्र था। अलग-अलग समय में अलग-अलग स्थानों पर बहुत सारे सहभागियों से एक प्रभावकारी समन्वय की बहुत आवश्यकता थी। 'सपनों को चली छूने' के कुछ प्रमुख आंकड़े दर्शाते हैं -

छह जिले, 21 महाविद्यालय, 44 नोडल ऑफिसर, 39 सहभागी स्वयं सेवी संस्थाएं, चार सरकारी विभाग और बहुत सारे विशेषज्ञ, मुख्य अतिथि एवं निर्णायक मंच

महाविद्यालयों में जेंडर फेयर आयोजित किए गए जिसमें पहला दिन माहौल निर्माण के लिए और

दूसरा दिन प्रतियोगिताओं के लिए सुनिश्चित था। प्रत्येक कॉलेज के कार्यक्रम में सभी सहभागियों की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण थी। यह आवश्यक था कि सब में एक अच्छा तालमेल और समन्वय हो ताकि एक सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन कॉलेज में हो। इस परियोजना के सफल निर्वहन के लिए यह भी आवश्यक था कि सभी घटक अपनी जिम्मेदारी निभाएं और लक्ष्य की प्राप्ति हो।

आंकड़ों का प्रबंधन इस कार्यक्रम का एक दूसरा महत्वपूर्ण घटक था। छात्राओं के पंजीकरण से लेकर विजेता के चुनाव तक बहुत सारे आंकड़े इकठ्ठा हुए। प्रत्येक स्तर पर आंकड़ों का संकलन और उन्हें निर्णायक स्तर पर ले जाना महत्वपूर्ण तो था ही साथ ही एक विजयी छात्रा के चुनाव की कड़ी भी थी। आज हमारे पास बहुत सारी जानकारियां हैं, जिससे हम इस आयु वर्ग की लड़कियों के सोच, उनकी रुचियां और समस्याओं को समझ सकते हैं।

दैनिक जागरण समाचार पत्र में महाविद्यालयों के कार्यक्रमों के प्रकाशन का, परीयोजना की सफलता में काफी बड़ा योगदान रहा।

वैसे तो कह सकते हैं कि सभी 21 कॉलेजों में यह कार्यक्रम एक समान था पर हरेक कॉलेज की अपनी खास विशिष्टता अलग-अलग जगहों पर दिखी। नोडल ऑफिसर की भागीदारी सराहनीय रही। अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं ने अपनी भागीदारी से कार्यक्रम में मूल्य संवर्धन किया।

'सपनों को चली छूने' की टीम ने निरंतर कार्य किया ताकि गतिविधियां अपने निर्धारित समय में पूरी हों। इस परियोजना ने जेंडर और उससे जुड़े हुए विषयों के ऊपर हमारी जानकारी बढ़ाई। बहुत सहभागियों के साथ चलने वाले परियोजना के प्रबंधन का अनुभव दिया एवं बहुत सारे मित्र दिये।

प्रियदर्शनी त्रिवेदी,
पूर्व राज्य परियोजना समन्वयक,
सपनों को चली छूने

कन्या मन के चटख रंग

कुमार दिनेश

पिछले दिनों जागरण पहल की ओर से आयोजित सपनों को चली छूने कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित लेख प्रतियोगिता ने बिहार की दो सौ से ज्यादा युवा छात्राओं के मन-मानस में झांकने का अद्भुत् अवसर प्रदान किया। इस खिड़की से कुछ ताजा अनुभवों का झोंका आता है और बखूबी झकझोरता है। इंटर और स्नातक कक्षाओं में पढ़ने वाली इन प्रतिभागी लड़कियों ने जो अनुभव लिखे, उससे लगा कि सपने देखने की उम्र में वे कड़वे सामाजिक यथार्थ का ताप किस हद तक महसूस कर रही हैं। ज्यादातर छात्राओं ने विस्तार से और पीड़ा के साथ लिखा कि अवस्था के दूसरे दशक में ही उन्हें पता चल गया कि उनका जन्म कितना अनचाहा, उत्सवहीन और संघर्षपूर्ण है। वे अपनी अनगढ़ भाषा में अलग-अलग तरह से बताती हैं कि कैसे उनके अपने परिवार में लिंग-भेद होता है और किस तरह उन्हें पराया धन (या दान की वस्तु) मान कर पढ़ाई-लिखाई से लेकर खान-पान तक के मामले में उपेक्षा का घूंट पिलाया जाता है। किसी अपने के ये शब्द उनके कान में अक्सर गूंजते हैं- तुम तो लड़की हो, ज्यादा पढ़ कर क्या करोगी, दूसरे के घर जाकर चूल्हा-चौका ही तो करना है? तुम तो लड़की हो, घर में रहना है, दूध-फल भाई के लिए छोड़ दो.., लड़की हो, ज्यादा बढ़िया कपड़े पहनने की जरूरत नहीं है..आदि।

विडंबना यह कि कई लड़कियां खुद अपनी मां के दोहरे व्यवहार से स्तब्ध हैं। कुछ माताएँ स्वयं स्त्री होकर कल की स्त्री, यानी अपनी बेटियों के बेहतर पालन-पोषण की अपेक्षा अपने बेटों पर ज्यादा ध्यान देती हैं। उन्हें बेटे के करिअर में अपने और परिवार के भविष्य की उम्मीद चमकती दिखाई पड़ती है, जबकि बेटी के चेहरे में उसके विवाह की जिम्मेदारी पूरी करने के लिए दिये जाने वाले अप्रत्याशित दहेज का भयावह दबाव आकार लेता नजर आता है। हमारी विवाह परंपरा दहेज की मांग के चलते जिस तरह लगातार क्रूर और स्त्री विरोधी होती जा रही है, उससे सामान्य और निम्न मध्यवर्गीय परिवारों में कन्याएं अवांछित हो गई हैं। नवरात्र में कन्यापूजन और बेटी को लक्ष्मी मानना अब धार्मिक पाखंड बन चुका है। जो कन्या पूजन करने में विश्वास रखते हैं, उन्हीं में से कई परिवार बहू को प्रताड़ित करते पाये जाते हैं।

आधुनिकता के तमाम दावे के बावजूद दहेज प्रथा न केवल जारी है, बल्कि इस लिप्सा को पूरा करना बहुतों के लिए कठिन हो चला है। धर्माचार्य और कानून इस पर लगाम लगाने में विफल हैं, क्योंकि इसे मौन सामाजिक स्वीकृति मिली हुई है। लड़के की शादी में मुंहमांगी रकम वसूलने जैसे कृत्य का जो मौका परंपरा के नाम पर मिलता है, उसे कोई खोना नहीं चाहता। इसका नतीजा यह है कि लड़कियों को ससुराल में प्रताड़ना से लेकर हत्या तक का शिकार होना पड़ रहा है। बिहार में लगभग हर दिन कोई न कोई बहू दहेज के चलते मारी जाती है या उसे आत्महत्या के लिए विवश किया जाता है। इस सुलगती हकीकत के बारे में सोच कर सिहरे लोग कन्याओं को जन्म देने से ही बचने लगे हैं।

लिंग चयन की दुष्प्रवृत्ति लगातार बढ़ रही हैं और विस्मय की बात है कि सामाजिक रजामंदी इसे भी हासिल है। एक कटु संदेश साफ है-दहेज की मांग तो बंद नहीं होगी, जिसे अपनी कन्या बचानी है, वह दहेज के लिए धन जुटाए या कन्या को जन्म ही न दे।

दहेज एक तरह से बेटी पैदा करने का सोशल टैक्स हो गया है। परिवार बनाने व चलाने के लिए स्त्री-पुरुष दोनों की जरूरत समान है, लेकिन दहेज की मांग विवाह पद्धति को पुरुष की तरफ पक्षपाती बना चुकी है। जिन छात्राओं ने अपने लड़की होने के अनुभव लिखे हैं, वे भेदभाव का एहसास तो करती हैं, लेकिन बहुत कम ही ऐसी हैं, जिनके मन में इसकी वजह साफ है। यह बात चिंताजनक है कि अधिकतर लड़कियों को स्नातक कक्षाओं में अध्ययन करने के बाद भी यह पता नहीं है कि उनके साथ भेदभाव के दो बड़े कारण क्या हैं? ये दो कारण हैं दहेजप्रथा और विवाहिता लड़की का अपने माता-पिता के भरण-पोषण संबंधी दायित्व से मुक्त अनुभव करना। वे अपने सपनों की बात तो करती हैं, लेकिन करिअर को अच्छे वैवाहिक रिश्ते तक पहुंचने की सीढ़ी भर मानती हैं। कम ही लड़कियां ऐसी हैं जो समझती हैं कि उन्हें भी माता-पिता का सहारा बनना चाहिए। सामान्य समझदारी इतनी ही है कि वे साइकिल-मोटरसाइकिल चलाना सीख कर और डाक्टर-इंजीनियर-आईएएस वगैरह बन कर लड़कों की बराबरी कर सकती हैं, जबकि भेदभाव की वास्तविक वजह कुछ और है।

कुछ छात्राओं के आलेख घरेलू हिंसा, बाल विवाह, यौन शोषण, बाहर निकलने पर पाबंदी बढ़ती छेड़छाड़ और असुरक्षा जैसे मसलों का जिक्र करते हैं,तो कुछ में विपरीत परिस्थितियों का तूफान चीर कर आगे बढ़ने का जज्बा धड़कता है। स्त्री अनुभूति के ये कोरे, भोले और चटख रंग किसी के भी संवेदनशील मन को भीतर तक भिगो सकते हैं।

कुमार दिनेश,
उप समाचार संपादक,
दैनिक जागरण, पटना

आज लब आजाद हैं तेरे

भारतीय बसंत

जिंदगी को लेकर अक्सर भावनाएं, चरित्र, परंपरा, सामाजिक रूढ़ियां या मूल्य और व्यवहार की घेराबंदी बनी रहती है। बात लड़कियों की हो तो ऐसा लगता है, जैसे कष्टों की अनिवार्यता ही उनके सुख के अनुभव की पहली शर्त है। नारीवादी आंदोलन की चाहे जितनी पुकार मची हो, लेकिन जमीनी स्तर पर पुरुष वर्चस्व को भोगना आज भी आधी आबादी की नियति है।

अच्छी औरत का मतलब जो सबका ख्याल करे पर खुद के लिए न बोले, जवाब नहीं दे। चूल्हे-चौके से लेकर राजनीति तक, हर क्षेत्र में पुरुष चाहता है कि वह औरत को घेरे रखे। जब स्त्री कुछ अलग करती है तब पुरुष तिलमिला उठता है। और इन सब अवधारणाओं के बीज उनके बचपन में ही बोये जाते हैं।

बेटे को लाड़, उसकी हर जिद सिर-माथे पर। बेटी को बस हिदायतें..ऐसा करो और ऐसा नहीं। लेकिन इस क्षेत्र की वर्जनाएं भी बड़ी तेजी से टूट रही हैं। यहां हमारा मकसद स्त्री विमर्श नहीं है, जिन अनुभवों से हम सब इस श्रृंखला में गुजरेंगे, उसकी पृष्ठभूमि पर चर्चा मात्र है।

बिहार के छह जिलों में 'दैनिक जागरण' के सामाजिक सरोकार जागरण पहल ने 'नारी सशक्तिकरण' से जुड़े मुद्दों की पहचान और उसके विकास के निरंतर प्रयास के लिए सहयोगी संस्थाओं की मदद से कालेज की लड़कियों के बीच 'सपनों को चली छूने' कार्यक्रम का आयोजन किया। दैनिक जागरण पत्र समूह की कोशिश थी कि समाज के प्रबुद्ध वर्ग, शिक्षक, समाजसेवी और जुझारू प्रवृत्ति के पत्रकारों की मदद से उन छात्राओं की पहचान करना जो भविष्य में परिवर्तनकारी नेतृत्व की क्षमता रखती हैं।

'मैं लड़की हूं, मेरा अनुभव' विषय पर लेखन प्रतियोगिता के क्रम में बिहार की इन बेटियों ने अनुभवों के विस्तृत कैनवास पर जो कुछ उकेरा है, वह संवेदी तो है ही, वेदनामयी भी है। इस पुस्तक के पन्नों से गुजरते हुए आप इन बेटियों के आत्मबोध जानकर मर्माहत हुए बिना नहीं रह सकेंगे। लेकिन यह सुखद अनुभूति है कि इन बेटियों का सपना बड़ा है।

सपनों की गुत्थी विज्ञान और अध्यात्म के तर्क के बीच जरूर उलझी हुई है, लेकिन यहां हम जिस सपने की बात कर रहे हैं, वह जाग्रत मन का सपना है..ऊंची उड़ान की आशा है, जिसमें अधूरेपन की कसक है और मंजिल को पा लेने का हौसला।

शोधकर्ता वर्जिनिया लिन का मानना है कि चेतन सपने इंसान की सुप्त और जाग्रत अवस्थाओं के बीच एक पुल की तरह काम करते हैं। इन बेटियों का सपना 'रेपिड आई मूवमेंट' का सपना नहीं है,जो विज्ञान की शब्दावली है। इस सपने में उनके गांव हैं, पड़ोस हैं, सिलबट्टे पर आंसू पीसने का दर्द है और आंटा गूंथते हुए मन की गुत्थियां सुलझाने की यादें समाहित हैं। इसी आत्मबोध और सपनों को

सिरजने का एक अवसर इन बेटियों को 'दैनिक जागरण' ने दिया। यह संकलन उनके जीवन और उनके सपनों को उन सभी दृष्टिकोणों से जानने की कोशिश है जो अनुभवों को विश्लेषित कर आगे का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह विराट रूप में एक बेहतर जिंदगी को प्रवृत्त करने का उपक्रम भी है। यह सुखद है कि इनके लब आजाद हैं और अब हर क्षेत्र में इन बेटियों ने अपने संघर्ष से मुकाम हासिल किया है। यह फर्क दुनिया महसूस कर रही है। जो कुछ इन बेटियों ने रचना कर्म के स्वादिक कलिकाओं पर महसूस किया, उसे हम आपसे साझा करना चाहते हैं।

भारतीय बसंत,
संपादकीय प्रभारी
दैनिक जागरण, धनबाद

सपनों को चली छूने
एक परिचय

आनन्द माधव

वर्ष 2007 की बात है, संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के साथ मिलकर हम महिलाओं से संबंधित कुछ मुद्दों को अखबार के वैवाहिक विज्ञापन वाले पेज पर प्रकाशित कर रहे थे। इसे पढ़कर कई लोगों की प्रतिक्रिया पत्र, ईमेल आदि के माध्यम से मिली। इनमें से ही एक पत्र, जो बिहार के एक दूरस्थ जिले से आया था, ने हमें सोचने को मजबूर कर दिया और जन्म हुआ इस 'सपनों को चली छूने' अभियान का।

यूएनएफपीए की सुश्री धनश्री ब्रहमें ने यह पत्र हमें देते हुए कहा कि क्या आप अपने संवाददाता से इसकी बात करवा कर इसकी स्टोरी प्रकाशित कर सकते हैं? लड़की ने पत्र में बयां किया था समाज में महिलाओं के समक्ष असमान अवसर का। पढ़-लिखकर भी वह लड़की अपने भाइयों के समान सुविधाओं का उपयोग नहीं कर सकती थी। लड़की होने का अभिशाप, परिवार से शुरू होकर मुहल्ले और शहर तक में झेलना पड़ता था। वह आवाज उठाना चाहती थी, लेकिन कोई मंच नहीं दिख रहा था। कोई ऐसा हाथ नहीं दिख रहा था जो उसे राह दिखाये और वह अपनी इच्छाओं को पूरा कर सके। उसके मन में रोष था, अपने परिवार के प्रति, समाज के प्रति।

हम पत्र को लेकर कई दौर बैठे। UNFPA की इना सिंह, धन श्री, और फिर शामिल हुए रजत रे। मैं और पूजा शुरुआत में जागरण पहल की ओर से, बाद में विश्व मोहन ने भी बहस ज्वाइन कर लिया। लगभग साल भर लगा हमें यह तय करने में कि आखिर क्या किया जाए, जिससे कि इन लड़कियों का आत्मविश्वास बढ़े और अन्य समाजकर्मी सरकारी संस्थान आगे आकर इनका हाथ थामें।

तब हुई शुरुआत 'सपनों को चली छूने' के पायलट प्रोजेक्ट की। आरंभ में यह मूल रूप से इवेंट बेस्ड प्रोजेक्ट था, लेकिन धीरे-धीरे लड़कियों के उत्साह ने इसे एक आंदोलन का रूप दे दिया। इसमें हम लोगों ने बिहार के छह जिलों में आरा, जहानाबाद, भागलपुर, मुजफ्फरपुर, गया और पटना के 20 कालेजों का चयन किया जिसमें से चार सह-शिक्षा वाले कालेज थे एवं अन्य सभी महिला महाविद्यालय। बाद में पटना के एक और कॉलेज को शामिल किया गया और कॉलेजों की संख्या बढ़ कर 21 हो गई।

अपने अखबार यानी दैनिक जागरण से जुड़े स्थानीय संपादकों के साथ नामित जिलों के संपादकीय प्रभारी भी इस अभियान में साथी बने।

इस परियोजना का मूल उद्देश्य थाः

- कॉलेजों में संरचनात्मक एवं रोचक कार्यक्रम के माध्यम से नारी सशक्तिकरण से जुड़े बिन्दुओं पर छात्राओं को अधिक से अधिक जानकारी देना और जागरूकता फैलाना।
- छात्राओं को नारी सशक्तिकरण से जुड़े मुद्दों की पहचान कराना तथा उसके विकास के लिए

निरंतर प्रयासरत रहने को जागरूक करना।

- समाज के प्रबुद्ध वर्ग, शिक्षक, समाजसेवक एवं जुझारू प्रवक्ताओं तथा पत्रकारों के माध्यम से उन छात्राओं की पहचान करना जो भविष्य में परिवर्तनकारी नेतृत्व की क्षमता रखती हो।

परियोजना की मूल प्रक्रिया कई चरणों में विभाजित थी।

सर्वप्रथम परियोजना से जुड़ी क्रियान्वयन टीम को एक वर्कशॉप के माध्यम से प्रशिक्षित करना। दो दिन की एक अन्य कार्यशाला में सभी शामिल महाविद्यालयों से दो शिक्षकों, स्थानीय स्वयंसेवी संस्थाओं, पत्रकारों तथा सरकारी विभागों के साथ मिलकर परियोजना की कार्य योजना को मूर्त रूप देना।

इस परियोजना के प्रचार प्रसार की भी एक रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें अखबार के विज्ञापन, कवरेज, होर्डिंग से लेकर छात्राओं के बीच वितरित की जाने वाली सामग्री भी शामिल थीं।

चुने गए कॉलेजों में एक दिन जेंडर फेयर लगाया गया। जिसमें छात्राओं को कई इंटरेक्टिव कार्यक्रमों में भाग लेने का मौका मिला। स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा लगाये गए स्टालों पर छात्राओं को बहुत सारी जानकारी मिली।

यूएनएफपीए द्वारा तैयार किये गए एक ए. भी; ... जेंडर-वेंडर को छात्राओं में दिखाने के बाद छात्राओं के साथ विशेषज्ञों के माध्यम से संवाद स्थापित किया गया।

दूसरे दिन छात्राओं के बीच पोस्टर एवं लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय था 'मैं लड़की हूं, मेरा अनुभव' इस पूरे कार्यक्रम के माध्यम से शामिल महाविद्यालयों में 50 छात्राओं का चयन 'परिवर्तन दूत' के रूप में हुआ, जिन्हें 18 दिसम्बर, 2009 को बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने पुरस्कृत किया।

इस परियोजना के अंतर्गत चुनी गई छात्राओं के साथ दो दिन की कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें छात्राओं को नामी हस्तियों से बात करने एवं रूबरू होने का मौका मिला, जिनमें प्रमुख थे बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, महेश भट्ट, नफीसा अली, नसीम टुमकाया एवं हमारे संपादक संजय गुप्त।

यह परियोजना की समाप्ति नहीं शुरुआत थी। अब इन परिवर्तन दूतों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न मंच प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। परियोजना की सफलता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि यूएनएफपीए के वर्ष 2010 के कैलेंडर एवं वॉल प्लानर का थीम भी 'सपनों को चली छूने' रखा गया।

परियोजना के दूसरे चरण में परिवर्तन दूतों को यूएनएफपीए, महिला विकास निगम तथा दैनिक जागरण में इंटर्नशिप प्रदान की गई। अब परियोजना में शामिल सभी महाविद्यालयों में इन परिवर्तन दूत द्वारा 'बिहार में कॉलेज की लड़कियों में खानपान की आदतों और पोषण की स्थिति' पर एक अध्ययन कराया जा रहा है।

परियोजना आगे बढ़ती गई, लोग जुड़ते गए। पहले सलाहकार और बाद में राज्य परियोजना समन्वयक के रूप में प्रियदर्शनी त्रिवेदी की भूमिका काफी सराहनीय रही। रश्मि ने भी इसकी सफलता

के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। जागरण बिहार के स्थानीय संपादक श्री शैलेन्द्र दीक्षित, उनके दो विश्वस्त सहयोगी शशि भूषण और भारतीय बसंत कुमार की सक्रिय भागीदारी ने अखबार की रिपोर्टिंग में इसे जीवंत बनाया। परियोजना की सफलता में दैनिक जागरण, बिहार के वरीय महाप्रबंधक श्री आनन्द त्रिपाठी का सहयोग सराहनीय है।

प्राचार्यों, कॉलेज से जुड़े नोडल शिक्षक-शिक्षिकाओं का सक्रिय सहयोग नही रहता तो शायद छात्राओं का मनोबल इतना नहीं बढ़ता।

इस परियोजना के अनुदान सहयोगी संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष एवं महिला विकास निगम, बिहार रहे। परियोजना का एक प्रमुख चरण प्रतियोगिता था, जिसमें सभी छात्राओं ने अपना सर्वोत्तम देने का प्रयास किया। ज्यादातर छात्राओं के लिए शायद यह पहला अवसर था, जब वह अपने मन की बात को शब्दों या पोस्टर में उकेर रही थीं। ऐसी कई बातें सामने आईं, जिसे पढ़ कर आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे।

उन छात्राओं की कलम से कुछ पंक्तियां:-

मैं पांच वर्ष की थी, मेरा बिस्तर भैया से अलग कर दिया गया क्योंकि मैं लड़की थी।

मुझे खड़े-खड़े पेशाब करने पर मार पड़ी लेकिन भैया को नहीं क्योंकि वह लड़का था।

मैं नहीं जानती इस कार्यक्रम से समाज कितना बदलेगा लेकिन 'मेरे पापा बदल गए'।

मैं जब पांच वर्ष की रही होगी, मेरे सगे ने मेरे साथ यौन दुराचार किया।

भगवान न करे, ऐसा किसी लड़की के साथ हो। .....आदि-आदि।

हम इन छात्राओं की मर्मस्पर्शी भावनाओं को इस पुस्तक के माध्यम से प्रकाशित कर रहे हैं। हर छात्रा की कहानी एक संघर्ष गाथा है और समाज को आइना भी दिखाती हैं। कुछ चयनित छात्राओं द्वारा बनाए गए पोस्टर भी हम प्रकाशित कर रहे हैं। कुछ अनुभव इतने व्यक्तिगत और मर्मस्पर्शी हैं कि हमें उनके लेखिकाओं का नाम गुप्त रखना पड़ रहा है। लेकिन इन अनुभवों में छात्राओं ने समाज की जो नंगी छवि हमारे सामने रखी है, उसे हम आपके सामने रख रहे हैं। कहानियों का चयन करते समय लेखन विधा से ज्यादा छात्राओं की भावनाओं का ध्यान दिया गया है लेकिन फिर भी अगर त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। आशा है 'सपनों को चली छूने' की यह धरोहर आपको पसंद आएगी।

नारी सशक्तिकरण से जुड़ी स्वयंसेवी संस्थाएं बढ़-चढ़ कर इस परियोजना का अंग बनी। यों तो लिंग भेद एक विश्वव्यापी समस्या है, लेकिन इस विषमता की चुभती जड़ें भारत में काफी गहरी हैं, क्योंकि यहां बहुत कुछ संस्कृति एवं परंपरा के नाम पर थोपा जाता है।

आइये, हम इस विषमता को जड़ समेत नष्ट करने का संकल्प लें।

आनन्द माधव,
राष्ट्रीय प्रमुख,
जागरण पहल

समता का, आज़ादी का नव-
इतिहास बनाने को आयीं,
शोषण की रखी चिता पर तुम
तो आग लगाने को आयीं,
है साथी जग का नव-यौवन,
बदलो सब प्राचीन व्यवस्था,
वर्ग-भेद के बंधन सारे
तुम आज मिटाने को आयीं !

रचयिता - महेन्द्र भटनागर

विषय सूची

मेरे पापा बदल गये..... 26
जन्म से मौत तक प्रताड़ना का शिकार होती हैं लड़कियां 27
नाना की बातों ने खूब रुलाया..... 29
बार-बार एहसास कराया गया कि क्या होता है लड़की होना..... 30
क्या सिर्फ पुरुष की भोग्या बनने के लिए लिंग चयन
रोकी जानी चाहिए? 31
वे पढ़ाई बंद करा कर मुझसे सिर्फ ब्याह और बच्चे चाहते थे..... 33
पढ़ाई बंद कराने के लिए ससुराल में अत्याचार, तलाक भी न मिला..... 34
ईश्वर का वरदान है लड़की होना..... 36
हंस कर बात करती हूं कि बेबसी कहीं मजाक न बन जाए..... 37
लड़का मुझसे कम पढ़ा हो तो भी वह मेरा देवता, मैं उसकी दासी..... 38
अब भी परिवार का बोझ मानी जाती हैं लड़कियां..... 40
मैं भी बालिका बधू बनी पर हार नहीं मानी..... 42
शादी उसी से की जो दहेज लेने के खिलाफ था..... 43
दोस्त दगा दे तो भी समाज लड़की से ही पूछता है सवाल..... 44
हर जगह आगे बढ़ने से रोकी जाती हैं लड़कियां..... 45
ज्यादातर परिवारों में उपेक्षित ही हैं बेटियां..... 46
अत्याचार से तंग आकर उसने खुदकुशी की, वह मेरी मां थी..... 48
उस दिन सवालों का सागर उमड़ पड़ा था..... 50
क्यों बेटियों के जन्म पर आंसू बहते हैं?..... 51
अहसास दिलाना चाहती हूँ कि मेरा जन्म माता-पिता की भूल नहीं..... 52
बेटियाँ भी सहारा बनेंगी, उन्हें शिक्षा और आजादी चाहिए..... 53
लड़की हो, लड़की जैसी रहो..... 54
लड़कियों में प्रतिभा की कमी नहीं, विश्वास बनाये रखिए..... 55
तन ढकने तक का पैसा नहीं, फिर भी कालेज में पढ़ती हूं..... 56

आंखों में आकाश

अब ठान लिया है कि अत्याचार नहीं सहूंगी 57
दिल में अरमान हैं, तो आसमान झुकाने का हौसला भी रखिये 58
..लेकिन शादी की बात से डर लगता है 59
औरतें ही क्यों ढा रही हैं औरतों पर जुल्म ? 60
बड़ी समस्या है लिंगभेद 62
आत्मनिर्भर बेटियां भी बन सकती हैं मां-बाप का सहारा 63
It's us, who willingly surrender 64
I want to become role model 65
Dowry should be banned strictly 66
Misconception must stop 67
Girls are more energetic, intelligent! 68
कोर्ट में सवाल पूछते वक्त कहां चली जाती है शर्मिन्दगी? 69
लड़की के जन्म पर नहीं खिलाई गई मिठाई 70
जब तक औरत ही औरत की दुश्मन है, बदलाव मुश्किल है 71
शिक्षा-दीक्षा से भविष्य बना सकती हैं लड़कियां 72
हर घर में सीता जैसी बेटी भले न हो, रावण तो हर जगह है 73
लड़कों की वजह से मुझे डर लगता है 74
काश, लोग लड़के और लड़कियों में भेदभाव न करते 75
लड़की का मतलब है पर्दा, कामचलाऊ शिक्षा, कम उम्र में शादी, दहेज 76
प्रताड़ना, बच्चे पालना और दुनिया से गुमनाम चले जाना
क्या हमें जीने का हक नहीं है? 77
लड़कियों को आगे बढ़ने से रोका जाता है 79
शिक्षा, संपत्ति, सत्ता में महिलाओं को मिले बराबरी, तो बने बात 80
कई बार लगा,काश मैं लड़का होती 82
चूड़ियाँ पहनकर घर बैठने का जमाना नहीं 83
घर के फैसलों में सम्मलित नहीं की जातीं लड़कियां 84
...जब बहन की जान बचाने में दादी ने कोई रुचि नहीं ली 85
हर आदमी सिर्फ लड़की का शरीर चाहता है 87
दहेज प्रथा ने स्त्री जीवन को अभिशाप बना दिया 89
हमारी तो मंजिल सितारों से आगे 90

आंखों में आकाश

मुझे अपने बंधनों से मुक्त होना है 91
हमारा समाज भी बदलेगा 92
ये टूटे सपने चुभते हैं 94
बाल-विवाह का विरोध किया 95
नजरिए को बदला, तो सपनों को पंख लगे 97
है एहसास मुझे कि आधी आबादी हूं मैं 98
पोस्टरों तक ही सीमित हैं स्त्री-पुरुष समानता के नारे 99
अपने दयनीय हालात के लिए जिम्मेवार मैं स्वयं हूं 100
कल की नई सुबह हैं लड़कियाँ 101
जो मेरे साथ हुआ वो किसी लड़की के साथ न हो 102
लड़कियों को आजादी मिलती भी है तो पंख काट कर 103
अब समाज बदल गया है 104
तीसरी बेटी होने पर मेरी मां अवसादग्रस्त हो गई 105
पापा की मौत पर नौकरी सिर्फ बेटे को क्यों दी जाती है? 106
लड़कियों के लिए सरकार ने कई काम किये 108
ये परदा बंदिश नहीं 110
आज मेरे पापा को मुझ पर नाज है 111
कभी ससुराल ने रुलाया, कभी सगे भाई ने 112
अपनी मेहनत के बल पर बदला परिवार की सोच 114
मृत्यु तक संघर्ष करती हैं लड़कियाँ 115
लड़के-लड़कियों में अभी भी किया जाता है भेद 116
..और तब चेहरे पर छलकता है लड़की होने का दर्द 117
कठिनाई के बावजूद लड़की हर क्षेत्र में आगे है 118
सपनों को छूने का हमें भी है पूरा अधिकार 119
कुछ लड़कियाँ तो हर पल मरती हैं 120
लिंग चयन एवं कन्या भ्रूण हत्या का सर्व प्रमुख कारण है दहेज प्रथा 121
हम सभी लड़कियों को अपने पचास प्रतिशत हिस्से के लिए
अवश्य लड़ना चाहिए 122
लड़कियां भी बनना चाहती हैं माता-पिता का सहारा 123
क्या हम अपना अधिकार समझते हैं 124

आंखों में आकाश

पिंजरे की चिड़ियां रह गई हैं लड़कियां 125
हमें अच्छी तरह समझे समाज 126
इंदिरा गांधी की तरह माता-पिता का नाम रौशन करूंगी 127
बेटियों की जिन्दगी बर्बाद कर देते हैं पुराने ख्यालात 128
लड़कियों के साथ ये क्या हो रहा है? 129
लड़की हूं तो भाई का भी आदेश लेना पड़ता है 130
मैं कमजोर नहीं हूँ 131
जी करता है, सारे बंधनों को पैरों तले कुचल दूं 132
मैं भी पढ़कर आईपीएस बनना चाहती हूं 134
पढ़ाई रोक कर थोप दिया जाता है बाल-विवाह 135
हां मैं लड़की हूँ और यही मेरी पहचान और ताकत है 137
बेटी होकर मां-बाप का सहारा बनना चाहती हूं 139
मुक्त करो नारी को मानव, चिरबन्दिनी नारी को 140
सपनों को पूरा करूंगी 141
अपनी आंखों से भी खुद को चुरा रही है लड़की 142
लड़की भी बन सकती है बुढ़ापे की लाठी 144
मां-बाप को बेसहारा नहीं छोड़ती बेटियां 146
विकास में बाधक है दहेज-प्रथा 147
सपना है कि मैं भी कुछ बनूं 149
अपनी पहचान स्वयं बनाना चाहती हूं 150
तालीम से ही बढ़ेगी फैसले लेने की ताकत 151
घी का लड्डू टेढ़ा भी भला 152
लक्ष्य में बाधक हैं पुरानी धारणाएं 154
लड़की होना बहुत बड़ा वरदान 155
जारी है स्त्री से पक्षपात 156
वो लड़का है, तुम लड़की हो 157
वास्तविक सम्मान से वंचित हैं लड़कियां 158
मां-बाप का सहारा बनकर जीना चाहती हूं 159
कितनी ही लड़कियां दबायी जा रही हैं 160
खुद पर गर्व होना चाहिए वो लड़की है, लड़का नहीं 161

आंखों में आकाश

लोग लड़कों को ज्यादा तरजीह देकर प्रकृति की व्यवस्था बिगाड़ रहे हैं 162
लड़कियां जरूर आगे बढ़ेंगी 164
जवाब देना चाहती हूं स्त्री विरोधियों को 166
दहेजप्रथा बड़ी बुराई, लेने-देने वालों को सजा दिलाऊंगी 167
शादी के लिए लड़कियों को सामान की तरह परखना शर्मनाक 169
शिक्षित स्त्री ही परिवार को आगे बढ़ा सकती है 170
सपने को पूरा करने के लिए हमेशा सचेत हूं 171
ससुराल में अनेक यातनाएं सहती हैं लड़कियां 172
लड़कियों पर थोड़ी पाबंदी जरूरी 173
सैकड़ों लड़कियां पी रही हैं छेड़छाड़ से अपमान का जहर 174
लड़कियों के हक में बदला है समय 175
औरतों ने हर क्षेत्र में खुद को साबित किया 176
महिलाओं की कमजोरी बन गई है उसकी सहनशक्ति 177
कन्या विरोधी है माहौल और विवाह व्यवस्था 178
मैं भी लड़कों से कम नहीं 179
रूढ़ीवादी परम्पराओं को तोड़ूंगी मैं 180
अधिकारों और अवसरों का उपयोग करें लड़कियां 181
स्त्रियों को मिले बराबरी का वास्तविक अधिकार 182
मैं किसी पर बोझ नहीं बनना चाहती 183
समाज बदला है पर लिंग भेद कायम है 184
क्या लड़की होना गुनाह है? 185
नारी सशक्तिकरण के लिए बिहार में अच्छी पहल 186
शिक्षा से वंचित हैं अधिकतर ग्रामीण लड़कियां 187
लड़की होने के कारण मेरे ऊपर सारी पाबंदियां हैं 188
लड़कियों को आजादी क्यों नहीं मिलती? 189
बाधाओं के बावजूद नदी से प्रेरणा लेती हूँ 190
हर जगह होती है छेड़खानी 191
समाज की कठपुतलियां नहीं हैं लड़कियां 192
क्या इस दहेज के पैसे से उनकी जिंदगी कट जाती है? 193
आज भी ये सब (लड़कियां) ताड़न के अधिकारी ही हैं? 194

लड़कियों की स्थिति पहले से काफी बेहतर हुई 195
हक की लड़ाई घर से शुरू होनी चाहिए..... 196
मुझे किसी पर निर्भर होना बुरा लगता है 197
जिस भी क्षेत्र में जाऊंगी अच्छा ही करूंगी..... 198
हम भी कुछ करने की हिम्मत रखते हैं..... 199
प्लीज हेल्प मी, ताकि मां को बेटा बनकर दिखा सकूं..... 200
लड़की को गाली देना अपनी मां की निंदा करना है 201
समर्थ होते हुए भी उपेक्षित हैं लड़कियां..... 202
Whenever father calls me "Beta", the truth hits me 203
My father was for first time sorry for his deeds. 205
Many rights are not for girls..... 206
I have the power..... 207
There is no world without girls..... 208
No girl can escape hardship..... 209
Girls are the big power 210
Women will be powerful too..... 211
I feel vulnerable on the road..... 213
Take her right from the society..... 214
Girls are divine creatures..... 216
Marriage is not the only motive of life..... 217
I am like a son and it is a good thing..... 218
I too have faced physical abuse..... 219

"आखों में आकाश"

मेरे पापा बदल गए...

मुझे पता नहीं कि यह कार्यक्रम समाज में कितना बदलाव लायेगा, लेकिन मेरे पापा बदल गए। मैं बचपन से दुखी रहती हूं। कारण यह है कि हम सिर्फ दो बहनें ही हैं। मेरा कोई भाई नहीं हैं। मेरे पापा हम बहनों से बात भी ढंग से नहीं करते। पहले तो हम ये सब बातें नहीं समझती थीं, लेकिन बाद में उनकी ये बेरुखी खाए जाने लगी। मेरी माँ बहुत अच्छी हैं। हम दोनों को बहुत प्यार करती हैं। माँ ने कालेज में नामांकन करा दिया और यही बोली कि बेटी अपनी इज्जत का ख्याल रखना। यही कारण है कि मैं किसी से सही ढंग से बात नहीं कर पाती हूं। मेरी दोस्त जब पूछती है कि तुम्हारा जन्म दिन कब होता है, तो आंखों में आंसू आ जाते हैं। मैं उन लोगों को सर्टिफिकेट वाला डेट बता देती हूं। मुझे बस इतना पता है कि मेरा जन्म मार्च, 1990 में हुआ था। किस तारीख को ये पता नहीं, क्योंकि ये सब लिखना तो पापा का काम था और उन्हें तो मेरे जन्म का समाचार सुनकर दिल का दौरा पड़ा था। मुझे दुख इसी बात का है कि पापा ने आज तक मेरा चेहरा सही ढंग से नहीं देखा था। मेरी फोटो जब कल पेपर में छपी तो गांव के लोगों ने पापा से बताया-तुम्हारी बेटी की फोटो छपी है। उनको विश्वास ही नहीं हुआ। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि ये सब क्या है? मैंने उनको प्रोग्राम के बारे में सब कुछ बताया, तो उन्हें अच्छा लगा। शायद पहली बार मेरे पापा ने मुझे गौर से देखा फिर गले लगाया और कहा, जाओ बेटी अपने सपने को पूरा करो।

मैंने बताया कि लड़की अब सब कुछ करती है। हवाई जहाज से लेकर ट्रेन तक चलाती है, ऑटो भी चलाती है। मैंने बताया कि ये सब जेंडर-वेंडर फिल्म में दिखाया गया था। इतना सुनने पर जब पापा ने मुझसे पूछा कि तुम क्या बनोगी, तो मैंने कहा-गायिका बनूंगी। पापा बोले- उसके लिए संगीत की जानकारी बहुत जरूरी है। मैंने कहा- मैं संगीत से ही बी.ए. कर रही हूं। और कालेज में नाम मम्मी ने लिखवाया है। मुझे खुशी इस बात की है कि समाज बदले या ना बदले, लेकिन मेरे पापा जरूर बदल गए। उन्होंने उस दिन पहली बार मुझे आशीर्वाद दिया-जाओ ''तुम निबंध प्रतियोगिता में जरूर प्रथम आओगी, तुम कुछ और नहीं, अपनी कहानी ही लिख देना''। मैं शुक्रगुजार हूं कल के प्रोग्राम(सपनों को चली छूने) के लिए, जिसने मेरे पापा को भी बदल दिया।

अलका कुमारी,
आर.बी.बी.एम. कालेज, मुजफ्फरपुर

जन्म से मौत तक प्रताड़ना का शिकार होती हैं लड़कियां

मैं एक लड़की हूं और जो समाज में महसूस करती हूं, उसे ही लिख रही हूं। एक लड़की पर अत्याचार तब से ही शुरू हो जाता है, जब वह गर्भ में पल रही होती है। कई बार उसे जन्म ही नहीं लेने दिया जाता, क्योंकि वह लड़की है। यदि उसका जन्म हो भी जाता है तो उसे हर तरह से भेदभाव व शोषण का शिकार बनाया जाता है। जैसे-लड़कों को अच्छा भोजन देना, लड़कियों को नहीं। लड़कों को खेलने, पढ़ने, जन्मदिन मनाने तक सब की आजादी मिलती है, लड़की को नहीं। इन सबसे वंचित कर उसे घरेलू काम करने के लिए कहा जाता है, बल्कि मजबूर किया जाता है। अगर कोई लड़की इसका विरोध करती है तो उसको मारा-पीटा जाता है, धमकाया जाता है। उसे तरह-तरह के बुरे शब्द जैसे-कुलक्षणी, चरित्रहीन इत्यादि कह कर ताने दिये जाते हैं। अगर उसकी शादी नहीं होती है तो भी उसे ही अपशब्द कहा जाता है। एक तो लोग खेलने-कूदने की उम्र में लड़की को घर संभालने की जिम्मेदारी दे देते है, उसकी शादी कर देते हैं। शादी होते ही उसे अधिक से अधिक दहेज लाने के लिए प्रताड़ित किया जाता है। घर के सारे काम करवाये जाते हैं, मारते-पीटते हैं सो अलग। दहेज न मिलने पर उसकी हत्या तक कर दी जाती है। मारने के लिए जिंदा जलाने से लेकर फांसी लगा देने तक के क्रूर तरीके अपनाये जाते हैं। लड़की को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रताड़ित किया जाता है, सिर्फ इसलिए कि वह लड़का नहीं है? दूसरी तरफ हर घर में मां दुर्गा को पूजा जाता है, वो भी तो एक कन्या या नारी है। फिर उसी घर में ऐसा अत्याचार क्यों होता है?

नारी के अनेक रूप है- मां, बहन, बेटी, बुआ, मांसी, पत्नी, चाची आदि। वह तो सभी तरह से अपने कर्तव्य को निभाती है। सबके बारे में सोचती है फिर पुरुष समाज क्यों नहीं उसके बारे में सोचता है? नारियां ठान लें तो वे इन सभी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं। विडंबना यह है कि एक तरफ कन्या पूजन का दिखावा और दूसरी तरफ समाज में स्त्रियों के साथ तरह-तरह के अत्याचार जारी हैं। भ्रूण-हत्या, बाल विवाह, दहेज प्रताड़ना, अशिक्षा इत्यादि सब कुछ लड़कियां वर्षों से झेल रही हैं, कोई कम कोई ज्यादा। मैं मानती हूं कि इन सब को दूर करने के लिए नारी-शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। मगर नारी-शिक्षा का विरोध करने वालों की भी कमी नहीं है। वे समझते है कि एक नारी का काम सिर्फ घर संभालना है। वे ये नहीं समझते कि इन सारे कामों को एक पढ़ी लिखी महिला जितने अच्छे ढंग से कर सकती है, उतने अच्छे ढंग से अनपढ़ नहीं। ससुराल में मां बनने के बाद लड़की और भी बंध जाती है। वह सोचती है कि अगर वह उत्पीड़न के चलते ससुराल छोड़ देती है तो उसके बच्चों का पालन-पोषण कौन करेगा? उसके पास जिंदा रहने के विकल्प भी कम होते हैं। वह मायके में पहले ही उपेक्षा और इतने कष्ट काट चुकी होती है कि वहां लौटना नामुमकिन लगता है। इन दो पाटों के बीच अत्याचार सहते हुए वह ससुराल में ही रहती है। इतनी असहाय जिंदगी एक न एक दिन खुद खत्म हो जाती है। उसे तड़पा-तड़पा कर मारा जाता है। बचपन से लेकर मृत्यु तक, यही कहानी चलती है। उसे अच्छी शिक्षा नहीं मिलती, इसलिए वह न अपने पैरों पर खड़ी हो पाती है, न अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर पाती है। कुछ लड़कियां मर्यादा और रिवाज के नाम पर चुप रहती हैं। सब कुछ जान कर भी

इसका विरोध नहीं करती। जब ये समाज हम लड़कियों के बारे में अच्छा नहीं सोच सकता, तो हमें ही कुछ करना होगा। सोच-समझ कर सही रास्ता तय करना होगा। अपने अधिकारों को जानना होगा। ये विश्वास रखना होगा कि हम अकेले नहीं हैं। हम चलेंगे तो साथ चलने वालों की कमी नहीं होगी, मगर हौसला तो चाहिए।

हार कर हम यूं बैठें, यह हमें मंजूर नहीं
हम मंजिल से दूर हैं, मंजिल दूर नहीं।
औरतें उठें नहीं तो जुल्म बढ़ता जाएगा।
जुल्मी ही सीना जोर बनता जाएगा।

यह सोच कर हमें आगे बढ़ना है। अपने अधिकार को पहचानना है और ये अफसोस नहीं करना है कि मैं एक लड़की (कमजोर) हूँ।

नीतू कुमारी,
गंगा वत्स चौखानी कालेज, मुजफ्फरपुर

प्रीतू प्रिया, एम.डी.डी.एम. कॉलेज, मुज्जफरपुर

नाना की बातों ने खूब रुलाया

परिचयः मैं एक लड़की हूं कोमल सी और ऐसी दुनिया में आयी हूं, जहां दहेज प्रथा की चुभन है और लड़के-लड़की में असमानता का बोलबाला है। फिर भी मुझे ऊंचे गगन को छूना है, कुछ बनकर दिखाना है। अपने सपने को पूरा करना है।

अन्य हकीकतः लड़की होना अपने-आप में गौरव की बात है, लेकिन हमारा समाज व हमारे माता-पिता इस बात को नहीं मानते। विवाह की रीतियां इतनी पुरुषवादी हैं कि शादी में कन्या पक्ष को दहेज देना पड़ता है, जबकि वंश चलाने के लिए लड़की-लड़के दोनों की जैविक भागीदारी समान होती है। दहेज के चलते मां-बाप की नजर में लड़की परिवार की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं की जड़ बनी होती है। यह सोचकर आज माता-पिता लड़की को जन्म देना ही नहीं चाहते।

मेरे अनुभव कुछ अच्छे हैं, तो कुछ बुरे भी। मैं बीसीए प्रथम वर्ष की छात्रा हूं लेकिन इसी बीसीए में नामांकन करवाने के लिये मुझे कितने पापड़ बेलने पड़े, ये मैं ही जानती हूं। मैं वर्ग नौ में थी, तभी से खुद ट्यूशन पढ़ाकर पढ़ाई का खर्च वहन करने लगी थी। जब बात बीसीए में एडमिशन की आयी तो मैं असहाय हो गई। आखिर मैं 10 हजार रुपये कहां से लाती। चूंकि मैं लड़की थी (यानी दहेज देकर होने वाली शादी के साथ मुझे परिवार से विदा किया जाना है), इसलिए मेरी पढ़ाई के प्रति कोई उत्सुक नहीं था। पापा (टालने के ख्याल से) कहते, अगले साल नामांकन करवाना। नानाजी कहते- जितना पढ़ ली, वही काफी है। ज्यादा पढ़ेगी तो उस लायक लड़का भी खोजना पड़ेगा।

मैं यह सब सुनकर अकेले में बहुत रोती। फिर एक दिन मैं अपने मौसा जी से बोली कि आप मेरा बीसीए में नामांकन करवा दीजिये। अगर मैं अपने लक्ष्य को पूरा करने में कामयाब हो गई, तो आपकी बेटी (अपनी मौसेरी बहन) को भी पढ़ा दूंगी। अब मैं उनके खर्च पर बीसीए तो कर रही हूं, लेकिन बाद में जब एमसीए में नामांकन की बारी आयेगी तो घर में बवाल मचेगा ही। हर कोई मुझसे यही सवाल करेगा कि तुमने अपने शहर (जहानाबाद) से बाहर जाकर पढ़ने की बात सोची भी तो कैसे? वे लोग कभी मुझे पटना या कहीं और एमसीए करने की इजाजत नहीं देंगे। उनका तो यही जवाब होगा- शादी कर दूंगा, उसके बाद जहां तक पढ़ना हो पढ़ती रहना।

मैं आप से, जो इस निबंध को पढ़ रहे हैं, पूछती हूं कि क्या शादी के बाद (जैसी कठिन परिस्थितियां प्रायः होती हैं) लड़कियां अपनी पढ़ाई जारी रख सकती हैं? शादी के बाद तो लड़कियां अपने ससुराल में व्यस्त हो जाती हैं। उन्हें नए परिवार की हर उम्मीद पर खरा उतरना होता है, इसलिए पढ़ाई का समय मिलता ही कब है?

निष्कर्षः अन्त में मैं यही लिखना चाहूंगी कि कैसे भी हो, मुझे अपने सपने को पूरा करने के लिए एमसीए करना है। चाहे इसके लिए मुझे पूरे परिवार के सदस्यों से बगावत क्यों न करनी पड़े। मैं हर कठिनाई को पार करते हुए एमसीए करूंगी और बेहतर जॉब पाकर अपनी मनोकामना पूरी करूंगी।

(कतिपय कारणों से लेखिका का नाम प्रकाशित नहीं किया जा रहा है)

बार-बार एहसास कराया गया कि क्या होता है लड़की होना

जब मैं संसार में आयी तो मुझे कई तरह से अनुभव कराया गया कि यदि मैं एक लड़की हूं तो कैसे लड़कों से भिन्न और असमान हूं। बार-बार बताया जाता रहा कि लड़की होना कैसे दूसरे दर्जे का होना है। शुरुआत बचपन से हुई। जब मैं करीब तीन साल की हुई तो मुझे यह बताया गया कि तुम बैठकर शू-शू करो जबकि मेरा भाई खड़ा होकर करता था। मुझे उस समय भी अनुभव कराया गया कि मैं एक लड़की (अर्थात कम महत्वपूर्ण) हूं, जब मैं उससे कुछ बड़ी हुई। मुझे कम फीस और सतही पढ़ाई वाले सरकारी स्कूल में दाखिल कराया गया, जबकि मेरे भाई को महंगे प्राइवेट स्कूल में। मुझे उस समय भी यह कटु अनुभव हुआ कि मैं एक लड़की हूं, जब मैं पांच साल की हुई, मेरा बिस्तर और मेरे भाई का बिस्तर अलग हो गया।

शारीरिक रूप से भिन्न होने का एहसास फिर तब हुआ, जब मेरा मासिक धर्म शुरू हुआ। लड़की-लड़के की अलग-अलग शरीर रचना तो प्रकृति की खूबसूरती है, लेकिन दोनों से असमान व्यवहार समाज की बदसूरत पहचान है।

मेरे मां-पिताजी मुझे बहुत प्यार करते हैं। वे मेरे लिए दुनिया के सबसे अच्छे माता-पिता हैं, लेकिन सामाजिक दबाव में भेदभाव मेरे साथ भी हुआ। इस सबको ध्यान में रख कर मैंने दसवीं की परीक्षा अच्छे अंक से पास कर आईएएस बनने का सपना देखा है। मुझे परिवार की ओर से किसी प्रकार का दबाव नहीं मिलता कि तुम यही करो। मैं एक दिन जरूर आईएएस बनूंगी। कुछ लोग यह सुनकर मेरा मजाक उड़ाते हैं। उस समय मुझे अनुभव होता है कि मैं एक लड़की हूं इसलिए मुझे लोग ताना देते हैं। मेरे माता पिता जी कभी ऐसा नहीं कहते। यह मेरी ताकत है। मैं अपनी इच्छा और सपने को मारना नहीं, बल्कि जीवित करना चाहती हूं। जीवन में सफल हो कर मैं असमानता के ब्लैक बोर्ड पर सफेद अक्षरों से समानता लिखना चाहती हूं।

सपना,
एस.के.महिला कालेज, जहानाबाद

क्या सिर्फ पुरुष की भोग्या बनने के लिए लिंग चयन रोकी जानी चाहिए?

जलती बहुएं करें पुकार, बंद करो यह अत्याचार॥

यह सिर्फ एक नारा नहीं, बल्कि एक सुलगती हकीकत है। दहेज एक सामाजिक कलंक है। जब तक विवाह प्रथा से दहेज की बाध्यता खत्म नहीं होती, लड़की के प्रति या तो दूसरे-तीसरे दर्जे का व्यवहार होता रहेगा या उसका जन्म अमंगल माना जाता रहेगा। यह दहेज प्रथा ही है, जिसके चलते किसी घर में एक से अधिक लड़की पैदा होने से मायूसी छा जाती है। दहेज के खौफ से ही लड़कियों को जन्म लेने से रोक दिया जाता है। कन्या भ्रूण हत्या दरअसल दहेज प्रथा की दहशत का शर्मनाक नतीजा है, लेकिन इन दिनों फैशन सिर्फ कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अभियान चलाने का है। यानी, समस्या की जड़ पर हमला करने की अपेक्षा लोग कुछ कसैले फल तोड़ कर क्रांतिकारी दिखना चाहते हैं। मैं भी एक लड़की हूं और सोचती हूं कि आज लड़कियों को हर जगह से बहुत सारी सुविधाएं दी जा रही हैं। सुविधाएं मिलने के बाद भी बहुत सी लड़कियां अनपढ़ रह जाती हैं। कई तो काफी कम उम्र में घर-गृहस्थी संभालने लगती हैं। बारह-तेरह वर्ष में ही शादी हो जाती है। एक कारण तो यह है कि मां-बाप बेटी को हमेशा बेटे से कम समझते हैं। वे शायद भूल रहे हैं कि हमारे देश की बेटियां भी बेटों से कम नहीं। कल्पना चावला, किरण बेदी, सुनीता विलियम्स और प्रतिभा देवी सिंह पाटील आदि भी तो इस देश की ही बेटियां हैं, जिन पर सबको गर्व है।

मैं भी एक बेटी हूं और चाहूंगी कि मैं भी कुछ ऐसा करूं कि देश में नाम रोशन हो। समाज को लड़की के नजरिये से देखने पर मैंने ये बातें लिखी हैं। अब मैं अपने बारे में लिख रही हूं। इसमें ऐसा अनुभव भी शामिल है, जिसे याद कर अक्सर मैं रो पड़ती हूं। मेरे दो भाई हैं। मुझे बचपन से संगीत का शौक है। इस तरफ रुझान मेरे पापा-मम्मी ने ही करवाया। जब कभी मैं टीवी पर आडीशन (स्वर परीक्षा) देखती, मुझे लगता कि काश, मैं भी आडीशन देने जाती, मेरा भी सेलेक्शन होता, तो कितना अच्छा रहता। विडंबना यह है कि मुझे जीवन और संगीत का शौक देने वाले मेरे मां-पापा ने मेरे बारे में कभी सोचा ही नहीं कि ये भी किसी मंच पर जा कर कुछ गा सकती है।

मेरी मां हर वक्त यही कहती है कि रोहित (छोटा भाई) को आडीशन देने के लिए भेजेंगे। उसका सेलेक्शन जरूर हो जाएगा। मेरी मां ने मेरे बारे में कभी नहीं सोचा। मैं उसके सपने से बाहर थी। इतना ही नहीं, एक दिन जब मैं घर में गाना गा रही थी, मां ने मुझे बहुत डांटा और कहा कि इतना जोर से गाना-गाया जाता है? मैंने पूछा कि मैं जोर से कहां गा रही हूं मां, तो वह बोलीं- जोर से गाओ या धीरे से, हर वक्त गाना जरूरी नहीं है। लड़कियों को गंभीर रहना चाहिए। शांत रहना चाहिए, ज्यादा हंसना नहीं चाहिए। लड़कों से बात नहीं करनी चाहिए। मुझे याद है, मैं जब कभी हंसती भी थी, तो मां मुझे डांटती थी। मैं यह पूछना चाहती हूं कि क्या लड़कियां गा नहीं सकतीं? हंस नहीं सकतीं? लड़कों से बात नहीं कर सकतीं? क्या लड़की को कुछ करने का कोई हक नहीं है? क्या बेटी होना इतना बड़ा अभिशाप है? मां की बात याद आती है, तो मैं रोने लगती हूं। हालत यह है कि मायके में डांट-फटकार

कर लड़कियों पर एकतरफा कायदे-कानून थोपे जाते हैं और ससुराल में दहेज के लिए प्रताड़ित करने से लेकर उसकी हत्या तक कर दी जाती है। उसके सपनों की परवाह नहीं की जाती। जब समाज अपनी बहू-बेटियों के साथ ऐसा सुलूक कर रहा है, तो क्या सिर्फ पुरुष की भोग्या बनने के लिए लिंग चयन रोकी जानी चाहिए?

प्रियंका कुमारी,
एस के महिला कॉलेज, जहानाबाद

स्मिता रानी, मगध महिला कॉलेज, पटना

वे पढ़ाई बंद करा कर मुझसे सिर्फ ब्याह और बच्चे चाहते थे

मैं एक लड़की हूं। आने वाले कल का सुनहरा भविष्य हूं। जो चाहूं वो कर सकती हूं। मुझे अपने ऊपर पूरा विश्वास है कि मैं अपनी मंजिल पाकर ही दम लूंगी। जहां तक बात है मेरी जिंदगी की, तो उसके अनुभव चुनौती भरे हैं। चुनौती से जूझने पर ही मुझमें इतनी ताकत पैदा हुई है।

कभी घरवालों ने कम उम्र में मेरी शादी तय कर दी थी। लड़के वालों ने दहेज मांगा और जल्दी से बच्चे पैदा करने के लिए शादी करना चाहा। उन्हें मेरी पढ़ाई पर भी आपत्ति थी। लेकिन मैं कम-से-कम अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी और 18 वर्ष की उम्र के बाद ही शादी करना चाहती थी।

इसके लिए मैंने अपने मां-बाप को समझाया। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।

यह मेरे लिए जिंदगी का नाजुक लम्हा था। अन्त में मैंने शादी के लिए साफ मना कर दिया और अपने सख्त फैसले पर अड़ी रही। आखिरकार सबों को झुकना पड़ा और आज मैं अपने मंजिल की ओर बढ़ रही हूं। मेरी शादी कट गई।

लड़के वालों ने दूसरी जगह शादी कर ली। मेरी बिरादरी में कोई अपनी लड़की से मुझे दोस्ती नहीं करने देता, उनका कहना है कि मैं उन्हें खराब कर दूंगी। मैं अकेली लड़ रही हूँ, मुझे इसकी कोई परवाह नहीं। बचपन से ही मेरी मंजिल एक उम्दा डाक्टर बनना है, जिसे मैं पूरा करके ही दम लूंगी। मैंने जिंदगी में मुझसे भी ज्यादा लड़कियों को मजबूती से अपने हक के लिए लड़ते देखा है। मैं भी किसी से कम नहीं हूं। मैं चाहूं तो हवा का भी रुख मोड़ सकती हूं। चाहे जो भी हो मैं अपने लक्ष्य को पाकर ही दम लूंगी। मैं डाक्टर ही बनूंगी।

सलमा सुल्तान,
एम.एम.एम. कालेज, आरा

पढ़ाई बंद कराने के लिए ससुराल में अत्याचार, तलाक भी न मिला

सिद्धांत में लड़की होना भले ही गर्व की बात हो, प्रकृति और ईश्वर का उपहार भी हो, लेकिन समाज में जो हकीकत है, वह तो अधिकतर लड़कियों के लिए कतई सुखद नहीं है। मैंने अपनी अब तक की जिंदगी में आंसू भरी जो राह तय की है, उसके अनुभव के आधार पर यह सब लिख रही हूं। मैं पढ़ना चाहती थी। मां-बाप का सहारा बनना चाहती थी। अपने सपने पूरा करना चाहती थी, परंतु हालात, घिसे-पिटे रिवाज या किस्मत ने सब पर पानी फेरने की कोशिश बार-बार की।

जब मैं 13 वर्ष की थी, वर्ग 8 में पढ़ती थी। मेरे पिता की तबीयत खराब हो गई। वे बीमारी के साथ-साथ इस चिंता से परेशान थे कि उनके बाद बेटी का क्या होगा? लिहाजा, पढ़ाई जारी रखने के वादे के साथ मेरी शादी करा दी गई। उस समय लड़के वाले कहते थे कि मैं लड़की को पढ़ाऊंगा। शादी के बाद ससुराल वाले पलट गए। खुद लड़के यानी मेरे पति ने कहा कि लड़की अब पढ़ कर क्या करेगी? लड़की को तो शादी के लिए ही पढ़ाया जाता है। अब तो इसकी शादी हो गई। अब क्या जरूरत है इसे पढ़ाने की? इस वादाखिलाफी और कुतर्क ने मुझे रुला दिया।

मेरा सपना था कि पढ़-लिख कर कुछ बनूंगी, मगर मेरे पैर में (धोखे से) जंजीर बांध दी गई थी। पढ़ाई बंद हो गई। फिर भी मैं न तो निराश हुई, न हार मानी। इसके चलते शुरू हुआ शारीरिक उत्पीड़न का दौर। ससुराल वाले और पति (जिसे परमेश्वर बताया जाता है) मुझे बहुत सताते थे, मारते थे। आखिर एक दिन मुझे घर से निकाल दिया गया। मैं बहुत रोयी, मगर उन पर मेरे आंसुओं का कोई असर नहीं हुआ। मैंने मां को खत लिख कर आपबीती बतायी और कहा कि यह भी कोई जिंदगी है? मैं पढ़ना चाहती थी तो मेरी शादी हो गई। अब मेरे साथ इतना जुल्म हो रहा है। इससे अच्छा होगा कि मैं मर जाऊं। ऐसी दुखदायी चिट्ठियां लिखने की नौबत हमारे समाज में बहुत सी लड़कियों की जिंदगी में आती है। कई बार मायके वाले इसे हल्के में लेते हैं और उधर ससुराल में लड़की मार दी जाती है या उसे आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया जाता है।

किस्मत ने कुछ साथ दिया कि मेरी मां ने खत पढ़कर मुझे बुला लिया। मैं फिर से पढ़ने लगी। ससुराल वालों ने यहां भी चैन से जीने नहीं दिया। अब मुझे स्कूल जाते समय रास्ते में मारा पीटा जाने लगा। तरह-तरह के ताने दिये जाने लगे। एक दिन तो रास्ते में मेरे पति ने मुझे बहुत मारा। पब्लिक ने बचाया। तंग आकर मैंने कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। तलाक लेने के लिए अर्जी दी। उधर पढ़ाई जारी रखी। किसी तरह से मैं आठवीं और नवमी कक्षा पास कर पायी। उसके बाद करीब दो वर्ष केस चला।

अदालत ने मुझे अच्छी तरह से रखने और दसवीं पास कराने के ससुराल वालों के आश्वासन पर विश्वास कर विवाह बंधन बचाने का मौका दिया। मुझे फिर ससुराल आना पड़ा,लेकिन अदालत की परवाह किये बिना फिर मेरे साथ वही सब हुआ। पहले की तरह लड़का (जिसे पति कहने का जी नहीं करता) मारने-पीटने लगा। पुरुष होने के दंभ में वह मुझे कोसने लगा कि पढ़ाई कर मुझसे आगे निकला चाहती है। मैं हर दुख सहती रही। इसी तनाव भरे दौर में मैंने बेटी और बेटे को जन्म दिया। वे दो बच्चों के पिता बन कर भी नहीं सुधरे। मैं फिर अलग हुई। अपनी जिंदगी सुधारने के लिए दसवीं कक्षा में पढ़ने लगी। अब वह मेरे घर पर आकर मुझे और मेरी मां तक को मारने लगा, पापा तो पहले ही मर गए थे। कुछ लोगों के बहुत समझाने पर वह मेरे बेटे को लेकर भाग गया, लेकिन बेटी को छोड़ गया। यह भी पुरुषवादी सोच का नतीजा था। मैं बेटी को लेकर मायके में रहने लगी। उसके बाद मैं जब दसवीं का टेस्ट दे रही थी, उसने फिर मुझे बहुत रोकने की कोशिश की। मैं नहीं रुकी। अच्छी श्रेणी में आने का सवाल ही नहीं था। थर्ड डिवीजन ही सही, मैं पास कर गई। यह परीक्षा जिंदगी के कठिन सवाल हल करते हुए दी गई थी, इसलिए मेरा यह डिवीजन किसी फर्स्ट क्लास से कम नहीं है। अब मैं आई.काम में प्रथम वर्ष में पढ़ाई कर रही हूं। कुछ बनना चाहती हूं। अपने बच्चों को कुछ बनाना चाहती हूं। मजदूरी करके अपनी बच्ची की परवरिश कर रही हूं।

सभ्य समाज, अदालत, कानून और सरकार के बावजूद मेरा संघर्ष तो लगभग तन्हा है। कुछ न कुछ गम तो सबको मिलता है, लेकिन जीवन तो चलने का नाम है। मैं भगवान से विनती करती हूं कि वे मुझे आगे बढ़ने की शक्ति दें। मैं नदी की तरह बहती जाऊंगी, राह रोकने वाले ईंट-पत्थरों को हटाते-मिटाते हुए। भरोसा है, एक दिन अपनी मंजिल को जरूर पाऊंगी।

(कतिपय कारणों से लेखिका का नाम प्रकाशित नहीं किया जा रहा है)

मुशर्रत प्रवीण, एस.एम. कॉलेज, भागलपुर

ईश्वर का वरदान है लड़की होना

मैं एक लड़की हूं, नारी हूं और इस रूप में ईश्वर ने मुझे अनेक अच्छे गुण दिए हैं। दया, स्नेह, ममत्व, समर्पण, सहनशीलता आदि मेरे अंदर हैं। इसे मैं ईश्वर द्वारा अपने लिया पाया गया वरदान मानती हूं, जिससे मेरे जीवन में पूर्णता आई। अतः लड़की होने का अनुभव बेहद गर्व से भरा है। मैं दुष्टमर्दन में चामुण्डा, संग्राम में कैकेयी, अनुराग में राधा, अर्द्धांगिनी में सीता, वीरता में लक्ष्मी बाई के समान रहकर जीवन के हर क्षेत्र में कुछ करना चाहती हूं। मैं जननी रूप में सृष्टिकर्ता हूं। स्त्री-पुरुष दोनों की रचना मैं ही करती हूं। इस प्रकार अपने गुण-संस्कार बच्चों में भरकर राष्ट्र को एक कुशल नागरिक प्रदान करती हूं। 'श्री' तथा 'लक्ष्मी' के रूप में मैं ही पुरुषों के जीवन को दीप्त तथा पुंजित करती हूं। इतना बड़ा योगदान है मेरा। यह सब मेरे नारी होने के कारण ही है। अतः गर्व है मुझे अपने लड़की होने पर।

लड़की होने के कारण मेरे खुद के अनुभव बहुत अच्छे रहे हैं। जब-जब मैं सफल होती हूं मेरे मां-बाप गर्व से सर उठाकर कहते हैं कि ये सफलता मेरी बेटी ने हासिल की है। यह सुनते ही मुझे खुद पर गर्व होता है कि मैंने एक बेटे की तरह उनकी अपेक्षाओं को पूर्ण किया है। लड़की होने के कारण हर जगह अधिक सम्मान प्राप्त हुआ है। जब मैंने इंटर में अच्छे अंक हासिल किए थे तथा मुख्यमंत्री की उपस्थिति में मुझे सम्मानित किया गया था, तब मेरे माता-पिता ने मेरे लड़की होने के कारण अधिक गर्व महसूस किया। मैं जीवन के हर क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा सकती हूं।

निधि कुमारी,
गवर्नमेंट गर्ल्स कालेज, पटना

हंस कर बात करती हूं कि बेबसी कहीं मजाक न बन जाए

मैं एक लड़की हूं, लेकिन इससे पहले मैं एक मनुष्य हूं, जिसमें सब कुछ है, जैसे- संवेदनशीलता, विचार और बुद्धि आदि। लेकिन मैं एक लड़की हूं, इसलिए अपने हर अनुभवों को दबा कर रखती हूं, डरती हूं कि किसी से कहने पर वो मेरा मजाक न बना दे। मां-पिताजी से कहने पर वो चिंतित हो जाएंगे। मैं प्रयास करती हूं कि अपनी सारी बातें लिख डालूं। जब से मुझे याद है- मैं छोटी थी, सभी मुझे दब्बू कहते शायद मेरा अपीयरेंस ही वैसा था। जब मेरी बड़ी दीदी पढ़ती तो देखने में बहुत मजा आता था और मेरी इच्छा हुई मैं भी कुछ लिखूं-पढ़ूं ताकि सभी मेरी तारीफ करें। मैंने छोटी सी कहानी लिखी और बहुत खुशी हुई सबने मेरी बहुत बड़ाई की। वो मेरा पहला उत्साहवर्धन (इनकरेजमेंट) था, पहली खुशी थी। सबके आशीर्वाद ने मुझे एक ऐसे संस्थान में पहुंचाया जहां निःशुल्क पढ़ाई की 12 तक। जवाहर नवोदय विद्यालय। पापा-मां दिन-रात मेहनत कर सबकी पढ़ाई का खर्च देते, लेकिन उनकी इच्छा पूरी न हो सकी-बेटियों को डाक्टर बनाना चाहते थे, पर पैसों के अभाव में मेडिकल की पढ़ाई पूरी नहीं हो सकी। ऐसा हुआ मेरी दीदी के साथ। मुझे बहुत दुःख हुआ, फिर मैंने निश्चय किया कि अपने मां-पिता के सपनों को पूरा करूंगी। क्लास 10 तक ये इच्छाएं मेरे मनोबल को आगे बढ़ाती गई। मैंने अच्छे परिणाम पाए। 11वीं व 12वीं में पढ़ाई में कमी आई। वो थे मेरे बुरे अनुभव। बहुत उदास हुई थी मैं। कुछ डिसीजन नहीं कर पा रही थी। अंततः आर्ट्स में एडमिशन लिया। मेरा छोटा भाई इंजीनियरिंग की तैयारी कर रहा है। मैं चाहती तो जिद कर सकती थी, लेकिन बड़ी हो चुकी थी। सब कुछ का ज्ञान था मुझे। मेरी परिस्थिति ने मुझे चुप रहने को कहा, क्योंकि मां-बाप ने कभी बेटे-बेटियों में फर्क महसूस नहीं होने दिया। हमेशा कहते बेटी ज्यादा समझदार होती हैं, शायद इसी समझदारी ने मेरी इच्छाओं को दबा कर रख दिया। अब मैं चाहकर भी साइंस नहीं पढ़ सकती। अब भी रोती हूं, जिसे कोई महसूस नहीं कर सकता। हमेशा हंसकर बातें करती हूं, ताकि कोई परेशानी को देखकर मजाक न उड़ाए, मेरा फायदा न उठाए- बस यही है मेरी कहानी, एक गरीब परिवार की बेटी की। लड़कियां समझदार होती हैं, लेकिन इसमें उन्हें बहुत बलिदान देने पड़ते हैं, और वे देती भी हैं।

मेघा,
मगध महिला कालेज, पटना

लड़का मुझसे कम पढ़ा हो तो भी वह मेरा देवता, मैं उसकी दासी

प्रकृति हम सभी जीव-प्राणियों की जन्मदात्री है। प्राणियों में सबसे समझदार होने की वजह से मनुष्य ने एक तरफ अपनी विकास यात्रा के क्रम में प्रकृति को साधने की कोशिश की, तो दूसरी तरफ समाज निर्माण के नियम-कायदे भी बनाये। हमारा समाज प्रकृति प्रदत्त कम, मानव अनुशासित अधिक है। अन्य प्राणियों में नर-मादा के व्यवहार प्रकृति तय करती है, लेकिन सभ्य समाज में स्त्री-पुरुष के व्यवहार नियमों में बंधे होते हैं। दोनों के बीच यौन संबंध तो प्राकृतिक हैं, लेकिन दोनों की स्थिति समाज तय करता है। समाज उन्हें किस नजर से देखता है, क्या अधिकार प्रदान किए गए हैं, कैसे संसाधन प्रदान करता हैं, उनके कार्य-विभाजन क्या हैं, इन सारी बातों पर स्त्री-पुरुष की स्थिति भिन्न हो जाती है। हमारा समाज चूंकि पितृसत्ता से ग्रस्त है इसलिए नियम-कानून, परम्पराएं, रीति-रिवाज पुरुषों के द्वारा, उनकी सुविधानुसार ही बनाए गए हैं। हालत यह है कि स्त्री को केवल इस्तेमाल करने की चीज या सजावट का समान समझकर मर्द उस पर आधिपत्य जमाता आया है। महाभारत का द्रौपदी-चीरहरण इसी मानसिकता का ज्वलंत उदाहरण है।

मेरा मानना है कि पुरुष आम तौर पर महिलाओं को किसी चीज में आगे बढ़ने देना नहीं चाहते। विवाहिता के लिए घूंघट करना इसलिए जरूरी बनाया गया कि वह किसी अन्य पुरुष को न देख सके और न कोई दूसरा उसकी ओर आकर्षित हो सके। पाव में घुंघरू और पायल इसलिए होते थे कि जैसे ही वह इधर-उधर जाए, उस पर नजर रखी जाए। ये महिलाओं को नियंत्रित रखने की योजना (साजिश) थी, जिसे बाद में महिलाओं ने अज्ञानतावश खुद ही अपने साज-श्रृंगार के रूप में अपना लिया। दासता के उपकरण फैशन बन चुके हैं। मैं एक लड़की हूं, शिक्षित हूं, अपने अधिकारों के प्रति सजग हूं। लेकिन इस पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियोचित गुणों की परिभाषा कुछ और है। लड़की होने के नाते मुझे शर्माना, खाना बनाना, सिलाई-कढ़ाई और अन्य घरेलू कार्यो में निपुण होना चाहिए। अधिक पढ़ाई अगर गलती से कर ली तो भी अपना ध्यान चौका-बर्तन में लगाना होगा। जब शादी की उम्र हो जाए और लड़का मुझसे कम पढ़ा-लिखा हुआ, तो भी वह मेरा देवता और मैं उसकी दासी हूं। अगर उसने मुझे बेवजह मारा-पीटा तो उसके कृत्य को कोसने की जगह इसे मेरे पूर्व जन्मों का पाप बताया जाएगा। वह जो कहे, परंपरा के नाम पर सहन करना पड़ेगा। जैसा कि महिलाओं के साथ होता है, उन्हें शिक्षा के अधिकार, संपत्ति रखने के अधिकार, सेक्स संबंध के अधिकार आदि से वंचित कर दिया जाता है। शिक्षा वर्तमान युग में महिलाओं का सबसे बड़ा हथियार हैं। इसके बल पर वह अपने आप को सशक्त बना सकती है। नारी सशक्तिकरण के लिए सरकारी, गैर-सरकारी संगठन, महिला संगठन आदि बहुत से काम करते दिख रहे हैं।

व्यावसायिक और शैक्षणिक आरक्षण देने की पहल भी हुई है, लेकिन रास्ता लंबा है। इससे महिलाओं को रोजगार मिलेगा। उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी, लेकिन समाज में उनकी स्थिति सुधारने के लिए इतना ही काफी नहीं है। महिलाओं का जीवन स्तर बेहतर हो, लेकिन केवल इसी से समाज की

व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं हो जाएगा। यह समाज अचानक मातृसत्तात्मक नहीं हो जाएगा। नारी अपनी शारीरिक-आर्थिक सुरक्षा के लिए पुरुष पर आश्रित है। यौन-उत्पीड़न, बलात्कार जैसी घटनाओं से अपने आप को बचाने के लिए वो सहमी है। सुरक्षा करने वाला वह पुरुष ही तो दूसरी तरफ भक्षक हो जाता है। बड़ा सवाल यह है कि हम अपने को आर्थिक रूप से तो सशक्त कर सकते है लेकिन महिला और पुरुष के भेद को कैसे मिटाएंगे? मैंने भी एक सपना देखा है क्योंकि मैं भविष्य तय कर सकती हूं और आजाद समाज में खुला रहना चाहती हूं। हर लड़की को हक है कि वो अपने सपनों को पूरा करे। हम क्या नहीं कर सकती हैं? समाज को हमें बोझ समझने वाली मानसिकता छोड़नी पड़ेगी। लड़की हमेशा सुख में दुख में साथ निभाने वाली है,वो दोस्त है, पत्नी और मां भी है, लेकिन समाज ने उसे हमेशा झुकाने का ही प्रयास किया है। मुझको गर्व है कि मैं एक लड़की हूं, जिससे यह सम्पूर्ण समाज अस्तित्व में हैं।

पल्लवी वर्मा,
मगध महिला कालेज, पटना

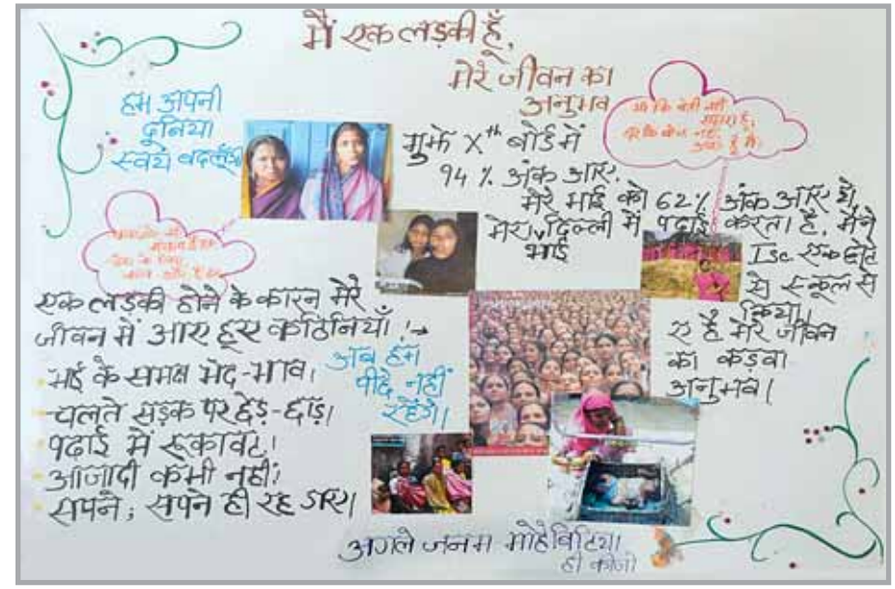

नेहा, पटना विमेंस कॉलेज, पटना

अब भी परिवार का बोझ मानी जाती हैं लड़कियां

एक दिन जब मैं अपनी सहेली के घर गई। वहां मैंने देखा कि उसके परिवार में लड़के और लड़कियों में भेदभाव किया जाता था। खाने में मेरी सहेली रमा (नाम बदला हुआ) को चावल, दाल, सब्जी, जबकि उसके भाई को रोटी, दाल, सब्जी और दूध भी। यह देखकर मैं हैरान रह गई। मुझे कुछ समझ में नहीं आया कि एक परिवार में रहने वालों के बीच इतना अंतर क्यों? यहां तक कि खाना भी वे एक समान नहीं खाते थे। उसकी मां ने भी वही भोजन किया, जो रमा ने किया था। जब मैंने अपनी दोस्त से इस बारे में पूछा तो उसका जवाब कि मैं एक लड़की हूं। मुझे उसका उत्तर कुछ समझ में नहीं आया। मैंने उससे पूछा कि इसका क्या तात्पर्य है? तुम लड़की हो तो मैं भी लड़की हूं, इसमें कोई नई बात नहीं है। मेरी दोस्त ने कहा कि चूंकि वह लड़की है, उसे पौष्टिक भोजन खाने की कोई जरूरत नहीं, वह अगर रोटी, दूध नहीं भी खाएगी तो चलेगा, परंतु उसके भाई को पौष्टिक भोजन मिलना अनिवार्य है। वह घर का इकलौता लड़का है, वह भविष्य में मां-बाप का सहारा बनेगा और मुझे तो शादी कर परिवार छोड़ना पड़ेगा। यह सब रेख कर मैं आश्चर्य में पड़ गई। घर वापस आ गई।

घर आकर मैंने ये सारी बातें अपनी मां से कहीं। मैं यह देखकर हैरान थी कि इन बातों का मेरी मां पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने मुझे बताया कि अभी भी लड़कों और लड़कियों में अंतर किया जाता है। उन्हें समाज में वह प्रतिष्ठा नहीं मिल रही है, जो पुरुषों को मिलती है। भले ही वो तुम्हारी सहेली के खानपान , पहनावे, खेलने-कूदने एवं शिक्षा में दिखा हो। लड़कियों को हर कदम पर त्याग करना पड़ता है। लड़कियों को अपनी शिक्षा पूरी करने का हक नहीं है। कुछ तो अनपढ़ ही रह जाती हैं। ज्यादातर लड़कियों को मैट्रिक के आगे पढ़ने की अनुमति नहीं होती। उसके बाद शादी कर दी जाती है। शादी हुई कि उनके माता-पिता पर से बोझ उतर गया। उन्हें बोझ ही माना जाता है जिन्हें वह जल्द से जल्द उतारना चाहते हैं। लोग नहीं चाहते कि उनके घर कोई लड़की पैदा हो, क्योंकि वे उसे ब्याह कर किसी दूसरे को सौंपे जाने वाली इकाई (पराया धन) मानते हैं। इसीलिए लड़की पर कोई खर्च करना उन्हें धन बर्बाद करना लगता है। लोग इसी ख्याल से बेटियों की अच्छी परवरिश नहीं करते। देखा जाए तो विवाह के साथ कन्या का दान (दूसरे व्यक्ति और परिवार को सौंपना) एक ऐसी प्रथा है, जो लड़कियों की सामाजिक स्थिति को कमजोर करती है।

बेटे का दान नहीं होता। वह परिवार की संपत्ति बना रहता है, इसलिए उसमें परिवार पैसा लगाता है, निवेश करता है। लड़की के विवाह में दहेज के रूप में मोटी रकम भी देनी पड़ती है। कन्यादान और दहेज प्रथा के चलते लड़कियां उपेक्षित होती हैं। जब तक ये हालात नहीं बदलेंगे, कन्या के महत्व पर उपदेश, प्रवचन और आलेख से ज्यादा फर्क नहीं पड़ेगा।

इन सब बातों को सुनकर मैं रो पड़ी। मैंने अपनी मां से कहा कि क्या वे भी मुझे बोझ समझती है। उन्होंने कहा कि नहीं, मैं तुमको बोझ नहीं समझती। बोझ तो वे लोग समझते हैं, जिन्हें लड़कियों के गुणों के बारे में पता न हो। उस दिन से मैंने ठान लिया कि लड़कियों पर हो रहे इस अत्याचार के खिलाफ लड़ने की कोशिश करूंगी ताकि मेरी मां की तरह किसी भी लड़की को उसके मां-बाप बोझ न समझें।

थोड़ी अलग हूं मैं
मुझे दिखाई देती है
दुनिया की खूबसूरती
हर चुनौती में दिखाई देते हैं,
कई मौके
अच्छा लगता है कुछ नया करना,
खुश रहना
जिंदगी को खुल कर जीना
क्योंकि मैं अतीत नहीं, भविष्य हूँ।

नन्दिनी कुमारी
ए.एन. कालेज, पटना

अपराजिता किशोर, एम.डी.डी.एम. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

मैं भी बालिका बधू बनी पर हार नहीं मानी

मैं मानपुर (गया) की रहने वाली एक साधारण सी लड़की हूं। मेरी शादी सिर्फ साढ़े तीन वर्ष की उम्र में हुई। तब से मैं लगातार ससुराल और मायके में रही हूं। हमेशा यही सोचती कि आखिर मेरी शादी इतनी छोटी सी उम्र में क्यों हो गई? जब मुझे अनुभव हुआ कि बाल-विवाह एक बहुत बड़ा अभिशाप है, तब से हमेशा ये सोचती कभी अगर मौका मिला तो मैं अपने समाज से इस दुरीति को दूर भगाऊंगी। इसके चलते कितनी तकलीफ उठानी पड़ी थी मुझे। न चाहकर भी मुझे ससुराल जाना पड़ता और वहां के सारे काम करने पड़ते। मेरी इच्छा थी कि मैं भी प्राइवेट स्कूल में पढ़ूं पर ये भी सपना रह गया था क्योंकि वहां की जिम्मेवारियां इतनी छोटी उम्र में मुझे मिल गई कि हमेशा के लिए एक बंद पिंजरे में रह गई।

अगर मैं दिल से काम करके भी पढ़ाई के लिए समय निकालूं तो जरूर पढ़ूंगी। वही अनुभव लेकर सरकारी स्कूल में नामांकन करवा कर सिर्फ एक घंटे का टयूशन पढ़ने लगी। दिन में घर का काम करती और रात को पढ़ाई करती। मेरा एक छोटा देवर भी मेरे वर्ग में ही पढ़ता था। दिन-रात पढ़ाई करता उसे देखकर मेरा भी मन करने लगा कि काश मैं कुंवारी होती। तो मैं भी पढ़ाई करती और खेलती पर जिस समय बच्चों के खेलने का समय आता मुझे काम करना होता। फिर इसी तरह मैं दशम् वर्ग में पहुंच गयी। उसी तरह दिन में काम करके रात में पढ़ाई करती हुई। मेरा देवर भी मेरे वर्ग में ही था। हम दोनों ने साथ में मैट्रिक की परीक्षा दी पर परिणाम ऐसा आया कि सभी लोग दंग रह गए मैं प्रथम श्रेणी में आयी थी पर मेरे देवर का रिजल्ट रुक गया। उस दिन से मेरी सासू मां ने मुझे और आगे पढ़ने की अनुमति दे दी। वो दिन मेरा सबसे खुशी का दिन था। अगर कोई मेहनत करे और दिल में लगन हो तो रास्ते खुद-ब-खुद बन जाते हैं। मेरे पिता जी भी मुझसे इतने खुश हुए कि सभी को मिठाई खिलायी गई। खुशी से मेरा नामांकन गया कालेज में करवाया गया। उस दिन मेरी आंखें आंसुओं से भरी थीं कि अगर मेरी शादी बचपन में हो भी गई थी तो मुझे आज कोई गम नहीं हैं, क्योंकि मुश्किलें आदमी को जीना सीखा देती हैं और मुझे भी जीने की एक सच्ची राह मिल गई। फिर मैंने अपने ही घर टयूशन पढ़ाना शुरू कर दिया जो बहुत गरीब हैं और उनकी शादी बचपन में हो गई हो। वो टयूशन अभी तक पढ़ा रही हूं जिसमें शादी-शुदा लड़कियां आती हैं और पढ़ाने के साथ-साथ उन्हें ये भी सिखलाती हूं कि हमारी शादी छोटी उम्र में हो गई है फिर भी इसके लिए हमें चिंता नहीं करनी हैं। हमें हौसला रखकर अपने से बड़ों को ये बताना है कि शादी की सही उम्र क्या हैं? मैंने ये पूरा विश्वास रखा है कि एक दिन मेरे समाज से खुद बड़े लोग ही कहेंगे कि बाल विवाह को जड़ से हटाना है। मैं लड़कियों से ये जरूर कहना चाहूंगी कि जीवन में निराश नहीं होना,मंजिल तुम्हारे कदम चूमेगी।

सीता कुमारी,
गया कालेज, गया

शादी उसी से की जो दहेज लेने के खिलाफ था

लड़की होने के नाते मेरे अच्छे अनुभव ज्यादा हैं। मेरी पढ़ाई में कोई परेशानी नहीं आई। कहीं भी मेरे माता-पिता ने मेरे और मेरे भाई के बीच कोई अंतर नहीं रखा। जब मैं छोटी थी, मुझे बहुत प्यार मिला। जब स्कूल जाने लायक हुई तो अच्छे स्कूल में मेरा नामांकन हुआ। मैं महाविद्यालय तक आई। यहां भी शिक्षक शिक्षिकाएं लड़कियों के साथ भेद-भाव नहीं करते हैं। लड़कियों के लिए भारत सरकार और बिहार सरकार की ओर से ऐसे कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, जिसका लाभ सिर्फ लड़कियों को मिल रहा है। इस पर मुझे खुशी होती है कि मैं भी एक लड़की हूं। अगर मैं लड़का होती, तो मुझे इन सब लाभों से वंचित रहना पड़ता। मैं पढ़ाई के साथ-साथ अपने घर के कामों में अपनी मां की मदद करती हूं, जो कि मेरा भाई नहीं कर सकता। मां कहती है मेरी बेटी ही ठीक है, जो मदद करती है और पढ़ती भी है। मेरी शादी हो चुकी है। जब मैंने अपनी शादी का विरोध किया, तब मेरी मां नहीं मानी। मैंने कहा था, एक ही शर्त पर शादी करूंगी, वह यह कि शादी बिना दहेज के होगी। तब मेरी मां ने बताया कि लड़के ने दहेज लेने से मना कर दिया है और अपने माता-पिता को भी समझाया कि मुझे पैसे से शादी नहीं करनी है। उसने कहा-मुझे लड़की से शादी करनी है। आपको जितना भी पैसा चाहिए, वो मैं कमा के दूंगा लेकिन मैं शादी बिना दहेज के करूंगा।

इस पर मुझे खुशी हुई एक कि समझदार लड़के के साथ मेरी शादी हो रही है। मुझे उस पर गर्व हुआ। इतना ही नहीं, ससुराल में भी मेरी पढ़ाई जारी है। मेरे पति पढ़ाई के बारे में बहुत सजग हैं। वो मुझे आत्मनिर्भर देखना चाहते हैं। मेरी सासू मां भी मुझे पढ़ने से नहीं रोकती। जब मेरे पति मेरे भाई-बहन को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने की कोशिश कर रहे हैं, तो मुझे बहुत खुशी होती है। लड़की होने के नाते मेरे अनुभव कुछ बुरे भी हैं। जब मैं कभी अपनी मां को बिना बताये खेलने भी चली जाती, मां गुस्सा करती लेकिन वहीं मेरे भाई पर गुस्सा नहीं करती। लड़की होने के कारण मैं कभी अकेले कहीं भी नहीं जा सकती थी। मां कहती तुम किसी को साथ लेकर जाओ। मुझे बुरा लगता, जब कालेज जाते वक्त मुहल्ले के लोग उपेक्षा की दृष्टि से देखते। जब मैं अपने आस-पास किसी भी लड़की पर अत्याचार होते देखती हूं, तो बहुत डर लगता है।

पूजा कुमारी,
गंगा देवी महिला कालेज, पटना

दोस्त दगा दे तो भी समाज लड़की से ही पूछता है सवाल

सृष्टि के आरंभ में ईश्वर ने शायद यही कल्पना की होगी कि जब उन्होंने दो भिन्न प्रकृति, शरीर एवं शीलगुणों के साथ आदमी एवं औरत को एक दूसरे का पूरक बनाया है, तो दोनों एक सुंदर संसार को निर्मित करेंगे। आज भी इनके बीच एक दूसरे के प्रति अति आकर्षण है, जो प्रेम में प्रकट होता है। शुरुआत में दोनों जरूरत पड़ने पर सहायता आदि करने की कसमें खाते हैं। लड़की जो कि मधुर एवं सांवेगिक प्रकृति की होती है, इन प्रारंभिक बातों को गांठ बांध लेती है। बात कुछ आगे बढ़ती है। वे एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं। लड़का अपनी मीठी बातों से उसे विश्वास में लेता है और फिर कुछ महीनों तक यह सिलसिला चलता रहता है। लड़की को अपने परिवार में कई तरह के सवालों का सामना करना पड़ता है। कई निर्देश मिलते हैं। फिर एक दिन उसे यह पता चलता है कि वह जिसे दोस्त समझ रही थी, वह तो उसकी देह का भूखा है।

वह वापस अपने घर परिवार से इस बारे में बात करना चाहती है। परिवार वाले पहले तो उसे लड़की होने के नाम पर कोसते हैं। फिर लड़की की मां को यह एहसास होता है कि उसके तथा उसकी बेटी के बीच गलतफहमी की दीवार चढ़ी है। मगर तब तक उस लड़की की दुनिया उजड़ चुकी होती है। वह मानसिक रूप से न तो अपने परिवार वालों के खिलाफ हो सकती है और न ही वह उस दोस्त के साथ रह सकती है, जो भरोसा तोड़ चुका हो। अजीब-सी कशमकश में झूलती हुई वह अपने जन्मदाता की शरण में ही रहना पसंद करती है। लड़की अपने धोखा खाए अतीत को भुलाकर आगे बढ़ना चाहती है, पर हाय रे समाज! वह उसे हर वक्त सवालिया नजरों से देखता है, मानो गलती सिर्फ लड़की की हो और उसे इसका एहसास कराया जा रहा हो। मगर अब लड़की को यह विश्वास हो चुका है कि वह असाधारण है और उसे अपने जैसी कई अन्य लड़कियों के लिए संघर्ष करना होगा। ऊपर वर्णित वह लड़की कोई और नहीं, स्वयं मैं ही हूं। मुझे मेरे परिवार वाले जितना भी कम अहमियत दें, मुझ पर थोड़ा ही विश्वास क्यों न करें, मैं उसी के सहारे आगे बढ़ना चाहती हूं। मैं लड़की हूं मगर अब मैंने समाज का चेहरा देख लिया है। अपने आत्मविश्वास से ही मैं अपने माता-पिता और समाज के लोगों को महिलाओं के सबल होने का प्रमाण देना चाहती हूं। मैं यहां अपनी इन लाइनों को लिखना चाहूंगी -

न रोको मेरी यूं कलम?
जो बढ़ाना चाहती है उस नारी को,
जिसे रोका गया है हर कदम
न रोको मेरी यूं कलम?
जो बसाना चाहती है वह गुलशन,
जिसे रौंदा गया है हर कदम?
न रोको मेरी यूं कलम?

(कतिपय कारणों से लेखिका का नाम प्रकाशित नहीं किया जा रहा है)

हर जगह आगे बढ़ने से रोकी जाती हैं लड़कियां

मैं अपने माता-पिता और भाई से बहुत प्यार करती हूं। मेरा अनुभव यह है कि लड़की ज्यादा सहनशील और मजबूत दिल की होती है। मैंने जब एनएसएस (नेशनल सर्विस स्कीम) का कैम्प अटेंड किया, तो वहां बहुत सारी बातें सीखने को मिलीं। हम लोगों को बहुत सारे गांव ले जाया गया। मैंने देखा कि जितनी जिज्ञासा औरतों और लड़कियों में होती है, उतनी लड़कों में नहीं थी। मगर मैंने यह भी देखा कि औरतों और लड़कियों को आगे बढ़ने का मौका नहीं दिया जाता है। उनके परिवार वाले उन्हें स्कूल नहीं जाने देते। उन्हें जल्द से जल्द शादी के बंधन में बांध दिया जाता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। आज के समय में लड़की किसी से पीछे नहीं है। लड़किया अंतरिक्ष तक में जा रही हैं। सीमा पर चौकसी भी कर रही है। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं रहा कि जहां लड़कियां नहीं पहुंची हों।

मैंने जब एनसीसी लिया तो हमारे परिवार वाले खिलाफ थे, लेकिन कालेज की मैडम की वजह से एनसीसी में भाग ले पाई। मैंने अपना एक लक्ष्य चुना कि मुझे 26 जनवरी पर दिल्ली जाना है और अगर मैं रिपब्लिक डे कैम्प में गई तो मैं राजपथ पर जरूर चलूंगी। जब हमारा यह कैम्प शुरू हुआ तो हमारे साथ बहुत सारी रुकावटें सामने आई क्योंकि मैं एक लड़की हूं। मैंने पूरे हौसले के साथ सामना किया। दिल्ली तक पहुंचा दी गई। किस्मत ने भी साथ दिया। हमारा सेलेक्शन राजपथ के लिए भी हुआ। उपराष्ट्रपति की टी पार्टी में भी हुआ और राष्ट्रपति के यहां भी जाना हुआ। बिहार से कुल तीन लड़कियों का चयन हुआ जिसमें एक मेरा नाम भी था। जब हमारा समय 26 जनवरी को राजपथ पर चलने का आया तो मुझे बिल्कुल ही विश्वास नहीं हो रहा था कि हमारा सपना पूरा हो गया। अपने पापा के लिए मैंने पास भी बनवाया था कि वो भी वहां पर बैठ कर देख सकें।

जब मैंने राजपथ पर चलना शुरू किया तो आंखों में खुशी के आंसू भर आये और हमारे पापा भी भावुक होकर रो पड़े कि बेटी ने इतना नाम रोशन किया। मैं गया से ऐसी दूसरी लड़की थी। अब पापा का सपना है कि मैं डिफेंस में जाऊं। यह सपना जरूर पूरा होगा मुझे पूरा विश्वास है। लड़की को ऐसे ही सर्वशक्तिमान दुर्गा नहीं कहा गया है।

पूनम कुमारी,
गौतम बुद्ध महिला कॉलेज, गया

ज्यादातर परिवारों में उपेक्षित ही हैं बेटियां

हर एक दिशा में मैं छाई,
नभ और गगन मेरी आभा,
मैं 'गृहलक्ष्मी,' मुझसे ही
है इस पूरे ग्रह की शोभा।
मैं एक सुमन, मैं जहां रही,
जीवन भर उसको महकाया,
पर हाय! पुरुष, मैंने तुमसे,
उसके बदले में क्या पाया?
मैं 'देवी' कहलाकर, दबी रही,
और दबी रही सदियों यूं ही,
मैं प्राणयुक्त प्राणी होकर भी,
जीवन भर निष्प्राण रही।

स्त्री जीवन की विडंबना और त्रासदी का मर्म छूती ये पंक्तियां सामाजिक परिवर्तन का आह्वान करती हैं। 'मैं एक लड़की हूं' यह कहने में मुझे व मेरे परिवार को गर्व है। मेरा जन्म एक सभ्य, सुशिक्षित व व्यापक विचारधारा वाले परिवार में हुआ है, पर खेदजनक यह है कि सारी बेटियां इतनी भाग्यशाली नहीं। समाज में ऐसे परिवारों की बहुलता है, जहां पुरुष अपने अहं की पुष्टि के लिए नारियों को रौंदते हैं। उन्हें शिक्षा, सम्पत्ति व निर्णय के अधिकार और उत्तम स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित रखते हैं। मुझे मेरे परिवार से स्नेह मिल रहा है। शिक्षा व विचार-सम्प्रेषण की स्वतंत्रता भी मुझे प्राप्त है, लेकिन मैंने महसूस किया है कि समाज में लोगों की नजरों में मैं 'बेटी' या 'बहन' नहीं होती हूं। उनकी नजरें सिर्फ उपहास या हेय भावना की परिचायक होती हैं। जब फब्तियां कसी जाती हैं, व्यंग्य का पात्र बनाया जाता है, तब मैं कमजोर नहीं पड़ती।

कहते हैं 'ईश्वर ने जिस मिट्टी से नारी को गढ़ा, उसमें नमी अधिक थी। अतः हमें त्याग, कोमलता, करुणा की प्रतिमूर्ति माना जाता है। अपमान, प्यार-तिरस्कार की भावनाएं समान रूप से मौजूद हैं।' पुरुष तो हर युग में क्रमशः राम या रावण बनता रहा, पर नारियां हमेशा अग्नि-परीक्षा देती आयी हैं। आखिर यह सारी अपेक्षा हमसे ही क्यों? अगर हमारे साथ छेड़छाड़ सड़कों पर खुलेआम भी हो रही है, तो समाज मूकदर्शक होता है, उपेक्षा हमारी ही होती है। हमने हमारी दादियों के मुंह से सुना है कि उनके जमाने में काफी पाबंदियां थीं। बहुत से बदलाव के बावजूद यह स्थिति आज भी मौजूद है। ईश्वर ने हमें कम नहीं, ज्यादा ही शक्ति दी है- हमारा मानसिक सम्बल हमें टूटने नहीं देता।

इकबाल के शब्दों में, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन, दौरे-जहां हमारा।' समाज हमें 'देवी' कहकर न पूजे पर इंसान तो समझे। नारियां आज अंतरिक्ष से लेकर गृहस्थी तक की कमान समान मुस्तैदी से संभाल रही है। बात सुनीता विलियम्स या कल्पना चावला, इंदिरा गांधी या प्रतिभा पाटिल, इंदिरा नूयी या एंजेला मार्केल पर ही खत्म नहीं होती, हमारा नमन उन सब औरतों को है, जो स्वयं को शक्तिशाली साबित कर रही हैं। वाकई मुझे उस दिन का इंतजार है, जब मैं भी जहां जाऊं, समान स्नेह व सम्मान पाऊं।

स्नेहा आशीष,
एस.एम. कालेज भागलपुर

अंकिता कुमारी, जी.बी.एम. कॉलेज, गया

अत्याचार से तंग आकर उसने खुदकुशी की, वह मेरी मां थी..

मैं एक लड़की हूं, लड़की जो दुनिया बदल सकती है। मैं न तो झांसी की रानी हूं, न इन्दिरा गांधी, न किरण बेदी और न ही मैं दुर्गा मां हूं। पर मैं इन सबसे आगे हूं। इसकी वजह यह है कि मैंने इन सभी महान महिलाओं को जाना है। इनसे कुछ न कुछ सीखा है। लड़कियां भी आगे बढ़ सकती हैं। ये बातें तो किताबों में लिखी होती है।

दूसरी तरफ है हकीकत की दुनिया। हम लड़कियां जब धरती पर आती हैं, तभी से कठिनाइयों की शुरुआत हो जाती है। जब पता चलता है कि मां के गर्भ में बेटी है, तो उसे मार दो, यदि नहीं मारा गया तो लड़की के जन्म पर कोई उसे देखने नहीं आता। कोई खुश नहीं होता (महिलाएं भी नहीं)। किसी तरह से उसका पालन-पोषण किया जाता है। उस बेटी पर कोई ध्यान नहीं देता। उसके सपनों और जरूरतों की कोई चिंता नहीं की जाती।

हर तरह से, हर रिश्तों में, हर बात पर हम लड़कियों को ही बलिदान की शिक्षा दी जाती है और यही करना भी पड़ता है। हर मोड़ पर जिन्दगी हमारा इम्तिहान लेती है। इस सबके बावजूद हम पढ़कर जीवन में आगे बढ़ती हैं। हम बहुत कुछ करती हैं अपने देश और परिवार के लिए। यह सब थीं मेरी मन की बातें।

आज मैं जीवन के एक ऐसे अनुभव से परिचित करवाना चाहती हूं, जो शायद ही किसी ने किया होगा। एक लड़की की जब शादी होती है, तो वो हजार सपने लिए ससुराल आती है। पर तब क्या होता है, जब उसका हर सपना टूट जाता है। उसकी मानसिक हालत बिगड़ने लगती है। पर फिर भी वह बिना हार माने जीवन से लड़ती है। सबको खुश रखने की कोशिश करती है। हर रिश्ता निभाती है, लेकिन उसकी फिक्र कोई नहीं करता। कोई उसकी आवाज नहीं सुनता।

जब औरत के साथ ज्यादती होती है, कभी-कभी कानून से भी सहारा नहीं मिलता। जिस कानून के पास जाओ, उत्पीड़न का दिन, महीना, तारीख पूछा जाता है। अगर एक भी जवाब गलत, तो अपराधी सजा से बच जाता है। ऐसा ही एक औरत के साथ हुआ। उसकी ससुराल वाले उस पर अत्याचार करते थे। बहाने बना कर उसे मारते-पीटते। तरह-तरह की बातें सुनाते। फिर भी वह चुप रहती। सब कुछ सहते-सहते उसकी मानसिक अवस्था बिगड़ने लगी। जब उस औरत के माता-पिता ने इसके खिलाफ शिकायत दर्ज करवायी, तो हर अत्याचार का ब्योरा पुलिस ने दिन- तारीख के साथ मांगा। अदालत में भी यही सब हुआ। सुनवाई के दौरान महिला एक घटना की सही तारीख नहीं बता पाई। बस, इसी चूक पर ससुराल वाले बच गए। उस प्रताड़ित औरत के दो बच्चे थे। किसी तरह उसने पाला-पोसा और बड़ा किया। वह भी इसलिए कि उसके पति का थोड़ा सा सहारा मिला हुआ था। कुछ वक्त के बाद उसकी मानसिक अवस्था इतनी बिगड़ गई कि उसने जहर खा कर खुदकुशी कर ली। आज उन बच्चों के पिता उसके पति ने दूसरी शादी कर ली। बच्चों को दादी के पास छोड़ दिया, वही अत्याचार सहने के लिए जो उसकी माँ ने सहे थे। वो बच्चे तो आवाज नहीं उठा सकते थे, आखिर वो कहां जाते?

वह औरत मेरी मां थी। वह इस दुनिया में नहीं है, लेकिन उसका भोगा हुआ दुख मेरे बुरे अनुभव का हिस्सा है। मैं बस इतना पूछना चाहती हूं कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है? मै भी एक लड़की हूं और मैं अपना भविष्य अपनी मां की तरह नहीं देखना चाहती।

(कतिपय कारणों से लेखिका का नाम प्रकाशित नहीं किया जा रहा है)

रोजी कुमारी, एम.डी.डी.एम. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

उस दिन सवालों का सागर उमड़ पड़ा था

जब से मैंने होश सम्भाला है, मैं बस यही सुनती आई कि हमारे परिवार में लड़के और लड़की के बीच कोई अन्तर नहीं है। दोनों हमारे लिए बराबर हैं। ये कहना था मेरे माता-पिता का और मैंने उसे आंखें बन्द कर मानने की कोशिश भी की। पर न जाने क्यों वो कहते कुछ थे पर करते कुछ और। एक लड़की होने के नाते मुझे कई छोटी-छोटी बातों पर डांट खानी पड़ती।

फिर मैंने मान लिया कि शायद यही दुनिया की रीति है। और फिर मेरे माता-पिता मेरा बुरा तो नहीं ही सोचेंगे। यहीं पर मैं गलत थी। एक दिन की बात है जब मैं नौंवीं कक्षा में पढ़ती थी। अपने दोस्तों को जींस पहने देखती तो मेरे मन में भी इच्छा हुई कि एक बार मैं भी इसे पहनूं। मैं सलवार-कमीज में आत्मविश्वास नहीं महसूस कर पाती थी। मैंने अपनी अभिलाषा पिता जी के समक्ष रखी। उनका जवाब था-अभी नहीं, जब तुम्हारी शादी हो जाएगी तब सारे शौक पूरे कर लेना।

खैर, इतना कह कर पापा तो वहां से चले गए पर मेरे अंदर सवालों का सागर उमड़ पड़ा। एक लड़की को शादी के पहले अपने माता-पिता के इशारों पर चलना है, शादी के बाद पति के मनमाफिक और बाद में सयाने हो चुके बच्चों की इच्छा के अनुसार। वह आखिर अपना जीवन अपनी मर्जी से जीती कब है? जब मैंने तो आज तक नहीं देखा पापा को अपनी पत्नी (अर्थात मेरी मां) की इच्छा पूरी करते हुए, तो मैं कैसे विश्वास करूं कि कोई पुरुष पति बनने पर मेरी इच्छाएं भी कभी पूरी करेगा?

फिर 'सुबह' हुई, मेरी नई जिन्दगी की और उस सुबह की पहली किरण को साक्षी मान कर मैंने प्रण लिया कि भले ही मेरी सारी इच्छाएं पूरी न हो पर मैं लड़ूंगी। बारहवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करने के उपरान्त मेरे माता-पिता मुझे डाक्टर बनाना चाहते थे क्योंकि वह लड़कियों के लिए सुरक्षित होता है पर मैं पत्रकारिता के क्षेत्र में जाना चाहती थी। उन्होंने तीखा विरोध किया। मैंने सोचा अगर आज मैं रुकी तो शायद फिर कभी नहीं बढ़ पाऊंगी और न जाने वो कौन सी शक्ति थी, जिसने मेरे आगे, लगातार महीनों चली बहस के आगे मेरे घर वालों को झुका दिया। लेकिन मैं जानती हूं, ये अंत नहीं है। आगे, फिर मेरे माता-पिता मार्केट सेफ्टी का सवाल लेकर मेरे कदमों को रोकने का प्रयास करेंगे। पर अब मैं तैयार हूं और मैं जीवन में बहुत आगे जाना चाहती हूं ताकि एक दिन अपने घरवालों से और दुनिया वालों से गर्व से कह सकूं 'हीरा अगर है बेटा, तो सच्चा मोती होती हैं बेटियां।'

श्रद्धाश्री,
पटना वीमेंस कालेज, पटना

क्यों बेटियों के जन्म पर आंसू बहते हैं?

अपने उस अनुभव को मैं आज बताने जा रही हूं जो कि आज तक मैंने किसी से न कहा है, न शायद फिर कह ही पाऊंगी। जब मैं इस दुनिया में पहली बार आयी, तो सब कीआंखों में आंसू थे। अगर किसी को अफसोस नहीं था, तो वह इंसान सिर्फ मेरी मां थी। मां का मुझे काफी समर्थन मिला। उसी के बल पर आज मैं साहसी लड़कियों में मानी जाती हूं। मेरी कहानी एक आम लड़की की कहानी है। लड़के-लड़कियों के बीच जो भेद-भाव किया जाता है, उसे मैं दूर करना चाहती हूं। मैं सवाल करती हूं- वे सवाल जो सभी लड़कियों के अंदर उठते हैं। क्यों हमें लड़कों से कम महत्व दिया जाता है? क्यों बेटियों के जन्म पर आंसू बहते हैं? इन सवालों के जवाब हम स्वयं प्राप्त कर सकते हैं। अक्सर नारी ही नारी पर अत्याचार का माध्यम बनती है। मां ही बेटी पर तरह-तरह की रोक लगाती है। बेटी, यहां-वहां मत जाओ, उससे बात मत करो, आदि आदि। परंपराओं के नाम पर जारी बहुत सारी बंदिशों को हमें तोड़ना ही होगा! समाज को बदलना होगा। हमें प्रत्येक पुरुष में नारी की ज्योति जगानी होगी और प्रत्येक नारी में पुरुष का आत्मविश्वास जगाना होगा। पुरुष-नारी में कोई फर्क नहीं करना चाहिए। मैं आने वाले समय में समाज में व्याप्त इस जड़ता को दूर करने का प्रयास करूंगी। यही मेरा सपना है।

मही मांगती प्राण-प्राण में, सजी कुसुम की क्यारी।
स्वपन-स्वपन में गूंजे सत्य, पुरुष-पुरुष में नारी??
त्याग सिर्फ लड़कियों के हिस्से क्यों?

मैं एक लड़की हूं और जहां तक मैं समझती हूं, लड़की होना कोई पाप नहीं, पर ये समाज सोचने पर मजबूर कर देता है कि तुम बेकार की चीज हो, तुम्हारा कोई अपना वजूद नहीं है। तुम कमजोर निर्बल और असहाय हो। एक लड़की किसी की बहन हो सकती है, किसी की मां बन सकती है, किसी के जीवन में उसकी पत्नी बन सकती है पर उसका कोई अपना अस्तित्व नहीं होता है। वह किसी की पत्नी, मां या बहन के रूप में जानी जाती है। उसकी कोई अपनी पहचान नहीं होती है। जिंदगी में जो भी समर्पण या त्याग की भावना होती है, उसे सिर्फ लड़कियों को सिखाया जाता है कि तुम त्याग की मूर्ति हो। लेकिन मैं इस रूढ़िवादी समाज से जानना चाहती हूं कि क्यूं लड़कियां ही त्याग और बलिदान की सूली पर चढ़ाई जाती हैं? हम लड़कियों को समाज में सिर उठाकर चलने की इजाजत नहीं है। हम स्वतंत्रतापूर्वक अपने काम नहीं कर सकती हैं। हर जगह रोक-टोक की जाती है कि तुम एक लड़की हो इसलिए ऐसा मत करो-वैसा मत करो। इससे इज्जत पर आंच आएगी। क्या इज्जत का भार सिर्फ लड़कियों पर है? नहीं, हमें इस सोच को मिटाना होगा। इसके लिए लड़कियों को मानसिक रूप से सशक्त होना पड़ेगा। हम लड़कियां इस समाज की एक अभिन्न अंग हैं। मैं आई.ए.एस. आफिसर बनना चाहती हूं। मुझे मेरे सपने प्रेरणा बनकर हिम्मत देते हैं। मैं किसी से कह नहीं सकती कि मैं क्या करना चाहती हूं। मेरे सपनों की कोई भाषा नहीं है, बस उसकी है मंजिल। मैं एक दिन जरूर दिखा दूंगा कि मैं भी कुछ हूं। मैं सिर्फ एक असहाय लड़की नहीं हूं। मुझमें कुछ कर गुजरने की तमन्ना है, अपनी बदौलत दुनिया को यह बता देना चाहती हूं कि एक लड़की सब कुछ कर सकती है। मुझे लड़की होने पर गर्व है।

कोमल कुमारी,
आर.बी.बी.एम. कालेज, मुजफ्फरपुर

अहसास दिलाना चाहती हूँ कि मेरा जन्म माता-पिता की भूल नहीं

मैं एक लड़की हूं पर पूरा विश्वास है कि एक दिन बहुत आगे जाऊंगी। मैं अपने सपनों को पूरा करूंगी, क्योंकि माता-पिता को यह अहसास दिलाना चाहती हूं कि उन्होंने मुझे इस दुनियां में लाकर कोई भूल नहीं की। मैं संघर्ष करूंगी और अपने राष्ट्र के लिए एक उदाहरण बन पाऊंगी। मेरा विश्वास है और यह कहा भी गया है कि लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। मैं दूसरी बहनों से भी यही कहूंगी कि तुम लड़की हो और तुम्हारे अंदर भी शक्ति है, तो इसका पूरा उपयोग करो। किसी के अत्याचारों को मत सहो, तभी तुम सफलता पा सकोगी। अगर सफलता पाना चाहती हो, तो लक्ष्य को हमेशा सामने रखो। दूसरी लड़कियों को भी सलाह दो, उन्हें यह अहसास दिलाओ कि तुम मर्दो से कम नहीं। नारी ही चण्डी है, भवानी, दुर्गा और काली भी नारी ही है। इस शक्ति को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लगाना जरूरी है। इसके लिए नारी-शक्ति में एकता बनाये रखने की जरूरत है। पौराणिक कथा के अनुसार जब महिषासुर जैसे दानव ने पूरे देवलोक को त्रस्त कर रखा था, तब सभी देवता देवी पार्वती के पास गए थे और उनकी प्रार्थना पर कई देवियों ने मिलकर चण्डी का रूप धारण किया। इस शक्तिपुंज चंडी ने महिषासुर और अन्य राक्षसों का भी वध किया। नारी एकता के बल पर हम आज स्त्री-विरोधी अत्याचार के दानव का अंत कर सकते हैं। जरूरत सिर्फ मजबूत इरादों की है।

प्रीति कुमारी,
स्वामी सहजानंद कॉलेज, जहानाबाद

बेटियॉ भी सहारा बनेंगी, उन्हें शिक्षा और आजादी चाहिए

मैं आईए प्रथम वर्ष की छात्रा हूं। मेरा भाई बड़ा है और बहन मुझसे छोटी है। मेरे पापा लकड़ी का काम करते है। उनकी कमाई से ही हमें घर चलाना पड़ता है। मैं पढ़-लिख कर पुलिस अफसर बनना चाहती हूं। मुझमें हौसला है कि पढ़ कर कुछ कर दिखाऊं, माता-पिता का नाम ऊंचा करूं। दूसरी तरफ लोग कहते है कि लड़की कुछ नहीं कर सकती। वह केवल घरेलू काम करेगी और खाना पकाएगी। क्या लड़कियां इसीलिए होती हैं कि उन्हें जन्म देकर एक नर्क की जिन्दगी जीने के लिए छोड़ दिया जाए? मैं अपने मम्मी-पापा का भविष्य हूं। मैं जितना पढ़ना चाहती हूं, पढ़ाया जाए और मंजिल तक पहुंचने में सहायता की जाए। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हूं ताकि दुनिया आगे जाकर मुझे ताना ना मारे कि ये लड़की पढ़ी-लिखी नहीं है। कोई न कहे कि इसे कुछ नहीं आता यानी, यह किसी पर बोझ है।

अपने इस इरादे पर मम्मी-पापा की बेरुखी नहीं देख सकती। मैं चाहती हूं कि मम्मी-पापा और भाई-बहनों के सपनों को पूरा करूं। वे लोग दुख काटें, यह मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। हम लड़कियां भी लड़कों की तरह नौकरी कर सकती हैं। मैं अपनी पारिवारिक समस्याओं को समझती हूं और यथासंभव हल भी निकाल लेती हूं। इस बदलते जमाने में पढ़ाई बहुत जरूरी है। मैं चाहती हूं कि हर लड़की पढ़े। लड़की ही बड़ी होकर नारी बनती है। देश में कभी नारियों की पूजा की जाती थी। नवरात्र में कन्या पूजन का प्रचलन तो आज भी है, लेकिन उन्हें वाजिब हक नहीं दिये जाते। नारियों को अपने हक के लिए लड़ना पड़ता है। मेरा यह विश्वास है कि दुनिया की हर नारी स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना चाहती है। बंदिश में नहीं बंधना चाहती। जिस प्रकार बेटा अपने माता-पिता का सहारा होता है। उसी प्रकार बेटियां भी अपने माता-पिता का सम्मान होती है। जिस घर में बेटियां होती हैं, उस घर में खुशियां रहती हैं। लेकिन लड़कियों पर इतनी बंदिशें लगाई जाती हैं कि वे अपने अरमानों को दबा देती हैं। मैं चाहती हूं कि बेटियों पर बेवजह बंदिशें नहीं लगाई जाएं, ताकि वह सपनों को छू सके। इसके विपरीत देखती हूं कि आस-पड़ोस की लड़कियां घर के काम भी करती हैं और घरवालों के ताने भी सुनती हैं। मैं लड़कों की तरह अपने माता-पिता का सहारा बनना चाहती हूं और चाहती हूं कि सारी लड़कियां मेरी तरह अपने माता-पिता का सहारा बनें। केवल लड़कों की तरह आजादी पाना और कपड़े पहनना नहीं चाहती, बल्कि उनकी तरह परिवार का दायित्व भी निभाना चाहती हूं। इस नजरिये से ही लड़का-लड़की के प्रति समानता का भाव आयेगा। मैं एक लड़की हूं और चाहती हूं कि जिन माताओं के गर्भ में लड़कियां पल रही हैं, वो उनको न केवल जीवन प्रदान करें, बल्कि उन्हें पढ़ा-लिखा कर अपने पैरों पर खड़ा होने लायक भी बनायें। स्त्री-पुरुष अनुपात ठीक करने के नाम पर कन्याओं को केवल ब्याहे जाने के लिए पैदा किया जाना भी स्त्री का अपमान ही है। जरूरी तो यह है कि उन्हें भी लड़कों की तरह स्वतंत्र, शिक्षित और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व गढ़ने दिया जाए। तभी लड़कियां भी मां-बाप के लिए बुढ़ापे का सहारा बन सकेंगी। तब उनके जन्म पर कोई उदास नहीं होगा।

प्रियंका कुमारी,
एम एम एम कालेज, आरा

लड़की हो, लड़की जैसी रहो

मुझे अपने लड़की होने पर गर्व है। सौभाग्यवश, मैं ऐसे परिवार की हूं, जहां मुझे लड़की होने की वजह से न कभी सजा मिली, न कोई भेदभाव किया गया। मुझे वे सब सुविधाएं मिलीं, जो एक लड़के को मिलती हैं। माता-पिता ने लड़के-लड़कियों में फर्क नहीं समझा। मेरा भी मानना है कि हम लड़कियां वह सारे काम कर सकती हैं, जो एक लड़का कर सकता है। रही बात शारीरिक फर्क की, तो यह तो भगवान या प्रकृति का विधान है। अलग-अलग देह प्रकृति की जरूरत भी है, इसकी खूबसूरती भी। गड़बड़ी तो आदमी के बनाये नियम और सोच से पैदा होती है।

आज भी हमारे समाज में ऐसे परिवार हैं, जिनका मानना है कि लड़कियां वह नहीं कर सकतीं, जो लड़के कर सकते हैं। अरे, लोग यह क्यों नहीं मानते कि समाज बेटियों पर न विश्वास करता है, न उन्हें समान मौका देता है। आप खुद उसे हिम्मत दें कि हां तुम वह सब कुछ कर सकती हो, तो लड़कियां और बेहतर करती दिखेंगी।

अक्सर परिवार वाले कहते हैं कि बेटी है, बाहर नौकरी करने जाएगी तो लोग क्या कहेंगे? लेकिन वे ये क्यों नहीं जानते कि ये समाज उन्हीं लोगों से है। अगर वे ये मान जाएं कि बेटा और बेटी में कोई फर्क नहीं है, तो समाज भी धीरे-धीरे मान जाएगा। ये समाज हमें किस बात की सजा देता है? सब कहते हैं लड़की नौकरी नहीं कर सकती। अपने मन से कुछ नहीं कर सकती। अपने से नीचे या अपने से उच्च जाति के लड़के से शादी नहीं कर सकती। इसमें कुछ पूर्वाग्रह है, कुछ बंदिशें। मैं कहती हूं कि जब ये अधिकार हमें खुद सरकार देने को तैयार है और दे रही है, तो समाज कौन होता है उसे रोकने वाला? हम लड़कियों पर हमेशा दबाव क्यों दिया जाता है कि तुम लड़की हो, लड़की जैसी रहो? क्या लड़की को खुल कर जीने का कोई हक नहीं है?

श्रीमती प्रतिभा पाटिल (राष्ट्रपति) औरत होकर जब पूरे देश को चला रही हैं और वे सारे काम कर रही हैं, जो एक पुरुष भी न कर सके, तो स्त्री कमजोर कैसे है?

कल्पना चावला, इंदिरा गांधी, सोनिया गांधी ..ये सब महिला ही तो हैं। जब औरत सारे काम कर सकती है, तो फिर लड़कों को ऊंचा दर्जा और लड़कियों को नीचा दर्जा क्यों दिया जा रहा है? दुख की बात है कि इस पुरुष प्रधान देश में आज भी लड़कियों को वह सम्मान नहीं मिल रहा है, जो उसे मिलना चाहिए और जो उसका अधिकार भी है।

आज भी लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही मारा जा रहा है। दहेज के लिए जलाया जा रहा है। आखिर ये सारे जुल्म हम लड़कियों पर ही क्यों? लड़कों को जन्म से पहले नहीं मारा जाता, क्योंकि वह बड़ा होकर वंश को आगे बढ़ाएगा, मां-बाप की सेवा करेगा, उनका नाम रोशन करेगा और सहारा बनेगा। तो क्या लड़की अपने मां-बाप की सेवा नहीं करती, वह अपने मां-बाप का नाम रोशन नहीं करती? कल्पना चावला के मरने के बाद भी लोग उसे याद करते हैं। बाहर कहीं अगर उसका परिवार निकलता होगा तो कहते होंगे, ये देखो, कल्पना चावल का परिवार है। वह भी तो एक लड़की थी। रही बात वंश बढ़ाने की, तो जब हम लड़कियां ही नहीं होंगी, तो वंश कहां से आएगा? फिर लड़कियों के

परिवार को हमेशा लड़कों के परिवार के आगे झुकना क्यों पड़ता है? ये प्रथा पलटी क्यों नहीं जाती? क्यों न लड़के वाले ही दहेज दें? हम बस इतना जानते हैं कि लड़कों से कम नहीं हैं लड़कियां। आज नहीं तो कल, समाज को बदलना ही पड़ेगा।

ज्योति कुमारी,
टी.एस. इंदु महिला कालेज, आरा

लड़कियों में प्रतिभा की कमी नहीं, विश्वास बनाये रखिए

मैं घर में सबसे छोटी बेटी हूं। हम चार बहन हैं, एक भाई। मेरे पापा एक टेलर मास्टर हैं। लेकिन वह अब उस काबिल नहीं कि कुछ कर सकें। वह हमारे लिए अच्छी सोच रखते हैं। मैं अपनी बड़ी दीदी के घर पर रह कर पढ़ रही हूं। मेरा अनुभव यह है कि अगर हम अपनी मंजिल हासिल करना चाहते हैं, तो हमें खुद पहल करनी होगी।

हमें अपने अन्दर आत्मविश्वास को बनाये रखना होगा। आर्थिक परेशानियों को झेलते हुए बीए पार्ट तृतीय वर्ष में पढ़ाई कर रही हूं। मेरे घर में कोई भी बीए नहीं कर सका है। मेरा मानना यह है कि अगर आपको कोई पढ़ा रहा है, तो उसका सही परिणाम हमें देना चाहिए। मैं पूरी कोशिश करती हूं कि मेरी दीदी-जीजा का जो खर्च मुझ पर हो रहा है, वह बेकार नहीं जाए। मेरे पापा हम से बहुत उम्मीद करते हैं। मैं इन सब परेशानियों से निकलने की पूरी कोशिश करती हूं। मैं पढ़ लिखकर एसपी बनना चाहती हूं और देश और समाज का विकास करना चाहती हूं। अगर मैं अपना मुकाम हासिल कर पायी तो एक संस्था बना उन लड़कियों की शादी करवाऊंगी, जिनकी मदद करने के लिए कोई नहीं है। हमेशा लड़कियों की सहायता करूंगी। हमें परेशानियों से घबराना नहीं चाहिए। प्रतिभा किसी भी बात की मोहताज नहीं होती है। लड़कियों के अन्दर भी प्रतिभा होती है। बस हमें आत्मविश्वास को बनाये रखना है।

शबनम परवीन,
गर्वमेंट महिला कालेज, पटना

तन ढकने तक का पैसा नहीं, फिर भी कालेज में पढ़ती हूं

जी हां, मैं एक लड़की हूं। इसका मतलब ये नहीं कि मैं आगे नहीं बढ़ सकती हूं। मैं और मेरा परिवार बहुत गरीब है। पढ़ाई जारी रखने में असमर्थ हूं लेकिन मैं आगे बढ़ना चाहती हूं। मेरे पिता भी मुझे पढ़ाना चाहते हैं, लेकिन वो क्या करें। उनके पास तो इतना भी नहीं कि मेरा तन ठीक से ढका जा सके।

आज मैं इस प्रतियोगिता में अपने दिल की बात लिखना चाहती हूं। अपनी कहानी सबको बताना चाहती हूं। मुझे नहीं पता कि मैं आज जीत पाऊंगी या नहीं, लेकिन इतनी तो खुशी अवश्य मिलेगी कि आज जो दुनिया को पता नहीं था, वह चुभता सच मैं सबके पास पहुंचाने में समर्थ रहूंगी। सबको पता चलना ही चाहिए कि एक स्त्री, जिसके पास तन ढकने के लिए कपड़ा नहीं था, वह आज एक कालेज में पढ़ रही है।

जब मैं छह साल की थी तो मेरे घर की ऊपरी मंजिल में एक लड़की रहती थी। वह अच्छे स्कूल में पढ़ती थी। अच्छे कपड़े पहनती थी। नेक दिल थी। मैंने ये सब देखकर कभी अपने माता-पिता से जिद नहीं की कि मेरे लिए भी ऐसा कीजिए। मैंने प्रण लिया कि मैं आगे कुछ करके रहूंगी। आज जिस तरह मैं जी रही हूं, वैसा जीवन मैं अपने बच्चों को नहीं दूंगी। हालात का सामना करने के लिए मैं उसी लड़की के घर में नौकरानी का काम करने लगी। धीरे-धीरे मेरी दोस्ती उस लड़की से हो गई और वो मुझे अपने कपड़े पहनने को देने लगी। वह रोज 5 रुपये भी देती। मैं उस पैसे को गुल्लक में डालती थी। दो साल लगातार काम किया और उस पैसे से स्कूल में अपना नाम लिखवाया। स्कूल में नृत्य के कार्यक्रम में भाग लेने का मौका मिला। नृत्य से वहां मौजूद मुख्य अतिथि इतने खुश हुए कि उन्होंने मंच पर मुझे 101 रु. का इनाम दिया। मैंने पैसे पापा को सौंप दिये। उसी पैसे से उन्होंने कुछ काम शुरू किये। हमें आगे पढ़ने के लिए पिताजी कमाने लगे।

आज मैं बहुत खुश हूं कि भगवान ने मुझे लड़की रूप में जन्म दिया। मैंने इतनी परेशानी झेली लेकिन मैं भगवान से ये नहीं कहती हूं कि अगले जन्म में मुझे लड़की मत बनाना। मैं तो भगवान से अवश्य कहूंगी कि मुझे अगले जन्म में भी लड़की ही बनाना। स्त्री के बिना कुछ भी नहीं है। स्त्री ही मां है, वही अर्धांगिनी है। बस, इतना कहना चाहती हूं कि हे भगवान, मुझे हर जन्म में नारी बनाना लेकिन सभी गुणों से अवश्य भर देना, क्योंकि अगर धन नहीं है, तो किसी भी तरह कमा लूंगी लेकिन गुण न हो, तो न मैं इसे किसी से मांग सकती हूं और न खरीद सकती हूं। गुण बाजार में खरीदा नहीं जा सकता। पैसा कमाया जा सकता है।

खुशबू गिरि,
गौतम बुद्ध महिला कॉलेज, गया

अब ठान लिया है कि अत्याचार नहीं सहूंगी

मैं एक लड़की हूं। एक लड़की किसी की बेटी, किसी की बहन, किसी की पत्नी तो किसी की मां बनती है। वह एक साथ कई संबंध सारी जिंदगी निभाती है। इस तरह के न जाने कितने ही रिश्ते मेरी भी जिंदगी में भी हैं या होंगे। मेरे माता-पिता मुझे भी वहीं शिक्षा दे रहें हैं, जो मेरे भाई को मिली। मुझे भी वही परवरिश दी गई, जो भाई को मिली। मेरे पिताजी भी यही चाहते हैं कि मैं खूब पढ़ूं और कुछ बनूं। मैं भी अपनी जिंदगी में बहुत कुछ करना चाहती हूं। मैं और लड़कियों की तरह शादी के बंधन में बंध कर अपने पति के घर जाकर उसकी गुलाम बन कर रहना नहीं चाहती हूं। बहुत अच्छा लगता है जब मेरे माता-पिता मुझे मेरे अन्य भाई बहनों से ज्यादा प्यार करते हैं। मुझे अब तक की जिंदगी में उनसे बहुत सारी चीजें सीखने को मिलीं। वे किसी भी चीज के लिए मुझे मना नहीं करते, अगर वो सही हो। वे मुझसे हर बात करते हैं। वे अच्छे माता-पिता तो हैं ही, अच्छे दोस्त भी हैं।

इस सबके बावजूद मेरी अब तक की जिंदगी में कुछ ऐसे भी पल आये, जिन्हें याद करके मैं कांप उठती हूं। मैंने मन में ये बात ठान ली है कि मैं अपने ऊपर हुए अत्याचारों को कभी नहीं सहूंगी। मैं अपने सपनों को छू कर कुछ बनना चाहती हूं।

पूजा
जे.डी. विमेंस कालेज, पटना

दामनी प्रिया, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

दिल में अरमान हैं, तो आसमान झुकाने का हौसला भी रखिये

जो नारियां तरह-तरह के अत्याचार सह रही हैं, उनसे मेरा कहना है कि वे चुप्पी तोड़ें और अपनी बात कहने का साहस दिखाएं। उन लोगों के खिलाफ आवाज बुलंद करनी चाहिए, जो हम नारियों को अबला समझते हैं। अब महिलाएं वह सारे कार्य कर रही हैं जो पुरुष करते हैं। वे डाक्टर से लेकर पायलट तक बन रही हैं।

मैं भी एक लड़की हूं, और मेरे भी कुछ अरमान हैं। कुछ बनने की चाहत है, लेकिन मजबूरियां कई हैं। एक सामाजिक तौर पर और एक सांस्कृतिक-धार्मिक तौर पर, क्योंकि मैं मुस्लिम हूं। घर में बहुत सी रुकावटें हैं, जिनका पालन हमें करना होता है। घर से बाहर बहुत कम निकलना, किसी गैर लड़के से बात नहीं करना, बाहर निकलो तो नकाब पहनकर। ऐसे बहुत से रिवाज हैं, जिनमें मैं बंधी हूं। मैं चाहकर भी बहुत कुछ नहीं कर सकती। लेकिन खुद पर इंसान को भरोसा होना चाहिए। वह चाह ले तो बहुत कुछ कर सकता है।

मैं कहना चाहती हूं कि जो लड़कियां अपने परिवार से सहयोग नहीं पा रही हैं, वे खुद पर यकीन रखें तो किसी भी कार्य में पीछे नहीं रहेंगी। देश की सबसे बड़ी गायिका लता मंगेशकर, टेनिस स्टार सानिया मिर्जा और पी.टी.उषा भी एक लड़की हैं, जिन्होंने भारत का नाम रोशन किया। हमें कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी जैसी सशक्त महिलाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए। सरकार ने महिलाओं को आरक्षण देने जैसे कई उपायों से सशक्त बनाने के लिए कदम उठाये हैं। इसका लाभ उठाना चाहिए।

हाल में हमने एक फिल्म देखी, जिसमें जमशेदपुर जंक्शन का दृश्य दिखाया गया था। फिल्म कविता नामक लड़की पर थी। वह अपने परिवार और पिता का सहारा बनना चाहती है। वह पढ़ाई खत्म करके लोगों की सेवा करने में जुट जाती है। पुरुष वाले काम करती है। दाढ़ी बनाती है। जमशेदपुर (टाटा) में हमने देखा कि महिलाएं टैम्पो ड्राइवर, इंजीनियर, हैन्ड पम्प मैकेनिक के कार्य भी बहुत आसानी से कर रही हैं। बहुत सारे कार्य महिलाएं पुरुषों के मुकाबले बेहतर कर रहीं हैं। कहीं वे उनके कदम-से-कदम मिलाकर चल रहीं हैं। हम सभी बहनों को यह देखकर प्रेरणा मिली कि हम किसी से कम नहीं। हम आसमान झुका सकते, हवा का रुख मोड़ सकते हैं।

शगुफ्ता परवीन,
रामेश्वरदास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

..लेकिन शादी की बात से डर लगता है

वाकई लड़की होना गर्व की बात है लेकिन इसका कारुणिक पक्ष भी है। कुछ लोग हमें लक्ष्मी का रूप मानते हैं तो कुछ निर्धनता का। कहीं हमें अभिशाप समझा जाता है, तो कहीं हमें वरदान माना जाता। इन सब बातों के बावजूद मुझे फक्र होता है कि मैं एक लड़की हूं। आज लड़कियों को बड़े पैमाने पर नौकरी दी जाती है। हम बाहरी दुनिया से रू-ब-रू हो रही हैं। फिर भी समाज में ऐसी विडंबनाएं मौजूद हैं, जिनसे लड़कियां बहुत आहत होती है।

सौभाग्यशाली हूं कि मेरी दुनिया थोड़ी अलग है, जहां मैं अपने पापा की प्यारी हूं, उनकी उम्मीद हूं, उनका विश्वास हूं। मेरा जन्म एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ है। बचपन से ही हम भाई-बहनों को समान रूप से प्यार मिला है। हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए पूरी छूट दी गई है। पापा हमेशा यहीं करते कि बेटियां बेटों से कम नहीं। अंतर सिर्फ इतना है कि उन्हें मौका नहीं मिलता। पापा ने मुझे पूरा मौका दिया। शुरू से इंग्लिश मीडियम में पढ़ाई की। उसके बाद इन्टरमीडिएट के लिए एम.डी.डी.एम कालेज में एडमिशन लिया और आज यहीं से स्नातक की पढ़ाई पूरी कर रही हूं। आगे और ऊंची उड़ान भरना चाहती हूं। उम्मीद है, मुझे आगे भी भरपूर मौका मिलता रहेगा।

उम्मीद वक्त का सबसे बड़ा सहारा है, हौसला है तो मौजों में भी किनारा है। इसके बावजूद शादी की बात सोच कर कभी-कभी मुझे डर भी लगता है। अगर पापा ने मेरी शादी कर दी, तो मेरे सपनों का क्या होगा? मेरे रिश्तेदार इसके लिए दबाव डालते हैं। कहते हैं,बेटी बड़ी हो गई, उसकी शादी कर दो, वरना बाद में पछताओंगे। जमाना खराब है, लड़कियों का कोई भरोसा नहीं है, कब हाथ से छूट जाए। मैं एक पत्रकार बनना चाहती हूं। टीवी जर्नलिस्ट बरखा दत्ता से काफी प्रभावित हूं। दुनिया को आईना दिखाना चाहती हूं जिससे लड़कियां लड़कों के साथ कंधों से कंधा मिला कर चलती रहे। मुझे यकीन है कि मैं अपने सपनों को पूरा करूंगी। पापा का विश्वास टूटने नहीं दूंगी। इस संघर्ष के लिए मेरा परिवार मुझे पूर्ण सहयोग देगा।

विनीता जायसवाल,
एम.डी.डी.एम. कालेज, मुजफ्फरपुर

औरतें ही क्यों ढा रही हैं औरतों पर जुल्म ?

जन्म के बाद मैंने जब से दुनिया में होश संभाला,तब से घर में हमेशा से लड़के और लड़कियों के बीच भेदभाव का ही अनुभव किया। लगातार निर्देश मिलते हैं -ये मत करो, वो मत करो, लड़कियों की तरह घर में रहो, यहां मत जाओ, वहां मत जाओ, शाम में ज्यादा देर तक बाहर मत रहो। हमेशा यही सब सहती रही। जब तक बच्ची थी, तब तक ये दुनिया बहुत अच्छी लगती थी, पर जब से बड़ी हुई हूं, तब से बस इन सब परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। यहां तक कि पढ़ाई करने के लिए भी मुझे काफी संघर्ष का सामना करना पड़ा, क्योंकि घर वालों का मानना है कि लड़कियां ज्यादा पढ़कर क्या करेंगी, आखिर उन्हें एक दिन अपने ससुराल ही तो जाना हैं। सब सोचते हैं कि एक तो पढ़ाई में पैसे खर्च करो, फिर एक दिन दहेज का इंतजाम करो। ऐसे में परिवार के लिए तो बेटियां पराया धन होती हैं।परिवार, समाज व अगल-बगल में भी यही देखने को मिलता है। सुबह जब पेपर उठाओ तो ज्यादातर खबरें औरतों पर किए जा रहे अत्याचार पर ही छपती हैं। कहीं लड़कियां दहेज के नाम पर जलायी जाती हैं, तो कहीं औरतों की इज्जत से खिलवाड़ किया जाता हैं। ज्यादातर मामलों में औरतों के द्वारा ही औरतों पर शोषण किया जाता है। मैंने कभी नहीं सुना कि एक ससुर ने अपनी बहू को जला दिया, बल्कि सास-ननद ही हमेशा बहू को जलाती हैं। घर में भी मां अपने बच्चों में भेदभाव करती हैं। वह बेटों को ज्यादा मानती है,आखिर क्यों?

क्यों बार-बार औरतों की हर कदम पर परीक्षा ली जाती हैं। आज कोई ऐसी जगह नहीं हैं, जहां औरतें सुरक्षित हैं। बस, ट्रेन, कार्यालय, सड़क- कहीं औरत खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करती है। अगर उनके ऊपर कोई अत्याचार होता हैं तो वे रिपोर्ट लिखाने में भी कतराती हैं, कारण यह है कि थाने में भी उन्हें सुरक्षित नहीं समझा जाता। अगर कहीं ज्यादा देर हो जाती है, तो हम खुद डर का अनुभव करते हैं। आखिर हमारा समाज कब औरतों को बख्शेगा? समाज में कन्या भ्रूण हत्या की जाती हैं, वो कहां तक सही है? बेटे की चाह में लोग बेटियों की हत्या कर देते हैं, जिससे हमारे देश में लड़कियों की संख्या में कमी हो रही है। जब लड़कियां नहीं होंगी, तब क्या करेगा समाज? ये सृष्टि ही खत्म हो जायेगी। व्यवहार में दोहरापन यह है कि एक ओर देश में लड़कियों और औरतों की पूजा की जाती हैं। दूसरी तरफ उन पर अत्याचार किया जाता है। औरतों को दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि रूपों में पूजा जाता है, दूसरी तरफ उन्हें जलाया जाता हैं।

शहर में तो शिक्षा के कारण स्त्रियां बहुत आगे बढ़ रही हैं। वे डाक्टर, इंजीनियर, वित्तीय विशेषज्ञ और न जाने क्या-क्या बन रही हैं। पर ग्रामीण इलाकों में अभी भी औरतों की स्थिति बदतर है। महिलाएं जितनी भी आगे क्यों न बढ़ जाएं, हमेशा उन्हें दुर्बल ही समझता रहेगा। अगर हमें अपने समाज को बदलना है, तो शुरुआत घर से ही करनी पड़ेगी। एक मां को चाहिए कि वो अपनी बेटी को समाज में हक दिलाने के लिए लड़े। लड़कियों को समझाना होगा कि वह वस्तु नहीं, बल्कि व्यक्ति हैं। बेटा-बेटी में भेदभाव रोकना होगा। महिला संगठन, सरकार,सबको आगे आना होगा। जब तक समाज आगे नहीं आयेगा, तब तक कानून भी कुछ नहीं कर पायेगा। अभी हम लड़कियां हैं। कल हम औरत होंगी। एक समय था जब झांसी की रानी आदि वीरांगानाओं ने दुश्मनों से लोहा लिया। आज दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा, परित्यक्तता समस्या , सतीप्रथा, भ्रूण-हत्या आदि शत्रुओं से जूझना है। हम लड़कियों को इन सब बुराइयों को देश से बाहर निकालना पड़ेगा। हम भविष्य हैं, हम ही हैं जो आने वाले हिन्दुस्तान को बदल सकते हैं।

पल्लवी कुमारी
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

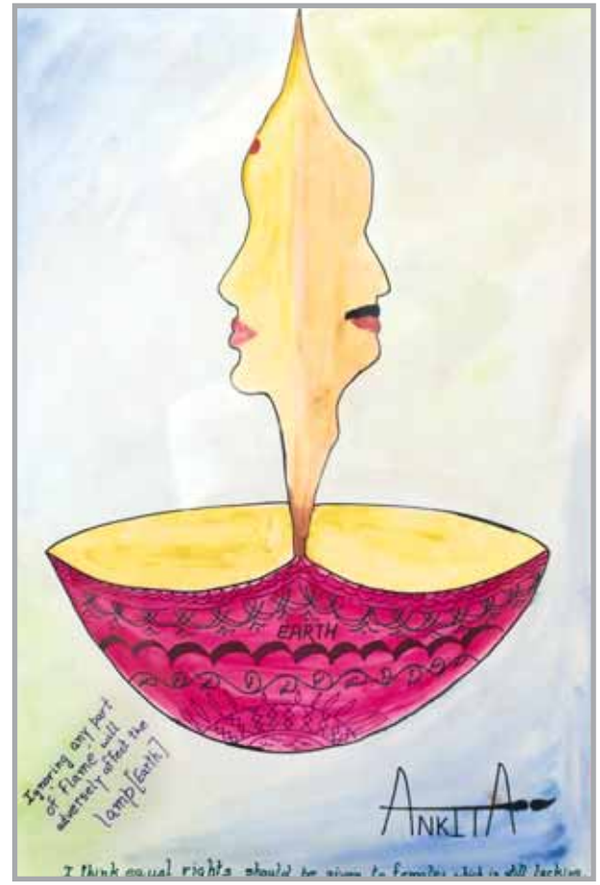

अंकिता नन्दनी, मगध महिला कॉलेज, पटना

बड़ी समस्या है लिंगभेद

नारी के बिना इस संपूर्ण सृष्टि का कोई अस्तित्व ही नहीं है। वह शक्ति की देवी है, भक्ति की देवी है और विद्या की देवी है। मुझे गर्व है कि मैंने इस संसार में एक स्त्री के रूप में जन्म लिया। यह एक अद्वितीय अनुभव है, जो सिर्फ एक नारी ही महसूस कर सकती है। इसीलिए तो ये धारणाएं बनी हैं कि ''यत्र नार्यस्तु पूत्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात जहां नारी का मान होता है, वहां देवता निवास करते हैं। फिर भी आज लिंग भेद हमारी मुख्य समस्या बन गयी है। आज के इस वातावरण ने मुझे पहले से अधिक असुरक्षित बना दिया है। आज मैं अपने ही घरों में सुरक्षित नहीं हूं। दहेज जैसी कुरीतियों के कारण औरतें जलाकर मार डाली जाती हैं।

इन सभी कारणों से आज मेरा स्वावलम्बी होना सराहनीय है। आज मेरे पास प्रबलता से जगा आत्मविश्वास है, सुनहरे भविष्य की कामना है और है अदम्य साहस, हर काम को करने की शक्ति और हर हाल में डटे रहने का प्रबल निश्चय। मैं तमाम विरोध बाधा, कष्ट को सहते हुए अपनी मुक्ति और सच्ची स्वतंत्रता के प्रयास में हूं। वह दिन दूर नहीं जब मैं अपनी सच्ची अवस्था प्राप्त कर लूंगी। मैं एक मध्यम परिवार से हूं और मेरे पिता विकलांग है। मेरे पिता मुझे बहुत कष्ट और अरमान से पढ़ा रहे हैं। उन्हें मुझ पर पूरा भरोसा है। जब भी मैं विपरीत परिस्थिति में होती हूं, वे हमेशा मेरा साथ देते हैं। मुझे बहुत गर्व होता है। वे मुझे और मेरे भाई-बहन को एक सा देखते हैं। वे चाहते हैं कि मैं एक आई.ए.एस. अधिकारी बनूं। मैं उनका सपना जरूर पूरा करूंगी, और तभी मुझे लड़की होने का सच्चा गर्व होगा। मैं जब लड़कियों को हरेक क्षेत्र में परचम लहराते हुए देखती हूं तो मुझमें एहसास होता है कि मैं भी एक दिन अपने देश का नाम रोशन करूंगी। आज हम हर क्षेत्र में आगे हैं, हम वो हर कार्य कर रहे हैं, जो पुरुष करते है। मेरा अभी तक का अनुभव मुझे ये बताता है कि आज हम जो चाहें, जैसा चाहें वो कर सकते हैं, परन्तु हमें खुद पर विश्वास होना चाहिए। हमें चाहिए कि हम अपने नारीत्व पर गर्व का साहस हो। हमें खुद अपने पैरों पर खड़ा होना होगा। अपनी क्षमता, योग्यता और विनम्रता के साथ जीवन के हर एक क्षेत्र में आगे बढ़ना होगा। हम जो चाहे वो कर सकते हैं तो फिर चलो सपनों को छूने और एक नया इतिहास रचने। अपने पंख पसार कर इस नीले अम्बर का विचरण करने। खुली सांस लेकर विश्वास के साथ।

कुमारी दीपशिखा,
एस.एम. कालेज भागलपुर

आत्मनिर्भर बेटियां भी बन सकती हैं मां-बाप का सहारा

मैं अपने भाई-बहन में सबसे बड़ी हूं। मेरे माता-पिता ने कभी बेटी-बेटे में भेदभाव नहीं किया। लड़की होने के कारण उन्होंने मुझे कभी पढ़ने के लिए नहीं रोका। मेरा दाखिला अच्छे स्कूल में कराया गया। उन्होंने कभी मुझे मेरे भाई से कम नहीं समझा। मुझे हमेशा प्यार किया। जब भी मुझे किसी चीज की जरूरत हुई, तुरंत लाकर दिया। मैं जब स्कूल से निकली तब कालेज में दाखिला कराया। आज उन्हीं की बदौलत मैं यहां आकर पढ़ाई कर रही हूं। मैं बहुत ही सौभाग्यशाली हूं जो मुझे ऐसे माता-पिता मिले। पर मेरी तरह सभी लड़कियां भाग्यशाली नहीं होतीं। कुछ के माता-पिता नहीं चाहते कि उनकी बेटियां पढ़ें और आगे बढ़ें। उन्हें ऐसा लगता है कि अगर वो ज्यादा पढ़-लिख जाएगी तो उनकी इज्जत मिट जाएगी। (पता नहीं इज्जत की यह परिभाषा कैसी है?)

आज दुनिया कहां से कहां तक पहुंच गई पर आज भी हमारे देश में ऐसे रूढ़िवादी माता-पिता की कमी नहीं है, जो नहीं चाहते कि उनकी बेटी पढ़े। उनका नाम रोशन करें। उन्हें यह समझना होगा कि सिर्फ लड़के ही माता-पिता का नाम रौशन नहीं करते, लड़कियां भी कर सकती हैं। आज भी बहुत सारे ऐसे शहर गांव हैं, जहां बच्चियों को मारा जाता है। गर्भस्थ भ्रूण की लिंग जांच कराकर कन्याओं को जन्म लेने से उन्हें रोक दिया जाता है। क्या लड़की होना गुनाह है? माता-पिता ये समझते है कि अगर लड़की हुई तो उसकी शादी के लिएदहेज के पैसे कहां से लाएंगे? आज अधिकतर घरों में लड़कियों को दहेज के लिए जला दिया जाता है। लड़कियां अगर पढ़-लिख भी जायं, तो उन्हें परिवार काम नहीं करने देता। उसे अकेले बाहर नहीं जाने देते। उन्हें ऐसा लगता है कि लड़कियों के लिए कमा करना जरूरी नहीं है। माता-पिता को यह समझना चाहिए कि अगर उनकी बेटी आत्मनिर्भर बन गयी तो वो अपने माता-पिता को भी पैसों की कोई कमी नहीं होने देगी। आज सरकार द्वारा चलाया जा रहा अभियान बहुत ही कारगर साबित हो रहा है, बेटी बचाओ। बड़ी संख्या में लड़कियां भी स्कूल जाने लगी है। उनके लिए राज्य सरकार की तरफ से स्कूल जाने के लिए पोशाक, सायकिल, जूते इत्यादि देकर बहुत अच्छा काम किया जा रहा है। इससे लड़कियों में पढ़ने के लिए जागरूकता आएगी। आज लड़कियों को लड़कों से कम नहीं बल्कि बराबर हक मिलना चाहिए। आज भी बहुत सारे ऐसे लोग है, जो बेटों की चाहत में बेटियों को जन्म देते हैं, जिससे उन्हें पढ़ाने-लिखाने में दिक्कत होती है। जन्म के समय लिंग अनुपात जन्म पूर्व लड़कियों के साथ होने वाले भेदभाव का बेहतर संकेतक है, परंतु जिला-स्तर पर और पूरे देश के लिए उपलब्ध न होने के कारण बाल लिंग अनुपात के आंकड़े का अब भी सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। आज लोगों को यह समझना होगा कि लड़कियां किसी से कम नहीं है, आज यह डाक्टर, इंजीनियर से लेकर सभी ऊंचे पदों पर जा सकती हैं। वो किसी पर निर्भर नहीं है। अगर उन्हें अच्छी पढ़ाई-लिखाई, खान-पान और प्यार दिया जाये तो वो सबको प्यार और सम्मान देगी।

खुशबू कुमारी,
महिला कालेज, खगौल

It's us, who willingly surrender...

With an unwelcoming world around her, but with hope in her eyes, she looks at me. Her innocent eyes keep asking me "Is this why we come into the world?" And I have nothing to say to her, nothing to offer her. She is a girl in Patna, a place, which is far removed from the 21st Century, with its rapid modernization and development.

My childhood was normal; I was raised like any other girl in the city. The difference was that my parents decided to get me admission into an institution where people's futures changed. They decided to equip me with the weapon of "education" so that I could face the world on my own. This gift from them transformed me.

Once when I was visiting my village and met a cousin of mine who was going to drop her studies because her family was insisting on getting her married. I was appalled by this! There were other such instances which made me face the reality of my birthplace. Like when I met Lakshmi, my maid's daughter who sacrificed her studies to her help her mother.

That is when I realized how blessed I was, that my parents had considered me important enough to move away from the pressures of society. I prayed to God to shower such blessings on those like my cousin who were less fortunate than I. After a few months, my prayers were answered. My cousin had refused to tie the knot and was going for higher studies. And Lakshmi started going to school.

Realization dawned on me that it is not circumstances that compel us to give up, rather it is us who willingly surrender ourselves to those circumstances. Today, I no longer question God because I have learnt that being a girl is the most beautiful gift and that He has sent me to this world on a special mission that I shall fulfill.

Shivi
Patna Women's College, Patna

I want to become role model

I am proud of myself. I am proud to be a girl. I am happy to have the opportunity to share my feelings and experiences about women empowerment.

I have seen that even though society gives girls so many obstacles, girls are still performing very well in the world. If we look at my own example, I was born into an ordinary farming family. Comfortable survival is difficult and success is not smooth in such circumstances. My father sent me to the village school. I was in Class VI when I was selected to Navoday in Sitamarhi. It was the opportunity of a lifetime and a chance for me to do fantastic work. I have always dreamed of being a scientist and this was the road to my dreams. My father was hesitant about sending me, but my village wants to see me as a scientist and everybody convinced my father that I would do well and become a world icon. I was very happy with the way people supported and helped me. I don't know why, but I always think that the chemical world is waiting for me to uncover hidden truths.

I am inspired by Kalpana Chawla who was a superstar of the space world. I want to achieve worldwide name and fame and become a role model for village girls. Once I am successful, I will help those who are helpless.

Jagriti Priya
M.D.D.M. College Muzaffarpur

Dowry should be banned strictly

As a girl, I have experienced a lot of ups and downs in life. Every family wants a boy in the house to carry forward their name and fame. Even my parents wanted a son. My sister and I always wish that one of us had been born a boy, even though we have never understood why boys are given so much preference.

My family has always faced a lot of problems. I was 10 years old when my father passed away. My mother was very upset and was forced to marry my uncle. He is rude and horrible. He never respects my mother or even his own parents. He has never accepted us, his brother's children, as his own. To top it all off, he never does any work, so everyone is always very upset with his nature and behavior.

My grandparents always favor their daughter's children because they are boys. They always give the boys whatever they want. They never give me or my sister anything. I always try to help my mother because she suffers a lot. She has always tried to support us. I am lucky that she managed to get me a good education. Today I am in a good college because of her. I have always dreamt of being a Chartered Accountant, but my grandfather does not want that and will not help me. So, I have decided to become a manager in a Bank.

Just like me, most girls have to face many problems. Most are not even able to get a proper education because their parents just want them to get married. They believe that it is not important to educate a girl because they are only meant to get married and manage a house. These thoughts are outdated and wrong! But, there is much worse that happens. Some parents kill their baby girls, or beat them. The government has declared it illegal to kill a female child before or after birth. This rule should be strictly enforced. Another evil is dowry. It should be strictly banned in our country. If this happens, no one will think that girls are a burden for them.

In today's world, girls can do everything better than boys. They can work in any sector and earn good money. They can challenge boys in any field. All parents have to realize that girls are also the future of our country. They should give their daughters the freedom t excel and to do well in every field of life.

I am proud to be a girl and every girl should proud of herself.

Megha More
Mirza Ghalib College, Gaya

Misconception Must Stop

I am happy to get an opportunity to write about my experiences as a girl. First, I would like to explain the word - GIRL -

G - Generous and great

I - Intelligent and innocent

R - Ready for everything

L - Loving towards all

This is the true meaning of being a girl. A girl is a daughter, sister, wife and mother. So, being a girl is a very positive thing. I am 15 years old now and have been very happy with my life and treatment till now. My family was very happy when I was born. My father loves me a lot and my mother understands all my problems and teaches me how to face the world.

A woman is a very important part of a man's life. Only a woman can give birth to a child. This sets women aside as more important than men. As a woman, I want to make a difference to this world. I want to help those girls who do not have parents. I want to go to villages and educate people about diseases and how to live a better life. I also want to tell people that the gender of a child is totally dependent on the father. There is a popular misconception that women are responsible for the gender of a child. Women have suffered a lot because of this misconception. It has to stop.

Tashmia Jamal
Mirza Gallib College, Gaya

Girls Are More Energetic, Intelligent!

I am a girl and proud to be one! I have recently been informed that I am part of a group which is always undermined and frequently tortured in different ways. But, my experience till now has been very different. My parents, who are greater than God to me, have ensured that I have always been treated in such a way that I never regret being a girl. They have done so at great personal expenses, because we are part of a traditional village where they have often been tortured for their weakness towards their three daughters. My father is not a highly paid officer or businessman, but his aims are much higher. My mother is a noble lady, but is not very educated. Her aim has always been to ensure the highest possible education for us.

Even though we are not a very rich family, my parents have ensured that my brother and sisters have all been educated in the same school. My father always encourages each of us to achieve our goals.

तू बोल कि दुनिया बोल उठे,
तू बोल कि सोए जाग उठें?
तू बोल कि गूंगे बोल उठें,
तू बोल कि शोषक कांप उठें??
तू बोल....

It is my wish that all girls should be blessed with parents like mine. Only then will they be able to achieve great heights. Nature has gifted all girls with energy and intellect, so it is in the hands of society and the country to ensure that all girls reach their potential. If each girl is able to achieve her fullest potential, the entire country will progress at a tremendous rate and fulfill the vision that Dr.A.P.J Kalam has for India in 2020.

Shipra Shabnam
S.M. College Bhagalpur

कोर्ट में सवाल पूछते वक्त कहां चली जाती है शर्मिन्दगी?

समाज में नारी को जो प्रताड़ना दी जाती है, जो अत्याचार होता है, वह आखिर कहां तक न्यायोचित है? ये सवाल ही नहीं, कई जरूरी सवाल अनुत्तरित हैं। जब मैं विश्व एड्स दिवस पर जहानाबाद में ही राजेन्द्र पुस्तकालय गई तो वहाँ इससे संबंधित जो सवाल पूछना था वो पूछ सकते थे। सवाल पूछने पर टाल दिया गया।

वहां मेरे साथ मेरी बहन भी थी। वहां हमलोगों ने जब कंडोम शब्द सुना तो विचार किया कि आखिर ये क्या चीज है? मैंने अपनी बहन से थोड़ा जानना चाहा, तो उसने भी कहा- मुझे भी इस का मतलब नहीं पता। मेरी बहन ने जब ये सवाल खड़े होकर पूछा, तब सिविल सर्जन ने बड़ी शर्मिन्दगी से उत्तर दिया। जो कहा, उससे कुछ समझ में भी नहीं आया। बल्कि हमारे सवाल पूछने पर आगे बैठी एक सहायक महिला ने एतराज भी किया। सिविल सर्जन के उत्तर से हमलोग समझ नहीं सके और अभी तक नहीं जानते कि कंडोम क्या है।

जब श्रीकृष्ण महिला कालेज के स्टुटेंड को उस दिन वहां बुलाया गया तो फिर इस सवाल का उत्तर ठीक ढंग से क्यों नही दिया गया। क्या लड़की हूं इसलिए? बात जो हम नही जानते, उसे परिवार, समाज को कैसे बतायेंगे? जानकारी के बिना हम सुरक्षित कैसे रहेंगे? लज्जा से बचने के लिए वहां तो इस बात को खत्म कर दिया गया, लेकिन जब कोई मामला अदालत में जाता है, तब लड़कियों या औरतों से तरह-तरह के सवाल बेहूदगी से पूछते समय शर्मिन्दगी या शालीनता कहां चली जाती है? वैसे भी जहां अच्छाई होती है या जिसमें अच्छाई हो, उसमें बुराई भी तो होती है। इसका मतलब मुझमें भी कुछ खामियाँ होंगी। इसे जब मुझे मेरे आसपास के लोग (चाहें मेरी माँ हो या दोस्त या मेरे पापा) नहीं बतायेंगे, तब हम अपनी मुसीबतों का हल किससे पूछेंगे? जवाब मांगने पर कहा जाता है कि ये आपके लिए अच्छा नहीं और इसका नाम मत लेना।

लड़की हो या लड़का, मर्यादा के साथ ज्ञान की जो सीमाएं हैं वो सबके लिए जरुरी है, लेकिन आगे बढ़ने की जो रोकथाम है, वो सिर्फ लड़कियों के साथ ज्यादा होती है। मेरा आगे बढ़ने का तात्पर्य ये नहीं कि मैं 12 बजे रात तक लड़कों की बराबरी के लिए यूं ही कभी सिनेमा देखूं या दोस्तों के साथ घूमती रहूं। मेरा तात्पर्य उस मंजिल से है, जिसे साकार करने में पाबंदी नहीं लगनी चाहिए।

प्रीती कुमारी,
श्रीकृष्ण महिला कालेज, जहानाबाद

लड़की के जन्म पर नहीं खिलाई गई मिठाई

आज मैं जानती हूं अपने जीवन का महत्व और यह भी कि लड़का हो या लड़की, सब बराबर होते हैं। यह तो प्रकृति की व्यवस्था है, लेकिन हमारे समाज की व्यवस्था में समानता नहीं है। इसका एहसास मुझे हो चुका है। एक घटना याद आती है। मेरी मामीजी को लड़की हुई थी। जब मैंने अपने मामा जी को बधाई दी और मिठाई खिलाने को कहा, तब उन्होंने कहा कि जब तुम्हारा भाई आएगा, तब खिलाऊंगा। जाहिर है कि वे कन्या के पिता बनने से खुश नहीं हुए थे। भेद-भाव का यह तीखा अनुभव था। बचपन से हम पर और मेरी बहन पर पाबंदी है, मम्मी और भाई हमेशा कहते हैं कि ये मत करो, वो मत करो। कभी-कभी जिद्द करने पर कुछ मामलों में इजाजत मिल जाती है। जीवन के जब कुछ और पहलू को देखती हूं तो दिल धक से हो जाता है,

कभी-कभी आंखों से आंसू निकल पड़ते हैं।

जब मैं आठ साल की थी तब मेरे पिता गुजर गए। सहम गई थी मैं। आखिरी क्षण में भी मैंने उनको देखा नहीं। अकेली मेरी मम्मी ने सब कुछ बर्दाश्त किया। कुछ दिनों के बाद मेरे नाना जी का भी हाथ हमारे सर से उठ गया। मैंने मम्मी को देखा संघर्ष करते। कैसी-कैसी बातें लोग बनाते कि सुनकर चुप रहा भी नहीं जाता, फिर भी मम्मी ने बहुत संघर्ष के बाद हम लोगों को पाला।

मम्मी की ममता को देखकर लगता कि मैं कितनी भाग्यशाली हूं, जो मुझे इतनी अच्छी मां मिली है। दूसरी तरफ आज समाज में भ्रूण हत्या हो रही है। क्या कोई माँ इतनी निर्दय हो सकती है? शायद नहीं, लेकिन समाज के मन में बैठे लिंगभेद, खास कर दहेजप्रथा के चलते एक स्त्री को भविष्य की स्त्री को जन्म लेने से रोकना पड़ता है। इस हालात के मद्देनजर मैंने फैसला किया है कि अपने पैरों पर जरूर खड़ी होऊंगी, चाहे मुझे दुनिया से क्यों नहीं लड़ना पड़े। मैं पढ़ूंगी और आगे बढ़ूंगी।

श्वेता कुमारी,
मिर्जा गालिब कॉलेज, गया

जब तक औरत ही औरत की दुश्मन है, बदलाव मुश्किल है

मैं जानती हूं कि एक लड़की के हक क्या होते हैं, इसलिए समाज-सुधारक बनना चाहती हूं। मेरे परिवार वाले मुझ पर विश्वास करते हैं और मुझे भी खुद पर यकीन है। बहुत सारी ऐसी लड़कियां होती हैं, जिन पर बहुत सी पाबंदियां होती हैं। वे न पढ़ सकती हैं न अपने तरीके से जी सकती हैं। बहुत दुःख होता है जब समाज में ऐसी कुरीतियां देखने को मिलती हैं। हिंदू परिवारों में एक पत्नी, जो अपने पति के साथ खुश नहीं, वो तलाक तक नहीं ले पाती। वो औरत हर दिन एक नयी मौत मरती है, फिर भी कुछ नहीं कर पाती।

मैं ऐसी महिलाओं के लिए कुछ करना चाहती हूं। एक मर्द को हर वो चीज करने की आजादी होती है जो वो चाहता है, जो सोचता है, जो उसकी मर्जी होती हैं। मैं सोंचती हूं क्यों नहीं एक औरत, एक लड़की को ये सारे हक मिलते हैं। एक मर्द, जो खुद एक औरत के गर्भ से जन्म लेता है, उसे क्यों नहीं समझ आता कि एक लड़की के भी कुछ सपने, कुछ अरमान कुछ अपनी सोच होती है जिसे वह पूरा करना चाहती है। इसमें उसे अपने पति, परिवार और अपने समाज का पूरा साथ चाहिए होता है पर उस औरत का कोई साथ नहीं देता। एक लड़की को भी सारे हक मिलने चाहिए, जो एक लड़के को मिलते हैं। आज लड़कियां अपनी पसन्द के लड़के से शादी भी करें, तो उन्हें समाज और परिवार दोनों से बेदखल कर दिया जाता हैं।

लोग उसका मजाक उड़ाते हैं। एक औरत ही होती है, जो एक बेटे की मांग रखती हैं,उसके लिए काफी मन्नतें मांगती है, फिर एक औरत ही होती है जो दहेज की मांग रखती है। एक औरत दूसरी औरत को दहेज के लिए दुःख देती है। औरत ही औरत की दुश्मन होती है। जब तक यहां की औरतें नहीं बदलेंगी समाज भी नहीं बदलेगा।

हम सुधरेंगे युग सुधरेगा। जरूरत है सोच बदलने की। खैर, समाज से ऐसी बहुत सी कुरीतियां दूर हुई हैं, बहुत सी बातें काफी हद तक सुधरी हैं, लोग पढ़ाई कर रहें हैं, बाहर नौकरी कर रहीं हैं। अपनी तरह से जिन्दगी को जी रहीं हैं। मैं, खुश हूं ऐसे समाज में जन्म लेकर ऐसे परिवार में जन्म लेकर जहां मेरे सपनों की कद्र की जाती है।

स्नेहा भारती,
एस.एस. कालेज, जहानाबाद

शिक्षा-दीक्षा से भविष्य बना सकती हैं लड़कियां

मैं आज के जमाने की लड़की हूं। मैं ऊपर वाले का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूं कि उन्होंने मुझे इस पवित्र धरती पर लड़की बनाकर भेजा। आज के जमाने में साइंस इतना डेवलप कर गया है कि लोग पहले पता लगा लेते हैं कि गर्भ में पल रहा बच्चा लड़का है या लड़की। अगर लड़की होती है तो वो जरा भी उस मासूम पर रहम नहीं करते जिसने अभी-अभी एक अनोखी दुनिया में सांसें ली है। उसकी गर्भ के अंदर ही हत्या कर देते हैं।

लोग क्यों लड़के-लड़कियों में भेदभाव रखते हैं? लड़की तो लक्ष्मी का रूप है। लड़की जितना लक्ष्मी का रूप है, उतना ही वह काली दुर्गा और चंडी का भी रूप है। मैं भी एक लड़की हूं और मेरा अनुभव है कि एक लड़की अकेले ही अपनी मोहब्बत से, अपनी ममता से एक पत्थर को मोम कर सकती है। और जब उसके सब्र का ज्वालामुखी फटे तो चारों तरफ तबाही भी ला सकती है। उसे कमजोर मत समझो।

इतिहास गवाह है। रानी लक्ष्मी बाई, सरोजनी नायडू, इंदिरा गांधी और ना जाने ऐसी कितनी ही सशक्त नारियां हैं जिन्होंने अपने इस देश के लिए क्या नहीं किया। वे अपनी जान की परवाह किए बिना ही इस देश के लिए शहीद हो गई।

आखिर ये सब क्या थीं? ये भी तो लड़कियां ही थीं । लड़की अपनी अच्छी शिक्षा-दीक्षा से अपना सुनहरा भविष्य बना सकती है। वह लड़कों से ज्यादा अपने राष्ट्र का, समाज का, माता-पिता का नाम रोशन कर सकती है।

और अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि मैं पढ़-लिखकर एक दिन बहुत ही अच्छा इंसान में पहले अच्छी इंसान इसलिए बनना चाहती हूं की क्योंकि एक अच्छा इंसान ही जिन्दगी में दूसरों के जीवन में अच्छा कर सकता है। मैं आईएएस आफीसर बनकर अपने देश और परिवार का नाम रोशन करना चाहती हूं। मेरी अम्मी ने बचपन से लेकर आज तक मेरी ख्वाहिशों को पूरा किया है। उनकी आंखों में मैने अपने कई सपने देखे हैं।

अजिमा खुशनुदी,
गौतमबुद्ध महिला कॉलेज, गया

हर घर में सीता जैसी बेटी भले न हो, रावण तो हर जगह है

मैं एक शिक्षिक और सफल नारी बनना चाहती हूं। हर क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहती हूं। पिताजी का साथ छोड़कर अपने मौसा-मौसी के पास रहती हूं। उनकी अपनी कोई संतान नहीं पर मैं उन्हें ऐसा महसूस नहीं होने देती। रिश्तों की परिभाषा मैं जानती हूं कि अपनों का साथ होना कितना आवश्यक है। मैं कभी उदास नहीं होती, कभी रोती नहीं हूं, तो लोगों को लगता है कि मुझे दर्द नहीं होता। पत्थर के समान सब समझते हैं। मैं एक नारी हूं, मेरे अंदर भी जज्बात हैं।

मेरे भी कुछ सपने हैं। लेकिन क्यूं मेरे नारी होने पर या अपने अस्तित्व को कोई पहचान नहीं मिलती। एक दिन मैं बेटी हूं और एक उम्र पर मेरी शादी हो जाएगी, फिर जिम्मेवारियों को निभाते-निभाते एक दिन मैं मां बनूंगी। तो क्या मेरा अस्तित्व यहीं तक समाप्त हो जाएगा?

मैं नहीं कहती कि उन जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहती हूं, लेकिन मुझे कुछ समय चाहिए ताकि मैं क्या हूं, ये बता सकूं। दुनिया को कुछ करके दिखा सकूं। मैंने देखा है एक ऐसी पत्नी को जो अपने पति के अत्याचार को सहती हुई खामोश रहती है। ये खामोशी उसकी जान ले लेती है। वो मर गई। क्या वो मुक्त हो जाती है अपनी जिम्मेदारियों से जब बच्चों को बिलखते हुए छोड़ देती है?

वह यह नहीं देख पाती कि उनके मर जाने से उनके बच्चों का भविष्य अंधकारपूर्ण बन जाता है। कहते हैं कि एक मां अपने पति के देहांत के बाद अपने बच्चों की देखभाल अच्छे से करती है, लेकिन जब बात पिता पर आती है तो वह इस फर्ज को नहीं निभा पाता।

मैं खुद ऐसी नारी नहीं बनूंगी जो अपनों से पीड़ित होकर दुनिया छोड़ दे। मेरा अनुभव कहता है कि जनसंख्या बढ़ाने से दुनिया नहीं बदली जाती या लम्बे-चौड़े भाषण से नारियों को सजग नहीं बनाया जा सकता है। नारियों को खुद अपने लिए रास्ता बनाना पड़ेगा ताकि उसे कोई भी कदम उठाने से कोई रोक ना सके। आज के परिवेश को देखकर मैं दंग हूं और चिंतित भी।

आज हम कह सकते हैं कि हर घर में सीता जैसी बेटी मौजूद नहीं हैं, लेकिन रावण जैसे लोग हजार मिलेंगे जो हर समय तैनात रहते हैं कि कब कोई लड़की मिले और उसे मैं दबोचूं। इसलिए लड़कियों के लिए यह सलाह है कि वह अपनी पोशाक को बदलें और अपने नारी होने के सुखद एहसास को सरेआम लज्जित ना करे। नारी होना एक वरदान है। हम कल की भविष्य हैं। आज को सवारें तो हमारा कल रौशनी से जगमगा जायेगा।

और अंत में क्या कहूं? एक कवियत्री हूं इसलिए लिखना कभी खत्म नहीं होगा। समय का अभाव होने के साथ कुछ पाबंदियां भी हैं। बस इतना ही कहूंगी कि ... 'हसरतें इतनी रहती हैं कि उन्हें संभालना मुश्किल है।' सब कुछ के बावजूद नारी महान है और इसे ऊंचाइयों की ओर जाना है।

मोना सिंह,
मिर्जा गालिब कॉलेज, गया

लड़कों की वजह से मुझे डर लगता है

मैं नीतीशा शेखर, वैसे तो लड़की हूं पर फिर भी मुझे हमेशा कुछ मायनों में लड़कों जैसा एहसास होता है। शायद मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मेरे मां-बाप दूसरों की तरह नहीं है। अब कल की बात है, जो कार्यक्रम हुआ था, जिसमें प्रश्न पूछने को कहा गया था, सभी ने यही प्रश्न पूछा कि ''मैं पढ़ना चाहती हूं और मेरे मां-बाप मेरी शादी करवाना चाहते हैं'' लेकिन मेरे अभिभावक ऐसे बिल्कुल भी नहीं हैं। वो मुझे हमेशा यही कहते हैं कि बेटा तुम जितना भी पढ़ना चाहती हो, जो भी करना हो, करो, हम हमेशा तुम्हारे साथ हैं। मैं कभी-कभी ये भी सोचती हूं कि परिवार के बाहर मैं किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकती, क्योंकि, वो गैर है, मैं नहीं जानती उन्हें, क्यों? क्योंकि मैं विश्वास नहीं करती उनपर इसलिए मेरे मां, बाप, भाई, चाचा और दादा-दादी ही सब कुछ हैं। जहां तक बुरे अनुभव का सवाल है, सिर्फ लड़कों की वजह से मुझे डर लगता है, घर से निकलते ही कुछ गंदी चीजें सुनने को मिलती हैं। मैं उनसे डरती इसलिए हूं कि शायद उनकी वजह से मैं अपने परिवार का विश्वास खो बैठूं। कुछ दिन पहले मेरे घर पर एक कॉल आया और उस कॉल को एक लड़के ने किया था, मेरे पापा ने उस कॉल को उठाया था, उसने कहा कि नीतिशा ने मुझे कांपी देने को कहा था और उसने अभी तक दिया नहीं। पापा ने मुझसे पूछा तो मैंने साफ इन्कार कर दिया, फोन तो कट गया, पर पापा थोड़े डरे हुए थे, पर उन्होंने मुझे डांटा नहीं उल्टा कहा कि बेटा तुम चिंता मत करो, कोई शैतानी कर रहा होगा। बस, मैं अब क्या कहूं? मैं कभी खुश और कभी नाराज रहती हूं। सब के बावजूद लड़की होने से पर मुझे गर्व है, क्योंकि एक लड़के को भी एक स्त्री ही जन्म देती है।

नितिशा शेखरम,
गौतमबुद्ध महिला कॉलेज, गया

काश, लोग लड़के और लड़कियों में भेदभाव न करते

मेरे परिवार में लड़की को लड़कों से पीछे रखा जाता है। हम शहर से बाहर पढ़ने नहीं जा सकते हैं। और मेरा यह अनुभव है कि केवल मेरे परिवार में ही नहीं बल्कि पूरे समाज में लड़कियों को कमजोर और अबला समझा जाता है।

मैंने कई बार यह अनुभव किया है कि यदि कोई लड़का शिक्षा ग्रहण करने के लिए 22-23 वर्ष की उम्र में शादी नहीं करना चाहता है तो उस पर कोई बोझ नहीं डाला जाता है। परंतु लड़कियों को हर बार अपने सपनों और अपनी पढ़ाई लिखाई का बलिदान करना पड़ता है। मुझसे कहा गया कि लड़कियों के लिए दसवीं कक्षा तक पढ़ना बहुत है। तुम पर पैसा खर्च करने से अच्छा है कि हम बेटों को पढ़ा-लिखा कर डाक्टर बनाएं तो वह कुछ कमा कर भी देगा। तेरी पढ़ाई पर पैसा खर्च करना व्यर्थ है।

उस दिन मुझे लगा, काश मैं लड़का होती या काश मेरे परिवार वाले लड़के लड़कियों में भेदभाव न करते। मेरी बहुत कोशिश के बाद मेरे परिवार वालों ने मेरा एडमीशन कालेज में कराया। परंतु मैं नहीं जानती कि वो मुझे मनचाही शिक्षा कब तक ग्रहण करने देंगे? मुझे नहीं लगता कि मैं भी लड़कों की तरह अपने सपनों को साकार कर पाऊंगी। पता नहीं आगे क्या होने वाला है।

मेरे अनुभव के अनुसार यह समस्या पूरे समाज की है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सोच बदलनी होगी और लड़के- लड़कियों के बीच की गहरी खाई को भरने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन से लड़के और लड़कियों के बीच की दूरी (भेद-भाव) को मिटाना होगा। तभी हम एक समान अधिकार वाले समाज की स्थापना कर पाएंगे। लड़के-लड़कियों दोनों को समान अधिकार मिलेगा। और आगे जा कर हमारी आर्थिक समस्याएं भी खत्म हो जाएंगी और उस समय हम सब मिल कर कहेंगे ...।

''हमने सपनों को छू लिया''
''हम ने हवाओं का रुख बदल दिया''
''हम सभी पूर्ण रूप से आजाद हैं।''

सादिया फातिमा,
गौतम बुद्ध महिला कॉलेज, गया

लड़की का मतलब है पर्दा, कामचलाऊ शिक्षा, कम उम्र में शादी, दहेज प्रताड़ना, बच्चे पालना और दुनिया से गुमनाम चले जाना

बहुत से लोग परिवार के मुखिया के नाते लड़की नहीं चाहते। समाज में लड़की को गंदी नजरों से देखा जाता है। लोग लड़कियों को कमजोर-लाचार समझते हैं। उन पर बहुत जुल्म ढाए जाते हैं। निर्दयी दहेज प्रथा के कारण लड़कियों को लोग बोझ ही समझते हैं। आज लड़कियाँ सरेआम बेची जा रही हैं। उनसे देहव्यापार जैसा कितना गंदा काम करवाया जा रहा है। मेरी कलम थक जाए और समय कम पड़ जाए, लेकिन लड़कियों के प्रति सामाजिक बुराइयां खत्म नहीं हो पाएंगी। सरकार कोई ठोस फैसला नहीं कर पाती। लड़की का मतलब है पर्दा, कामचलाऊ शिक्षा, कम उम्र में शादी, दहेज प्रताड़ना, बच्चे पालना और दुनिया से गुमनाम चले जाना। उसके जीवन की बड़ी सच्चाई यही है।

लोग लड़कियों को जन्म नहीं देना चाहते, लेकिन दूसरे की लड़की से संबंध स्थापित करना जरूर चाहते हैं। उन्हें बच्चा पैदा करना बहुत ही अच्छा लगता है, लेकिन कन्या शिशु के जन्म लेते ही मायूसी छा जाती है। हां, जब वह बच्चा लड़का हो तो बहुत अच्छा लगता है। पिता को लगता है कि दुनिया की सारी खुशियां अपनी पत्नी के कदमों में डाल दूं। जहां बात लड़की की आती है तो ऐसा लगता है, पिता और उसके परिवार को लगता है कि जैसे पैरों तले से जमीन ही खिसक गई। कन्या जन्म से बचने के लिए लोग भ्रूण हत्या जैसा बड़ा पाप भी कर डालते हैं। जिस महिला की सिर्फ बेटी होती है, उसके साथ अत्याचार होता है। ऐसा करने वाले अनपढ़-गंवार लोग यह वैज्ञानिक सच भी नहीं जानते कि लड़का या लड़की होना सिर्फ और सिर्फ पुरुष(पिता) पर निर्भर है। प्रकृति ने स्त्री (मां) के वश में यह तय करने का हक छोड़ा ही नहीं है, लेकिन पुरुषवादी समाज यदि मजबूत है तो कुसूर बेचारी स्त्री का ही माना जाएगा।

वास्तव में लड़की एक वरदान है, लेकिन सामाजिक रीति-रिवाजों ने उसे अभिशाप जैसा मान लिया है। लड़की होना पाप नहीं है। जिस घर में लड़की जन्म लेती है उस घर में मां लक्ष्मी का वास होता है। कई देशों में लड़की की पूजा की जाती है। लड़कियों अगर घर-संसार बसा सकती है, तो उसे उजाड़ भी सकती है।

लड़का सोचता नहीं है, बस जो दिल में आता है करता है। लेकिन लड़की पहले सोचती है, तब कोई फैसला लेती है। सिर्फ यही फर्क है लड़का और लड़की में। लड़की हमेशा अव्वल थी, अव्वल रहेगी। नारी की इज्जत करना सीख लें ये पुरुष, नहीं तो आने वाला जमाना उन पर भारी पड़ने वाला है।

अमृता आनंद,
मिर्जा गालिब कॉलेज, गया

क्या हमें जीने का हक नहीं है?

मुझे गर्व है कि मैं लड़की हूं क्योंकि भारत वर्ष में अनेक देवियां वास करती हैं और वो भी नारी ही हैं। मेरे अंदर भी ये सारे गुण आ सके हैं। दूसरी तरफ आज देश में कितनी ही लड़कियां हैं, जो सिर्फ घर में खाना पकाती हैं दिनभर मजदूरी करती हैं खेतों पर भी काम करती हैं और उसके अलावा उन्हें मारा पीटा भी जाता है जितना वे काम करती हैं उन्हें उसकी मजदूरी भी नहीं दी जाती, अगर पारिवारिक सम्पत्ति है तो उसमें उनका हिस्सा सिर्फ एक प्रतिशत ही मिलता है, अगर मेहनत करती हैं तो सिर्फ दस प्रतिशत ही मेहनताना मिलता है, क्या ये सही है? मैं कुछ निम्नलिखित आकड़ों से दर्शाना चाहती हूं कि लड़कियों की क्या दयनीय स्थिति है।

लड़कियों या महिलाओं की स्थिति

आबादी में महिलाएं या लड़कियां 50%

*****

दिनभर की मेहतन घर से बाहर तक 75%

*****

उनकी जो आमदनी है केवल 10% और

****

पारिवारिक सम्पत्ति जो होती है उसमें 1% ही उन्हें दिया जाता है।

अब गौर किया जाए कि अगर लड़कियों की ऐसी स्थिति रहेगी तो हम लड़कियां जाएंगी कहां? क्या हमें जीने का हक नहीं है? मैं भी एक लड़की हूं मेरे भी बहुत सारे अरमान हैं कुछ सपने हैं जो मैं पूरा करना चाहती हूँ, मगर ऐसा रहा तो क्या मैं सपनों को सच कर पाऊंगी या उसे पूरा करने के लिए मुझे सहयोग मिलेगा।

अगर मैं चाहूं कि मुझे कल्पना चावला जैसी हिम्मतवर बनना हैं, हमारे देश की जो विद्वान महिलाएं गुजरी है जिनमें से इन्दिरा गांधी, सरोजनी नायडू, बेगम अवध, लक्ष्मी बाई, हजरत महल जैसी और भी बहुत है, मगर उन सभी ने हमारे लिए जितना किया है क्या उतनी काफी हैं, अगर नहीं तो हमें आवश्यकता है दूसरों के सहयोग की और पूर्ण विश्वास की जिसे लोगों से अगर प्रोत्साहन मिले, बढ़ावा मिले तो मुझे लगता है कि जो मैं चाहती वो जरूर पूरा होगा।

मैं तो बस बेहतर कल को देखना चाहती हूं जो लड़कियों का उज्जवल भवष्यि हो और उन्हें आगे चलकर पिता, पति और पुत्र तीनों का सहयोग मिले। मैं भी एक लडकी हूं और मैं भी तो यही चाहती हूं कि मेरा कल सुन्दर हो और मेरी तरह हर लड़कियां व महिलाओं का जीवन उज्जवल हो।

इस्लाम में भी शुरूआती दौर से ही लड़कियों को अहम दर्जा मिला है जिसके कारण मैं इससे बहुत

प्रभावित हूं। पहले तो लड़कियों को पैदा होते ही दफन कर दिया जाता था, उन्हें कोई हक नहीं दिया जाता था मगर इस्लाम के शुरुआती दौर में ही उन्हें दफन होने से बचाया गया, उन्हें इज्जत का दर्जा दिया गया। हजरत आयशा जो मोहम्मद साहब की पत्नी थी मैं उनसे बहुत प्रभावित हूं, क्योंकि उन्होंने उस जमाने में भी अपने घर पर हुनरमंदी का काम सिखाया जिससे उन्हें आमदनी हो और वो अपना खर्च निकाल सके। बहुत सारी औरतें जिनसे मुझे अनुभव प्राप्त हुआ।

मैंने खुद कन्या भ्रूण हत्या भी देखी है। जब मैं एकबार गाँव गई तो वहां पर देखा कि कुछ औरतों ने अपनी बहु के पेट में पल रही बच्ची को मरवा दिया और फिर कहने लगी कि लड़की पैदा होकर क्या करेगी, पैसा खर्चा करवाएगी शादी में अलग खर्च होगा पर वे लोग ये क्यों भूल जाती हैं कि वे भी तो स्त्री ही हैं। कुछ के पिता भी यही चाहते हैं कि उनका पुत्र ही हो, वे पुत्री से वंचित रहना चाहते हैं क्या ये सही है? अगर हम किसी को जीवन नहीं दे सकते तो हमें किसी को मारने का कोई हक नहीं है।

कुछ दिन पहले मैं केरल गई थी वहाँ पर मैंने देखा कि एक अंकल मुझसे मिले और उन्होंने बताया कि उनकी बेटी 15 वर्ष की है और वो अपनी बेटी की शादी 18 वर्ष में ही करेंगे, क्योंकि ज्यादातर लोग वहाँ पर लड़कियों की शादियां 12-15 साल में ही लोग कर देते हैं। जबकि उस अंकल की शादी 15 वर्ष में हुई थी। जब मैंने ये सुना तो बहुत ही ज्यादा खुशी हुई क्योंकि सबसे ज्यादा अपने बच्चों के लिए उन्होंने सोचा और मेरा ये अनुभव मेरे बहुत काम आया।

अगर हर माँ-बाप अपने बच्चों का उज्ज्वल भविष्य सोंचे खासकर लड़कियों का और ये समाज भी उनका उज्ज्वल भविष्य सोचे तो इस देश की तरक्की बहुत ही जल्दी निश्चित है और हर जगह लड़कियों को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की ताकत प्रदान करें, बस यही मैं चाहती हूँ। काश! यही हर लड़की का सपना हो जिसे वो पूरा कर सके और दिखा दे उसमें भी आसमाँ को छूने की शक्ति है जिसे वो अपने अंदर जगाए।

सबा अजमत,
मिर्जा गालिब कॉलेज, गया

लड़कियों को आगे बढ़ने से रोका जाता है

लड़कियां आंतरिक रूप से सशक्त होती हैं। यह अलग बात है कि उनकी योग्यताओं, भावनाओं आदि को समाज की रूढ़िवादिता के कारण दबा दिया जाता है। हम लड़कियां घर के अंदर तथा बाहर, दोनों प्रकार के कार्यों को करने में सक्षम होती हैं। मेरे अच्छे अनुभव- यदि मैं लड़की होने के कुछ अनुभवों को लिखती हूं तो शायद यह अनुभव कभी समाप्त ही न हो, क्योंकि एक लड़की को ही मां बनने का सौभाग्यशाली गौरव प्राप्त है। यदि एक लड़की मां बनकर इतनी बड़ी जिम्मेदारी निभा सकती है तो क्या वह अन्य कार्यों को नहीं कर सकती? हम लड़कियों के लिए कोई भी कार्य असंभव नही है। समाज में जो भेदभाव लड़के और लड़कियों में किया जाता है, उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि लड़कियों को अंदरुनी रूप से कमजोर समझा जाता है। लड़के और लड़कियों की शारीरिक क्षमता समान होती है। यदि लड़के सेना में जाते हैं, तो क्या लड़कियां सेना में नहीं जा सकती हैं ? यदि हम अपने पुराने समय को देखें, तो उस समय में भी हमें लड़कियों के इतने उदाहरण मिलेंगे, जिसकी चर्चा हम कम शब्दों में नहीं कर सकते। हमारे देश को आजाद कराने में जहां पुरूषों ने अपना योगदान दिया है। वहीं झांसी की रानी ने भी अपना लहु बहाकर, अंग्रेजों से पूरे आत्मविश्वास के साथ लड़कर अपनी कुर्बानी दी। यदि हम श्रीमती इंदिरा गांधी की बात करें तो हम पूर्ण रूप से समझ सकते है कि एक लड़की या महिला सिर्फ अपने घर को ही नहीं बल्कि भारत जैसे बड़े और विशाल देश की बागडोर को भी संभाल सकती है। अतः उपयुक्त उदाहरणों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि लड़कियां ना तो लड़ाई से दूर है, ना तो अंतरिक्ष में जाने से, और ना ही माउंट एवरेस्ट जैसे ऊंचे शिखर पर चढ़ने से वह हर क्षेत्र में अपने-आप को शामिल कियें हुई हैं, तो फिर क्यूं हम लड़कियों को आगे बढ़ने से रोका जाता है और पुरुषों को सारे अधिकार प्रथम रूप से दिए जाते हैं। इन अधिकारों को पाने के लिए हमें सर्वप्रथम अपने माता-पिता के सोच को बदलना होगा।

अतः उसके लिए हम लड़कियों को ही आगे बढ़ना होगा और एक समूह के साथ अपनी योग्यता को पूरी दुनिया के सामने लाना होगा और यह साबित करना होगा कि लड़के और लड़की में कोई फर्क नहीं है। लड़कियां भी उन सारे कामों को कर सकती हैं जो लड़के कर सकते हैं।

मेरे बुरे अनुभव- माता-पिता के दबाव के कारण कभी यह एहसास होता है कि काश मै एक लड़का होती, तो मेरे ऊपर इतनी बंदिश नहीं होती, मैं जहां चाहती, वहां जाती, मैं जो चाहती वह करती और जो बनना चाहती वह बनती। लेकिन शायद लड़की होने के कारण ही मैं अपने परिवार की जिम्मेदारियों को पूरी करते-करते अपने सपनों को दबाए हुए हूं। लेकिन मैं जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए अपने सपनों को पूरा करना चाहती हूं। अतः इस प्रकार मैं यह कहना चाहती हूं कि लड़की होना कोई बुरी बात नहीं बल्कि एक गौरव की बात है। हमें सशक्त बनना होगा।

निधि कुमारी,
गौतम बुद्ध महिला कॉलेज, गया

शिक्षा, संपत्ति, सत्ता में महिलाओं को मिले बराबरी, तो बने बात

मेरा जन्म एक अत्यंत साधारण परिवार में हुआ। बचपन से मेरे मन-मस्तिष्क में एक बात कौंधती रहती कि इस संसार में जब प्रकृति ने स्त्री और पुरुष दो जीवन के आधार स्तम्भ बनाए हैं, तो किसी एक स्तम्भ की उपेक्षा करते हुए हम एक सुदृढ़ और स्वस्थ्य समाज के निर्माण की आशा कैसे कर सकते हैं। मुझे अपने समाज में स्त्री संबंधी दो विचारधाराओं के कार्य करने का अहसास हुआ। पहली विचारधारा पौराणिक भारतीय परम्परा का प्रतिनिधित्व करती है, तो दूसरी विचारधारा पश्चिमी विचारधारा है, जिसका प्रभाव हम समाज में महसूस कर सकते हैं।

भारतीय परम्परागत विचारधारा के भी दो पहलू हैं। बचपन में मैं अक्सर सुना करती थी कि लड़की लक्ष्मी का रूप होती है। जब मेरे घर में दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती देवियों की पूजा होती थी तो मुझे लड़की होने पर गर्व होता था। जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई मैंने अपने आसपास के समाज में उस कड़वे सच को महसूस किया, जिसमें स्त्रियों को दोयम दर्जे का नागरिक समझा जाता रहा है। एक ओर जिस स्त्री को हम देवी के रूप में पूजते हैं, वहीं दूसरी ओर स्त्रियों पर अत्याचार करते हैं।

यह दोहरापन मुझे विह्वल करने लगे। स्त्रियों को पुरुष की संपत्ति और उसके अधीन समझा जाता है। मैंने पौराणिक कहानियों और ग्रंथों के माध्यम से यह महसूस किया कि भारतीय इतिहास में द्रौपदी, सीता, जैसी महिलाएं भी हैं, जिन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त होने पर भी कभी पति की संपत्ति मानकर जुए में दांव पर लगा दिया गया तो कभी संपत्ति से निष्काषित कर जंगल में रहने पर मजबूर किया गया।

दूसरी विचारधारा है पश्चिम की, जिसमें एक ओर महिलाओं को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है। जहां तक मेरा अनुभव है, पश्चिमी मानसिकता में सदा से ही स्त्रियों को दिखावे की वस्तु के रूप में प्रदर्शित किया है। आज टेलीविजन पर पत्र-पत्रिकाओं में स्त्री को जिस रूप में प्रदर्शित किया जाता है, उससे मुझे अश्लीलता की बू आती है।

आश्चर्य होता है समाज के उन ठेकेदारों पर जो महिला उत्थान की बात करते हैं, और दूसरी ओर महिला को बाजार की वस्तु मानकर उसका शोषण करते हैं।

अतः मेरा अनुभव यह है कि हमें इन दो परस्पर प्रतिकूल विचारधाराओं का समन्वय करते हुए महिला सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ना होगा।

भारतीय स्वस्थ्य परम्परा का मिलन पश्चिम की स्वस्थ आधुनिक विचारधारा से करवाना होगा ताकि समाज को एक नई दशा और दिशा मिल सके। मैंने बचपन से लेकर आज तक समाज में स्त्रियों की समस्याओं को महसूस किया है। समस्याएं कई हैं, जो शायद सदियों से चली आ रही हैं। पर मैंने आवश्यकता इस बात की महसूस की है कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ने के लिए हमें तीन क्षेत्रों में काम करना होगा, शिक्षा, संपत्ति और सत्ता में महिलाओं को समान अधिकार।

मैंने अपने आस-पास, दोस्तों सम्बन्धियों के बीच ऐसी लड़कियों को देखा है जिनमें प्रतिभा होने पर भी परिवार के द्वारा शिक्षा से वंचित रखा गया है। संपत्ति का बंटवारा सिर्फ बेटों के बीच होता है।

लड़कियों को सर्वथा इससे वंचित रखा जाता है। दहेज की मोटी रकम पर भी लड़कियों का नहीं, लड़के और उसके घरवालों का अधिकार हो जाता है। संसार में आज भी उच्च पदों पर आसीन महिलाओं का प्रतिशत केवल तीन से चार प्रतिशत है।

इस परिस्थिति में एक लड़की होने के नाते मैंने यहीं अनुभव किया है कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा, संपत्ति और सत्ता में महिलाओं की बराबर भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। साथ ही महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए हमें एक स्वस्थ्य विचारधारा का निर्माण करना होगा, जिसमें स्त्री को पुरुष से समानता का दर्जा प्राप्त हो।

शुभ्रा सुमन,
गया कॉलेज, गया

कुमारी अंजली, पटना विमेंस कॉलेज, पटना

कई बार लगा,काश मैं लड़का होती..

मेरे माता-पिता ने मेरे साथ कभी-भी लड़की होने के कारण कोई बुरा व्यवहार नहीं किया। लेकिन मेरे दादाजी थोड़े पुराने ख्यालों के थे। वे हमेशा एक ही बात कहा करते थे कि लड़कियों को पढ़ाना नहीं चाहिए, उन्हें दूध नहीं पीना चाहिए इत्यादि। एक बार मेरे दादाजी को बुखार लगा, वे मेडिकल स्टोर से दवा लाए और खाना खाने के बाद कहा कि तुम मेरी दवा दे दो।

मैं थोड़ी नटखट लड़की हूं। उन्हें दवा देने से पहले मैं पूरी दवा की पैकेट खोलकर देखी। उस समय नकली तथा एक्सपाइरी डेट की दवाओं का बहुत चलन था। जब मैंने वह दवा देखी तो वह दवा दो साल के पहले ही तक खाने के लिए बनाई गई थी। मैंने अपने पिताजी को यह बात बताई, पिताजी ने यह बात सारे घरवालों को बताई। सारे घर में मेरी वाह-वाही होने लगी। क्योंकि मैने घर पे आने वाले एक बड़े संकट से सभी को मुक्ति दिलाई। इसी घटना का परिणाम है कि आज मैं शहर में रह कर अपनी पढ़ाई कर रही हूं और अब दादाजी जी खुश हैं। यह अनुभव मुझे बहुत ही अच्छा लगा। एक बार मैंने सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में भाग लिया। एक राउण्ड मैं जीत भी गई। दूसरे राउण्ड में मैं विजेता तो नही बनी पर दूसरा स्थान अवश्य ही प्राप्त हुआ। इसके बाद हमें आगे प्रतियोगिता के लिए पटना जाना था तीन लड़के और मैं एक अकेली लड़की का उस प्रतियोगिता के लिए चयन हो चुका था। लेकिन मैं वहां नही जा सकती क्योंकि मैं अकेली थी। मुझे बहुत अफसोस हुआ कि काश मैं लड़का होती।

मैं इस समय I.Sc. में पढ़ रही हूं। मुझे कोचिंग से आने में थोड़ा शाम हो जाती है और अंधेरा भी। मुझ पर प्रतिदिन मेरे भइया द्वारा यह दबाव बनाया जाता है कि तुम अपने कोचिंग का समय बदलवा लो या फिर वहां पढ़ो ही मत। क्योंकि आने में रात्रि हो जाती है। लेकिन सर बदलने को तैयार ही नहीं है। मुझे मेरे भईया मना करते है लेकिन वे खुद रात को 9 या 10 बजे तक घर आते है जो कि उन्हें कोई काम भी नही है। यह मुझे बहुत बुरा लगता है। मैं सोचती हूं कि काश मैं लड़का होती है। इन सभी अनुभवों के बावजूद मेरा एक अच्छा अनुभव यह है कि जब मैं उच्च विद्यालय में पढ़ती थी तो सिर्फ और सिर्फ लड़की होने की वजह से मेरे सारे काम तुरन्त कर दिए जाते थे। वे लोग कहा करते थे कि बेचारी लड़की है, कब तक खड़ी रहीगी। इसका काम जल्दी कर दीजिए। यह मुझे लगता था कि यह लड़की होने का फायदा है। मेरे चेहरे का रंग थोड़ा सांवला है तथा मेरे भाई का चेहरे का रंग थोड़ा साफ है। तो हमेशा मेरे घर वाले लोग बाते करते है कि लड़का सांवला हो जाए ठीक है लेकिन लड़की सांवली है यह नहीं अच्छा लगता है। इससे मुझे बहुत दुःख होता है। मेरी दादीजी तो यहां तक कहती हैं कि पिछले जन्म में मैंने ऐसा कौन सा ऐसा पाप किया जो हमारे घर में इतनी सारी बेटियों ने जन्म लिया। सभी घर की कर्ज हैं। सारे घर को कंगाल कर देंगी। यह सुनकर मुझे बहुत दुःख पहुंचता है। जबकि मेरी मां कहती है कि पिछले जन्म में मैने जरूर कोई पुण्य का काम किया होगा तभी तो हमारे घर में तीन-तीन बेटियों ने जन्म लिया। बेटियां ही तो हमारे घर की लक्ष्मी हैं।

जो व्यक्ति अपनी लक्ष्मी का कद्र नहीं कर सकता वह नरक भोगता है। धीरे-धीरे लड़कियों के विषय में पुरानी मान्यताएं गलत साबित हो रही हैं।

अर्चना कुमारी,
श्रीकृष्ण महिला कालेज, जहानाबाद

चूड़ियाँ पहनकर घर बैठने का जमाना नहीं

मैंने इस समाज को गहराई से देखा है जहां नारी किस तरह शोषित हो रही है। दूसरी तरफ कई संस्थाएं भी चलाई जा रहीं हैं जो नारियों के उत्थान को ले कर आगे बढ़ रही हैं। यदि हम किसी घर में एक महिला को शिक्षित करते हैं तो उसके द्वारा पूरा परिवार शिक्षित और समृद्ध कहलाएगा। आज वो जमाना नहीं है कि हम बस चूड़ियां पहनकर घर पर बैठे ,बल्कि समय है एक पहल करके एक नया सवेरा लाने का। बिहार के एक छोटे से गांव की लड़की थी जिसने एक कान्फ्रेस में भाग लिया और इतने अच्छे से उसने संबोधन किया कि अंततः वो एक इटरनेशनल कान्फ्रेंस में लंदन भेजी गई और अखबार की सुर्खियों में आई। देश को गर्व हुआ। उसका नाम मुन्नी था।

मैंने भी समाज में गरीबी को बहुत नजदीक से देखा है। मेरे पिताजी एक डाक्टर होने के साथ-साथ एक समाज सेवक हैं। हम सब मिलकर उस संस्था को चला रहे हैं। हम मुफ्त विद्यालय चलाते हैं, जहां गरीब बच्चों को शिक्षा और पठन-पाठन की सामग्री मुफ्त दी जाती हैं। मेरे खुद के गेवाल बिगहे मोहल्ले में कई लड़कियां बत्ती बनाकर अपना घर चलाती थीं लेकिन हमने उनके घर जाकर उनकी मां को समझाया कि लड़कियां पढ़ कर आगे बढ़ें तो ज्यादा अच्छा है। लेकिन उनका कहना था कि लड़कियां घर तक सीमित रहें, शादी हो जाए यही काफी है। लेकिन फिर हमने उन्हें समझाया, जागरूक किया और अंततः सब बच्चियां पढ़ने के लिए आगे बढ़ीं। यह हमारे लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। एक उदाहरण और है कि एक बच्ची जो लगभग डेढ़ वर्ष की थी। उसे उसके माता-पिता ने दुर्गापूजा के समय दुर्गा मां के सामने बिठाकर छोड़ दिया था। उसे हम लोगों ने गोद ले लिया, जबकि हम दो बहन एक भाई थे। मेरे पिताजी (डा. संकेत नारायण सिंह) ने उस बच्ची को पिता का प्यार दिया। मां ने दिनरात एक कर सेवा की और आज वह बच्ची बड़ी हो गई है। लगभग 8 वर्ष की है। उसका नाम भी मिली है। वह हमारे यहां बहुत अच्छे से रह रही है। उसकी पढ़ाई चल रही है। इस तरह अगर सभी लोग जागरूक हों जाएं तो वो दिन दूर नहीं जहां एक पूरे सुखी, समृद्ध, सर्वगुण सम्पन्न राष्ट्र तैयार हो जाएगा।

रश्मि,
गया कॉलेज, गया

घर के फैसलों में सम्मलित नहीं की जातीं लड़कियां

मुझे खुशी है कि मैं भारत जैसे वीर देश की बेटी हूं। मैं समझती हूं, मैं अपने परिवार के लिए उज्ज्वल भविष्य की पूंजी हूं। मुझे मेरे घर में हमेशा एहसास दिलाया जाता है कि मैं एक लड़की हूं, जो नौकरी तो कर सकती है, परंतु गृहस्थ जीवन भी उससे ही जुड़ा है। जब मैं छोटी थी तो मुझे एहसास नहीं हुआ कि मैं कौन हूं, मेरे कर्तव्य क्या हैं। जिन्दगी में मेरे उसूल क्या हैं, पर जैसे-जैसे वक्त बीतता गया, मुझे लड़की होने का एहसास कराया जाने लगा। मुझे उस काम को करने के लिए नहीं कहा गया, जो लड़के कर सकते हैं। जैसे रात को अकेली बाहर मत जाओ, किसी पुरुष से ज्यादा बातचीत मत करो, सीमा में रहो आदि-आदि। मैं पूछती हूं जब एक लड़की किशोरावस्था में पहुंचती है तो उसके साथ ऐसा दुर्व्यवहार क्यों किया जाता है? क्या सीमाएं सिर्फ लड़कियों के लिए बनी हैं? क्या लड़के कुछ भी कर सकते हैं?

मैं जानती हूं यह पुरुषप्रधान देश है, परन्तु महिलाओं की भी अपनी जिन्दगी हैं। जब मैं कोई कार्य करती हूं। किसी के बारे में सोचती हूं। बड़ों के फैसले से संतुष्ट नहीं होती हूं, तो उस वक्त मुझे एहसास कराया जाता है कि मैं एक लड़की हूं और लड़कियां सिर्फ घरेलू काम के लिए होती हैं। वे घर के किसी फैसले में कदापि सम्मलित नहीं हो सकतीं। जब ऐसी बात सुनती हूं तो मेरी अंतरात्मा झकझोर जाती है। कभी-कभी सोचने लगती हूं कि मैं लड़की क्यों हूं। लेकिन अगले ही क्षण मुझे एहसास होता है कि लड़कियां बहादुर होती हैं। उसमें सहने की हिममत होती है, मैं यह नहीं कहूंगी की सभी पुरुष एक जैसे होते हैं परन्तु कुछ गलत आचरण वाले पुरुषों से समाज बदनाम होता है। नारियों के विकास में कई महापुरुषों ने सहयोग किया। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी जैसे अनेक महापुरुषों ने नारी विकास की ओर विशेष ध्यान दिया। बस मैं यही कहना चहूंगी कि हमारे साथ ही इतनी पाबंदियां क्यों? क्या मैं अपना निर्णय स्वयं नहीं ले सकती? क्या मैं ही हमेशा समाज और परिवार की परवाह करूं? मैं लड़की होकर कुछ करना चाहती हूं। अपने सपने को अपने मन मुताबिक पूरा करना चाहती हूं। मैं सोचती हूं, जब मैं अपने पर निर्भर हो पाऊंगी तो इस पाबंदी को जरूर तोड़ दूंगी। मैं सभी लड़कियों को यही संदेश दूंगी, सुनो सबकी बात, परन्तु निर्णय स्वयं लो, चाहे वह किसी भी पहलू पर क्यों न हो। मैं अपने माता-पिता को दिखा दूंगी कि मैं लड़की होकर भी लड़को से किसी भी मुकाबले में कम नही हूं। जब लड़के सब कुछ कर सकते हैं, तो लड़कियां क्यों नहीं कर सकती। वह तो दो परिवारों का निर्वाह करती है। उसमें सहनशक्ति पुरुषों की तुलना में अधिक होती है।

ममता कुमारी,
गया कॉलेज, गया

...जब बहन की जान बचाने में दादी ने कोई रुचि नहीं ली

आज विश्व भले ही 21वीं सदी में पहुंच गया हो परन्तु हमारे देश की आधी आबादी, यानी औरतें आज भी दोयम दर्जे की जिंदगी जी रही है। मैं भी उसी आबादी का हिस्सा हूं। मेरा अनुभव कुछ खास अच्छा नहीं है। मैं मध्यमवर्गीय परिवार से ताल्लुक रखती हूं। मैंने बचपन के कुछ साल गांव में व्यतीत किए हैं। हमारा बड़ा सा संयुक्त परिवार था, परन्तु एक राहत देने वाली बात ये थी कि हमारे घर में मुखिया कोई पुरुष नहीं बल्कि एक नारी ही थी। वो मेरी दादी थी पर ये उपाधि भी उन्हें तब मिली जब मेरे दादाजी गुजर गए। मेरी दादी के पांच बेटे थे। मेरे पिताजी दूसरे नंबर के थे। दादा जी के गुजरने के बाद घर की सारी जिम्मेदारी दादी, बड़े पिजाजी तथा मेरे पिता पर आ गई। दादाजी एक शिक्षक थे। उनके गुजरने के बाद दादीजी को पेंशन भत्ता मिलता था, लेकिन उतने बड़े परिवार के लिए वो काफी कम पड़ता था। मेरे पिता जी की उस वक्त तक सरकारी नौकरी लग गई थी। शादी हो चुकी थी। पिताजी को नौकरी के सिलसिले में बाहर रहना पड़ता था। मां को गांव में घर परिवार की जिम्मेवारी संभालनी पड़ती थी। उस घर की जितनी भी महिलाएं थीं, सबकी जिम्मेवारियां थीं, सिर्फ मेरी दादी को छोड़कर। घर के सारे नियम दादी ही तय करती थी। मेरे जन्म से पहले क्या हुआ, ये तो मैं नहीं बता सकती पर होश संभालने के बाद जो हुआ उसे याद करके आज भी मेरा दिल कांप उठता है,और मैं भगवान से यही प्रार्थना करती हूं ये किसी के साथ न हो।

दादी के शासन में घर का सारा काम करना और पहले परिवार के पुरुषों को खाना लिखाना औरतों के जिम्मे था। दादी पहले खाने वालों में एक मात्र महिला होती थीं। अगर कभी भूल से घर की किसी महिला ने खाना खा लिया, तो उन्हें दंडित करने का भी प्रावधान था। मेरे घर में लड़कियों की कुल जनसंख्या लड़कों के वनिस्पद ज्यादा है। तो जाहिर सी बात है कि लड़कों का ख्याल ज्यादा अच्छी तरह से होता था। मेरी दादी जितना मेरे भाइयों को मानती थी, उतना शायद ही किसी बहन को मानती थी। बात उस समय की है जब मेरी छोटी बहन पैदा हुई थी। कुछ दिनों बाद ही मेरे पापा, जो नौकरी के सिलसिले से बाहर रहते थे, चले गए। बहन को पैदा हुए पांच दिन भी नहीं हुए थे और मेरी मां को घर के सारे काम करने पड़े। इसी बीच मेरी बहन को निमोनिया ने आ जकड़ा। वह सुस्त और काली पड़ने लगी। पता नहीं उसे कितने दिनों से निमोनिया था। जब मैं और मेरी मां ने उसके होठ काले पड़ते देखा, तब जाकर हमें लगा कि वह बीमार है। जब मेरी मां ने घर के और लोगों से इस बारे में बात की और उसे चिकित्सक के पास ले जाने को कहा, तो सभी ने इंकार कर दिया। जब मां ने मेरी दादी (यानी अपनी सासू मां) से ने कहा, तो उनका ठंडा-सा जवाब था- बेटी ही तो है, बेटियों की जिंदगी ऐसे भी बहुत लंबी होती है।

मां के बार-बार गिड़गिड़ाने पर दादी ने कहा कि अगर तुम्हारे पास पैसे हैं तो जाओ डाक्टर के यहां, वरना छोड़ दो। मेरे पास फुर्सत नहीं है। मां शहर की पढ़ी लिखी औरत थी। उसने हिम्मत नहीं हारी। हालात ने उसे मजबूर कर रखा था। वो बोली- कोई बात नहीं। उसने मेरा हाथ पकड़ा और मेरी

बहन को गोद में उठाते हुए बोली मैं अकेली जाऊंगी डाक्टर के यहां। मां के पास कुछ पैसे थे। डाक्टर ने जब मेरी बहन को देखा तो कहा कि अगर आज रात ये लड़की बच गयी, तो समझो बच जाएगी, वरना इसका कुछ नहीं हो सकता। मैं और मेरी मां दोनों ये सुनकर खूब रो रहे थे। हमने दवा खरीदी और चल पड़ उसी नर्क (गांव का घर) की ओर। कहा जाता है कि दर्द की जब इंतिहा होती है तो इंसान फैसला लेता और हमारे फैसले ही भविष्य तय करते हैं। उस दिन जब हम घर वापस जा रहे थे तो पता नहीं भगवान को भी क्या हो गया था। इतनी जोरों की बारिश हो रही थी कि उम्मीदों पर तो पानी फिरता जा रहा था। छोटी बहन को बचाने में की उम्मीद नहीं थी, पर वह बच गई। आज बिलकुल स्वस्थ है। पर मेरी मां ने उसी दिन फैसला लिया कि वह खुद अपने बच्चों का भविष्य तय करेगी। आज मैं, मेरी माँ, मेरे पापा, मेरी बहन और मेरा भाई खुशी-खुशी साथ रह रहे हैं, लेकिन यह तो साफ है कि हमारे गांव-घर में पुरानी पीढ़ी की महिलाएं (जैसे मेरी दादी) खुद औरत होकर औरतों के साथ क्या सुलूक करती थीं और लड़की के बारे में उनका नजरिया कितना कठोर है। ऐसे खयाल वाली महिलाएं आज भी हैं, इसीलिए बहुएं प्रताड़ित हो रही हैं या भ्रूण हत्या जैसा अपराध जारी है।

(कतिपय कारणों से लेखिका का नाम प्रकाशित नहीं किया जा रहा है)

कुमारी पूजा, मिर्जा गालिब कॉलेज, गया

हर आदमी सिर्फ लड़की का शरीर चाहता है

मैं मध्यम परिवार की लड़की हूं। मेरा अनुभव अच्छा नहीं है। अच्छा सिर्फ इतना ही है कि अभी तक मैं अच्छी हूं। मेरा ख्याल है कि आज के समाज में लड़की को कभी न कभी बुरा अनुभव जरूर रहा होगा। मेरा अनुभव थोड़ा ज्यादा ही बुरा है। घर में मेरी मां मेरे भाई को और मुझे बराबर ही समझती है। फिर भी कभी-कभी वो कह देती है कि भाई लड़का है, इसे ज्यादा खाने दो, तुम थोड़ा कम खाओ। मैं यही सोचती हूं की मेरी मां, जो खुद एक औरत है, वो दूसरी स्त्री यानी अपनी बेटी को कमतर समझते हुए ऐसा कैसे कह सकती है?

मां का कहना है कि सिर्फ चार साल में ही जो कुछ पढ़ कर करना चाहती हो कर लो, अब तुम्हें हम लड़कों की तरह घर में रखकर ज्यादा नहीं पढ़ाएंगे। पता नहीं पापा क्या कहते हैं, वो सिर्फ कहते हैं- पढ़ो और जो भी पढ़ना है, ध्यान से पढ़ो। मेरे मम्मी-पापा ने कभी-भी मुझे बाहर पढ़ने के लिए नहीं भेजा। मैंने जवाहर नवोदय विद्यालय तथा पॉलीटेक्निक की परीक्षा पास की, पर वहां मुझे पढ़ने के लिए नहीं जाने दिया गया।

यह तो रही घर में भेदभाव की बात। अब दूसरे बुरे अनुभव के बारे में बात करते हैं। इसे मैं मजाक में लेती हूं क्योंकि मैं नहीं चाहती की मेरी बात जानकर कोई दुखी हो। मेरी अब तक की छोटी सी आत्मकथा कुछ ऐसी है-

मैं छोटी थी। याद नहीं कि कितने साल की थी। मैं एक होस्टल में रहती थी। वहां विद्यालय में लड़के-लड़कियां दोनों पढ़ती थीं। पर हास्टल सिर्फ लड़कों का था। वहां पर एक शिक्षक ने मेरा यौन शोषण किया था। उस वक्त मैं पहली या दूसरी क्लास में थी। मुझे उस वक्त कुछ समझ में नहीं आता था पर जब मैं बड़ी हुई तो ये बातें बहुत तकलीफ देती हैं। फिर एक बार मेरे दूर के रिश्ते के अंकल ने शोषण किया। इन हादसों ने मेरे दिमाग पर इतना बड़ा असर डाला है कि मैं अब शादी नहीं करना चाहती। मुझे हर आदमी में बस यही लगता है कि वो सिर्फ किसी लड़की का शरीर चाहता है। वो सिर्फ एक बार लड़की का शारीरिक शोषण कर अपनाना चाहता है।

भगवान पर से भी मेरा भरोसा उठ गया है। क्योंकि उस समय मैं बच्ची थी। कहते हैं कि बच्चों को भगवान बचाते हैं तो फिर उन्होंने मुझे इन सबसे क्यों नहीं बचाया? क्या मैं इसी लायक थी? क्या मेरा हक नहीं है कि मैं भी यह गर्व से महसूस कर सकूं कि मुझे किसी आदमी ने नहीं छुआ? अब एक ही मकसद है जिंदगी का। ऐसे लोगों को समाज के सामने नंगा करूँ। समाज को दिखला दूँ कि कैसे समाज में पुरूषों के दो चेहरे हैं। आये दिन ट्यूशन या कालेज जाते वक्त लड़के गंदी फब्तियां कसते रहते हैं। सिर्फ जवान लड़के ही नहीं, अधेड़ आदमी भी ऐसी हरकत करते हैं। मैं गया शहर में रहती हूं। यहां का तो हाल सब को पता है। मुझे तो लगता है यहां के लोगों को जन्म से ही जैसे मिलें हैं ये सारे दुर्गुण। मैं यह सोचती हूं कि क्या इनके घर में पत्नी, बेटी या औरतें नहीं है? ये घर में कैसे रहते हैं? मैं स्त्री अपमान और मानसिक प्रताड़ना देने वाली इन सब घटनाओं से बहुत आहत हूं। फिर भी मुझे खुशी है कि मुझे इतने अच्छे माता-पिता मिले हैं। और मैं अपने माता-पिता से बस यही आशा

करती हूं कि ये मुझे हर तरह से आगे बढ़ने में मेरा साथ दें। मैं इन सब घटनाओं को भूलना नहीं चाहती हूं।

अब अपने लिए एक अच्छा अनुभव बनाना चाहती हूं। बुरे अनुभव उन लोगों ने दिए पर अपने लिए अच्छे अनुभव मैं खुद बनाऊंगी। कड़वे अनुभव के बावजूद मैं लड़की हूं, इस पर मुझे गर्व है। मैं ही तो हूं कल की जगत जननी, लेकिन पुरुष समाज मेरा सम्मान करना कब सीखेगा?

(कतिपय कारणों से लेखिका का नाम प्रकाशित नहीं किया जा रहा है)

पुष्पा कुमारी, मगध महिला कॉलेज, पटना

दहेज प्रथा ने स्त्री जीवन को अभिशाप बना दिया

मेरा अनुभव अच्छा भी रहा है तथा बुरा भी। हम तीन बहन तथा एक भाई हैं। मेरे पिता जी भाई बहनों में कोई भेदभाव नहीं करते। मुझे पढ़ा कर सी.ए बनाना चाहते हैं। मुझे लगता है मेरे पिताजी हम लड़कियों को बहुत प्यार करते हैं। वो किसान हैं फिर भी हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

मुझे उस समय लड़की कहलाने में गर्व होता है जब मैं किसी लड़की को स्वयं अपनी समस्याओं का निदान करते देखती हूं। एक बार एक बूढ़ी महिला सड़क पर रखे पत्थर से टकरा कर गिर गई। वहां बहुत से लोग देखते रहे पर किसी ने उसे उठाया नहीं। मैं अपने स्कूल जा रही थी। मैंने उस महिला को उठाया तथा सहारा देकर उसे उसके घर तक छोड़ आई। मुझे उस दिन ऐसा लगा कि मैं लड़की होकर भी परोपकार कर सकती हूं। मैं जब भी भारत की प्रथम महिला आई.पी.एस. किरण बेदी का नाम सुनती हूं तो मेरे अन्दर काफी हौसला बढ़ता है। मैं अपने क्लास में हमेशा अव्वल रही हूं। कभी-कभी लड़कियां बहुत बड़े-बड़े कार्य कर लेती हैं।

लड़कियों को सरकार भी सहयोग कर रही है। लड़कियों की पढ़ाई में खर्च का कुछ पैसा भी सरकार माफ कर रही है। उन्हें हर क्षेत्र में आरक्षण दिया जा रहा है ताकि वे किसी के आसरे न रहें। इतना सब होने के बावजूद समाज लड़कियों के पैर में बेड़ियां बांध रहा है। मेरा अनुभव बुरा भी रहा है। जब मैं अपने गांव के स्कूल से दसवीं पास कर इंटर में नामांकन के लिए शहर आ रही थी, तो मेरे पड़ोस के बड़े बुजुर्ग लोगों ने मेरे पिता जी से कहा कि लड़कियों को पढ़ाने में पैसा खर्च मत करो, बल्कि अच्छा दहेज देकर उसकी शादी कर दो। उस दिन मैं काफी दुःखी हुई थी। उस दिन मुझे लगा कि लड़की होना अच्छी बात नहीं है। मेरे पापा ने मुझे समझाया कि लोगों के कहने से कुछ नहीं होता। तुम खुद में हौसला बढ़ाओ। इतना होने के बावजूद आज का समाज लड़कियों को आगे बढ़ने से रोक रहा है। लड़कियों को पढ़ने की उम्र में घर का काम-काज सम्हालने में लगाया जाता है। जिससे उनका शैक्षणिक-आर्थिक विकास नहीं हो पाता है। वे आत्मनिर्भर नहीं बन पातीं, इसलिए उन्हें बोझ समझा जाता है। बाल विवाह और दहेज प्रथा स्त्री जीवन को अभिशाप बना देते हैं। दहेज का चलन इतना बढ़ चुका है कि लड़की का जन्म होते ही जैसे परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ता है। इसके कारण आज समाज में भ्रूण हत्या तेजी से फैल रही है। विडंबना यह है कि जो जितना धनवान और शिक्षित है, उसकी दहेज की भूख भी ज्यादा है। काफी धन-दौलत वाले लोग भी वे दहेज लेने से नहीं चूकते। ऐसे भी पाखंडी होते हैं कि दहेज न लेने का प्रचार करेंगे, मगर अपने लड़कों की शादी में मोटी रकम वसूलते हैं। इतनी महिला विरोधी सामाजिक कुरीतियों के बावजूद मुझे लड़की बनना अच्छा लगा है। अगले जन्म मैं लड़की ही बनना चाहती हूं। जब मैं चार्टर्ड एकाउण्टेण्ड बन जाऊंगी तो मैं अपनी जैसे लड़कियों को आगे बढ़ाने में काफी सहायता करूंगी।

मधु कुमारी,
गया कॉलेज, गया

हमारी तो मंजिल सितारों से आगे

मैं लड़की हूं; अरे देखो, वाह! क्या लड़की है यार, क्या आपको लड़की हुई है? ओह, हां मैं सुनती आई हूं ये सब, आज से नहीं जन्म के समय से. एक दर्द उठता है इस दिल में, पर हारने के लिए नहीं मजबूत बनाने के लिए; क्योंकि मैं जानती हूं ये लोग ये बातें इसलिए करते हैं क्योंकि ये बस इतना ही जानते हैं कि मैं एक लड़की हूं। ये शायद भूल जाते हैं मां, बहन, पत्नी, दादी और सारे रिश्ते। पर मैं नहीं भूली कि मैं लता मंगेश्कर , इंदिरा गांधी, किरण वेदी और सबसे बड़ी बात मैं संसार को आगे बढ़ाने वाली मां हूं। फिर भी भेदभाव जारी है। पापा भाई को बाहर भेज रहे हैं लेकिन बड़ी तो मैं हूं। पहले मुझे जाना चाहिये था न पर ..? इससे मैं हारी नहीं, बल्कि वहीं के स्कूल में पढ़ कर अच्छा किया, खुद को इस लायक बनाया कि आज मैं पटना वीमेंस कालेज की छात्रा बन गई। सफर इतना आसान नहीं था, इसके लिए औरंगाबाद से 7 बार मैं पटना अकेले आई; हाई कटआफ मार्क देख कर कितनी बार गेट से रोती हुई लौटी, कोई चुप कराने वाला नहीं, कोई समझाने वाला नहीं। पापा से बस यही सुना- ''कहता हूं कि यहीं रह के पढ़ाई करो, मैं भी देखता हूं, कैसे होता है तुम्हारा नामांकन''। हां देखा मैने और दिखाया उन्हें कि ऐसे होता है नामांकन और आज मैं यहां हूं। आज मैं लड़की से बेटा बन गई हूं और पापा गर्व से कहते हैं ''ये मेरा बेटा है''। लोग कहते हैं-वाह, आपकी बेटी जरूर कुछ करेगी। सच कहूं तो मैं बेटी ही रहना चाहती हूं, बस लड़की क्योंकि मुझे मेरा वजूद प्यारा है। बाहर खेलने से लेकर, जींस पहनने, तेज आवाज में बोलने, खाना ना बनाने आदि सब के लिए मैने सुने हैं ताने। बेटी है बाहर खेलेगी, बेटी है ऐसे बोलेगी पर मैं घबराई नहीं। मै लाई 7 वर्ष की अवस्था में एक हाथ में 5 के०जी० आटा और दूसरे में 5 के०जी० सब्जियाँ, वह भी एक किलोमीटर की दूरी से। दोनों हथेलियाँ लाल, दोनों हाथों में दर्द पर चेहरे पर एक मुस्कान और दिल में विश्वास क्योंकि मां कहती - ''पापा नहीं थे, भाई भी बाहर रहता है लेकिन बेटी है और मुझे कोई चिंता नहीं रहती क्योंकि ये मेरे साथ है''। लड़की से ही शुरू होती है जिंदगी, लड़की ही वो है जिसके साथ जुड़ कर लड़के बनाते है अपना भविष्य। फिर क्यों, ये घृणा, ये तिरस्कार? एक बार साथ देकर तो देखो, शायद हम वो कर जाएं जो आज तक किसी ने ना किया?

हमारी तो मंजिल सितारों से आगे।।
हां, ये हमारी मंजिल है एक लड़की की मंजिल।

आकांक्षा,
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना

मुझे अपने बंधनों से मुक्त होना है

मैं भी एक लड़की हूं। मैं अपने परिवार की एक अभिन्न सदस्य हूं। लेकिन मुझे अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ना पड़ता है। मेरी लड़ाई न मात्र इस समाज से है अपितु स्वयं से भी है। मैं एक वस्तु मात्र नहीं, सौन्दर्य की देवी नहीं, एक दिलचस्प कहानी मात्र नहीं .....और दया मांगने वाली अबला भी नहीं। लेकिन ईश्वर साक्षी है-मेरी अब तक की पहचान यही है। कई बार मैं स्वयं यही मानती हूं। सर्वप्रथम मैंने स्वयं जो बन्धन बांधे हैं- मुझे उनसे मुक्त होना है। मनुष्य का स्वाभाविक तौर पर स्वतंत्र होना ज्यादा महत्वपूर्ण है। मैं स्वतंत्र रहूंगी तब ही सपने देख सकूंगी एवं उन्हें साकार कर सकूंगी - सबसे, खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना- और यह कला तो मुझे विरासत में अपनी मां से मिली है- उन्हें अपनी मां से मिली थी। पर मैं चाहती हूं कि यह परम्परा यहीं समाप्त हो जाए। मैं अपने सपने जरूर साकार करूंगी, अपने जीवन को आकार दूंगी।

ईश्वर की अनुकम्पा से मैं एक ऐसे परिवार में पैदा हुई हूं जो मुझ में एवं मेरे भाई में भेद-भाव नहीं करता किन्तु मेरा समाज ऐसा नहीं है। मैं सुनसान रास्ते अकेले नहीं तय कर सकती। मैं न मात्र स्वयं का गौरव हूं बल्कि अपने परिवार की लज्जा हूं और वह ऐसे ही ढकी जा सकती है। मै उड़ान तो भर सकती हूं किन्तु मेरा आकाश सीमित है। मेरा भाई बड़े शहर के अच्छे महाविद्यालय से अकेले रह कर पढ़ सकता है इसलिए नहीं कि मेरे साथ दोहरा व्यवहार हुआ या उनकी (मेरे माता-पिता की) इच्छा है परन्तु सुरक्षा की दृष्टिकोण से इसी में मेरी भलाई है। इसे सुरक्षा कहते हैं - तो हे प्रभु आप मुझे बताएं असुरक्षा किसे कहेंगे? यह समाज का दोहरा व्यवहार नहीं तो और क्या है? इसके लिए आवाज कौन उठाएगा? मुझे अपने साहस को आवाज देना है। अपने परिवार की चेतना को जागृत करना है तब जाकर यह समाज मेरा होगा - मेरे सपने साकार होंगे।

वसुन्धरा,
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना

हमारा समाज भी बदलेगा

ईश्वर की कृपा से मैं इस संसार में आई तो शायद, मैं उस समय दुनिया की सारी सच्चाइयों से अनजान थी। ईश्वर को और उस सहृदयी मेरी माता को कोटि-कोटि प्रणाम! जिसकी बदौलत मैं आज अपनी खुली आंखें से यह दुनिया और उसके यथार्थ को देख पाने में समर्थ हो सकी हूं। कहते हैं, मां प्रथम पाठशाला होती है और उस नारी की बदौलत ही आज मै इतनी समर्थ हूं कि मुझे अपना अनुभव बांटने का सुअवसर मिला। वक्त के साथ साथ इंसान भी बदलता है। जन्म लेने के उपरांत परिवार में हुए पालन-पोषण के बाद मुझे मेरे परिवार में बहुत प्यार मिला। मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे इस दुनिया में जगह मिली अन्यथा, अन्य कितनी लड़कियां दुनिया में आने से पहले ही दुनिया से विदा हो जाती हैं। पर प्यार के साथ-साथ, मुझे यह भी वक्त के साथ-साथ बताया गया कि मैं एक लड़की हूं। जहां अन्य बच्चे खेलते, वहां मुझे जाने की अनुमति नहीं थी। घर में ही सारी सुविधाएं थीं। धीरे-धीरे वक्त ने करवट बदला और मेरा नामांकन भी लड़कियों के विद्यालय में हुआ जहां मैंने 10 वर्ष व्यतीत किए। जब वक्त के साथ-साथ मैंने भी होश संभाला और अपने लड़की होने के दर्द को भी समझा। पर मेरे परिवार ने मुझे इस बात को लेकर कभी अपनी नाराजगी नहीं जताई कि मैं लड़की हूं। पर बंदिशें जरूर लगाई। मां ने भी लड़कियों के व्यवहार, तौर-तरीकों के बारे में बताया। मुझे बुरा लगता कि मां इतना क्यों बताए जा रही है। मेरे अंदर समझ है और मैं भला बुरा जान सकती हूं। पर मैंने भी अपने माता-पिता की बात मानी कभी विद्रोह न किया और मैं समझती थी कि ये सभी बातें सही ही तो हैं। पर शायद समाज के बदलते परिवेश से माता-पिता के विचारों में भी परिवर्तन आया क्योंकि अंततः सामना तो हमें समाज का करना पड़ता है। पर एक बात मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि मुझे अपने परिवार में लड़की होने का दुःख बिल्कुल भी नहीं लगता क्योंकि मेरी इच्छाएं, जो मेरे माता-पिता को उचित लगी उसे पूरी भी की गई। मुझे अच्छे कालेज में शिक्षा लेने का मौका मिल रहा है और मुझे मेरे पिता एक खास रूप में देखना चाहते हैं। ऐसी बातों से मुझे मेरे परिवार में आने की खुशी होती है। पर उस समय यह जरूर महसूस होता है कि ''मैं लड़की हूं तो क्यों?'' जब मैं समाज के बीच होती हूं। आज हम कईयों को अपने परिवार से शिकायत नहीं इस जालिम समाज से शिकायत है जिसने लड़कियों के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाया है।

घर से कालेज आते, बाजार में निकलते समय पुरुष वर्ग द्वारा की गई छींटाकशी, बदमाशियां हमें मजबूर कर देती हैं और शायद इसी समाज की वजह से मेरे पापा मुझे हर बार हर अवकाश में खुद हॉस्टल से ले जाने और छोड़ने आते हैं। यदि मैं कहूं भी कि पापा मैं आ सकती हूं तो भी नकार दी जाती हूं क्योंकि यह दुनिया ही ऐसी हो चली है कि हम भरोसे भी करे तो किस पर? इससे पापा को कितनी थकान, परेशानी हो जाती है और मेरी वजह से उन्हें दुःख हो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता पर हम दोनों भी तो समाज से मजबूर हैं। खैर अभी तो कुछ पाने का क्रम शुरू ही हुआ है और आशा भी है कि हमारा समाज भी बदलेगा क्योंकि वक्त लगता है, परिवर्तन आने के लिए। पर ऐसी बात नहीं है कि उसे बुरे अनुभवों से मैं कमजोर पड़ती हूं। कदापि नहीं। क्योंकि

मुश्किलें कब ठहरी जब हो बुलंद इरादा,
मैंने खुद से ही कर रखा है आसमां छूने का वादा

ईश्वर पर भरोसा, हमेशा सही काम, आत्मविश्वास अवश्य वह दिन लाएगा जब समाज भी बदलेगा और

हर लड़की मेरे ही तरह गाएगी
आज मैं ऊपर ..... जमाना है पीछे।

वक्त आ रहा है, हम लड़कियां एकजुट हो रही है। समाज बदल रहा है क्योंकि अब .....
''हम तो चली अपने सपनों को छूने''

सुरभी रानी,
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना

ज्योति कुमारी, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

ये टूटे सपने चुभते हैं

जीवन के प्रथम एहसास को माता के गर्भ के अंधेरों से मैंने खोज निकाला, अपने अनुभव से। उस तन से पहली बार जब आजाद हुई तो उस अनुभव ने आशाओं को जन्म दिया। आशा एक आजाद जीवन जीने की। उस प्रकाशमय जीवन की आदत की एक ज्योत मन में जमा दी किसी ने, उसमें छुटपन में घी भी डाला गया। उस ज्योति को जो सहारा मिला, उसने अपनी स्वतंत्रता को असीम मान लिया। मुझे जीवन की हर खुशी दी गई – ये मेरे माता-पिता के अनुसार, अच्छे कपड़े, भोजन, शिक्षा और मीठी बातें थी, परन्तु जब सखियों संग खेलने जाने की जिद करती तो झिड़कियां खाती, अपने प्रागंन की वर्षा में भीगना चाहती तो डांट मिलती और जब संगीत के सुरों में खो जाना चाहती तो किताबों का वजन ज्यादा हो जाता। जीवन धारा में बहते-बहते यह भूल गई थी कि जिस प्रकार उसे जन्म किसी और ने दिया है उसके जीवन की राह भी वहीं बनाते हैं। नदियों की धारा भी प्रकृति के विरुद्ध नहीं बह सकती। मैंने भी अपनी धारा को एक नई दिशा दी। किताबों को अपना मित्र बनाया, प्राकृतिक सौन्दर्य को, संगीत के तालों को एवं जीवन के रंगों को दफन कर मैंने, उस कब्र पर एक ऐसे जीवन महल की शुरूआत की जो सबके लिए उन्नति, संपन्नता एवं जीवन की खुशहाली का प्रतीक था परन्तु मेरे लिए किसी कनक पिंजड़े से ज्यादा कुछ नहीं। मैंने खुद से ज्यादा अपने माता-पिता एवं परिवार को महत्व दिया – जो मेरे अनुसार मेरा कर्तव्य था परन्तु इसमें मेरी अपनी सोच, चाहत और नजरिया कहीं खो गया। समय का पहिया घूमता गया, भविष्य की धुंध में भी मैंने खुद को समा लिया। धुंध तो छट गई परन्तु मुझ पर एक ऐसी चादर छोड़ गई जिसने मुझपर पढ़ाकू, समझदार और आज्ञाकारी होने की मोहर लगा दी। यही सही है, अच्छा है, जीवन में सफलता की कुंजी है परन्तु मुझे ये नहीं चाहिये। मुझे पढाकू नहीं बनना मुझे संगीत के समुन्दर में गोते लगाने हैं। मुझे समझदारी नहीं चाहिए क्योंकि इसने मुझसे मेरा बचपन छीन लिया, मुझें भी जिद करनी है। माता की गोद में जबरन बैठना है, भाई बहनों से लड़ाई करनी हैं, जोर से हंसना है, चीखना है। परन्तु नहीं- मैं ऐसा नहीं कर सकती मैं एक लड़की हूं न। लज्जाशीलता की चादर के तले इन इच्छाओं ने सदा दम तोड़ा है। यदि ऐसा जीवन प्रदान किया जाता है बेटियों को, तो क्यों देते हैं उन्हें हक सपने देखने का। ये टूटे सपने चुभते हैं आंखों में। मुझे शिकायत नहीं अपने परिवार से क्योंकि उन्होंने मुझे कभी रोका नहीं, मुझे शिकायत है उस भगवान से जिसने मुझे ऐसी हृदय दृष्टि प्रदान की जिसने सदा दूसरों की खुशियां पहले देखी है। मैं नहीं जानती कि मेरी जीवन धारा का अंत कहां है परन्तु उस ज्योत की तरह सदा रोशनी प्रदान करूंगी सबको जो अपनी इच्छा से जलता है परन्तु उस दीप तले जो अंधेरा है उसे कोई दूर नहीं कर सकता, फिर भी मैं जलूंगी उन्हें रोशनी देने के लिये, जिन्होंने मुझे इतनी उम्मीद के साथ रोशन किया है।

सागरिका रंजन,
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना

बाल-विवाह का विरोध किया

मैं स्नातक तृतीय वर्ष की छात्रा हूं। मैं एक लड़की हूं, इसका मुझे कोई अफसोस नहीं है, क्योंकि मेरे परिवार वाले आधुनिक विचारधारा के हैं। उन्होंने कभी भी हम भाई-बहनों में किसी तरह का भेद-भाव या पक्षपात नहीं किया। वे हम सभी को समान रूप से देखते हैं और कुछ अच्छा करने को प्रोत्साहित करते हैं। मैं बहुत ही खुशनसीब हूं कि मुझे ऐसा परिवार मिला है, जिन्होंने हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी और हमारे हर फैसले में हमारा साथ दिया।

मेरे परिवार वालों ने कभी भी लिंग के आधार पर मुझसे भेदभाव नहीं किया है, लेकिन सभी परिवार वाले एक जैसे हों, यह जरूरी नहीं है। सभी इतने खुले विचार के नहीं होते हैं, जो अपने बच्चों में भेदभाव न करते।

मेरा एक अनुभव है, जो मैं आपसे बांटना चाहती हूं। मैं पहले जहाँ रहती थी वहाँ मेरे पड़ोस में ही एक, ऐसे दंपत्ति रहते हैं, जिनके छः बच्चे हैं, दो लड़के और चार लड़कियां। लड़के की आस में उन्होंने कई बार लिंग का पता लगाकर, भ्रूण हत्या की है। इतना ही नहीं, वे अपने बेटे को तो स्कूल भेजती हैं, लेकिन बेटियों को नहीं पढ़ाया। वे अपनी बेटियों पर तरह-तरह के जुल्म करती हैं और घर का सारा काम भी करवाती हैं। मैने जब यह देखा तो मुझे बहुत दुःख हुआ और मैंने उस महिला को समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उन्होंने एक न सुनी। मैं जब भी उन लड़कियों को इस तरह यातनाएं सहते देखती हूं तो मेरा हृदय कराह उठता है। जिन बच्चों की पढ़ने और खेलने की उम्र है, उनसे जबरदस्ती घर का सारा काम कराया जाता है।

मेरे मन में सदैव एक प्रश्न उठता है कि क्या एक मां, अपने ही बच्चों के साथ इतना सख्ती भरा व्यवहार कर सकती है? जिसे उन्होंने नौ महीने अपनी कोख में रखकर पाला, असह्य पीड़ा सहकर उसे जन्म दिया, उसके साथ ही ऐसा अमानवीय व्यवहार क्यों? उन्होंने ऐसा करके अपने मातृत्व को कलंकित किया है। उस महिला के पति में भी इतना साहस नहीं है कि वह अपनी पत्नी के विरुद्ध कुछ भी कह सके। उस दंपत्ति ने अपनी छोटी-सी 'नौ साल की बच्ची' की शादी, ऐसे लड़के के साथ कर दी, जो उससे उम्र में चार गुना बड़ा था। हमने उस बाल-विवाह का बहुत विरोध किया, यहां तक कि मेरे परिवार वालों ने भी उन लोगों को समझाने की बहुत चेष्टा की, लेकिन इसका कोई लाभ नहीं हुआ। उनका ऐसा अमानवीय व्यवहार देखकर हमने सोचा कि अब हम उनसे कुछ नहीं कहेंगे। फिर बाद में हमने देखा कि वो बच्ची 'बारह वर्ष' की उम्र में ही गर्भवती हो गई, उसके न चाहने के बावजूद और डाक्टरों के मना करने के पश्चात भी उस महिला ने अपनी बच्ची का गर्भपात नहीं करवाया और बच्चे को जन्म देने के क्रम में प्रसव-वेदना से उसकी मृत्यु हो गई, और उसका बच्चा भी मरा पैदा हुआ। जब हमने यह सुना तो हमें बहुत क्रोध आया। इस तरह मेरे परिवार वालों ने और मैने उस दंपत्ति को सबक सिखाने के लिए उन पर 'केस' दर्ज करवाया। लेकिन यह सब एक नाटक था। हमने और कुछ मोहल्ले वालों ने मिलकर उसके पति को जेल में डलवा दिया। इससे उसके होश ठिकाने आ गए और जब तक उसने यह नहीं कहा कि अब वे ऐसा नहीं करेंगे, तब तक उसका पति जेल में ही रहा।

इस तरह हम सभी ने पुलिस की मदद से उन्हें सही रास्ते पर लाने का प्रयास किया और हमारा यह प्रयास सफल हुआ। सच मानिये वे दंपत्ति अपने बच्चों को स्कूल भी भेजती है और उनसे क्रूर व्यवहार भी नहीं करती। भले ही यह परिवर्तन वह भय से कर रही हो, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि वह महिला नाटक करते-करते सचमुच बदल गई है और वह अपने बच्चों को बिना किसी भेदभाव के प्यार करती है। अब उन बच्चियों के साथ दुर्व्यवहार नहीं होता है। जब मैं उन्हें देखती हूं कि वो खुश हैं, स्कूल जा रही हैं, तो मुझे बहुत ही प्रसन्नता होती है। मुझे अपने परिवार पर बहुत गर्व होता है कि उन्होंने मेरी मदद की और उन बच्चों को उनका हक दिलाया।

आज वह परिवार बहुत खुश है और सुखी जीवन व्यतीत कर रहा है। मेरा यह अनुभव मेरे लिए बहुत ही खास है। क्योंकि मैं सभी को तो नही लेकिन किसी एक को तो सही रास्ते पर लायी। यह खुशी मेरे लिए एक उत्साह के रूरूप में है। यदि कभी भी मुझे फिर ऐसा परिवार मिलता है तो मैं उन्हें समझाती हूं और वे हमारी बातों को भी समझते हैं यदि सभी परिवार अपनी सोच को बदल दें तो फिर किसी को समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और किसी के साथ भी अन्याय नहीं होगा, तभी हमारा देश सशक्त और उन्नतिशील बनेगा।

प्रियंका कुमारी,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

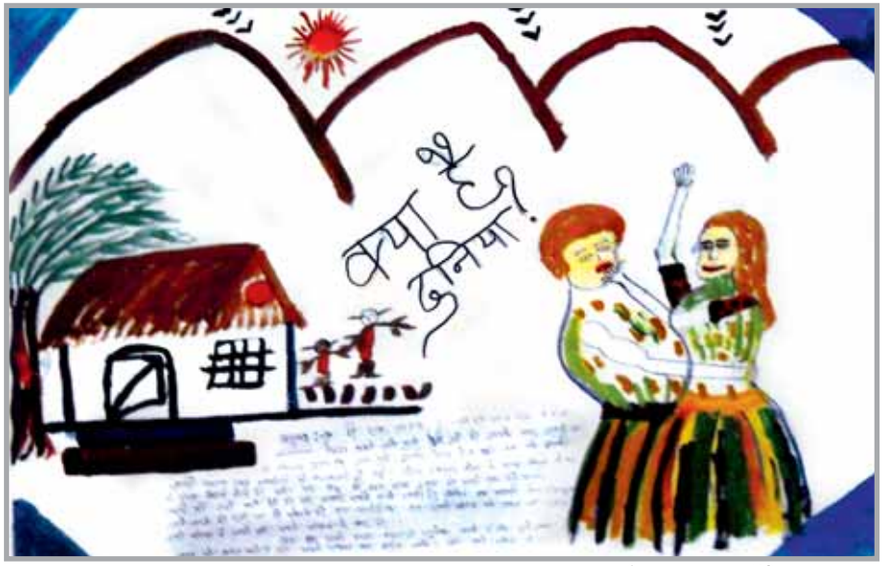

पूजा भारती, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

नजरिए को बदला, तो सपनों को पंख लगे

मैं एक लड़की हूं। मैंने इस समाज में जन्म लिया है... ऐसा लोग कहते हैं; लेकिन, नहीं! मैं एक लड़की हूं और इस समाज ने किसी लड़की से ही जन्म लिया है इसलिए मेरा भी इस समाज पर उतना ही हक है, जितना लड़कों का। मेरा जन्म कलंक, नहीं, किसी पर बोझ नहीं, अभिशाप नहीं बल्कि वरदान है, और मैं यह सिद्ध कर दूंगी।

ऊपर जो मैंने लिखा है, यदि हर लड़की ऐसा ही सोचने लगे तो वह वक्त दूर नहीं, जब हर लड़की सपनों का पंख लगाकर सफलता के शीर्ष को छूने के लिए लालायित नजर आएगी। मैंने इस समाज में जन्म लेकर ही इसी समाज से ये सब कुछ सीखा है। मैंने अभी अभी बाल्यावस्था पार की है, किंतु इस समाज में फैले भेद-भाव ने मुझे प्रौढ़ावस्था का एहसास करा दिया है। मैं अपने परिवार में अकेली नहीं, बल्कि सात बहनें और भी हैं। मैंने देखा है लड़की-लड़कों में फर्क। अपने परिवार में भी इसे कातर-निगाहों से ढूंढती थी, किंतु यह रोग वहां न था। अच्छा लगा, गर्व हुआ कि मैंने ऐसे परिवार में जन्म लिया है, जो लड़की को परायाधन नहीं, बल्कि लक्ष्मी का अवतार मानता है। किंतु यह एक-दो परिवार की सच्चाई है, पूरे समाज की नहीं। जब वक्त बदलता है तो अपने-साथ न जाने कितनों की जिंदगी बदल देता है। मैं भी जब अपने घर-आंगन से बाहर निकली तो इस दोष-रोग से अनजान थी। सड़कों पर जब निकलती तो ना जाने कितनी सवालिया निगाहों का सामना मुझे करना पड़ता। हर कोई इस तरह देखता जैसे मैंने लड़की होकर कोई बहुत बड़ा गुनाह किया हो। मैं सहम जाती, कभी-कभी मन में सोचती क्या सचमुच लड़की का कोई अस्तित्व नहीं है? लेकिन मेरे परिवार वाले मेरा हौसला कभी टूटने नहीं देते, हमेशा इस बात का एहसास दिलाते कि मैं अपने भाई से बढ़कर हूं। तब मेरे भाई ने कहा; दुनिया लड़के-लड़की को शारीरिक रचना पर देखती है; तुम इस शरीर के भीतर दबी प्रतिभा को देखो, तुम्हें इस बात का एहसास होगा कि तुम क्या हो? क्यों हो? सच ही था, इन बातों ने मुझे बदल दिया, मेरी सोच को बदल दिया और इन सब से बढ़कर खुद को देखने के नजरिए को बदल डाला।

आज मैं आई.एस.सी. की छात्रा हूं और मन में मंजिल तक पहुंचने की ललक, लगन और बुलंद हिम्मत। मैं आई.आई.टी. करना चाहती थी लेकिन बाद में लगा मैं अपनी ताकत से, मेहनत से, क्षमता से आई.ए.एस. बनूंगी और समाज में फैले भेद-भाव को एक करारा जबाव दूंगी। लड़कियों को एक नई राह दिखाऊंगी। मेरा अनुभव अच्छा भी है और बुरा भी। समाज सिर्फ लड़कों से नहीं चलता, लड़कियों का भी इसमें अहम् योगदान होता है। समाज इनसे अलग होकर अस्तित्वहीन है, फिर हम लड़कियां खुद को कम क्यों समझें? आज जरूरत है अपनी सोच को बदलने की। यदि हर इंसान लड़कियों को लड़के के समान ही महत्व दे तो इस समाज में लिंग/जेंडर मेला लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हर लड़की अपने सपनों को पूरा करने के लिए लड़कों की भीड़ में भी सिर उठाकर चलेगी। यह उसका हक है!

अर्पणा कुमारी,
अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

है एहसास मुझे कि आधी आबादी हूं मैं

कभी सब यह कहते-सुनाते मुझे। कभी यह अहसास दिलाते मुझे। मैं कुछ करना चाहूं तो समझाते कि मैं निर्बल हूं। दिखाते मुझे कभी घर आंगन, कभी गली, तो कभी सड़कों पर लड़की होने का एहसास कराते मुझे। मैं तितली नहीं, पखेरू नहीं, जो बाबुल का आंगन छोड़ उड़ जाऊं कहीं। मैं वो किरण हूं जो रोशन करना चाहे जहां को। लेकिन जब उड़ना चाहा मैने, पंख काट पिंजड़े में डाला गया मुझे। मैं तो खुद बराबर समझती रही सबके पर मैं हूं एक लड़की बताया गया मुझे, कभी बोझ कहकर, कभी अबला बता कर। बस अब इतना जाना मैंने कि तोड़ दूं ये दीवारें, पर जमाना क्या कहेगा यह सोच जाने रुक जाते हैं मेरे पांव। हमने तो नहीं बनाये ये सारे नियम। कभी दहेज के लिए जलाया, तो कभी सती कह कर सरेआम आत्मदाह कराया। जमाने ने मुझे कभी गरीबी के चलते दहेज के डर से किसी भी खूंटे से बांधा और मेरे मन से पूछा तक नहीं। अगर सोच और जमाना बदले तो दिखा सकती हूं मैं भी कि मैं किस तरह जीना चाहती हूं। इस दुनिया में मुझे पाना है अपने सपनो को। साहसी हूं मैं। है एहसास मुझे कि आधी आबादी हूं मैं।

पूजा कुमारी,
अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

खुशबू कुमारी, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

पोस्टरों तक ही सीमित हैं स्त्री-पुरुष समानता के नारे

समाज प्रगति की राह पर अग्रसर हो रहा है, लेकिन लड़की और लड़के होने के अंतर (लिंग भेद) की मानसिकता ने हमारी प्रगति पर रोड़ा अटकाया है। कहने को तो रोज नारे लगाए जाते हैं कि लड़का-लड़की एक समान, पर ये नारे बस कुछ पोस्टरों तक ही सीमित रह जाते हैं। आज भी प्रायः हर स्त्री से अपेक्षा की जाती है है कि वो लड़के को ही जन्म दे। इस पर स्त्री का वश नहीं चलता। प्राकृतिक विधान के अनुसार जब लड़की का जन्म होता है, तो उसे उपेक्षा और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। ओछी और अवैज्ञानिक मानसिकता वाला हमारा समाज उस मां को ही दोषी ठहराने लगता है, जिसके वश में यह बात है ही नहीं। बेटे या बेटी का जन्म होने में पिता की भूमिका निर्णायक होती है, पर कन्या जन्म को अपराध (दहेज प्रथा के चलते) मानने वाले लोग इसके लिए मां को जिम्मेदार ठहराते हैं। इस मिथ्या घारणा के चलते बहुएं प्रताड़ना से लेकर हत्या तक का शिकार होती हैं।

अब रोजगार की ही बात ले लें। आज कहने को तो लड़के तथा लड़कियों को समान अवसर प्राप्त है, पर आज अगर कोई लड़की घर से बाहर कदम रखती है, तो उसे सर्वप्रथम अपनी सुरक्षा का भय रहता है। कभी राह में चलते वक्त लड़कों की फब्तियों का सामना करना पड़ता है, तो कभी अपनी शारीरिक सुरक्षा के भय का। दैनिक अखबार बलात्कार, शारीरिक शोषण और दहेज-प्रथा के कारण मासूम लड़कियों की हत्या जैसी गमगीन खबरों से भरे होते हैं। जाने कब वो दिन आएगा, जब हमारा अखबार इन शर्मनाक खबरों से आजाद हो पाएगा। जाने कब हमारी सरकार रोज नए-नए नियमों को लागू करने के बजाए बने हुए नियमों पर अमल करेगी।

नारी के अनेक रूप हैं- एक रूप में नारी जहां कोमल और करूणामयी मां, बहन, दोस्त, प्रेमिका तथा पत्नी है, तो वहीं दूसरी ओर वही नारी क्रोध, पापनाशक और शक्तिस्वरूपा भी है। हमारे इतिहास ऐसे अनेक प्रसंगों से भरा है, जिसमें एक नारी के बल पर एक पुरुष विजयी हुआ है। मैं आग्रह करूंगी कि पुरुष नारी को अबला न समझकर उसे प्रतिष्ठित करे, तभी समाज सच में विकसित हो पाएगा।

मनिषा सिमी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

अपने दयनीय हालात के लिए जिम्मेवार मैं स्वयं हूं

कहा जाता है कि जहां मैं (स्त्री) होती हूं, वहां देवता का वास होता है। मुझे लक्ष्मी का रूप कहा जाता है। शुभ कार्य मेरे ही हाथों से होते हैं। मेरा योगदान, मेरी शक्ति का परिचय, मेरी पहचान इतिहास के पन्नों में दर्ज है। कहीं सीता के नाम से मेरे बलिदान का, कहीं शकुंतला के नाम से मेरे रूप का परिचय है, तो कहीं द्रौपदी के नाम से मेरी बुद्धि का परिचय दिया गया है। मैं अर्थात लड़की या स्त्री वही हूं पर समाज में रहने वाले बदल गए, उनकी उनकी सोच बदल गई। कल तक जहां मेरे जन्म को लोग देवी का रूप मानते थे, आज वहीं मुझे ''बोझ'' बना दिया गया हैं। कल तक लोग मुझे खुशी से स्वीकारते थे, आज वो मुझे अपने आसुंओं, अपनी आंहों से स्वीकारते हैं। आज मेरा बचपन अपने माता-पिता की इज्जत बचाने की चिंता में गुजर जाता है, तो जवानी पुरुष की सेवा, उनकी इच्छा, उनकी उत्तेजनाओं को पूर्ण करने में। बुढ़ापा अपने ही बच्चों या करीबियों के तीखे बोल सुन कर गुजारना पड़ता है। मैं अपनी जिंदगी तो जीती ही नहीं।

मेरे मां-पिताजी मुझे पढ़ाना चाहते है परंतु समाज इससे रोकने पर विवश कर देता है। उन रिवाजों को ध्यान में रखना पड़ता है जिन्हें पुरुष तोड़ दे तो कोई बात नहीं, पर मैं तोड़ दूं तो पाप है। आज भी कई ऐसे घर हैं जहां मेरे जन्म लेते ही लोग मुझे मार देते हैं। इसका कारण और कुछ नहीं, बल्कि हमारे बनाए हुए नियम (जैसे दहेज प्रथा) ही हैं। लोग मुझे बोझ कहते है इसलिए क्योंकि उन्हें मेरी शादी में दहेज देना होता है और लड़के की शादी में दहेज लेने का मिलता है। मेरी स्थिति आज जो है, उसकी जिम्मेदार भी मैं स्वयं हूं। इस स्थिति को बनाने में मेरा भी हाथ है। मुझे अधिकार दिए गए हैं, पर मैं स्वयं ही उसे स्वीकार नहीं करना चाहती। समाज की बुराइयों को मैं भी बढ़ावा देती हूं। खुद को एक नये रूप में देख कर आंखों से आंसू भी मैं ही गिराती हूं। पुरुषों के गलत कामों में मेरा भी सहयोग होता है। मैं ही एक बेटी बनकर मां-बाप की सेवा करती हूं, एक बहू बनकर अपनी ही दूसरी अवस्था को कोसती हूं। मां बनकर अपने ही अंश को देखकर आंसू भी बहाती हूं। मैं ही शायद भूल जाती हूं कि ''मैं एक शक्ति हूं'' और मुझमें भी बदलने की ताकत है। अगर मैं बेबस हूं तो शायद इसकी वजह भी खुद हूं और अगर सफल हूं तो इसकी वजह भी स्वयं हूं। जरूरत है मुझे खुद को बदलने की।

संध्या रानी,
मगध महिला कॉलेज, पटना

कल की नई सुबह हैं लड़कियां

कन्या, लड़की या नारी होने के कारण मैं कह सकती हूं कि नारी का मन फूलों जैसा कोमल, पर्वत जैसा दृढ़, समुद्र जैसा गंभीर, चांद की तरह शीतल और सूर्य की तरह प्रकाशवान होता है। संसार में रिश्ते के लिहाज से नारी के प्रमुख चार रूप सामने आते हैं, वो हैं- बेटी, बहन, बहू और ममता की मूरत मां।

मैं क्यों कहूं कि मैं एक लड़की हूं? सिर्फ इसलिये कि हमारी तुलना लड़कों से होती है- लड़का और लड़की शब्द में अगर ''समझ के सूक्ष्मदर्शी'' यंत्र से देखा जाएगा तो अंतर सिर्फ एक मात्रा का ही होता है। लड़का में (ा) आ मात्रा और लड़की में (ी) ई की मात्रा लगी होती है। अगर इन मात्राओं से कुछ शब्द बनाना चाहे तो आ तत्काल स्वयं कहने लगता है कि मैं तो आ से आजादी हूं। मुझे हर वो काम करने की आजादी है जिसे मैं करना चाहता हूं। सिमटी सी सहमी सी (ी) इ की मात्रा पीछे खड़ी रह कर ही कहती है कि मैं ई (ी) से ईसा की पवित्र ''मरियम'' हूं। मुझे लोग हर तरह से बदनाम करना चाहते हैं। लेकिन मैंने भी कह दिया है कि हां- हां मैं एक लड़की हूं, ऐसी लड़की जो कल की नई सुबह है। न जाने कितनी ही नारियों ने अग्नि परीक्षा देकर अपना उदाहरण दिया है- कभी सीता के रूप में, कभी रानी लक्ष्मीबाई के रूप में। हम दुनिया को दिखा चुके हैं कि हर क्षेत्र में लड़कियां भी किसी से कम नहीं हैं। अब इन लड़कों को बहुत दिखा चुके और बहुत जला चुके। अब आगे जाना है और समाज में जारी लिंग भेद, दहेज प्रथा, बाल विवाह जैसी बुराइयों से निर्णायक संघर्ष की राह पर चलना है।

सबा अफरोज़,
मगध महिला कॉलेज, पटना

जो मेरे साथ हुआ वो किसी लड़की के साथ न हो

मेरे जन्म पर मां और पिता जी दोनों ही प्रसन्न हुए, पर मेरी दादी और बुआ नहीं। मुझे आज तक नहीं पता कि ये सब क्यों हुआ, पर मुझे गर्व है कि मैं एक लड़की हूं। आज मेरे मम्मी-पापा को भी मुझ पर गर्व है। चुकि मेरे पापा थल सेना में हवलदार हैं, इसलिए मेरा परिवार हमेशा उनके साथ ही रहता है। उनका ट्रांसफर कहीं भी 3 साल के लिए ही होता है।

बात 1999 की है। उस वक्त हमलोग दानापुर में थे। तब मैं मात्र 7 साल की थी, उन दिनों थल सेना में बहाली हो रही थी। मेरे घर पर हमारे दूर के रिश्तेदार के लड़के आये हुए थे। एक रात मेरे साथ जो हुआ, वह दृश्य आज भी आंखों के सामने एक डरावनी फिल्म की तरह घूम कर रह जाता है। उसी वक्त मैंने प्रण लिया कि मैं कभी अपने को 'अबला' नहीं बनने दूंगी। उस घटना के बाद पापा ने उस लड़के को मार-मार कर अधमरा कर दिया और उसे घर से भगा दिया। मुझे तो दुनियादारी का ज्ञान ही नहीं था, पर उस घटना के बाद मुझे दुनियादारी की समझ आ गई। मैंने अपना बचपन खो दिया। मैं गुमसुम रहने लगी तब मेरे मम्मी-पापा ने मिलकर मुझे समझाया और मुझे पहले जैसा सामान्य बना दिया, लेकिन तब भी मैं उस घटना को नहीं भूल पाई।

यह मेरे जीवन की सच्ची घटना है जिसे आज तक मैंने अपने से बाहर नहीं आने दिया, पर आज मुझे मौका मिला है अपनी बात जाहिर करने का। मैं दुआ करूंगी कि जो मेरे साथ हुआ वो किसी दूसरी लड़की के साथ न हो।

आज मैं पटना में अकेले रहकर, यानी हास्टल में रहकर स्नातक की शिक्षा ग्रहण कर रही हूं। हास्टल आने के बाद भी मैंने मुश्किल घड़ियों का सामना करना सीख लिया है। मेरे पापा का हमेशा से सपना रहा है कि मेरी बेटी हमेशा फर्स्ट आए और मेरा नाम रोशन करें। मैंने ऐसा किया भी। 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा में फर्स्ट डीविजन से उत्तीर्ण होकर दिखाया। मेरे पापा का तो जैसे आधा सपना ही पूरा हो गया। लेकिन मुझे उनका पूरा सपना पूरा करना है। आज मैं अपने अतीत के बारे में सोचती भी नहीं हूं, लेकिन हमेशा अतीत मेरा पीछा करता है। हर जगह पुरुष वर्ग ने लड़की समझ कर जलील करने की कोशिश की है। पर अब मुझे इन परिस्थितियों का सामना करने आ गया है।

हम भी चांद-तारों का सफर कर सकते हैं, एक नई दुनिया का निर्माण कर सकते हैं। हममे तो वो ताकत है, जो पुरुष में नहीं। हम ही से तो एक नए इंसान का जन्म होता है। कौन कहता है कि हम कुछ नहीं कर सकते? एक बार ऐसे ही मेरे और मेरे भाई में प्रतियोगिता हुई कि मेरा काम वो करेगा और उसका काम मैं। मैंने तो उसका काम कर दिया पर वह मेरा काम नहीं कर पाया और उसने हार मान ली। सबने मुझे शाबाशी दी। मैं उस दिन बहुत खुश हुई और मुझे गर्व हुआ कि मैं एक लड़की हूं। मेरे माता-पिता को भी मुझ पर गर्व है और मैं उनका यह अभिमान खोने नहीं दूंगी।

(कतिपय कारणों से लेखिका का नाम प्रकाशित नहीं किया जा रहा है)

लड़कियों को आजादी मिलती भी है तो पंख काट कर

मैं अपने घर में सबसे बड़ी हूं। मेरे तीन बहन और एक भाई है। मैं पटना में ही पली-बढ़ी हूं। मेरे माता-पिता हम लोग को बहुत प्यार देते हैं। घर का काम हम लोग मिल-जुल कर किया करते हैं। फिर भी कभी-कभी यह महसूस होता है कि लड़की हूं तभी तो ऐसा नहीं कर सकी, वहां नहीं जा सकी, उससे बात नहीं कर सकती ... आदि। माता-पिता ने हमें आजादी तो दी है लेकिन हमारी आजादी उस पंछी की तरह है, जो बंद पिंजरे में रहता है। उसे खाना मिलता है, उसे यह दिखाया जाता है कि तुम प्यारे हो लेकिन तुम्हारा यही ठिकाना है। उसे पिंजरे से निकाल भी दिया जाता है, तो पंख काट कर ताकि वह आकाश में उड़ न जाए। दूसरी तरफ यह भी सच है कि कितनी लड़कियां आजादी का दुरुपयोग करने लगती हैं। आजादी का मतलब यह नहीं है कि देर रात तक घूमें, लड़कों के साथ गलत ढंग से पेश आएं। मैं एक लड़की हूं और मुझमें वह ताकत है कि मैं इस जहां को कुछ कर के दिखा सकूं। मैं ईश्वर से सदा प्रार्थना करती हूं कि हर जन्म में मुझे लड़की ही बनाए। लड़का और लड़की इस संसार के पूरक है। दोनों के बिना इस संसार की कल्पना नहीं की जा सकती। असमानता तो पुरुषवादी समाज की देन है जो दहेजप्रथा के कारण है, इसमें ईश्वर का क्या दोष?

मितली प्रसाद,
ए.एन. कॉलेज, पटना

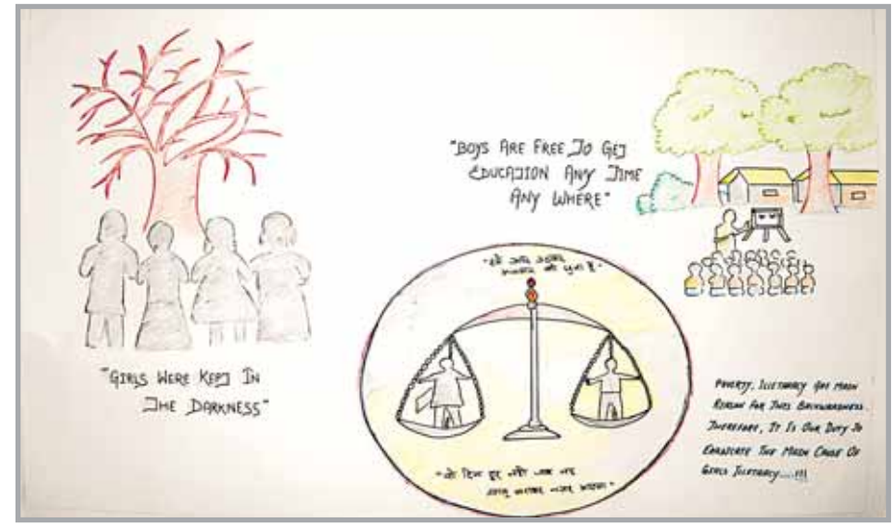

तानवी आजमी, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

अब समाज बदल गया है

मैं एक लड़की हूं। मैने कभी लड़कों की बराबरी नहीं की क्योंकि मुझे पता है कि मैं लड़कों से बेहतर हूं। लड़कों के मुकाबले सारे काम लड़कियां कर सकती हैं। उसके अलावा वह भी कर सकती है जो सिर्फ लड़कियां कर सकती हैं। लड़का और लड़की दोनों अलग-अलग हैं, हमें इस बात को मान लेना चाहिए। यही सच है। मैं हमेशा से समाज में यही सुनती आई हूं कि लड़के और लड़की में कोई फर्क नहीं है। कई लड़कियों से भी सुना है। वह कहती हैं कि वे खुद लड़के से कम नही समझतीं। अर्थात् खुद को लड़का समझती है। मैं एक ऐसी लड़की हूं, जो खुद को सिर्फ लड़की समझती हूं। मेरा अनुभव है कि लड़कियां खुद को जिस मुकाम पर चाहें, पहुंचा सकती हैं। उदाहरण खुद मैं हूं। मेरे पिता किसान हैं, उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि मेरी बेटी कभी मास्टर डिग्री कर लेगी; और उनका बेटा ग्रेजुएट भी नहीं होगा। परन्तु मैंने पढ़ने की इच्छा जाहिर की और स्कूल से लेकर कालेज तक अच्छी सफलता पाई, इसलिए अब मेरे पिताजी का कहना है कि मैं पर्यावरण विज्ञान से एम.एस.सी. करने के बाद एम.टेक. करूं। मेरे अनुभव के अनुसार अब समाज बदल गया है। सोच बदल गए हैं। महिला वर्ग भी बदला है। उनको चाहिए कि वह खुद को और सशक्त बनाएं।

राबिया कुमारी,
ए.एन. कॉलेज, पटना

पूजा कुमारी, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

तीसरी बेटी होने पर मेरी मां अवसादग्रस्त हो गई

मुझे और मेरे माता-पिता को भी गर्व है कि मैं लड़की हूं। पर क्या आज जो स्थिति है, मेरे जन्म के साथ भी यही थी? नहीं। जब मैं अपनी मां के गर्भ में थी तो उनका सपना था आने वाली पहली संतान बेटी हो और भगवान् ने उनकी बात सुन ली। परंतु उन्हें इस बात का अर्थात बेटी का वरदान मांगने का दुःख तब हुआ जब मेरी दादी के घर से मुझे देखने कोई न आया क्योंकि वो बेटा चाहते थे। फिर समय बीता। मेरी मां ने फिर एक लड़की को जन्म दिया। तब तो स्थिति विस्फोटक ही हो गई। लोगों के बीच कहा-सुनी शुरू हो गई कि फिर बेटी ही हुई। तब मैं 2 साल की थी।

धूमिल यादें आज भी मेरे मन में है, मैं यही कोई चार या पांच वर्ष की रही होऊंगी। मेरे दादी के गांव से एक महिला आई और दादी मां उसका परिचय सबसे करवा रही थी। मेरे कमरे आकर मेरे से परिचय करवाने के बाद बताया कि छुटकी यानी मेरी मां को मात्र दो बेटियां ही हैं, तो उक्त महिला ने काफी अफसोस किया और कहा कोई बात नहीं, तीसरा बच्चा जब आएगा तो बेटा ही होगा। वह ऐसा पहला समय था, जब मेरे मन में यह सवाल आया कि क्या लड़के इतने अच्छे होते हैं? फिर मैंने अपनी मां से अपनी जिज्ञासा बताई, तब मां ने कहा- नहीं, ऐसी बात नहीं है। हां, हमारा समाज ऐसा जरूर है, जहां (दहेज प्रथा के कारण) लड़कों को तवज्जो दी जाती है, लेकिन यदि लड़कियां भी अच्छे से पढ़े-लिखें, तो फिर कोई फर्क नहीं करता।

ये सोच थी मेरी मां की और आज सिर्फ मैं अपने परिवार व रिश्तेदारों में एकमात्र लड़की हूं, जो घर से दूर रह कर पढ़ाई कर रही हूं। इतना ही नहीं, आज लड़कियां जो अकेले कहीं आने जाने से डरती हैं, अपने निर्णय खुद नहीं लेती, मैं उन सबसे बिल्कुल अलग हूं। मैं अपने सारे काम खुद करती हूं। शुरू में मेरे पिता ने इस तरह आत्मनिर्भर बनने पर हस्तक्षेप किया, लेकिन बाद में वे भी मेरे पक्ष में हो गए।

मेरी मां ने जिस तरह मुझे मेरे लड़की होने पर गर्व करना सिखाया उस पर गर्व है। परन्तु अफसोस इसका है कि यह बात वह खुद पर लागू न कर पाई और तीसरी बेटी होने पर थोड़ी क्षोभ-ग्रस्त हो गयीं। इसका दबाव उन्होंने हम पर न आने दिया।

मैं जानती हूं कि मैं जननी हूं, मेरे बिना जीवन का अंत हो जाएगा। मैं पुरुषों से कम नहीं, उसकी सहचरी हूं।

रोजी कुमारी,
ए.एन. कॉलेज, पटना

पापा की मौत पर नौकरी सिर्फ बेटे को क्यों दी जाती है?

आज का युग नव जागरण का है। विश्व में महिला सशक्तिकरण के प्रयास चल रहे हैं। भारत की महिलाओं पर भी इसका असर हुआ है। हमारी सरकार तथा गैर सरकारी संस्थाओं ने महिला उत्थान के लिए अनेक कदम उठाए हैं। इन सबके बावजूद हमारे अंदर ऐसे कई प्रश्न हैं, जो इस दो मुंहे, पुरुष-वर्चस्ववादी समाज में हमें बार-बार यह सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि आखिर कब वह दिन आएगा जब हमें पुरुषों से कमजोर नहीं समझा जाएगा?

जहां तक मुक्ति का प्रश्न है, विश्व की किसी व्यवस्था में स्त्रियों को संपूर्ण मुक्ति नहीं दी गई है। यहां मैं अपने जीवन की कुछ घटनाओं के विषय में लिख रही हूं, जो हमें यह अहसास दिलाता है कि मैं लड़की (यानी किसी से कमतर) हूं, अगर लड़का होती तो शायद ज्यादा अच्छी तरह अपनी सहभागिता अपने परिवार वालों को दे पाती। मैं यहां पिताजी की मृत्यु के उपरांत सामने आईं समस्याओं पर लिख रही हूं।

पिताजी की मृत्यु के बाद घर की वर्तमान आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए हमें उनकी नौकरी की जगह नौकरी करना पड़ता। इसके लिए मेरी दीदी तैयार थी। परंतु आफिस वालों तथा पिताजी के दोस्तों ने यह कहते हुए इंकार कर दिया कि बेटी की शादी हो जाती है, उन्हें दूसरे के घर जाना पड़ता है। वह स्वार्थी भी होती हैं। जब उन्हें पैसे मिलने लगेंगे तो वह अपनी मनमानी तथा निजी स्वार्थों के लिए पैसे खर्च कर देंगी। वह स्वतंत्र हो जाएगी। वह मनचाहा वर खोज लेगी इत्यादि। अतः यह अनुग्रह वाली नौकरी बेटे को ही दी जाएगी। इस तरह के सामाजिक व्यवहार हमारे भीतर हीन भावना को उत्पन्न करते हैं तथा हमें कमजोर होने का अहसास करवाते हैं।

इसके अलावा कई और सामाजिक कुरीतियां हैं, जिसके कारण लड़कियों के जन्म को अभिशाप माना जाता है। वे निम्न प्रकार से हैं :-

0 लिंग चयन हत्या - हमारे अभिभावकों की यह सामान्य धारणा है कि बेटी को दहेज देना पड़ता है। वह दूसरे घर चली जाती है। जो गरीब होते हैं, उन्हें कन्याभ्रूण का जन्म रोकने में ही भलाई लगती है। दहेजप्रथा रोके बिना कन्या को बचाना कठिन या त्रासद बना रहेगा।

0 पुरानी धारणाः लोग मानते हैं कि लड़कों से ही वंश चल सकता हैं। वे भूल जाते हैं कि जवाहर लाल नेहरू, बाबू जगजीवन राम जैसे अनेक विख्यात लोगों का वंश आज उनकी बेटियों के नाम से चल रहा है।

0 अंत्येष्टिः हिंदू मान्यता के अनुसार पुत्र या पुरुष रिश्तेदार के हाथों अंतिम संस्कार होने से ही उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसका कोई वैदिक आधार नहीं है। शास्त्रकारों ने पुत्रहीन व्यक्तियों की अंत्येष्टि के लिए कई विकल्प दिये हैं। मुजफ्फरपुर में दो लड़कियां पिता को मुखाग्नि देकर अंधविश्वास के खिलाफ खड़ी होने का साहस दिखा चुकी हैं।

0 दाग हमेशा स्त्री परः स्त्री-पुरुष संबंध में यदि कुछ अनुचित होता है, तो पुरुष या लड़के का दोष

धुल जाता है, लेकिन लड़की आजन्म कलंकित घोषित कर दी जाती है। इसीलिए अभिभावक लड़कियों की सुरक्षा के लिए चिंतित होते हैं। देश की ऐसी सामाजिक परिस्थिति में लड़कियों का सिर्फ सफल और शिक्षित होना काफी नहीं है, उन्हें अनेक रूढ़ियों के खिलाफ खड़े होने का साहस भी दिखाना होगा। जाति-प्रथा भी हमारी सफलता के मार्ग में बाधक है। कई लड़कियां सिर्फ इसलिए पढ़ने से रोकी जाती हैं कि कहीं वे पढ़ाई-लिखाई से अर्जित योग्यता के बल पर आत्मनिर्भर होकर अन्तरजातीय विवाह न कर लें। ऐसी कई रूढ़ियों के खिलाफ संघर्ष का रास्ता लंबा है। लड़कियों को अपने अधिकारों के लिए लड़ना ही पड़ेगा। अंत में मैं यह कहना चाहूंगी कि हमारे फिल्म जगत में बढ़ती अश्लीलता के कारण समाज में हमारी स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। फिल्मों को साफ-सुथरा बनाने के लिए कोई कड़ा कानून बनाना होगा। सरकार को इस पर अंकुश लगाना होगा। ज्यादा स्वतंत्रता हमारे सांस्कृतिक पतन और लड़कियों पर अश्लील छींटाकशी का कारण बन रही है। इस कारण आज लड़कियां पुरुष उपभोग की वस्तु समझी जाने लगी हैं। हमारा सड़क पर निकलना तक मुश्किल किया जा रहा है। अंत में कहना चाहूंगी-

"लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होतीं।"

उमा नंदनी
ए.एन. कॉलेज, पटना

रोहीनी कुमारी, मगध महिला कॉलेज, पटना

लड़कियों के लिए सरकार ने कई काम किये

एक समय ऐसा था जब लोग सोचते थे कि लड़कियां अशुभ, अपवित्र या नीच होती हैं। लेकिन अब हम अनुभव करते हैं कि लड़कियां अच्छी हैं क्योंकि लड़कियां अब हर जगह या क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। अब वे राजधानी सहित गांवों की सड़कों परभी साइकिल से स्कूल जाती दिख रही हैं। गांवों की लड़कियों का प्रदर्शन देखकर लोग आश्चर्य में पड़ रहे हैं और उनके मुंह से आवाज निकली है कि अरे वाह लड़कियां ऐसा भी कर सकती है वह भी गांव-देहात की। लड़कियां पुरुषों का काम भी कर सकती हैं जैसे- चापाकल बनाना, गाड़ी चलाना तथा दूसरों का बाल काटना आदि। गांव की लड़कियां जुड़ो-कराटे, फुटबाल तथा कबड्डी जैसे खेलों में भी निपुण हैं। वे सभी क्षेत्रों में पुरुषों से प्रतिद्वंद्विता करने का प्रयास कर रहीं हैं। ऐसा कोई सिरफिरा व्यक्ति मिल जाए जो इन सभी कार्यों को करने से उन पर हंसे या विरोध करें। स्त्रियां पुरुषों की तरह केवल मतदान में ही समानता नहीं चाहती बल्कि वे हर क्षेत्र में समानता की मांग कर रही है जैसे -स्त्री हो या पुरुषों सभी को समान वेतन मिलना चाहिए, भूखे पेट रहें, लेकिन लड़कियों को पढ़ाने से ना रोके। नारी अशिक्षा वह क्षेत्र है, जो बिहार के विकास की रफ्तार धीमी कर सकता है। अगर देश का विकास करना है तो स्त्री शिक्षा जरूरी है। लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने में सबसे बड़ा हाथ हमारे बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का है। हमारी सरकार का पूरा ध्यान शिक्षा के विस्तार पर है। इसके लिए उन्होंने अनेक प्रकार की सुविधाएं देने के प्रयास किए हैं-

i) महिलाओं की साक्षरता दर बढ़ाने के लिए 'अक्षर आंचल' योजना शुरू की गयी, जिसमें राज्य की 40 लाख महिलाओं को साक्षर बनाने का अभियान शुरू हुआ।
ii) लड़कियों को सरकार ने अनेक सुविधाएं दी हैं जैसे- साइकिल, स्कूल ड्रेस, भोजन आदि।
iii) मुख्यमंत्री ने राज्य में शिक्षा का प्रसार किया।
iv) उन्होंने लड़कियों की शादी 18 वर्ष तक निश्चित किया।
v) दहेज-प्रथा को रोकने का भी प्रयास किया।
vi) स्कूलों का निर्माण किया।
vii) 'महिला साक्षरता मिशन' शुरू हुआ जिसमें महिलाओं को जागरूकता की भावना बढ़ी।
viii) बड़े पैमाने पर शिक्षक का नियोजन किया, पंचायत में महिलाओं को 50 फीसदी आरक्षण दिया
ix) जो लड़कियां विकलांग हैं उनके लिए भी अलग कानून बनाया।

लाभ :- अगर महिलाएं शिक्षित रहेंगी तो इससे उनके परिवार और समाज का कई लाभ होगा- जैसे

i) वे अपने बच्चे का जीवन उज्ज्वल बना सकती हैं।
ii) वे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के काम में हाथ बंटा सकती हैं।

iii) वे शिक्षिका, वकील, डॉक्टर आदि बन कर परिवार की आय और प्रतिष्ठा बढ़ा सकती हैं। अपनी कमाई से अपने मां-बाप की मदद भी कर सकती हैं।
iv) शिक्षित महिलाएं अपने पति की आमदनी को स्वयं अर्जन करके बढ़ा सकती हैं।
v) वह अपने पति की मृत्यु या उनकी बेरोजगारी के दौर में अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकती हैं।
vi) घरेलू जीवन सुन्दर और शिक्षाप्रद बना सकती हैं।

रूपा कुमारी सिंह,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनीबाग, पटना

रिचा पटेल, एस.एम. कॉलेज, भागलपुर

ये परदा बंदिश नहीं

निबंध का शीर्षक ऐसा है जिसने मेरे अभी तक के जीवन को पूरी तरह समेट लिया है। मेरे लड़की होने का अनुभव अच्छा रहा है। मैं माता-पिता की एकलौती संतान हूं। भेदभाव और उत्पीड़न से मुझे नहीं गुजरना पड़ा। माता-पिता का सारा प्यार मुझ पर न्यौछावर है, इस एहसास को बांटने में मेरे आंखों में नमी आ जाती है। हां, लड़का-लड़की में भेदभाव मुझे कई बार स्कूलों और कॉलेजों में देखने को मिला। मैं हमेशा मन में एक भावना रखती थी कि इस सिर्फ एक लड़की होने से मैं पीछे नहीं रहूंगी। और मैंने कभी अपने आप को पीछे और कमजोर नहीं समझा।

मेरी अभी तक की कामयाबी का सारा श्रेय माता-पिता और मेरे घरवालों को जाता है। माता-पिता हमेशा कुछ उम्मीद चाहते हैं। मुझे ऐसा कई बार महसूस हुआ। मेरा अनुभव है कि सभी यानी कि चाहे वो हमारे माता-पिता हों या घरवाले या फिर हमारा पूरा समाज हमसे कुछ ना कुछ अच्छी उम्मीद करते हैं।

जब तक मैं अच्छे परिणाम नहीं दूंगी मेरे माता-पिता कैसे मुझे आगे पढ़ने देंगे। मंजिल पाने के लिए मुझे कड़ी मेहनत करनी पड़ती है जो मैं हमेशा करूंगी। तभी तो मैं आसमान को छूऊंगी।

कल सपनों को चली छूने कार्यक्रम में बहुत अच्छा महसूस हुआ, इस की सराहना मेरे मां-बाप ने भी की। मैं मुस्लिम समाज से हूं। यहां लड़कियां परदे में रहकर काम करती हैं। ये परदा बंदिश नहीं। देखिए इस परदे के साथ मैं हर जगह जाती हूँ। पढ़ाई इतनी करनी है कि मुझे सबसे आगे निकलना है। अपने सपनों को साकार करना है।

घर में मेरा कोई भाई नहीं तो क्या हुआ मैं हू ना उनकी बेटा। मैं किसी बेटा से कम नहीं, मेरे पापा मुझे बेटा कहकर हीं पुकारते और मम्मी हमेशा आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देतीं हैं। माता-पिता की प्रसन्नता ही मेरा जीवन है। मेरे सारे अनुभव अच्छे हैं।

फरहीन फातमा,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनीबाग, पटना

आज मेरे पापा को मुझ पर नाज है

मैं एक लड़की हूं। ये मैं अच्छी तरह जानती हूं। और ये समाज भी हमें हमेशा याद दिलाती रहती है कि ''मैं एक लड़की हूं।'' मेरी उम्र 19 साल है, मैं बी.एस.सी. में पढ़ती हूं। मेरी जिंदगी ने अच्छे और बुरे दोनों अनुभव को देखा है। देखा है लड़की के उस दर्द को, जिसने हर मोड़ पर उसे लड़की होने का एहसास कराया है। मेरी प्रारंभिक पढ़ाई एक गर्ल्स स्कूल में हुई है। स्कूल के बाद की पढ़ाई भी गर्ल्स स्कूल में। मैंने अच्छे अनुभव भी देखे जब लड़की होने के नाते मुझे लड़कियों की मदद के लिए भेजा गया। बुरे अनुभव भी देखें हैं कि किस तरह मैंने अपने परिवार वालों के खिलाफ जाकर एन.सी.सी. में दाखिला ले लिया। मुझे एन.सी.सी. नहीं लेने दिया जा रहा था क्योंकि मैं लड़की थी। उस वक्त मुझे खुद पर लड़की होने पर अफसोस हुआ। काश मैं लड़का होती तो शायद मुझे भी एन.सी.सी. मिल जाता। मेरे पापा का बार-बार टोकना कि स्कूल से सीधे घर आना, किसी दोस्त के यहां नहीं जाना। इन सब बातों से मैं पूरी तरह टूट चुकी थी लेकिन मेरी हिम्मत और मेरे आत्मसम्मान ने मुझे लड़की होने पर गर्व करने का मौका दिया। मेरी कला ने मुझे पहचान दिलाई और मुझे एन.सी.सी. मिल गया। ये वही वक्त था, खुद को साबित करने का मैं किसी लड़के से कम नहीं। आज मेरे पापा को मुझ पर नाज है की मैं उनकी बेटी हूं। आज बिहार में ही नहीं वरन पूरे भारत में मेरी पहचान बनी है शायद ही ये कोई लड़का कर सकता था। मैं आरडीसी-2008 के लिए चयनित हुई, इसमें मैंने अपने राज्य का प्रतिनिधित्व किया। मुझे बिहार के डी.डी.जी., एन.सी.सी. के द्वारा मेरी Best performence in RDC-2008 के लिए पुरस्कृत किया गया। मुझे राज्यपाल और भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के द्वारा दोपहर के भोजन पर उनके साथ निमंत्रित किया गया। ये क्षण जितना खुशी भरा मेरे लिए था उतना ही मेरे माता-पिता के लिए थी। इस पहचान ने मुझे मेरे घर में सम्मान दिलाई कि बेटा होने से कुछ नहीं होता अगर आप लड़की भी हो तो आप को सब कुछ कर सकती हैं जो एक लड़का कर सकता है। मेरे हर फैसले में मेरे माता-पिता मेरे साथ होते हैं। मैंने अपना जीवन एक Army Officer की तरह गुजारना चाहती हूं। मैंने जब यह बताया कि मैं अपना कैरियर Defence में बनाना चाहती हूं तो उन्होंने ने मेरा पूरा समर्थन दिया और कहा कि मुझे नाज है तुम पर जो तुम मेरी बेटी हो। ये शब्द सुनने के लिए ना जाने मुझे कितने वर्ष लग गये खुद को साबित करने में कि मैं एक लड़की ही नहीं आपकी सहारा भी हूं। लेकिन फिर भी लड़की होने का दंश कभी-कभी झेलना पड़ता है। कभी कॉलेज आते वक्त या कभी मार्केट कहीं भी उन मनचलों लड़कों के द्वारा जो ये सोचते हैं कि मैं लड़का हूं कुछ भी कर सकता हूं। घर में जो मुझे सम्मान मिला है वो कई हद तक तो ठीक है लेकिन मेरी मां को आज भी चिंता रहती की उनकी तीन बेटियां हैं और उनकी शादी कैसे होगी? उनकी चिंता लाजमी है पर हमें ये सोच बदलनी है। ये मेरी पूरी कोशिश रहेगी कि मैं अपनी पहचान उन लड़कियों में बनाऊं जिस पर देश के सारे माता-पिता गर्व से कहें की ये मेरी 'बेटी' है।

पल्लवी प्रिया,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनीबाग, पटना

कभी ससुराल ने रुलाया, कभी सगे भाई ने...

हमारा जन्म क्यों हुआ है? मैं कौन हूं, हमें किसने पैदा किया है? ये सब बाते में सोचती हूं तो यह अनुभव करती हूं कि में एक लड़की हूं। मैंने एक औरत के पेट से जन्म लिया है। मेरी मां नहीं चाहती थी कि मैं इस धरती पर आऊं। मां यह नहीं चाहती थी कि पिता जी की बेरुखी मुझ पर पड़े। लेकिन फिर भी मेरी माँ ने हिम्मत कर के मुझे पैदा किया। आज मैं एक लड़की हूं। मेरे पिता जी की मृत्यु 1990 में हो गई। मेरी माँ ने हम दोनों को पाला-पोषा है। हमें अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रदान की है। मैं सिर्फ अपनी माँ को प्यार करती हूं क्योंकि वह मेरे लिए सब कुछ है जिसने संघर्ष करके हमें नया जीवन प्रदान किया। अब मेरा कर्त्तव्य बनता है कि मैं अपनी मां के लिए कुछ कर सकू। मेरी माँ ने लड़का-लड़की में कभी भेद नहीं किया बल्कि आगे बढ़ने का हौसला दिया है। मेरी मां ने एक अच्छे घर में मेरी शादी की है। परिवार में जाने के बाद मुझे बहुत प्रताड़ित किया गया। मेरी सास ने हमेशा लड़का-लड़की में भेद समझा। मेरी पढ़ाई छुड़वा दी गई। मैं अन्दर ही अन्दर टूटती जा रही थी माँ से भी बात करने नहीं दिया जाता था। मेरे सब परिवार का व्यवहार मेरे प्रति खराब था। ऐसा लगता था कि मैं खुद को खत्म कर लूं। लेकिन मैंने सोचा ऐसा करने से मेरी माँ को बहुत दुख होगा, जिसने इतनी मेहनत करके मुझे पाला। माँ मुझे हमेशा समझाती थी कि बेटी कभी हौसला मत खोना। माँ के जैसा बनना। जिन्दगी को जीना है रोकर नहीं, हंसते-हंसते। तुम लड़की हो इसका मतलब यह नहीं कि तुम कुछ कर नहीं सकती।

ये सारी बाते याद आई और मैंने सोचा कि अब मुझे जिन्दगी में कुछ करना है अपनी मां के सपनों को पूरा करना है। मैंने हिम्मत की है। ससुराल वाले कुछ भी कहें, पहले मुझे अपने पैरों पर खड़ा होना है। मेरी माँ ने जो हमारे लिए जो कुछ भी किया है, मैं उसका आदर करती हूं। आज मैं अपनी माँ के पास हूं। मेरा एक बेटा भी है। मम्मी का पार्लर है। मेरी माँ मेरे बेटे की घर पर देखती है और मैं अपनी माँ का पार्लर सम्भालती हूं। अधिक से अधिक आमदनी देकर अपनी माँ की मदद करती हूं। ससुराल से मुझे एक पैसा भी नहीं मिलता है। फिर भी मैने हिम्मत नहीं हारी है। आज मेरे ससुराल वाले मुझे बुलाना चाहते है पर मैंने यही सोचा है कि मुझे पढ़ना है। आगे बढ़ना है।

मेरे में अच्छाई यही है कि मैं अपनी बूढ़ी माँ की सेवा करती हूं। मेरी माँ जानती है कि मैं कमजोर हूं इसलिए वह मुझसे तेल भी लगवाना नहीं चाहती है। लेकिन मैं यही सोचती हूं कि भगवान की सेवा करने से कोई फायदा नहीं है। अगर मैं अपनी माँ को खुश रखूंगी तो मेरे सारे पापा धुल जाएंगे। दूसरी तरफ मेरा भाई मुझे हमेशा कोसता है कि यहीं पड़ी हुई है। हमारा ही खाती है। मुझे बहुत तकलीफ होती है ये बातें सुन कर। फिर मैंने ठाना कि इतनी अधिक आमदनी करूंगी मेरा भाई मुझे प्यार करेगा। आज ये बात सच है कि जब से मैने आमदनी ज्यादा की है, मेरे भाई भी मुझे कुछ नहीं कहते हैं। बल्कि मेरा हौसला देखकर मुझे खुद कहते हैं कि लवली मुझे तुम्हारे जैसा बनना है। तुम्हारे में जो हिम्मत है वह आज की लड़की से अधिक है। कभी-कभी अपने बड़े भाई की कड़वी बातें सुनकर रो पड़ती हूं। कभी-कभी झगड़ा कर लेती हूं, पर सोचती हूं कि अगर मेरा भाई मुझे ऐसी बातें

नहीं बोलता तो शायद ही कभी मेरे में हिम्मत आती। कल ही कालेज में एक प्रोग्राम हुआ, जिसका नाम था- सपनों को चली छूने। मुझे इससे बहुत ज्यादा हिम्मत मिली है और ज्यादा हौसला मिला है। मैं ऐसे प्रोग्राम से बहुत खुश हूं इससे मैं ही नहीं, बल्कि सब लड़कियों को हिम्मत मिली है। मुझे बस आगे बढ़ना है। कुछ करना है और अपनी मां, भाई का सपना पूरा करना है और ससुराल को दिखाना है कि हां मैं एक लड़की हूं मुझे कोई कमजोर, लाचार न समझे। हमे भी जीने दो। अगर हम नहीं, तो कुछ भी नहीं। हम हैं, तो पूरा संसार हमारा है।

लवली कुमारी सिंहा,
जे.डी.विमेंस कॉलेज, पटना

चारू स्मिता, मगध महिला कॉलेज, पटना

अपनी मेहनत के बल पर बदला परिवार का सोच

मैं एक लड़की हूं। मेरा जन्म एक मध्यम परिवार में हुआ। पिता एक सरकारी संस्था में काम करते हैं। कहने के लिए तो वो मुझे बहुत प्यार करते हैं पर जब मैं आपको अपनी आप बीती सुनाऊंगी तो आप आश्चर्य करेंगे। जब मैं पांच साल कि हुई तो मेरे माता-पिता ने मुझे सरकारी स्कूल में भेज दिया। जहां न कोई ड्रेस की व्यवस्था और न ही किताबों की जानकारी। कुछ ही सालों में मेरा भाई पढ़ने लायक हो गया, जो मुझसे छोटा है। उसे प्राईवेट स्कूल में नामांकन कराया गया। उसे पहुंचाने और लाने का काम मैं और मेरी बहन करती थी। कभी वो रबर गायब कर देता था तो कभी किताबें इसीलिए सभी ने विचार किया क्यों नीतू (मुझे) को प्राईवेट स्कूल में नामांकन कर दिया जाय जिससे दोनों को लाने ले जाने की परेशानी भी नहीं रहेगी और भाइयों का ख्याल भी रखेगी। अतः दोनों का ध्यान रखने के लिए मेरा उस स्कूल में नाम लिखा दिया गया। यह मेरी लगन कहिए या भाग्य कि मैं हर कक्षा में अच्छे नम्बर लाकर अपने शिक्षकों की नजर में अच्छी बनती गई। जब कोई Parents Meeting होती, सर मेरे भाइयों के जगह मेरी बड़ाई करते कि आपकी बेटी पढ़ने वाली है इसे पढ़ाइए।

पापा को मजबूरन (सर की नजर में अच्छा बनने के लिए) मुझे पढ़ाना पड़ा। मैं आगे बढ़ती गई और मेरा भाई पीछे। फिर सभी का विचार हुआ कि क्यों न दोनों लड़कों (भाइयों) का दाखिला कोई और बड़े स्कूल में करा दें ताकि वह सुधर जाए। फिर दोनों का Leed's Asian School में नामांकन कराया गया। चूँकि तीन-तीन विद्यार्थी पर एक फ्री की सुविधा थी मैंने भी अपनी इच्छा जाहिर की और आठवी में मेरा नामांकन Leed's में हो गया। वहां मैंने दसवीं की परीक्षा पास भी नहीं की कि मेरी शादी की बातचीत शुरू हो गई। किसी तरह मैंने मैट्रिक किया पर मुझे पढ़ने का बड़ा शौक था। मैं शादी नहीं करना चाहती थी। रोज सुबह उठकर अपने शिव गुरु से प्रार्थना करती कि मेरी शादी रुक जाय। मेरी प्रार्थना सुन ही ली गई और शादी रुक गई। मैं आगे पढ़ना चाहती थी, लेकिन पापा पैसे देने में आना-कानी करने लगे। मैं Science लेना चाहती थी और वो मुझे Arts लेने को कह रहे थे। मैने अपने ठ्ष्द्यद्र लोगों को अपनी बात से प्रभावित कर पापा से हामी भराई और I.Sc. में Admission कराया। घर में बच्चों को पढ़ाने का काम शुरू किया। बच्चों के घर जा-जा कर भी पढ़ाया। इस तरह मैं अपना खर्च खुद उठाने लगी इससे पापा को भी आराम मिला और अब बोलने का मौका भी नहीं रहा। अभी मैं B.A., English Honours से कर रही हूं। मैं Graduation करने के बाद छ्वश्ड्ड करना चाहती हूं और अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हूँ, आत्मनिर्भर बनाना चाहती हूं। अब मेरे पापा खुद कहते हैं कि मेरी बेटी खुद से पढ़ रही है और अपने से शादी करेगी, तो मुझे कोई Problem नहीं है। मैंने अपने बल पर अपने Family के सोच को बदला और इसके लिए मैं अपने आप को खुश किस्मत समझती हूं।

नीतू कुमारी,
जे.डी.विमेंस कॉलेज, पटना

मृत्यु तक संघर्ष करती हैं लड़कियाँ

हम लड़कियों के अंदर इतनी सहन शक्ति है, जितनी लड़कों में नहीं होती। अगर हमारे पास इतनी शक्ति है तो हम कुछ भी कर सकते हैं। दूसरी तरफ समाज में लड़कियों को हीन भावना से देखा जाता है। आये दिन हमारे यहां लड़कियों तरह-तरह के अत्याचार किये जा रहे हैं। लड़कियां घरों से निकलने में डरती हैं। लेकिन हमें डरने की जरूरत नहीं है। एक लड़की जन्म से लेकर मृत्यु तक संघर्ष करती है। इससे भी कोई महान हो सकता है। आज हमारे देश में लड़कियां लड़कों से पीछे नहीं। हमें इस समाज को यह दिखाना है कि हम लड़कियां भी कुछ हैं।

हम जिनमें आस्था और विश्वास करते हैं, यानी देवी-देवताओं में, तो भी हम देखें तो धन, विद्या और शक्ति तीनों की मालकिन देवियां ही हैं। इन तीनों के बिना हमारा संसार अधूरा है। फिर हम लड़कियां अपने आपको कमजोर क्यों समझें? हम लड़कियों को अपने अंदर वो शक्ति पैदा करनी है जिससे हम अपने अधिकारों को पा सके। मैं एक अबला नहीं हूं। मेरे अंदर वो शक्तियां हैं जो एक लड़के में होती है।

प्रतिमा कुमारी,
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, जहानाबाद

आभा कुमारी, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

लड़के-लड़कियों में अभी भी किया जाता है भेद

मैं एक लड़की हूं। मैने कभी ये नहीं सोचा कि मैं लड़का क्यों नहीं हुई। मेरे दो भाई भी हैं। मैं हमेशा उनसे पढ़ाई के मामले में आगे रही हूं। मेरे मम्मी-पापा ने भी मुझे कभी ये महसूस नहीं होने दिया कि मैं लड़की हूं तो किसी तरह कम हूं। आज कोई भी क्षेत्र लड़कियों से अछूता नहीं रहा है। पहले जहां लड़कियां बस घर की दुनियां तक सीमित थीं, वहीं आज वे घर और बाहर दोनों संभाल रहीं है। घर का चूल्हा-चौका हो या बाहर नौकरी करनी हो।

घर की आर्थिक स्थिति में भी सुधार कर रही है। आज की औरतें पैसे के लिए किसी की मोहताज नही हैं। लेकिन आज तक जो मेरा बुरा अनुभव रहा है वो ये कि दहेज के कारण मैने देखा एक बहू को उसके घर से निकाल दिया गया । वो कोई कमजोर अबला नहीं थी, इसलिए उसने हक की लड़ाई लड़ी और उसकी जीत भी हुई। शुरू से अंत तक उसके चेहरे पर कोई सिकन तक देखने को न मिली। आज की महिला अपना हक जानती है, लेकिन अफसोस की बात है कि ज्यादातर औरतों का संघर्ष कठिन होता है या उन्हें मार डाला जाता है।

मैंने ऐसे घर को भी देखा है जहां लड़के-लड़कियों में अभी भी भेद किया जाता है। मैं एक घर से दूध लाने जाती थी, जब एक दिन मैं वहाँ गई तब उसके घर में रोटी बन रही थी। एक लड़की जो सुबह से ही काम में लग जाती है, रोटी मांगी तो मां बोली रात में एक बार खा लेना। अभी खा लेगी तो बाद में फिर नहीं मिलेगा। और तभी बेटा वहां आ गया, उसने एक रोटी मांगी तो जर्बदस्ती वही मां उसे दो रोटी दे रही थी। ऐसा क्यों?

आज भी कई घरों में ऐसा हो रहा है। इसी भेद को मैं कुछ बनकर मिटाना चाहती हूं। ताकि किसी लड़की को अपने लड़की होने पर धिक्कार नहीं बल्कि गर्व हो। लड़कियों के बिना संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

अम्बा कुमारी,
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, जहानाबाद

..और तब चेहरे पर छलकता है लड़की होने का दर्द

मुझे लड़की होने का गर्व है। मां ने तमाम कठिनाइओं का सामना करते हुए मुझे जन्म दिया। इस धरती पर मैं अपने कदम मां की वजह से रख पाई। उसी मां के आंचल तले मैं कली बनी और फूल बन कर खुशबू बिखेरने का एक मासूम सा सपना अपनी आंखों में सजायी हूं। मुझे अपना मां-बाप की तरफ से हमेशा प्रोत्साहन मिला ताकि मैं हर क्षेत्र में अच्छा कर सकूं।

कभी-कभी इतना कुछ अच्छा होने के बावजूद समाज अपने बुर्जुगों के वजह से हमे आगे बढ़ने से रोकने लगता है। उस वक्त मेरी भावनाओं को बहुत ठेस लगती है।

एक लड़की का सहारा और उसका सबल पक्ष उसके अपने जन्मदाता होते हैं। और जब ये लोग ही मात्र समाज के डर से अपनी बेटी के सपनों का खून कर दें तो एक लड़की होने का दर्द चेहरे पर अवश्य ही उभर आएगा। एक लड़की कभी भी अपने समाज या घर से बाहर कहीं भी उतनी मजबूर कभी नहीं होती जितनी अपने घर, परिवार और मां-बाप के सामने।

अगर एक लड़की को अपने सबल पक्ष की ओर से हमेशा प्रोत्साहन और सम्मान मिलता रहा तो निश्चित ही वह हर रुकावट को पार कर अपनी मंजिल पा लेंगी।

आज हमारा समाज, हमारा देश काफी आगे बढ़ चुका है, हर तरह से लड़कियों को आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिल रहा है। समाजसेवी संस्थाएं भी नारी-सशक्तिकरण पर जो दे रही हैं ताकि वे अपने हक के बोर में जानें अपने सपनों को साकार करें और आत्मनिर्भर बनें।

मुझे अपने लड़की होने का कोई अफसोस या दुःख नहीं है। मैं एक लड़की हूं ये बात बिलकुल सही है लेकिन इसके बावजूद मैं कमजोर नहीं हूं। मैं अपने सभी सपनों को पूरा करूंगी। मैं सारी चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ूंगी।

अर्चना कुमारी,
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, जहानाबाद

कठिनाई के बावजूद लड़की हर क्षेत्र में आगे है

वर्तमान समाजिक व्यवस्था में लड़कियों को बहुत सारी कठिनाइयों का सामना कराना पड़ता है। आती हैं, पर उन्हें हिम्मत से काम लेना चाहिए।

जिन्दगी है देन खुदा की, जीने का हक मेरा है
पैर जमीन पर है पर, आसमां छूने का हक मेरा है।

किसी ने यह सच ही कहा है कि जिन्दगी में बहुत कुछ हमें तय करना है। कठिनाइयां तो आएंगी, मगर जो उसका डटकर मुकाबला करेंगे, वे मंजिल जरूर प्राप्त करेंगे। एक बात मैं और बताना चाहती हूं कि ये सब कुछ कहने की बाते नहीं है। देखने की भी है। हम कहीं और की बात नहीं, यहीं की बाते कर रहे हैं। वो लड़की जो झांसी की रानी बनी, वो भी एक लड़की ही थी। उनके पास भी उनके हौसले को बढ़ाने के लिए कोई नहीं था, फिर भी अपने हौसले और हिम्मत से आगे बढ़ी। आज कल ही देख लीजिए, लड़की हर क्षेत्र में आगे है। समाज सेवा के रूप में भी बहुत सारी महिलाएं ही हैं, जो आगे बढ़ रही जैसे, सोनिया गांधी, अगर ये सब बातें सब समझ जाय, तो हर लड़की अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकती है।

अमीषा कुमारी,
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, जहानाबाद

सपनों को छूने का हमें भी है पूरा अधिकार

लड़की कल्याणी का रूप है, बस, हम उसे देख नहीं पाते। नारी शक्ति जाग उठी है। सबेरा हो चुका है। लड़की भविष्य के संसार की रचना करने वाली मां है। लड़कियां वो कर सकती हैं, जो किसी ने सपने में भी नहीं सोचा होगा। कल्याण के लिए लड़कियां पूजी जाती हैं, पर अफसोस कि कही-कहीं इनके साथ इतना गलत व्यवहार किया जाता है, ये अपनी जान दे देती हैं। मेरे लड़की होने का मतलब ये नहीं कि अत्याचार सहती रहूं। हमें अपने सपनों के आसमान को छूने का पूरा अधिकार है। अगर ढंग से न मिले तो इसके लिए संग्राम तक करना है। लड़कियां चाहें तो इस देश के सबसे अच्छे-अच्छे पोस्ट पर पहुंच अपना नाम रौशन कर सकती हैं। लड़की के अंदर जो मां दुर्गा, मां सरस्वती, मां लक्ष्मी की शक्ति है, उसे मैं खोना नहीं चाहूंगी। सारे सपनों को पूरा करूंगी।

स्वीटी कुमारी
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, जहानाबाद

श्रुति सुमन, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

कुछ लड़कियाँ तो हर पल मरती हैं

लड़की होना अपने आप को चुनौती है और खुशी भी है। मुझे भी लगता है कि अपने हिस्से का आसमान अपनी मुठ्ठी में कैद कर लूं। सफलता के पंख लगाकर ऊंची उड़ान भरूं। इस सफलता को पाने में जो कुछ मां-बाप साथ देते हैं, उनमें मेरे मां-बाप भी हैं। वह मुझे हर सफलता छूने में मेरी हर संभव प्रयास करते है। मुझे कभी नहीं लगता कि मैं एक लड़की हूं और मेरे साथ अन्याय हो रहा है। मुझे वह सब मिलता है, जो एक बच्चे को मिलना चाहिए ,चाहे वह बच्चा लड़का हो या लड़की। मेरा लक्ष्य है कि मै एक आईएएस बन कर समाज में फैली बीमारियों जैसे-लिंग चयन, दहेज प्रथा, बाल विवाह और लिंग भेद को दूर कर दूं। पर हर सिक्के के दो पहलू होते हैं।

मुझे तब बुरा लगता है जब मैं अपने घर से बाहर निकलती हूं और एक लड़की को बेटी के रूप में पत्नी के रूप में, मां के रूप में अत्याचार की चक्की में पिसता देखती हूं। तब मेरा रोम-रोम बिलख उठता है। कभी-कभी तो मैं डर जाती हूं कि क्या यही है नारी का स्थान? क्या यही है उसका वजूद? कुछ लड़कियां तो हर पल मरती रहती हैं।

स्कूल जाने को तरसती हैं। तब हृदय के कोने से आवाज आती है- क्या लड़की होना अभिशाप है? कहीं -कहीं तो लड़कियों की 14 से 15 साल की आयु शादी कर दी जाती है। तब मुझे समाज के सोच पर रोना आता है। मन न जाने क्यों बोल उठता है- हाय रे समाज, हाय रे रिवाज। कहीं-कहीं तो लड़की की शादी होने पर उसे कैदी का जीवन बिताना पड़ता है। पर इसे सह रहा है कौन? लड़की ही इसे सहती है। आज समय है खुद को जागरुक करने का, अपने अन्दर विश्वास लाने का और आत्मनिर्भर बनने का।

हम तो अकेले ही चले थे जानिबे मंजिल मगर
लोग साथ आते गए और करवां बनता गया।

शाईस्ता साना,
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, जहानाबाद

लिंग चयन एवं कन्या भ्रूण हत्या का सर्व प्रमुख कारण है दहेज प्रथा

मेरे अनुभव उन व्यक्तियों के लिए अच्छे हैं जो लड़कियों को किसी भी क्षेत्र में कमजोर नहीं समझते। मैं वैसे लोगों को बुरा मानती हूं जो केवल लड़कों को ही अपने समाज का तथा देश का गौरव समझते हैं। समाज में हमेशा लड़की को लड़कों से नीचा समझा जाता है। लड़कों को लोग बुढ़ापे का सहारा मानते हैं लेकिन क्या लड़कियां माता-पिता के बुढ़ापे का सहारा नहीं बन सकतीं?

हमारे समाज में बहुत सी कुरीतियों में एक है कन्या भ्रूण हत्या। आजकल मां के गर्भ में ही यह पता चल जाता है कि लड़का है या लड़की? और अगर गर्भ में लड़की रहती है तो उसे गर्भ में ही खत्म कर दिया जाता है। कन्या भ्रूण हत्या का सर्व प्रमुख कारण है दहेज प्रथा। दहेज के कारण ही लड़कियों के इस दुनिया में आने से पहले ही समाप्त कर दिया जाता है।

पूरे देश में कन्या भ्रूण हत्या के कारण लड़कियों का अनुपात लड़कों से कम हो रहा है। अगर इसी तरह कन्या भ्रूण हत्या लगातार बढ़ती रही तो वह दिन दूर नहीं जब लड़कियां लड़कों के अनुपात में काफी पीछे रह जायं। सामाजिक सच यह है कि जो माता-पिता अपनी बच्ची को जन्म और जीवन देना चाहते हैं, वे भी दहेज की बात सोच कर कन्या भ्रूण की हत्या कराने पर विवश हो जाते हैं। इसलिए यह जरूरी ही नहीं, नितांत आवश्यक है कि दहेज प्रथा पर रोक लगे। लड़कियां किसी भी चीज में लड़कों से पीछे नहीं हैं, केवल जरूरत है उनमें आत्मविश्वास जगाने की। इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी है शिक्षा। लड़कियों के अशिक्षित रहने का कारण है गरीबी तथा नजदीकी शैक्षणिक संस्थानों का अभाव। माता-पिता को लड़कों की तरह लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

'लड़का लड़की में कैसा अंतर'।
'शिक्षा है दोनों का जंतर'।।

लड़कियां हर क्षेत्र में आगे हैं। देश की सर्वप्रथम आई.पी.एस महिला किरण बेदी हैं। हमलोगों को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और हमें भी अपने देश का नाम गौरवान्वित करना चाहिए। लड़कियों के विकास के लिए यह कार्यक्रम ''सपनों को चली छूने'' से लड़कियों का मनोबल बढ़ेगा।

श्यामा सिन्हा,
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, जहानाबाद

हम सभी लड़कियों को अपने पचास प्रतिशत हिस्से के लिए अवश्य लड़ना चाहिए

लड़की होने के कारण मेरे अनुभव मिले-जुले हैं। कुछ अच्छे, तो कुछ कसक देने वाले। इसके बावजूद मेरी तमन्ना है कि डॉक्टर बनकर गरीबों की मदद कर सकूं। मैं अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहती हूं। जो परिश्रम करता है, वही सफल होता है।

मैं पढ़ना चाहती हूं। कल्पना चावला भी अच्छी उड़ाने भरने वाली महिला थी। मैं उन्हीं के जैसा बनना चाहती हूं। हम सभी लड़कियों को अपने पचास प्रतिशत हिस्से के लिए अवश्य लड़ना चाहिए ताकि हम भी कुछ कर सकें।

हमलोग जो भी काम करें, हिम्मत या मेहनत के बल पर करें, ताकि जीवन में उन्नति कर सकें।

सुधा कुमारी,
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, जहानाबाद

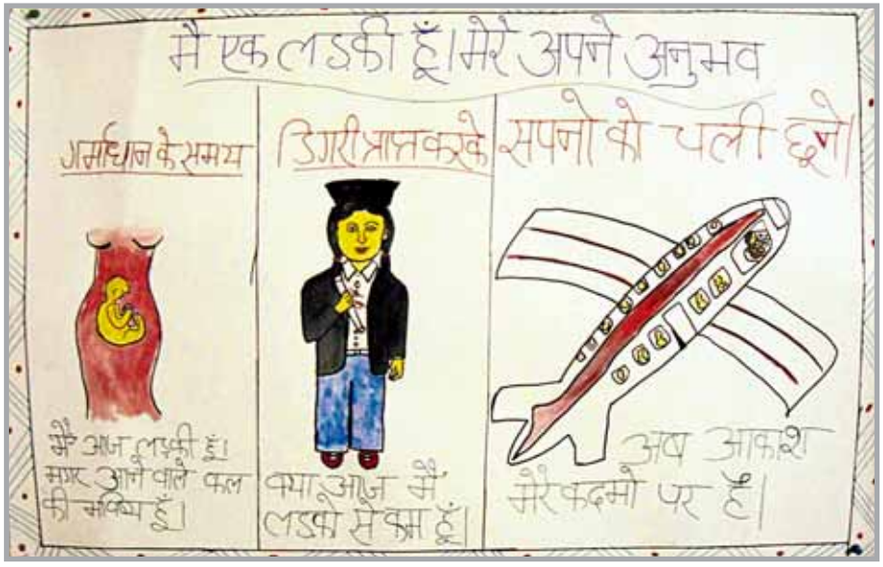

खुशबू कुमारी, मगध महिला कॉलेज पटना

लड़कियां भी बनना चाहती हैं माता-पिता का सहारा

मैं पढ़-लिखकर कुछ कर दिखाना चाहती हूं। देश का नाम ऊंचा करना चाहती हूं। हर किसी का एक सपना होता है, लेकिन दुख की बात यह है कि किसी का सपना, सपना ही बनकर रह जाता है। मैं चाहती हूं कि मुझे वह सारे अधिकार मिले जो एक बेटे को मिलता है। माता-पिता बेटे को पढ़ा-लिखाकर डाक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, मैनेजर इत्यादि बनाने के लिए उनकी पढ़ाई का खर्च जुटाने में लगे रहते हैं, लेकिन बेटियां उपेक्षित रहती हैं। उन्हें लगता है कि बेटी तो पराये घर की अमानत हैं। उसे शादी के बाद कहीं और ही रहना है, इसलिए वह माता-पिता की देखभाल नहीं कर सकती। बेटा तो हरदम मेरे करीब ही रहेगा और देखभाल कर सकेगा। पर यह सोचना गलत है। बेटी को मां-बाप से क्या कम प्यार होता है, जो उनका ध्यान नहीं दे सकती? आजकल लड़कियां क्या नहीं कर सकतीं? आजकल लड़कियां तो लड़कों से बढ़कर नाम कमा रही हैं। उन्हें यह विश्वास दिलाना है कि वे भी बेटे की तरह पढ़ लिखकर अपने सपनों को पूरा करेंगी और मां-बाप का सहारा भी बनेंगी। हम बेटियां भी चाहती हैं कि हम अपने माता-पिता को टेंशन न दें। जल्द ही पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़े हो जाए और अपने माता-पिता का सहारा बनें। लेकिन यह बात सब माता-पिता नहीं समझ पाते हैं। मैं चाहती हूं कि मां-बाप बेटी या बेटा को एकसमान प्यार दें। उन्हें एकसमान कपड़ा, पढ़ाई, इत्यादि सारे चीजों का खर्च दें। मैं भी उन बेटियों की तरह बनना चाहती हूं, जिन्होंने खानदान का नाम रौशन किया है। मेरी भी कुछ उलझन थी जिसे मैं किसी से कहती नहीं थी लेकिन अब मैं अपनी सारी समस्याएं अपने माता-पिता, भाई-बहन और दोस्तों को बताती हूं। मैं भी कुछ कर दिखाना चाहती हूं। और अपने जिला, राज्य देश का नाम रौशन करना चाहती हूं। मुझे लगता है कि मैं पढ़-लिखकर कुछ बन सकूंगी और लोगों की मदद करूंगी।

सुधा कुमारी,
श्रीकृष्ण महिला कालेज, जहानाबाद

क्या हम अपना अधिकार समझते है

हमारे लिखित संविधान में भारतीय नारी को हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर अधिकार मिला है। संवैधानिक कानून तो सरकार ने हमें पूरी तरह दिया है, पर व्यवहार में समाज हमें बराबरी का दर्जा देना नहीं चाहता। गांवों में स्त्री की स्थिति इतनी खराब है कि हम कुछ कह नहीं सकते। नारी शिक्षा का महत्व हमें तब पता चलता है जब हमें अपने ही पति, पिता या भाई के द्वारा प्रताड़ित किया जाता है। संविधान के द्वारा दिये गये अधिकारों का उपयोग न करने के कारण हमें कई प्रकार का कष्ट सहना पड़ता है। स्त्री को लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा का रूप दिया गया है। पर व्यवहार में स्त्री की स्थति बहुत खराब है। हमें लड़की होने के कारण उतनी स्वतंत्रता नहीं मिलती जितना लड़कों को। महिलाएं पुरुषों के समान कार्य नहीं कर सकतीं। उन्हें घर की चाहरदीवारी में बन्द रहना पड़ता है। महिला अगर कोई काम बाहर जाकर करती है जैसे- किसी कारखाने में या बाजार में तो उसे पुरुषों के अनुसार वेतन नहीं दिया जाता है। उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। महिलाओं को वेश्यावृति तक के लिए बाध्य किया जा रहा है। उन्हें वोट देने का अधिकार है, मगर वे पिता या पति की इच्छा के विरुद्ध जाकर किसी उम्मीदवार को वोट नहीं दे सकतीं। पंचायती राज अधिनियम 1992 के अनुसार पंचायत में एक तिहाई महिलाओं की भागीदारी होगी। पर यह सिर्फ एक कानून बनकर ही रह गया। हम कह सकते हैं कि इस सबकी जिम्मेदार हम सब महिलाएँ ही हैं, क्योंकि हम ही अपना अधिकार नहीं समझ पा रही हैं। आज महिला की स्थिति में सुधार करने के लिए सरकार ने विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं। हमें उसमें काफी सुधार देखने को भी मिल रहा है। जैसे-

(i) राष्ट्रीय महिला कोष- राष्ट्रीय महिला कोष मार्च 1993 में लागू किया गया, जिसके तहत उन महिलाओं को सुविधा मिली जो अपने पैसे जमा कराने में असमर्थ थीं। राष्ट्रीय महिला कोष की सहायता से यह अवसर मिला कि जो महिलाएं अपना पैसा जमा कराना चाहती है उन्हें यह सुविधा अवश्य मिलेगी।

(ii) इंदिरा महिला स्मृद्धि योजना- यह योजना 20 अगस्त 1995 को लागू हुई। इसके तहत उन महिलाओं को, जो बेरोजगार हैं और गरीबी रेखा के नीचे हैं, उन्हें विभिन्न योजनाओं में काम अच्छे वेतन पर मिलेगा।

(iii) बालिका स्मृद्धि योजना-इसे 2 अक्टूबर 1997 में लागू किया गया। इसके तहत बालिकाओं को मुफ्त शिक्षा, मुफ्त ड्रेस इत्यादि मुहैया कराया जाएगा।

(iv) महिला विद्यालयों की स्थापना- महिला विद्यालय की स्थापना की गई ताकि लड़कियों को अधिक सुरक्षा मिल सके। वे निडर होकर अपनी पढ़ाई जारी रख सकें।

(v) महिला आश्रम या हास्टल की सुविधा- महिलाओं के लिए हर शहर में आवश्यकतानुसार हास्टल की स्थापना की गई।

अंत में हम पाते हैं कि हम महिलाओं के पास आगे बढ़ने की जिनती सुविधा है, वो लड़कों को नहीं मिली है। बस, जरूरत है उसे सही तरीके से उपयोग करने का।

सुगन्धा प्रियदर्शनी

पिंजरे की चिड़ियां रह गई हैं लड़कियां

पापा-मम्मी मुझ पर गर्व करते हैं, क्योंकि मैं पढ़ने में मेहतन करती हूं और उसके साथ-साथ घर का काम भी करती हूं। अपने छोटे-छोटे भाई-बहन को पढ़ाती भी हूं। इसके साथ मैं खुद भी अनुशासन में रहती हूं और अपने छोटे-छोटे भाई बहन को भी सलाह देती हूं कि अनुशासन में रहें।

मगर सुनती आ रही हूं कि हमारे समाज में लड़की पर ध्यान नहीं दिया जाता है। लड़की को नहीं पढ़ाया जाता है, क्योंकि वह लड़की है। लड़की का भविष्य तो इससे खराब होता है। वह बेसहारा बन जाती है। अगर दुनिया में लड़की का भविष्य अच्छा बनाना चाहते हैं, तो लड़की को तालीम में आगे आने देना चाहिए। लड़की को पढ़ाने के बजाये लोग दहेज दे कर उसकी शादी कर देते हैं। पढ़-लिख कर अच्छी नौकरी करने और आत्मनिर्भर बनने की उसकी चाह दबा दी जाती है। उसे परंपरा के नाम पर ससुराल की दासता में रहने को विवश कर दिया जाता है।

थोड़ी आजादी तो मिली है, मगर लड़की अभी जितना चाहे उतना पढ़ने-लिखने को आजाद नहीं है। जिस तरह से पिंजरे में पला हुआ तोता रटी हुई बातें बोलता है, उसी तरह से अधिकतर लड़कियां आधुनिक दिखने के बावजूद पुराने विचार व्यक्त करती हैं या उन्हें पुरानी रीति के अनुरूप चलने को मजबूर किया जाता है।

सनोवर,
श्रीकृष्ण महिला कालेज, जहानाबाद

निशु नीलीमा, एस.एम. कॉलेज, भागलपुर

हमें अच्छी तरह समझे समाज

लड़की बहुत कुछ करना चाहती है पर वह समाज के डर से नहीं कर पाती। उसे परेशानी झेलनी पड़ती है। जब वह घर में रहती है तो माँ-बाप का दबाव, शादी के बाद शौहर का और घर के बाहर समाज का डर रहता है। आखिर लड़की ही क्यों सारे दबाव और मुसीबत झेलती है? मेरा कहना यह है कि लड़की को भी हक है कि वह अपनी पसंद और काबिलियत के मुताबिक खुल कर कोई भी काम कर सकती है। इसमें सभी को साथ देना चाहिए। समाज में रहकर अक्सर पढ़ी-लिखी लड़की घर बैठी (बेरोजगार) रह जाती है। वह चाहकर भी कुछ नहीं कर पाती है। लड़की को अच्छी तरह समाज समझे और अगर वह कुछ करना चाहती है तो हमें सबसे पहले कुछ उसके लिए करना चाहिए।

मैं एक मिडिल क्लास की लड़की हूं। मैने बहुत परिश्रम से अपनी पढ़ाई पूरी की है। पापा बहुत लाचार हैं। मां दुनिया में नहीं हैं। मुझे पढ़ने का बहुत शौक है लेकिन मेरे पास पढ़ने के लिए पैसा नहीं है। मैं बहुत लाचार हूं। अगर कोई मदद को आगे आये तो मै उनकी शुक्रगुजार रहूंगी।

अफशा परवीन,
श्रीकृष्ण महिला कालेज, जहानाबाद

सोनी कुमारी, एस.एम. कॉलेज, भागलपुर

इंदिरा गांधी की तरह माता-पिता का नाम रौशन करूंगी

मेरे अनुभव अच्छे हैं और कुछ सपने भी हैं। लड़की चाहे तो बहुत कुछ कर सकती है। पहले उसे अच्छी शिक्षा की जरूरत है। लड़की को कभी-भी कमजोर नहीं समझना चाहिए। लड़की पढ़-लिखकर आजकल क्या नहीं कर सकती है। वह डाक्टर, इंजीनियर, डी.एम., एस.पी. सब कुछ बन सकती है। मैं भी आगे बढ़ कर इन्दिरा गांधी की तरह अपने माता-पिता का नाम रोशन करूंगी। मैं अनुशासन का पालन भी अच्छी तरह से करती हूं। मेरे अन्दर अच्छाई और बुराई दोनों है।

नारी के बिना यह संसार कायम नहीं रह सकता। आज हर मोड़ पर लड़की लड़कों से आगे निकल चुकी है। मुझे गर्व होता है कि मैं भी एक लड़की हूं। मुझे अपने माता-पिता पर भी गर्व है, जो मुझे लड़के से कम नहीं समझते। वे लिंग-भेद नहीं करते, लेकिन अधिकतर लोग ऐसा करते हैं। बेटे की चाह में लड़की को गर्भ में ही समाप्त कराने वाले कम नहीं हैं। ऐसा दहेज की बढ़ती मांग के चलते हो रहा है, पर इसे रोकने के लिए कोई गंभीर सामाजिक पहल नहीं है।

डॉली कुमारी,
श्रीकृष्ण महल, कॉलेज

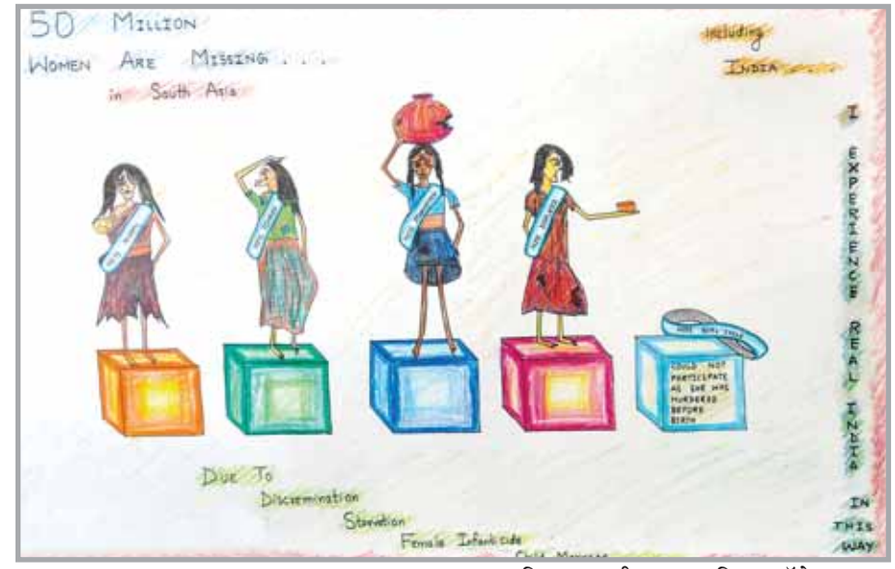

अनामिका कुमारी, मगध महिला कॉलेज, पटना

बेटियों की जिन्दगी बर्बाद कर देते हैं पुराने ख्यालात

मैनें जिन्दगी में जब से खुद को जाना है और लड़की होने का अहसास हुआ है, तब से सवाल उठता है कि खुदा ने लड़की क्यूं बनाया? और अगर बनाया भी तो लड़की की जिन्दगी में इतनी तकलीफ, इतनी परेशानी क्यूं दे दी? खुदा ने तो सबको समान रखा लेकिन समाज के कायदे-कानून बनाने वालों ने लड़कों को हमसे ऊंचा और अच्छा दर्जा दे दिया। क्यूं समाज हमें लड़की होने पर नीचा या कमजोर समझता है? समाज में परिवार, रिश्ते का कोई भी ऐसा शब्द नहीं है, जो सिर्फ लड़कों या सिर्फ लड़कियों से ही बनता है। इसके लिए दोनों का होना बहुत जरूरी है। लड़कियां हमेशा से, अपने समाज, परिवार और रिश्तों के लिए अपने सपनों की बलि देती आई हैं, फिर भी उनको वही लोग तरह-तरह से परेशान करते हैं और लड़कियां उसे अपना भाग्य समझ कर चुप रहती हैं। जब किसी घर में लड़की पैदा होती है तो मां-बाप अपना बुरा वक्त समझ लेते हैं, उनसे नफरत करते हैं। उनका सही पालन पोषण नहीं होता। लड़की मां-बाप की नजरों में अपने लिए नफरत देखती और सहम जाती है। वह छोटी सी उम्र से ही कठिन परिश्रम करने लगती है और अपने माता-पिता को खुश रखने की कोशिश करती है। आज दुनिया इतना आगे बढ़ चुकी है पर फिर भी सबकी यही सोच है कि हम लड़की कुछ नहीं कर सकती। लड़कियों के परिवार वाले क्यूं लड़कों को ज्यादा अच्छा मानते हैं, क्यूं सिर्फ उनके लिए ही सोचते है? अगर लड़कियों को लड़कों की तरह की महत्व दिया जाए तो वे लड़कों से अच्छा करेंगी। परिवार का नाम रोशन करेगी, उनका सहारा बनेगी। मां-बाप समाज के पुराने नियमों को मानते हुए अपनी बेटियों की जिन्दगी बर्बाद कर देते हैं। यही वजह है कि लड़कियां, अपने को लड़की जान कर सहम जाती हैं, चुप रहती हैं, अपने सपनों को दिल में दबा देती है और अंदर ही अंदर घुटती रहती हैं। यही लड़की शब्द उनके लिए एक शाप बन जाता है। सरकार ने लड़कियों के लिए, उनकी सुरक्षा के लिए कई कानून बनाए , पर क्या ये कानून चलता है? आज भी दहेज के लिए लड़कियों को मारा-पीटा जाता है। भ्रूण हत्या की जाती है ताकि घर में न लड़की पैदा हो, न दहेज देना पड़े। इसके अलावा कई ऐसे अपराध आज होते हैं और सरकार कुछ नहीं कर पाती है। फिर हम कैसे कह सकते हैं कि हम सुरक्षित हैं? असुरक्षा की वजह कर हम अपनें सपनों को साकार करने में असमर्थ हैं।

मैं अनुरोध करती हूं समाज से, परिवार से और सरकार से कि कृपा करके हम पर होने वाले अपराध रोकिए। सबके बावजूद लड़कियों को हिम्मत से काम तो लेना ही पड़ेगा।

'वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या, जिस पथ में बिखरे शूल ना हों।
वह नाविक क्या, नाविक का धैर्य कहां, यदि धाराएं प्रतिकूल ना हों।'

मैं चुनौतियों का सामना कर अपने सपनों को जरूर पूरा करूंगी, यह मेरा वादा है खुद से।

साजिदा तब्बसुम,
मिर्जा गालिब कॉलेज, गया

लड़कियों के साथ ये क्या हो रहा है?

मैं खुद एक लड़की हूं इसलिए मैं यह अच्छी तरह समझ सकती हूं कि आज हमारी स्थिति क्या और क्यों है। जब मैं मां के गर्भ में थी तो पता नहीं था कि बाहर की दुनिया कैसी है। मैं बाहर की दुनिया देखना चाहती थी। जब मेरा जन्म हुआ तब भी मुझे पता नहीं था कि ये दुनिया कैसी है? लेकिन आज जब मैं इतनी बड़ी हो गई हूं तब मैंने जाना कि यह दुनिया कैसी है। ये दुनिया, यहां के लोग अच्छे भी हैं तो बुरे भी। मैंने अक्सर टीवी पर, न्यूज पेपर में और यहां तक कि लोगों को यह कहते सुना कि उसके घर में बेटी का जन्म हुआ इसलिए सारा परिवार दुःखी है। कुछ लोगों ने तो लड़की के जन्म के बाद उसे जिंदा जमीन में गाड़ दिया या नदी की तेज धारा में प्रवाहित कर दिया। इन बातों को सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य होता कि लड़कियों के साथ ये क्या हो रहा है? समाज इस बात से अच्छी तरह परिचित है कि नर और नारी जीवन के दो आधार हैं फिर भी ऐसा अन्याय और पाप कर रहे हैं। मैं बहुत खुश-नसीब हूं कि मेरा जन्म जिस घर में हुआ वहां बेटा और बेटी में कोई फर्क नहीं किया जाता है। मेरे मम्मी पापा ने जिस स्कूल में भैया को पढ़ाया वहीं हमें भी भेजा। जो अधिकार भैया को दिया गया वही अधिकार हमें भी दिया गया। मैं आगे चलकर एयर होस्टेस बनना चाहती हूं। यह जानते हुए कि वो इसका खर्च वहन नहीं कर सकते फिर भी वो मेरे साथ हैं। उन्होंने कभी मुझे किसी बात के लिए मना नहीं किया चाहे वो समर्थ हो या नहीं। अगर मैं अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पायी तब भी मुझे ज्यादा गम नहीं होगा क्योंकि मुझे इस बात की संतुष्टि होगी कि मेरे माता-पिता मेरे साथ हैं। जरूरी नहीं हम जो चाहें वो हमें मिल जाए।

मेरे पापा भोजपुरी फिल्म उद्योग में प्रोडक्शन का काम करते हैं। सुनने में तो ये बात काफी प्रतिष्ठित लगती है। लेकिन इसका सच कुछ और है। पापा की शूटिंग महीने के कुछ ही दिन चलती हैं और कभी-कभी तो महीने दो महीने भी नहीं चलती। ऐसे में मेरी मम्मी काफी चिंतित रहती है। अपनी मम्मी को इस तरह दुःखी देखकर मेरा ह्दय रो जाता है। मैं आई एस.सी.साइंस प्रथम वर्ष की छात्रा हूं, उनके पास किताबें भी हैं पर मेरे पास ना कोचिंग की फीस है और ना किताबों के लिए पैसे। मम्मी की ऐसी स्थिति देखकर मैं पैसे भी नही मांग पाती। मैं चाहती हूं कि मैं कुछ बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर अपनी कोचिंग की फीस और किताबों का खर्च निकाल लूं, पर पढ़ाने के लिए बच्चे ही नहीं मिल पाते। मैंने तय कर लिया है कि मैं स्कूल में पढ़ाकर कोई कोर्स अवश्य करूंगी। वैसे मैं (बी.सी.ए.) करना चाहती हूं और मैं जानती हूं मेरे माता-पिता मेरा साथ जरूर देंगे। यहीं है मेरे जीवन के कुछ अच्छे और आर्थिक तंगी के कारण कुछ बुरे अनुभव।

रानू राज,
गौतम बुद्ध महिला कॉलेज, गया

लड़की हूं तो भाई का भी आदेश लेना पड़ता है

मैं अपने जीवन में कुछ करना चाहती हूं। कुछ कर के मुझे दिखाना है। मैं एक लड़की हूं, इसका अनुभव मुझे बचपन से ही दिया जाता है। मेरा सपना है कि मैं आसमां को छू लूं। मैं एक लड़की हूं इसलिए जिम्मेदारी भी बहुत है। मैं पढ़ाई करके टीचर बनना चाहती हूं। मुझे पढ़ने-पढ़ाने में बहुत मन लगता है। मैं चाहती हूं कि अपने माता-पिता को मदद करूं। मेरा सपना है कि मैं छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाऊं, उन्हें कुछ सिखाऊं। लड़की होने के कारण हर कदम पर सोच-समझ कर चलना है। मैं चाहती हूं कि मैं अपने घर परिवार की मदद करूं।

मेरे मम्मी पापा मेरे पढ़ने के ऊपर ध्यान देते हैं। खर्च करते हैं तो क्यूं न मैं उनके सपनों को पूरा करने में जी जान से मेहनत करूं। मैं अपने पढ़ाई के साथ-साथ अपने कैरियर पर भी ध्यान देती हूं। ताकि ये समाज मुझपे अंगुली न उठाये। मैं शान के साथ जीना चाहती हूं। मेरा अनुभव कुछ अलग ढंग का है। मैं अपने माता-पिता के सिवा किसी से कुछ नहीं मांगती। जब मैं इंटर की परीक्षा दे चुकी, तो मुझे लगा कि मैं पढ़ाई का खर्च खुद निकालूं। मम्मी-पापा का कुछ भार कम करूं। और मैं छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाने लगी।

कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है कि मैं क्यूं लड़की हूं, क्योंकि कुछ भी करने के पहले अपने मां बाप और घर परिवार के साथ-साथ भाई का भी आदेश लेना पड़ता है। मैं समझती हूं कि अगर मैं लड़का होती तो मुझे किसी की अनुमति नहीं लेनी पड़ती। अपना जीवन खुल कर जीती। मैं लड़की हूं इसलिए मुझे लड़कियों के साथ ही दोस्ती करने की इजाजत है लड़कों से नहीं। फिर कभी ऐसा लगता है कि जितना लड़की बनने में आनंद है, उतना लड़का बनने में नहीं। समाज लड़की की ही मां के रूप में पूजा करता हैं।

स्मिता कुमारी,
गौतम बुद्ध महिला कॉलेज, गया

मैं कमजोर नहीं हूँ

मैं चाहती हूं कि मैं कालेज जब जाऊं तो मुझे कोई नहीं रोके और अपने मन की तरह आजाद रहना चाहती हूं। लड़कों की तरह आगे बढ़ूं। और लड़कों की तरह काम करूं जो वे लोग करते हैं। जैसे- घर के कामों में हाथ बंटाना तथा अपने भाइयों की पढ़ाई में उनकी मदद करूं। लेकिन मेरे परिवार में कहते हैं कि तुम जितना पढ़ना चाहती हो, पढ़ो, लेकिन पढ़ने के बाद घर में ही रहो। तो आप बताइए कि पढ़ने के बाद मैं घर में रहूंगी तो मेरा लक्ष्य कैसे पूरा होगा? मेरा सपना है कि एयर होस्टेस बनूं। लेकिन मेरे परिवार वाले कहते हैं कि यह लड़कियों का काम नहीं है। यह सिर्फ लड़के ही कर सकते हैं। हमारा देश इतना तरक्की कर रहा है। हां, मेरी मां चाहती है कि मैं कुछ करूं लेकिन पापा के कारण कुछ करने को नहीं कहती हैं। मेरा अनुभव यह है कि मैँ भी अपने भाइयों की तरह दोस्तों के साथ ग्रुप डिस्कसन करूं लेकिन मैं नहीं कर सकती क्योंकि मैं एक लड़की हूँ। मैं अगर कहीं जाना चाहती हूं तो मेरी मां कहती है, कहीं नहीं जाना है। उस समय मुझे बहुत बुरा लगता है कि मैं एक लड़की हूँ।

ऐसा लगता है कि मेरा लड़की होना अभिशाप है। काश! कि मैं लड़का होती। लेकिन मैं हमेशा यह ही चाहूंगी कि हर जन्म में मैं एक लड़की के रूप में जनम लूं। क्योंकि लड़की ही है जो घर की सेवा करती है। अपने परिवार के लिए तीनों समय का खाना पकाती है। सबके कपड़े धोती है। उनकी हर छोटी-सी छोटी चीजों का ध्यान रखती है। अगर मेरे घर में किसी की तबीयत खराब है तो उनकी सेवा मैं ही करती हूँ। उस समय मैं अभिशाप नहीं कहीं जाती हूँ। मेरा सपना है कि मैं हर उस मुकाम तक पहुंच जाऊं जिसे मैं पाना चाहती हूं, जिसे मैं करना चाहती हूँ।

मैं घर की चाहरदीवारी के भीतर घुट-घुट कर मरना नहीं चाहती हूँ, जो आजकल की लड़कियों के साथ होता है वो मेरे साथ न हो। जैसे-दहेज के कारण लड़कियों को जला कर मार देते हैं, शादी करने के बाद बार-बार दहेज की मांग करते हैं। ऐसा मेरे साथ न हो, यही मैं चाहती हूं।

मेरी इच्छा है कि मैं सबको बता सकूं कि मैं एक लड़की हूं और मैं वो सब कुछ कर सकती हूं जो लड़के कर सकते हैं। मैं अगर अपने माता-पिता को समझाऊं तो धीरे-धीरे यह बात समझ में आ जायेगी कि मेरी बेटी कुछ करना चाहती है और उसे भी करने का पूरा हक है क्योंकि वह भी एक इंसान है। लड़का और लड़की से ही दुनिया चलती है,इसलिए सिर्फ लड़कों को ही इज्जत नहीं मिलनी चाहिए। दोनों का बराबर का हक है। यह अधिकार अगर उनको (लड़कियों को) नहीं दिया जायगा तो मैं अधिकार छीनने की वकालत करूंगी। मैं कमजोर नहीं हूँ। मेरा अनुभव है कि लड़कियों को कमजोर समझने की भूल जो करेगा उनका अंजाम बहुत बुरा होगा। लड़कों की जिससे शादी होती है वो भी एक लड़की रहती है। किसी की बेटी रहती है, किसी की बहन रहती है। लड़की को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए। वक्त आने पर वह दुर्गा का रूप धारण कर सकती है।

खुशबू कुमारी,
गौतम बुद्ध महिला कॉलेज, गया

जी करता है, सारे बंधनों को पैरों तले कुचल दूं

आधुनिक युग में एक लड़की का अनुभव कैसा हो सकता है, इस बात से आप भली-भांति परिचित हैं। लड़का और लड़की गाड़ी के दो पहिए की तरह हैं। लेकिन आजकल आए दिनों लड़कियों के प्रति होने वाले अत्याचार ने मुझे झकझोर कर रख दिया है।

भारत की आजादी को 63 वर्ष हो गए, इसके बावजूद आज लड़की स्वतंत्र नहीं है। वो अकेली न तो कहीं जा सकती है, और न कुछ कर गुजरने का स्वतंत्र विचार रख सकती है। आज एक लड़की जो कुछ भी करती है, वह सिर्फ अपने अभिभावक की आज्ञा के अनुसार।

जैसा कि मैं अपने बारे में बतलाने जा रही हूं। अगर मैं कुछ भी अपने मन से करना चाहती हूं, क्यों न वो अच्छा ही हो, मुझे उसके लिए तब तक आज्ञा नहीं मिल पाती है, जब तक अभिभावक उसकी अच्छी तरह से जांच पड़ताल न कर लें। जिस काम को लड़के बड़ी आसानी से कर लेते हैं, उसी काम को करने के लिए लड़कियां थपेड़े सहती रहती हैं। उसे तो बस इतना कह कर टाल दिया जाता है कि तुम एक लड़की हो, तुम इसे नहीं कर सकती। आज लड़कियों को एक निम्न स्तर का प्राणी मात्र समझकर उसे दबाया जा रहा है। आखिर क्यों? क्या लड़कियों में दिल नहीं होता? क्या समाज के लिए, जरूरतमंदों के लिए कुछ कर गुजरने का उत्साह उसमें नहीं होता हैं? आखिर क्यों उनकी प्रतिभा को कुंठित कर दिया जाता है। जब ऐसी बातें मन में आती है तो लगता है सारे बंधनों को तोड़ उसे पैरों तले कुचलकर क्रांतिकारी आंदोलन कर डालें, सारी दुनिया को तहस-नहस कर डालें। लेकिन फिर वही देवी गुण, यानी त्याग की भावना हमारे अंदर जागृत हो जाती है और हम शांत हो जाते हैं। आए दिनों जिस तरह से लड़कियों को दहेज के लिए मारा जाता है या आत्महत्या करने को विवश किया जाता है, संतान जन्म न दे पाने या बेटा पैदा न कर पाने के कारण प्रताड़नाएं दी जाती हैं, वह क्या मानवता के लक्षण हैं? लड़कियों को दबा कर रखने के प्रति एक बहुत बड़ा राज छुपा हैं, शायद आपको पता हो या न हो इसलिए मैं बतलाना चाहती हूं। आज के पुरुष वर्ग सोचते हैं कि नारी के अविकसित रहने में ही उनका फायदा है। आखिर अविकसित नारी के साथ मनमानी करने का अवसर वह क्यों खोए? नारी भी संतुष्ट है कि पिजड़े में पाले पक्षी की तरह उसे रहने का निश्चित ठिकाना मिल जाता है। समाज इसलिए चुप है कि वैसे ही हर क्षेत्र में अंसतोष के विस्फोट हो रहे है। नारी वर्ग को प्रोत्साहित करके एक और सिरदर्द मोल क्यों लिया जाए? लेखनी, चित्रकला, मूर्तिकला अभिनय कला- हर माध्यम में नारी शील की धज्जियां उड़ाने में ही वे (पुरुष) अपनी सार्थकर्ता महसूस कर रहे हैं। आखिर सस्ती प्रशंसा और ज्यादा कमाई इन्हें इतनी ही श्रम से ही मिल जा रहा है। अगर लड़कियां विकसित होतीं, तो क्या वे अपनी दुर्गति अपने आंखों देख पातीं। इसलिए ये लोग चाहते हैं कि नारियां अविकसित ही रहें। पुरुषवादी समाज की साजिश यह है कि महिला के प्रति हमदर्दी के झूठे आंसू बहाए जाएं, लेकिन ऐसा कुछ भी होने नहीं दिया जाए जिससे नारी समाज में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन हो सके। आज हम लड़कियां किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। किसी तरह की प्रतियोगिता हो, लड़कियां हमेशा आगे ही रहती हैं, उसके बावजूद लड़कियों पर इतने सारे बंधन। इसे तोड़ना आज के युग की मांग बन गई है। आज अगर हम कहीं कुछ अच्छा करना चाहते हैं, तो अभिभावकों को पहले ही चिंता होने लगती है कि ये कुछ ऐसा न कर जाए कि इसे बाहर भेजने की जरूरत महसूस होने लगे। आज अगर लड़कियां थोड़ा-सा स्वतंत्र दिखती हैं, तो समाज उसे चरित्रहीन कहने से भी नहीं चूकता। अतः आज एक आंदोलन की जरूरत है। आज लड़कियों की हालत सुधारने के लिए दूसरे और किसी को नहीं वरन् स्वयं लड़कियों को ही आगे आना होगा। समाज में हमारा जो अधिकार है, हम उसे प्राप्त करके रहेंगे। यह प्रथम और अंतिम सच है। आज हम वो सभी कुछ कर सकते हैं, जिसे करने के लिए लड़के सोच भी नहीं सकते। उनके क्षमता हमारी क्षमताओं जैसी विकसित नही है। आखिर लड़की ने ऐसा कौन सा अपराध किया है जिसके कारण उसके अधिकारों का अपहरण कर लिया गया। आज न्याय, विवेक और औचित्य के न्यायालय में विश्व नारी की अंतरात्मा ने अर्जी दी है कि उसे भी मनुष्योचित स्तर के जीवनयापन करने का न्याय मिले। हम भी शिक्षित हैं, योग्य हैं, फिर हम किसी से दबकर क्यों रहें? क्या यह उचित है?

कल्याणी,
गया कॉलेज, गया

अमृता कुमारी, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

मैं भी पढ़कर आईपीएस बनना चाहती हूं

जब मैं छठी कक्षा में पढ़ती थी, हमारे वर्ग में लड़कियों की संख्या बहुत कम और लड़कों की संख्या अधिक थी। जब मैं उस स्कूल में 7वीं की परीक्षा दे रही थी तो वहां के शिक्षक को मैंने बात करते सुना की लड़कियां हमेशा पीछे ही रहती हैं। वर्ग में लड़के ही प्रथम आते हैं। मुझे बहुत बुरा लगा और मैंने प्रण किया किया कि इस स्कूल में प्रथम स्थान ला कर दिखाऊंगी और परीक्षा फल निकला तो सभी शिक्षक दंग रह गये। वर्ग में प्रथम मैं थी। मुझे बहुत खुशी हुई। मेरे क्लास की अनेक लड़कियों ने मिलकर खुशी मनाई। हमारे स्कूल के हेडमास्टर ने 15 अगस्त के दिन मुझे सम्मानित किया। मेरे पिता जी ने मुझे काफी बधाई दी। इसके बाद मैंने कभी पीछे नहीं देखा। जब मैंने पहली महिला आईपीएस किरण बेदी के बारे में सुना तो मुझे काफी उत्साह मिला। मैं भी पढ़कर आई.पी.एस. बनना चाहती हूं। वह भी एक लड़की है। लड़कियों के लिए अनेक परीक्षाओं में आरक्षण की व्यवस्था की गई है। वे लड़कों के तुलना में काफी मेहनती होती हैं। आज हर पद पर लड़कियाँ आगे बढ़ रही है। आज मेरे पिताजी ने मेरे अच्छे नम्बर देखकर कालेज में नामांकन कराया है। कोशिश कर रही हूं कि अपने लक्ष्य तक जरूर पहुंचूं।

मेरे मन में कुछ बुरे अनुभव भी है। जब मैं स्कूल जाती थी तो रास्ते में अनेक लड़के फब्तियां कसते थे। मुझे बहुत बुरा लगता था। कालेज में जब मैं क्लास करने जा रही थी तो हमारे क्लास में एक लड़का, जो दोनों पैरो से अपंग था, वह सीढ़ियों पर चढ़ते समय मेरे पास आ कर गिर पड़ा। मैने उसे उठाना चाहा, तो वहां खड़े लड़के फब्ती कसने लगे। मुझे लगा अगर मैं लड़का होती तो उसकी सहायता जरूर करती। बदनामी के डर से मैं उसे नहीं उठा पाई और मुझे इस बात पर बहुत बुरा लगा। आज भी जब मैं ऐसे लोगों का सामना करती हूं, तो मुझे बहुत बुरा लगता है। फिर भी 21वीं सदी में लड़की होना सौभाग्य की बात है। आज की लड़कियाँ अपने लक्ष्य को पाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। दुख की बात है कि आज के युग में भी लड़की की शादी में दहेज प्रथा जारी है। यह लड़की को खत्म कर सकती है। इसके चलते कन्या भ्रूण की हत्या हो रही है या दहेज ऐंठने के लिए ससुराल में लड़कियां मारी जा रही हैं। एक लड़की घर का काम करते हुए भी अपने करियर को बनाए रखती है। वह घर तथा घर के पुरुष को भी सम्भालती है। लड़की नहीं रहेगी तो सृष्टि का विकास रुक जाएगा, लेकिन आज बहुतों को लड़की (बहू) से ज्यादा प्यारा लगता है दहेज। इस कुरीति को समाप्त किए बिना न लड़कियों से भेदभाव बंद होगा, न उनके विकास की राह आसान होगी।

श्वेता कुमारी,
गया कॉलेज, गया

पढ़ाई रोक कर थोप दिया जाता है बाल-विवाह

समाज में लड़कियों को सम्मान और आजादी बहुत कम है। स्त्रियों के साथ जो बर्ताव किया जा रहा है, निन्दनीय है। जब मैं बोर्ड की परीक्षा में अपने गांव और स्कूल में प्रथम आई तो सभी को मेरे साथ और भी उम्मीदें बन गई। मेरे घर की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि मुझे गांव से पढ़ने के लिए शहर भेजा जाता, लेकिन मैंने पापा को विश्वास दिलाया कि मैं हमेशा आपके सिर को ऊंचा रखूंगी। मेरे पापा-मम्मी मान गए और मैं अभी इस कालेज में इंटर की पढ़ाई कर रही हूं, लेकिन मेरे परिवार में और लड़कियां दसवीं की पढ़ाई ही पूरी कर पाईं और शादी कर दी गई। आज भी मुझे अपने परिवार और समाज से उतना ही प्यार मिलता है, जितना कि लोग बच्चियों को करते है। जब लड़कियां बड़ी होने लगती है तो उसे प्यार भी मिलना कम हो जाता है, वह अपने मां-बाप से ज्यादा जिद नहीं कर सकती, चाहे वो मुद्दा कितना ही जायज क्यों न हो। पर मुझे अपने परिवार में इन सब बातों का बिलकुल सामाना करना नहीं पड़ा।

मैं अपनी हर बात को खुलकर अपने परिवार से कह सकती हूं। मेरे परिवार का मानना है कि लड़के और लड़कियां बिलकुल समान है। दोनों को समान अधिकार भी मिलना चाहिए और समाज भी तो परिवारों का समूह है तो उसे बदलने के लिए पहले तो परिवार को ही बदलना पड़ेगा। तो क्यों नहीं इसकी शुरुआत अपने समाज में अपने ही घर से की जाए। यही किया भी गया। मैं अपनी गांव की पहली लड़की हूं जो उच्च शिक्षा पाने के लिए गया शहर में अकेली किराये के कमरे लेकर रहती हूं। हमारा समाज इस बात को उचित नहीं मानता। पर मुझे और मेरे परिवार पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि समाज को कुछ कर दिखाना है। उनकी ऐसी जुबान को बंद करना है जो लड़कियों को आगे बढ़ने से रोकती हैं। मैं जब गांव की और लड़कियों का देखती हूं तो मुझे कई लड़कियों की आत्मा पुकारती हुई दिखती है कि मुझे भी इन जंजीरां से मुक्त करो।

मेरा सपना है कि मैं आई.आई.टी. लड़कियों के लिए एक ऐसा होस्टल तैयार करूं जिसमें गांव की लड़कियों उच्च शिक्षा मुफ्त प्राप्त कर सकें। मुझे विश्वास है कि मेरा परिवार मुझे सहयोग देगा। जहां तक मेरे बुरे अनुभव रहे हैं तो वो ये हैं कि समाज के डर से परिवार भी अपनी लड़कियों के सपने पर बिजली गिराते हैं।

लड़कियों के साथ छेड़-छाड़ की जाती है। मेरे गांव में तो लड़कियों को आगे पढ़ने नहीं दिया जाता और बाल-विवाह का शिकार होना पड़ता है। मुझे लगता है कि मैं भी तो इसी गांव की ही लड़की हूं। लड़कियों के नौकरी करने पर भी रोक लगाई जाती है, भले ही वो भूखी ही क्यों न मर जाए। मेरे ही घर की बात है कि एक लड़की जो कि सुंदर, सुशील और शिक्षित भी थी, उसकी शादी अनपढ़ व लफंगे लड़के से की जा रही थी। इसपर जब लड़की ने मना किया तो उसे बहुत भला-बुरा कहा गया और ये भी धमकी दी गई कि तुम्हें घर से निकाल दिया जाएगा। मुझे तो कुछ हद तक लड़कियों में भी कमी नजर आती है कि वो अपना हक मांगती ही नहीं।

लड़कियां जब अपना जीवन अपने हाथ में नहीं रखेगी तो उसके जीने का मतलब ही क्या रह जाएगा? वो जानवर या कैदी थोड़े ही हैं , जिन्हें चहारदिवारी में रखा जाए। मैं लड़कियों से कहती हूं कि वे अपना अधिकार अपने मां बाप से मांगें। लेकिन वे ही इस बात को समझने के लिए तैयार नहीं है। मैं बहुत खुश हूं कि मेरे सपनों को पूरा होने के समय नारी सशक्तिकरण का अभियान तेज हो रहा है।

श्वेता सुरभि,
गया कॉलेज, गया

सुशाना मराण्डी, एस.एम. कॉलेज, भागलपुर

हां मैं लड़की हूँ और यही मेरी पहचान और ताकत है

मेरे लिए लड़की होना अपने-आप में एक गर्व की बात है। बचपन से लेकर आज तक मुझे ये कभी महसूस नहीं हुआ कि मैं लड़की हूं और मेरे लिए दायरे सीमित हैं। मेरे घर-परिवार में, मेरे माता-पिता की नजर में लड़की होना हमेशा एक वरदान की बात रही है। अधिकांश जगहों पर ये सुनने में आता है कि माता-पिता एक बेटे के लिए मन्नत मानते हैं और उनके लिए दुआएं मांगते हैं। मगर मेरे माता-पिता ने हमेशा मां दुर्गा से तीन बेटियों की मन्नत मांगी। आज हम एक भाई और तीन बहनें अपने परिवार में बहुत खुश हैं। हमेशा ये देखने में आया है कि बेटे अपने मां-बाप की आंखों का तारा होते हैं। लेकिन हमारे घर में हम चारों भाई-बहन अपने मां-बाप के दुलारे हैं।

शिक्षा की अगर बात करें तो मेरे मां-पापा इस मामले में हमेशा मेरे आदर्श रहे। मेरे पिता जो कि खुद एक प्रोफेसर थे, ने हमेशा चाहा कि उनकी बेटियां उनसे भी ज्यादा नाम कमाएं। हमारे घर में हमें हर तरह की सुविधाएं दी गई हैं। पापा कहते थे लड़के तो मां-बाप को छोड़ भी देते हैं, लेकिन लड़कियां माता-पिता के हर सुख-दुख की साथी होती हैं।

'लड़की, नारी, स्त्री' ये अपने आप में बहुत सम्मान जनक शब्द है। एक लड़की होने के नाते मैं इन शब्दों के महत्व को आसानी से महसूस कर सकती हूं। एक नारी ही तो जीवन का आधार होती है। एक लड़की जन्म से लेकर मरण तक अपने परिवार के लिए समर्पित होती है, चाहे शादी के पहले वो मायके में हो या शादी के बाद ससुराल में। जब मै किसी औरत को मां बनते देखती हूं तब ये लगता है कि औरत सचमुच त्याग, साहस और सहनशीलता की मूरत है।

वैसे तो नारियों को शास्त्रों में भी सर्वोच्च स्थान मिला है, लेकिन आज इस अत्याधुनिक समाज में भी नारी पर होने वाले अत्याचार कम नहीं हुए हैं। हम अक्सर अखबारों में, न्यूज चैनलों पर कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार, दहेज, प्रताड़ना और ना जाने कितने ही तरह के अत्याचारों की खबर सुनते हैं। आज जहां लड़की चांद को छू रही है, तो वहीं किसी लड़की को गर्भ में ही मार दिया जा रहा है। आज जहां लड़की बाहर निकलकर स्वावलंबी हो रही है, वहीं उनके साथ बलात्कार जैसे कुकृत्य करके उनके अस्तित्व को ही मिटाने की कोशिश की जा रही है (हमारे देश में हर साल इन सभी मामलों में बढ़ोत्तरी हो रही है)। इन सभी के बारे में सुनकर मुझे बहुत ग्लानि होती है। कई तरह के सवाल मन में उठते हैं कि क्या लड़की होना सचमुच अभिशाप है। इस वरदान को लोग क्यों अभिशाप बना देते हैं? कई घरों में देखा गया है कि लड़की 18 वर्ष की हुई नहीं और उसकी शादी के लिए लड़के खोजे जाने लगे। अगर लड़की को लड़का पसंद नहीं है तो भी उसकी मर्जी के खिलाफ उसकी शादी कर दी जाती है। मैं पूछती हूं कि आखिर ऐसा क्यों करते हैं? अगर लड़कों की शादी 30 वर्ष तक टाली जा सकती है तो लड़कियों की शादी 25 वर्ष तक क्यों नहीं? उन्हें समय क्यों नहीं दिया जाता अपनी जिंदगी को संवारने का। अधिकांश घरों में लड़कियों को बंदिश में ही रखा जाता है। बचपन से शादी तक पिता की निगरानी में, शादी के बाद पति की निगरानी में और बुढ़ापे में पुत्र की निगरानी में। मैं पूछती हूं आखिर

ऐसी क्या कमी है कि हम अपनी सुरक्षा खुद नहीं कर सकते। मैं मानती हूं कि हम हमारी सुरक्षा के लिए सक्षम हैं। मैं हमेशा अकेले ही कालेज आया और जाया करती हूँ। हालांकि मैंने हमेशा महसूस किया है कि कई लोगों की गलत निगाहें मुझ पर पड़ती हैं। फिर भी मैं नहीं घबराती। मैं हमेशा लोगों की गलत बातों का जवाब और उनकी गलत हरकतों का विरोध करने में सक्षम रही हूँ। मैंने अनुभव किया है कि अगर मैं खुद मजबूत हूं तो कोई मुझे तोड़ नहीं सकता। बाहरी दुनिया में मैं किसी पर विश्वास नहीं कर सकती। मैं सभी लड़कियों से ये कहना चाहूंगी की अपने दायरे सीमित मत करो। खुद को पहचानों। आज मैं गर्व से कह सकती हूँ कि ''हां मैं लड़की हूं और यही मेरी पहचान और ताकत है।''

नेहा परमार,
गया कॉलेज, गया

खुशबू कुमारी, एस.एम. कॉलेज, भागलपुर

बेटी होकर मां-बाप का सहारा बनना चाहती हूं

मैंने लड़की होने का अनुभव बहुत ही अच्छे तरीके से समझा हैं। पिताजी को जब मदद की जरूरत होती है, तो मैं समझती हूं कि मैंने उनकी मदद हर तरीके से की है। आज के जमाने में बेटों से ज्यादा बेटियां अपने माता-पिता का सहयोग करती हैं। मेरा बचपन से एक सपना रहा है कि मैं बेटी होने का फर्ज अच्छी तरह से निभाऊं। इसलिए मैंने अपने सपने को साकार करने के लिए हर उस काम को किया है जिससे लोग ये न समझे कि नारी जाति कमजोर है। कुछ कार्यों में सफलता कठिन प्रयास के बाद मिली।

पहले लोग बेटा होने की चाह ज्यादा रखते थे और जब बेटी होती थी, तो मायूस होते थे, क्योंकि लोग बेटियों को बोझ समझते थे। दहेज प्रथा के चलते अब भी अनेक परिवार ऐसा सोचते हैं। मेरे जन्म पर मेरी माता को जरा बुरा तो लगा था क्योंकि वह बेटी से ज्यादा बेटे की चाह रखती थी। लेकिन मेरे पिताजी ने बेटा और बेटी में कभी कोई फर्क नहीं किया। जिसके कारण आज मेरे परिवार में लोग बेटा से ज्यादा बेटियों की चाह रखने लगे हैं।

मैं चाहती हूं कि मैं अपने माता-पिता को जीवन में कुछ ऐसा बनकर दिखालाऊं, जिससे वे गर्व महसूस करें। लोग बेटा को ज्यादा चाहते हैं कि आगे चलकर बेटा उन्हें सहारा देगा, लेकिन मैं बेटी होकर उनका सहारा बनना चाहती हूं। ताकि लोग ये न समझें कि बेटियां बोझ होती हैं। आज मैं अपने माता-पिता का सहयोग हर प्रकार के कार्यों में करती हूं। मेरे माता-पिता भी मुझे हर बात प्यार से समझाते हैं। यदि मैं एक लड़का होती तब मैं शायद इन सभी सुखद अनुभवों को नहीं समझ सकती। लेकिन मैं भगवान को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहती हूं कि उन्होंने मुझे लड़की बनाकर इस पृथ्वी पर भेजा। लेकिन कुछ ऐसे अनुभव भी हैं जिनसे मुझे कभी-कभार लगता है कि भगवान ने मुझे लड़की क्यों बनाया। भगवान ने लड़की को अद्‌भुत शक्तियां दी हैं ताकि वो मुश्किलों का सामना कर सके। मैंने भी मुश्किलों का सामना किया, ताकि लोग यह नहीं कहें कि लड़की यह काम नहीं कर सकती। आज लड़कियां हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। आज मैं अपने कोचिंग में भी हर कार्यक्रम में सम्मिलित होती हूं।

'सपनों को चली छूने' कार्यक्रम के द्वारा यही कहना चाहूंगी कि लड़कियां हर काम को कर सकती है। मैने अपने जीवन में बहुत से लोगों की मदद की है। कहते है ना ''जो किसी की मदद करता है, भगवान उसकी मदद करता है।''

दिव्या बर्नवाल,
गया कॉलेज, गया

मुक्त करो नारी को मानव, चिरवन्दिनी नारी को

लड़की भगवान की देन है। वह भगवान की एक सुन्दर कलाकृति होती है जिसका जन्म धरती पर मूल रूप से पीढ़ियों को चलाने व शिक्षा देने के लिए होता है। कहा जाता है –

"यत्र नारयस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता"

अर्थात जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता का निवास होता है।

मैं भी एक लड़की हूं। परन्तु अपने अनुभवों से मुझे ऐसा लगता है कि क्या एक लड़की धरती के लिए अभिशाप है? प्राचीन काल से ही लड़कियों को ब्रह्मविद्या तथा युद्ध क्षेत्र में पारंगत किया जाता रहा है। उन्हें समाज की आधारशिला माना गया। तो फिर आज के युग में ऐसा क्यों? इतना भेद-भाव क्यों? बचपन से लेकर आज तक मुझे हर छोटी-से-छोटी बात पर डांटकर यह कहा जाता रहा कि मैं एक लड़की हूं। मुझे यह समझना चाहिए। मेरे अधिकार सीमित हैं। पर क्यों? क्या लड़की होना अभिशाप है? मैंने अपने जीवन की शुरूआती दौर से ही घर में घरेलू हिंसा देखा। अपनी मां पर होते अत्याचार देखे। पिताजी के मानसिक असंतुलन से तंग आकर मेरी मां घर की चाहरदिवारी से निकलकर काम करना चाहती पर उसे लोग यह कह कर प्रताड़ित करते थे वो एक स्त्री है, और उसका काम सिर्फ घर संभालना है। तो क्या यह उचित है? जयशंकर प्रसाद ने कहा है–

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नाम पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर नमतल में।।"

अर्थात नारी ही वह देवी है जिसे संसार में श्रद्धा से देखा जाता है। वह अमृत प्रदान करती है। परन्तु मैं सोंचती हूं कि मेरी मां पर फिर इतने अत्याचार क्यों हुए? उसे श्रद्धा की दृष्टि से क्यों नहीं देखा गया? धीरे-धीरे मैं भी बड़ी हो रही हूं। मेरे ऊपर रोक-टोक किए जाते हैं। मुझे बाहर जाकर पढ़ने की अनुमति नहीं है। शादी की बात अभी से लोग कर रहे हैं। आखिर क्यों? मैं पढ़ना चाहती हूं, बढ़ना चाहती हूं। समाज को एक नई दिशा देना चाहती हूं। अपनी मां के लिए लड़ना और जीना चाहती हूं। मेरा विश्वास है कि मैं एक दिन जरूर आगे बढ़ूंगी क्योंकि एक लड़की, एक नारी, समाज को ही नहीं बल्कि देश को भी चला सकती है। वह राजनीति, कार्यालय आदि में पुरुषों से आगे निकल गई है। दया, ममता और स्नेह की मूर्ति इस लड़की (नारी) के पास चामुण्डा की शक्ति है। अंत में मैं तो बस यही कहना चाहूंगी–

"मुक्त करो नारी को मानव,
चिरवन्दिनी नारी को
युग-युग की बर्बर कारा से,
जननी सखी प्यारी को।।"

अंकिता सिंह,
पटनाविमेंस कॉलेज, पटना

सपनों को पूरा करूंगी

मेरे परिवार में लड़का और लड़की में कोई भेदभाव नहीं किया गया है। मेरे दो भाई है, जिसमें एक को गुमशुदा हुए चार साल हो गए हैं और एक ने अपनी पढ़ाई-लिखाई छोड़ दी है, इसलिए मेरे माता-पिता दादा, दादी सभी की उम्मीदें मुझ से ही है। मेरे माता-पिता मुझे पढ़ा-लिखा कर इस काबिल बनाना चाहते हैं कि मैं जिन्दगी की हर चुनौती का सामना कर सकूं, अपने पैरों पर खड़ा हो सकूं। मेरे घर की आर्थिक स्थिति खराब होते हुए भी मेरे माता-पिता ने कभी भी मुझसे पढ़ाई छोड़ने के लिए नहीं कहा है। वे तो हमेशा यही कहते हैं कि तुम्हें जितना पढ़ना है, उतना पढ़ों, यदि मुझे दुःख तकलीफ उठाकर भी तुम्हें पढ़ाना होगा तब भी तुम्हारी पढ़ाई बाधित नहीं होगी। लेकिन, जहां तक मेरे भाई और मुझमें किया जानेवाला भेदभाव है तो यह स्वाभाविक है, क्योंकि मेरा भाई घर में सबसे छोटा है और छोटा होने के नाते उसे मुझसे भी ज्यादा लाड़-प्यार मिलता है। लेकिन मुझे कभी भी ऐसा नहीं लगता है कि मेरे भाई और मुझमें भेद-भाव किया जा रहा है।

जहां तक समाज का सोचना है कि मेरे भाई ने पढ़ाई छोड़ दी और मैं एक लड़की होकर भी पढ़ रही हूं तो इससे न तो मुझे और न ही मेरे परिवार वालों को कोई फर्क पड़ता है। लेकिन कभी-कभी कोई परिस्थिति आती है, तो मुझे लगता है कि काश मैं लड़का होती तो अपने परिवार के लिए कुछ बेहतर कर पाती, क्योंकि आज का समाज ऐसा है कि लड़की चाहे कितनी पढ़-लिख क्यों न जाएं लेकिन समाज उनके प्रति नकारात्मक सोच ही रखता है। तथाकथित व विज्ञानवादी समाज में भी लड़कियों को अबला ही समझा जाता है। लेकिन मेरा मानना है कि यदि समाज को बदलना है तो सबसे पहले खुद को बदलना होगा और इसके लिए हमें समाज की परवाह किये बिना जिन्दगी की हर चुनौती का सामना करना होगा और कभी यह नहीं सोचना होगा कि एक लड़की होने के कारण मैं कुछ नहीं कर सकती हूं

नारी नहीं कहानी
नारी की गोद में ही
पलती है जिंदगानी

अंत में यही कहना चाहती हूं कि मेरे परिवारवालों ने मुझसे जो उम्मीदें लगा रखी हैं, उन्हें मैं जरूर पूरा करूंगी। एक लड़की होकर भी मैं अपने परिवार वालों के सपनों को पूरा करके ही रहूंगी और इस समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाउंगी।

स्नेहलता,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

अपनी आंखों से भी खुद को चुरा रही है लड़की

भारत के कुछ प्रदेशों में यह विश्वास प्रचलित है कि परमात्मा ने जब संसार बनाया तो मानव ने खुद को एकाकी पाया। मानव ने परमात्मा से साथी मांगा। परमात्मा ने हवा से शक्ति, सूर्य से गर्मी, हिम से शीतलता और तितलियों से सौंदर्य एवं मेघ-गर्जन के शोर से शक्ति स्त्री की रचना की। तब जाकर मनुष्य का जीवन यापन करना आसान एवं सुखमय हुआ। आज हमारे समाज में जो अत्याचार हम औरतों पर हो रहे हैं, वे दुखद और आश्चर्यजनक हैं। मानव कल्याण हेतु अनेक कदम सरकार द्वारा उठाय गए हैं परंतु आज भी कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां स्त्रियों का दायित्व घर के चाहरदीवारी के अंदर है। आज भी लड़कियों पर जुल्म ढाए जाते हैं। अत्याचार, बलात्कार, यौन उत्पीड़न, छेड़खानी इत्यादि जैसी घटनाओं से हमारा दिल दहल जाता है और हम चाह कर भी कोई ठोस कदम नहीं उठा पाते। इन घटनाओं का मुख्य कारण है ''पुरुष प्रधान समाज''। आज अगर हम कुछ भी ठोस कदम उठाने को कोशिश करते है तो उसमें समाज आड़े आता है।

अगर हम लड़कियां एक भी कदम इन अत्याचारों के खिलाफ उठाती हैं तो उंगलियां हम पर ही उठती है। लोग हमें ही ताना देते हैं। लोग हमें बदचलन, आवारा और चरित्रहीन जैसे शब्दों से संबोधित करते हैं। कई लड़कियां ऐसे शब्दों को सुनने से डरती हैं इसलिए कुछ नहीं कह पाती और मन-ही-मन कुढ़ती हैं। कई लड़कियां तो अपनी जान तक गंवा देती हैं। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि मृत्यु के बाद भी लड़कियों को ऐसे ही शब्दों से संबोधित किया जाता है। हमें लगता है बाहर की दुनिया खराब है। अत्याचार केवल बाहर निकल रही लड़कियों पर होता है। परन्तु घर की चाहरदीवारियों में भी अत्याचार कम नहीं हो रहे हैं। विवाह के बाद, लड़कियों को पति द्वारा पीटे जाने एवं ताना सुनने तक का शिकार होना पड़ता है। मार-पीट से लड़कियों को शारीरिक चोटें खानी पड़ती है और गाली-गलौज से मानसिक तनाव का शिकार होना पड़ता है। ऐसे में हम लड़कियां कहां जाएं? न जाने कितने सपने, कितनी उमंगे और कितने अरमान लेकर वो अपनी नई जिन्दगी के दहलीज पर कदम रखती हैं परंतु कदम रखते ही इसके पैरों में कांटे-सा चुभने लगता है और वो बस एक आह भर कर रह जाती हैं। ''कौन सुनेगा यह दर्द भरी आवाज'', कौन देगा हमारा साथ? हम कहां जाएं। ऐसे सवाल लड़कियों के मन में पल रहे हैं। ऐसा नहीं है कि सरकार द्वारा ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं, उनका क्रियान्वित होना भी जरूरी है, ताकि रोज अखबारों में यह बुरी खबर न छपे कि कहां-कहां लड़कियों को किन-किन अत्याचारों का शिकार होना पड़ा।

मैं एक लड़की हूं। समाज में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में अपना नाम ''रौशन'' करना चाहती हूं। मुझ जैसी कई लड़कियां हैं जो अपना नाम कमाना चाहती हैं परंतु समाज में उत्पन्न बाधाओं के कारण अपने अरमान, अपने सपने को दिल में रखकर इसका गला घोंट देती हैं। इसका एक मुख्य कारण आर्थिक समस्या भी है। आज घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण भी हमें हालात से समझौते करना पड़ता हैं। इसके अलावा परिवार वालों के खिलाफ भी तो नहीं जा सकते। इनकी यह समाज में हो रहे अत्याचारों जैसी सोच को भी बदला नहीं जा सकता। आखिर वो हमारे जीवन में ऐसी घटना न

घटे इसलिए हमें रोकते हैं। लेकिन कब तक? कब तक हम सपनों का गला घोटते रहें? क्या हमारा ये हक नहीं, क्योंकि हम एक लड़की हैं? क्या यही हमारा जुर्म है कि ईश्वर ने हमें एक लड़की बनाया?

मेरा मानना है कि सरकार द्वारा जो कदम उठाये जा रहे हैं उसे और अधिक व्यापक एवं संगठित बनाया जाए ताकि मां-बाप के दिमाग में पल रहे इस सोच को खतम किया जाए और हम जैसी लड़कियां अपने सपने को पूरा करने से वंचित न रहें। आसमां पे सजे सितारों में से एक सितारा मेरा भी ''रौशन'' होना चाहिए। अगर लड़कियों का सपना पूरा हो जाए तो आज भारत ''विकासशील'' के नाम से संबोधित किया जाता है, कल यही हमारा भारत प्यारा भारत ''विकसित भारत'' के नाम से संबोधित किया जाएगा। ये मेरा विश्वास है।

अत्याचार की घटनाओं से लड़कियों के मन में डर सा बना है जो हमारी उन्नति में सबसे बड़ी बाधा है। मैंने अपने एहसास को इन शब्दों में लिखा है....

आते-जाते सबकी आंखें टिक जाती हैं
बड़ी हो रही है लड़की,
कल तक जिनको देखकर,
खुश होती थी आखें
आज उन्हीं चेहरों से डरती हैं ये आखें
अपनी आंखों से भी
खुद को चुरा रही है लड़की''

अतः हमें भी कुछ ठोस कदम जरूर उठाना चाहिए ताकि हम लड़कियां अपने पैरों पर खड़ी हो सकें और अपना नाम रौशन करें।

रौशन जहान,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

लड़की भी बन सकती है बुढ़ापे की लाठी

मैं एक लड़की हूं, एक स्त्री हूं। वैदिक काल से ही की चर्चाएं होती आ रही हैं कि स्त्रियां देवी का रूप होती हैं तथा उनके कार्य अलग बंटे हुए हैं। स्त्रियों को गृहणी का रूप दिया गया है। स्त्रियों के लिए कई तरह के नियम भी बनाए गए हैं। इस युग में भी उन नियमों एवं कानूनों का पालन करना पड़ रहा है। परन्तु मेरा अनुभव यह कहना है कि लड़कियां किसी भी कार्य को करने के लिए सक्षम है, फिर क्यों उनके ऊपर पाबंदियां लगाई जाए? और क्यों स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त करना चाहिए?

नर सम अधिकरिणी है नारी, नारी भी है जीने की अधिकारी।
उसके भी हैं अपने सपने; फिर क्यों रौंदे उसे उसके अपने।।

लड़कियों को स्वयं आगे आना चाहिये एवं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए। स्त्रियों का आत्मविश्वास ही उसे उसकी ऊंचाई तक पहुंचा सकता है। आज आधुनिकीरण एवं क्रांति की लहर फैल रही है। आज लड़कियों के लिए कई तरह की संस्थाएं जैसे महिला विकास योजना आदि कई योजनाएं है, जिसके तहत लड़कियों का सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण हो रहा है।

इसके बावजूद लड़कियों का सुधार उस हद तक नहीं हो पा रहा है, जितना आवश्यक है। महिला सुधार से जुड़ी संस्थाओं तो बहुत हैं, जरूरत है कि इन संस्थाओं को सुचारू रूप से चलाया जाए।

लड़की होना मेरे लिए बहुत गर्व की बात है, क्योंकि लड़की ही ऐसी शक्ति है जो स्वयं के जीवन के साथ-साथ दूसरों के जीवन को भी संवारती है। पूरे देश एवं विश्व में इस बात को स्वीकारा गया है कि महिलाएं सम्मानीय हैं। आज भी अगर हम किसी क्षेत्र में जाते हैं तो वहां हमें आरक्षण की सुविधाएं दी जाती हैं। आज यदि एक लड़की शिक्षित होती है तो पूरा समाज, पूरा देश शिक्षित होता है, परन्तु एक लड़का शिक्षित होता है तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है। अतः महिलाओं का शिक्षित होना अति आवश्यक है।

मेरे विचार से लड़कियों को केवल यही सोच कर नहीं पढ़ना चाहिए कि उसे नौकरी करनी है, अर्थात् जो स्त्रियां नौकरी नहीं करना चाहती हैं या यह सोचती हैं कि वे पढ़कर क्या करेंगी, जब उन्हें केवल घर ही संभालना है। तो उन लड़कियों को यह सोच बदलनी होगी क्योंकि घर संभालना एवं परिवार को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक स्त्री को आवश्यक है कि वह अपनी पढ़ाई करे ताकि आने वाली पीढ़ी भी शिक्षित हो सके, क्योंकि बच्चे की पहली पाठशाला मां की गोद है।

कुछ परिस्थितियों के कारण माता-पिता अपने बच्चों में अन्तर करने लगते हैं। किसी-किसी घरों में एक बेटे के जन्म को वरदान तथा एक बेटी के जन्म को अभिशाप समझा जाता है। मां-बाप को इस गलत सोच का अनुभव तभी हो पाता है, जब वही लड़की उनके बुढ़ापे की लाठी बनती है। एक स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना आवश्यक है, तभी वह आगे बढ़ सकती है।

आंचल में ममता लिए हुए
नैनो से आंसू पिए हुए
सौंप दे जो सारा जीवन
फिर क्यों आहत हो उसका मन।
अबला नहीं, नारी है सबला
करती है वह सबका भला।

कनीज फातिमा,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

नुतन कुमारी, एस.एम. कॉलेज, भागलपुर

मां-बाप को बेसहारा नहीं छोड़ती बेटियां

हारी हूं सौ बार गुनाहों से लड़-लड़कर
आंखों से आंसू सूख गए बह-बहकर

इन पंक्तियों में स्त्री संघर्ष की पीड़ा प्रकट की गई है। इसकी महिमा यह कि कहते हैं, स्त्री से सृष्टि का विकास हुआ। हकीकत यह कि आज जब लड़कियां घर से बाहर जाती हैं, उनके मां-बाप को हमेशा एक डर सताने लगता है। इसी कारण बेटियों की शिक्षा पर बंदिशों का पहरा लगने लगता है। लड़कियों को स्वयं अपनी रक्षा करनी होगी क्योंकि अब हमें बचाने कोई भगवान नहीं आएंगे।

हमें अब जागना होगा, तभी अपना हक मिलेगा। हर किसी को बस यही कहूंगी कि हमें किसी पर निर्भर नहीं होना है। अपना आकाश हमें ही ढूंढ़ना है। आशा करती हूं कि भविष्य में नारियों की आर्थिक, सामाजिक, स्थिति में सुधार आएगा। जमाना बदला है। लोग समझने लगे हैं कि बेटियां भी बेटों से किसी भी तरह कम नहीं है। उन्हें आगे बढ़ने का मौका दिया जाए तो वह दुनिया बदल सकती है। बेटे जब जन्म लेते हैं तो खुशिया मनायी जाती है। लेकिन एक दिन उन्हीं के कारण मां-बाप को रोना होता है, जब वे बड़े होते हैं और उन्हें अपने मां-बाप का कोई ख्याल नहीं रह जाता। लेकिन बेटियां तो वह बीज हैं, जिसे लगाया जाए तो वह बड़ी बन अपनो को छाया देती हैं। उसका सहारा बन जाती है। कोई बेटी जैसी भी हो, अपने मां-बाप को कभी बेसहारा नहीं छोड़ती जबकि लड़के ऐसा नहीं करते। उन्हीं के कारण उन्हें दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं।

मैं जब भी अपने आप को देखती, ऐसा लगता मुझे भी कुछ करना है। इतिहास गवाह है कि जब भी किसी नारी ने अपने आप पर विश्वास किया है, उन्होंने इतिहास बनाया है। दूसरी तरफ हमारे समाज का यह सोचना है कि लड़के ही सब कुछ हैं। इस विचार को बदलना है।

लड़कियों की सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं है। वे घर से बाहर तक भेदभाव का शिकार होती हैं। पढ़ाई से वंचित रखी जाती हैं। यहां के महौल ने उनके मन में खौफ जगा दिया है। कब होगा इसका अंत? आए दिन समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन पर लड़कियों से जुड़ी बुरी खबरें आती हैं। बलात्कार या दहेज के कारण इनकी हत्याएं होती हैं। क्या इसका कभी अंत भी होगा? इन सब प्रतिकूलताओं के बावजूद नारी का महत्व भी बढ़ा है।

नारी विकास के लिए अनेकप्रयास किए गए हैं। इसके अच्छे परिणाम भी आये हैं। कई कानूनों पर कभी अमल नहीं किया गया। लोग सोचते हैं कि जो चल रहा है, वही सही है। लेकिन, अब नहीं। 1996 में संसद में एक अधिनियम पास किया गया जिससे नारी शक्ति का विकास संभव है। विधायिका में महिला आरक्षण को लेकर संघर्ष जारी है। इतनी बार चुनाव हुए लेकिन क्या इस वादे को निभाया गया?

निशा जायसवाल,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

विकास में बाधक है दहेज-प्रथा

नारी शब्द से ही कुछ दब्बूपन सा महसूस होता है। इसकी वजह हमारा स्त्री रूप में जन्म लेना है। हमारा देश पुरुष प्रधान रहा है परन्तु इक्कीसवी सदी को महर्षि अरबिन्द ने 'नारी सदी' का नाम दिया है। भारत में पुरातन काल से नारियों को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। मनु ने अपनी व्याख्या में कहा भी है- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता''।

अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता का वास होता है। और नारी को हमेशा उच्च स्थान पर ही सुशोभित किया जाता रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले नारियों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। उन्हें केवल भोग और विलास की वस्तु समझा जाता था। परन्तु हमारे अनेक समाज सुधारकों ने नारी की स्थिति को सुदृढ बनाया और उन्हें पुनः उनकी प्रतिष्ठा दिलाई। राजा राम मोहन राय जी ने सती-प्रथा, विधवा-विवाह, बाल-विवाह एवं पर्दाप्रथा का अंत करवाया। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले नारियों को मृत प्राय समझा जाता था उन्हें सिर्फ लोग भोग की वस्तु की नजर से देखते थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमार देश बदला। बहुत से अधिकार सम्मिलित किए गए। जिनमें हमें मौलिक अधिकार भी दिए गए। जिनमें स्त्रियों को भी कई अधिकार दिए गए। जिसका कि पालन भी किया गया। परन्तु जैसे-जैसे समय बदला युग बदलता गया। पुरानी पीढ़ियां समाप्त होती गई। नई पीढ़ियों का जन्म हुआ। परन्तु फिर भी पुराने रीति-रिवाज हमारा पीछा नहीं छोड़ रहे हैं। हमारे देश में आज भी नारियों की कई समस्याएं हैं। जिनका निदान शायद ही कभी किसी वक्त हो जाए। यदि नारियों की सभी समस्याओं का निदान हो जाए तो यह देश उस बुलंदी को छू जाएगा जिस बुलंदी को शायद आज तक कोई नहीं छू पाया है। जैसा कि हम नारियों की समस्या की बात कर रहे हैं तो इसमें हम उन सभी समस्याओं की चर्चा करना चाहते हैं जो कि इतने आधुनिक समय में आज भी काला जादू की तरह समाया हुआ है।

नारियों की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उनको हमेशा लिंग भेद का ताना-बाना सुनना पड़ता है। उन्हें हमेशा एहसास दिलाया जाता है कि तुम लड़की हो, तुम्हे घर गृहस्थी संभालनी है। परन्तु यह कब तक चलेगा? आखिर कब तक ऐसी कई बातों से लड़कियों को दब्बू करार दिया जाएगा। अब नारियां सशक्त हो रही है और हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं। कुछ समय पहले की बात है जब कि कल्पना चावला ने अन्तरिक्ष की सैर कर अपना नाम पूरे जोर-शोर से अखबारों, समाचारों आदि में फैलाया, उनकी तरह ही सुनीता विलियम्स ने भी अपना नाम किया। आज के आधुनिक समय में जो काम पुरुष नहीं कर सकते , उसे लड़कियां ही पूरा कर रही है। आप चाहे, किसी भी क्षेत्र में जाए आपको हर क्षेत्र में वही लड़कियां मिलेंगी जिन्हें कि लोग पहले अबला मानते थे। आज बैंकों, में टिकट काउण्टर पर, रिसेप्शनिष्ट के रूप में, डाक्टर के रूप में, कमिश्नर के रूप में, राष्ट्रपति के रूप में प्रधानमंत्री के रूप में सूचना एवं प्रसारण मंत्री के रूप में, इत्यादि आप हर क्षेत्र में लड़कियों को ही पाएंगे।

अब हम नारी की एक और समस्या दहेज-प्रथा की बात करते हैं। जी हां, वहीं काला-जादू जो

हमारे समाज में यमराज की तरह मुंह बाए खड़ा है। दहेज-प्रथा हमारे समाज की एक ऐसी समस्या है जो कि नारी के सशक्त होने में बाधक है। हमें इसका पुरजोर विरोध करना होगा तभी हमारा मान ऊंचा होगा। जब तक हम अपना कदम आगे नहीं बढ़ाएंगे, तब तक हम उस शिखर पर नहीं पहुंच सकते, जिसका सपना, हम देखते हैं। इसके आधार पर हमें ये पंक्तियां याद आ रही हैं....

नारी का स्थान जहां है।
संस्कृति का प्रस्थान वहां है।
जाग गई भाई जाग गई।
नारी शक्ति जाग गई।

अगर मैं नारी की समस्या बताऊं तो कभी खत्म न होने वाली गाथा बन जाएगी। कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं इस प्रकार हैं- लिंग-भेद, अशिक्षा, भ्रूण हत्या , बाल-विवाह, घरेलू हिंसा और तलाक। इन सबके पीछे हैं पुरुष मानसिकता। इनके निराकरण में हमें स्वयं आगे बढ़ना होगा और नारियों को सशक्त करना होगा। नारी सशक्तिकरण का अर्थ ही यही है कि नारी की शक्ति को बढ़ावा देना।

ऊषा कुमारी,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

अमृता कुमारी, एस.एम. कॉलेज,भागलपुर

सपना है कि मैं भी कुछ बनूं

मैं एक लड़की हूं और इस पर गर्व है। पर कुछ लोग लड़कियों को बोझ समझते हैं। वे लड़कियों की अहमियत को नहीं जानते हैं और उसका अपमान करने लगते हैं। ऐसे लोगों को जागरूक करना चाहिए कि लड़के और लड़कियों में कोई फर्क नहीं है। लड़की भी लड़के से कम नहीं। लड़कियों को भी उनकी मर्जी से जीने का हक है। लड़कियों को यदि आगे बढ़ाया जाए, उसे पढ़ाया- लिखाया जाए तो वह भी अपने परिवार का नाम रौशन करेगी। हर लड़की की यह इच्छा होती है कि वह भी कुछ करे। इस आशा के साथ कि कभी तो वह सवेरा होगा, जब वह किसी पुरुष के अधीन न हो कर अपनी जिन्दगी खुद जी सके। इसके लिए उसे आत्मनिर्भरता (रोजगार या अच्छी नौकरी) पाने की पूरी कोशिश करनी पड़ेगी। यह तभी होगा जब समाज और सरकार का भी उसे समर्थन मिले। आत्मनिर्भरता से ही खुलती है स्त्रीमुक्ति की राह।

यदि लड़कियों को अधिकार नहीं मिलेगा तो वह दब कर रह जाएंगी। आज कितने ही गांवों में लड़कियों को आगे पढ़ाया नहीं जाता। उन्हें घर से निकलने में भी कठिनाई होती है। दूसरी तरफ आजकल लोग विवाह के लिए पढ़ी-लिखी लड़की चाहते हैं। पढ़ी लिखी लड़की आगे चलकर कुछ भी कर सकती है इसलिए हमें इन्हेंआगे पढ़ाना-लिखाना चाहिए।

मैं लड़की हूं और मैं पढ़ लिख कर कोई सर्विस करना चाहती हूं। सपना है कि मैं भी कुछ बन कर दिखाऊं।

रिक्की कुमारी,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

अपनी पहचान स्वयं बनाना चाहती हूं

लड़की होने का सबसे बड़ा अनुभव सर्वप्रथम घर में ही प्राप्त हुआ। मेरे घर के इकलौते लड़के को इंग्लिश मीडियम स्कूल में भेजा गया, किन्तु बाकी पांच लड़कियों को हिन्दी मीडियम स्कूल में। क्यों? क्या अच्छी शिक्षा का अधिकार सिर्फ लड़कों को है? इतना ही नहीं, लड़के की पढ़ाई पर घरवाले लाखों खर्च करते हैं। लेकिन हमारी पढ़ाई पर खर्च करने की बजाय वो हमारी शादी में दहेज के लिए पैसे जुटाने में ज्यादा यकीन रखते हैं। मैं अपने परिवार के लिए कुछ करना चाहती हूं। अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूं। समाज के भय से घर से बाहर नहीं निकल पाती हूं। लड़की होने की वजह से न तो मैं अकेली कहीं जा सकती हूं और न ही देर होने के कारण शाम ढलने के बाद बाहर रह सकती हूं। अपनी विद्यार्थी जीवन में अभी तक मैंने कई उपलब्धियां हासिल की हैं। मुझ पर मेरे घर वाले बहुत गर्व भी करते हैं। किन्तु अक्सर मैंने अपने पापा को यह कहते सुना है, ''ये मेरी बेटी नहीं,बेटा है।'' इस तरह क्यों मेरी सफलताओं को भी एक लड़का होने की दृष्टि से आंका जाता है।

मैं अपने फैसले लेने के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं हूं। कुछ नया करने के लिए दस बार सोचती हूं, परिवार की आज्ञा लेती हूं और तब डरते-डरते कोई कदम उठाती हूं। मैंने अपने अब तक के जीवन से अपने घर की महिलाओं से यही सीखा कि हम लड़कियों का अपना कोई वजूद नहीं। महिला जीवन में पुरुष रिश्ते की बैसाखी बहुत महत्वपूर्ण बना दी गई है। चाहे वह बैसाखी पिता के नाम की हो, पति के नाम की अथवा पुत्र के नाम की। मैं अपनी पहचान स्वयं बनाना चाहती हूं। अपने हक के लिए लड़ना चाहती हूं। किन्तु मुझे यह कहकर चुप करा दिया जाता है कि मैं एक लड़की हूं और अच्छे घर की बहू-बेटियां अपनी जुबान नहीं खोलती। मैंने पढ़ा है, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' किन्तु मैंने सीखा है जब तक नारी चुप रहती है, तभी तक वो पूजी जाती है और मुंह खोलने पर उस पर विभिन्न तरह के लांछन लगाकर उसकी जिन्दगी नरक बना दी जाती है।

मैं पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे बढ़कर जाना चाहती हूं। क्योंकि जब शिखर पर महिलाएं होती है, तो शिखर से संवेदनाओं की ऐसी नदीं बहती है, जो पूरे देश को निहाल कर देती है। हां मैं हूं एक लड़की, लेकिन मैंने अपनी हर चुनौतियों को स्वीकार कर हमेशा आगे बढ़ने की कोशिश की है। मैं कभी किसी मुश्किल से ये सोच कर नहीं हारी कि मैं एक लड़की हूं और मैं किसी समस्या का मुकाबला नहीं कर सकती।

''अपने मन की शक्ति को आज मैंने जाना है,
निज कर की लकीरों को अब पहचाना है।
हूं मैं क्या ये जमाने को दिखलाना है,
छूने को वह उन्मुक्त आकाश अपने हाथ बढ़ाना है।।''

सोनी बर्नवाल,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

तालीम से ही बढ़ेगी फैसले लेने की ताकत

लड़की ही वह कड़ी है जो पूरे समाज को बांधे हुए है और इससे ही 'समाज का अस्तित्व' है। लड़कियों को अपने अन्दर ऐसे अनुभव को जन्म देना चाहिए जिससे उनमें लड़की होने पर उन्हें कोई अफसोस प्रकट न हो। वास्तव में यदि समाज और लड़कियां स्वयं भी अपना महत्व समझ लें तो समाज का उद्धार निश्चित है। हर लड़की को ये कोशिश करनी चाहिए कि वह अपने पैरों पर खड़ी हो और जितना संभव हो सके शिक्षा अवश्य प्राप्त करे। इससे उसके आत्मनिर्भर होने की संभावना बढ़ती है। फैसले करने की उसकी क्षमता भी तालीम से ही बढ़ती है।

दूसरी बात यह कि यदि एक पुरुष शिक्षित होता है तो उसकी शिक्षा सिर्फ उसके लिए होती है परन्तु जब एक महिला, लड़की या स्त्री शिक्षित होती है, तो वह एक परिवार ही नहीं बल्कि एक सम्पूर्ण शिक्षित समाज को जन्म देती है। मेरा अनुभव कहता है कि लड़की शिक्षा प्रापत कर अपने जीवन के बारे में निर्णय करने का अधिकार हासिल कर सकती है। यह अनुभव जो मैंने लिखा है, उसमें कोई स्वार्थ नहीं , बल्कि इस मुद्दे पर जागरुकता को बढ़ावा देना है।

भूत नहीं
वर्तमान नहीं
बल्कि भविष्य बनना
चाहती हूं।

सुरैया फातमा,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

घी का लड्डू टेढ़ा भी भला

मैं एक लड़की हूं। चिंता यह है कि इस सच्चाई पर मैं गर्व महसूस करूं या खुद को हीनता के साथ देखूं? मुझे पता नहीं, पर मैं अपने अनुभवों को चंद शब्दों में बयान कर रही हूं। जो मैं लिखने जा रही हूं वो मेरी सही सोच है या गलत ये भी मैं नहीं जानती।

मैं अपने चार भाई-बहनों में दूसरे स्थान पर हूं। मेरी मां तथा पिताजी (जो पेशे से शिक्षक हैं) वक्त की कमी की वजह से मुझे और मेरे बाद वाले भाई को मौसी के परिवार में 6 तथा 8 महीने की अवस्था में ही रखा था। 12 वर्ष की आयु तक हमें ये बताया जाना जरूरी नहीं समझा गया कि हमारे माता-पिता कौन हैं । हम अपनी मौसी जी को मां तथा मौसा जी को पिता जी कहते और मानते थे। मेरी अवस्था 12 वर्ष की रही होगी जब मेरे ऑरिजनल पेरन्टस ने हमें बताया कि हम उनके बच्चे हैं। अब वे हमें अपने साथ रखेंगे। हमें काफी लड़ाई-झगड़े के बाद, पुलिस के द्वारा अपने साथ पटना सिटी ले आये। मेरे लिए वह एक ऐसी अवस्था थी, जिसे मैं शब्दों बयान नहीं कर सकती हूं। अचानक पेरन्टस का चेन्ज हो जाना; बस उसी समय से मुझे एहसास होने लगा कि मैं एक लड़की हूं मेरा भाई तो सबके प्यार-दुलार के कारण नये घर में नये रिश्तों के साथ एडजस्ट कर गया पर मैं नहीं। लड़का होने की वजह से उसे खुला माहौल मिला, जो कि उसके एडजस्टमेंट में सहायक रहा। मैं जो पढ़ाई के साथ अन्य एक्टीविटीज में आगे थी नये घर की लड़कियों को लेकर संकुचित मानसिकता के कारण पिछड़ती चली गयी। भाई तो खेल कर थक गया है, तो उसे नाश्ता दो और वह भी तब जब हम पढ़ रहे हों । मैंने कई ऐसी बातें होते देखी हैं अपने घर में जिन्हें यदि मैं शब्दों में ढालना चाहूं तो वो मेरे आंसूओं से भींग जायेंगे। हांलाकि मेरे दोनों भाई मुझसे छोटे हैं परन्तु परिवार में अर्थात् मेरे माता-पिता की नजरों में उनकी महत्ता अधिक है। सोचती हूं काश पिता जी ने मुझसे भी कहा होता- बेटा मुझे तुम पर भरोसा है कि तुम कुछ कर सकती हो। एक वजह तो यह कि एक परिवेश से किसी दूसरे परिवेश में ढलना ही मेरे और मेरे पिता जी के बीच खाई पैदा करता रहा। दूसरी तरफ लड़कियों को लेकर उनकी संकुचित मानसिकता। मेरे लिए तो विवाह पूर्व ही मायका के ससुराल बनने वाली स्थिति उत्पन्न हो गयी है। मेरी दाहिनी आंख पर चोट लगने के कारण मेरी आंख खराब हो गयी। परिणामतः शंकर नेत्रालय चेन्नई में मेरा ऑपरेशन करवाया गया। रोशनी तो लौटी पर पूरे तरीके से नहीं और मेरी आंख भी तिरछी हो गयी। लोगों का ताना देना, शगुन-अपशगुन मानना, मेरे लड़की होने के तकलीफ को और बढ़ाता चला जा रहा है। मैंने हर जगह देखा है यदि लड़के में कोई शारीरिक कमी हो तो लोग कहते हैं- घी का लड्डू टेढ़ा भी भला। अर्थात् लड़के में कोई कमी हो तो भी सब ठीक है पर यदि लड़की में कोई कमी हो तो लोग उसे चैन से जीने तो क्या, मरने भी नहीं देते। मैं अपने उपनामों जैसे- कनढ़ि बड़ी, डेड़ी, दीयाबत्ती, कानी इत्यादि नामों को झेलने की आदि बन चुकी हूं। लोग कहीं जाते समय मेरी शक्ल देखकर नहीं जाना चाहते। मुझे मेरी आंख की वजह से अपशगुनी मानते हैं। मेरे साथ पढ़ने वाली लड़कियां भी मुझे अपमानित करने से नहीं चूकतीं। घर में फेमिलियर प्राब्लम (भेद-भाव) तथा बाहर में ताने ने मुझे बहुत ही कमजोर कर दिया है। आज मैं तंग आकर सिर्फ अपना घर सम्भालना चाहती हूं। जिस आँख का ऑपरेशन हुआ है उसकी रोशनी बिल्कुल जा चुकी है। तानों के डर से बाहर नहीं जाना चाहती। पर डर लगता है, भगवान जाने मेरा भविष्य क्या है? मेरे सामने सिर्फ और सिर्फ अंधेरा है। मैंने ये सोचना लगभग बंद ही कर दिया है कि मैं कुछ बनूं। अब तो बस यही सोचती हूं कि मैं अपने पिता की वैसी बेटी बन सकूं जैसे कि वो चाहते हैं। घर के बाहर मेरे पिता कुछ और ही हैं और घर में कुछ और। पर यदि घरेलू बातें छोड़ दें तो उनकी गलती भी मैं नहीं कहूंगी क्योंकि लंबे दौर से आज तक का सामाजिक माहौल ही ऐसा है।

यह निबंध प्रतियोगिता जीतना मेरे लिए जरूरी नहीं है। आप ने जो शीर्षक दिया, उस आधार पर मैंने अपने अनुभवों को लिखा है। प्रार्थना है कि इसे जग जाहिर ना करे। इससे मेरे पिता जी की प्रतिष्ठा धूमिल होगी।

(कतिपय कारणों से लेखिका का नाम प्रकाशित नहीं किया जा रहा है)

पिंकी कुमारी, पटना विमेन्स कॉलेज, पटना

लक्ष्य में बाधक हैं पुरानी धारणाएं

मैं एक लड़की हूं इसका मतलब ये नहीं है कि मैं अबला हूं। लेकिन लड़की का नाम सुनते ही लोग एक मानसिकता बैठा लेते हैं कि लड़की का कोई खास अस्तित्व नहीं। उन्हें आगे बढ़ने देने या फिर किसी नौकरी करने के योग्य नहीं समझा जाता। हालांकि यह धारणा आज के लोगों में कम हुई है, पर अड़चनें कम नहीं हुई हैं। धीरे-धीरे समाज, सरकार एवं कानून लड़कियों के पक्ष में बदल रहा है। लड़कियां आधुनिक युग में अपनी उपलब्धियों से मिसाल बन रही हैं। वे किसी भी क्षेत्र में लड़कों से पीछे नहीं है।

लड़कियों के विकास में यह धारणा आज भी बड़ी बाधा है कि चूंकि उनको तो शादी कर मूल परिवार छोड़कर ससुराल ही जाना है और घर का काम-काज एवं परिवार को देखना है, इसलिए उनकी पढ़ाई-लिखाई और कैरियर पर शुरू से कोई ध्यान नहीं दिया जाता। ये बात तो ठीक है कि लड़कियां घर के कामों को करती है और परिवार एवं समाज को देखना उनका स्वाभाविक कर्तव्य होता है परन्तु एक लड़की और बहुत कुछ कर सकती है। यदि परिवार एवं समाज से उनको प्रोत्साहन मिले, तब लड़कियां भी पढ़-लिखकर सरकारी-गैर सरकारी सेवाओं में आफिसर बन सकती हैं या राजनीति में ऊंचे पद हासिल कर सकती हैं। इससे वे अपने परिवार की देखभाल आम गृहिणी की अपेक्षा कहीं बेहतर ढंग से कर सकती हैं। तब उन्हें किसी पर भी निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं होगी।

हमारे भारतवर्ष में कई ऐसी महिलाएं हैं, जिन्हें देखकर लड़कियां भी अपने आप को उनकी तरह बनने की या उनसे भी अच्छा, करने की प्रेरणा ले रही है। गांवों में भी लड़की के मम्मी-पापा उनको पढ़ाने के बजाय उन्हें बचपन से ही घर के कामकाज में लगा देते हैं। ऐसा करना बिल्कुल ही जायज नहीं है। गांव की लड़कियों को भी पढ़ने लिखने का मौका मिलना चाहिए। ये उनका हक है। पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी प्राप्त करना लड़की के लिए भी संभव है। अगर वे अपने मन में ठान ले कि हमें पढ़-लिखकर अपने पैरो पर खड़ा होना है या फिर अपने परिवार का नाम ऊपर ले जाना है तो वे कर सकती हैं। उन्हें अपने लक्ष्य पर अडिग रहने की जरूरत है। जो लोग पेट में पल रही बच्ची की हत्या लिंग जांच के द्वारा करवाते हैं, वे घोर अपराध करते हैं। भगवान उन्हें कभी भी क्षमा नहीं करते हैं। लड़कियों के बिना इस समाज, परिवार का निर्माण नहीं हो सकता। लड़कियों का समाज निर्माण में उतना ही योगदान है, जितना लड़कों का।

सुशमा कुमारी,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

लड़की होना बहुत बड़ा वरदान

मैं एक लड़की हूं। स्वप्निल हूं मैं, पर लड़की को अक्सर सपने देखने से रोका जाता है। हमें बचपन से पढ़ाया जाता है कि कैसे रहना है, क्या करना है, क्या पहनना है और क्या-क्या नहीं करना है। जैसे मैं अभी बी.एस.सी. पार्ट ।।। की छात्रा हूं और आगे पढ़ कर कुछ करना चाहती हूं। मुझे पढ़ाने-लिखाने के लिए परिवार को बहुत सारी तकलीफों का सामना करना पड़ा है। जब कोई लड़की हमसे आकर कहती है कि मैं अपनी आर्थिक तंगी की वजह से नहीं पढ़ पाई तो मैं कहती हूं कि अपने आप पर विश्वास हो तो हम लड़कियां कुछ भी कर सकती हैं। आज के वे लड़कों से किसी फिल्ड में पीछे नहीं हैं। मेरी दादी-नानी कहती थी कि लड़की को ज्यादा पढ़ाना-लिखाना नहीं चाहिए, लेकिन मैं ऐसा नहीं मानती। मेरे पापा-भैया ने हमेशा से हमें यही सिखाया है कि लड़की है तो क्या, ये हमेशा लड़कों से आगे रहेगी। मेरे पापा ने हमेशा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। लड़की के साथ बचपन से ही समाज में भेद-भाव किया जाता है। लड़के को अच्छे-से-अच्छा खाना, अच्छे से अच्छा पहनना, अच्छे से अच्छे प्राइवेट स्कूल में नामांकन कराया जाता है और लड़की को किसी भी सरकारी स्कूल में डाल दिया जाता है। मां-बाप कहते हैं इसे तो आगे चूल्हा ही फूंकना है, इसलिए बेहतर पढ़ाई में पैसे क्यों बर्बाद किये जाएं? लेकिन मैं ये कहती हूं कि आप लड़की को भी अच्छे-स्कूल में पढ़ाओ, वह लड़के से अच्छा करके आपको दिखाएगी। आप रास्ता दिखाओ, मंजिलें वह खुद पा लेगी। लड़की को आप लड़कों से कम कभी भी न समझें। जब लड़की की शादी होती है तब उसे बहुत सी तकलीफ का सामना करना पड़ता है। उसे बहुत सारे रिश्तों में बांध दिया जाता है, फिर भी वह बखूबी निभाती है। लड़की होना बहुत बड़ा वरदान है। हमें कोई शिकायत नहीं है जीवन से। मैंने अब तक के अनुभवों से बहुत कुछ सीखा है। मैं एक लड़की हूं और इस बात से ही संतुष्ट हूं और मैं भगवान से यही चाहती हूं कि अगले जन्म में वह लड़की ही बनाए।

स्वप्निल,
रामेश्वर दास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

जारी है स्त्री से पक्षपात

'लड़की' हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाला एक ऐसा शब्द है जो भाषा की पूरी शैली को बदल डालता है। लड़की अर्थात् नारी जो ऐसी शक्ति है जिसमें पूरे विश्व को बदल डालने एवं पृथ्वी मुट्ठी में थामने की दृढ़ता है।

लड़की जीवन के हर पहलू को जीती है। जीवन के सभी रिश्ते को परखने की ताकत अपने आंचल में रखती है। सबसे पहला रिश्ता वह बेटी का निभाती है। यहां उसके अपने माता-पिता की ईमानदारी एवं खुद्दारी को बरकरार रखना होता है। उसके परिवार की मान-मर्यादा, सब कुछ ध्यान उसे रखना होता है। शादी करके उसे एक ऐसे व्यक्ति के पास जाना होता है, जिसे शायद वह पहले कभी कुछ पल को भी न मिली हो। जीवन के इस सबसे अनोखे फैसले को उसके पिता एवं बड़े भाई तय करते हैं। लड़की उस फैसले को अपना पूरा जीवन दांव पर लगा कर स्वीकार करती है। शुरूआत होती है ऐसे रिश्ते की जहां उसे एक पत्नी की भूमिका को अदा करना होता है। इस तरह कदम दर-कदम हर बार उसे एक नए रिश्ते का सामना करना पड़ता है।

भारत एक ऐसा देश है जो स्वतंत्र होने के बाद भी इसलिए परतंत्र है क्योंकि अभी भी यहां पुरुषों का लड़कियों के प्रति व्यवहार सही नहीं है। आज भी यहां ऐसी प्रथा है, जो स्त्री से पक्षपात करती है। जैसे- सामान्य तौर पर हम यह देखते हैं कि मर्द काम पर जाते हैं और महिलाएं घर का काम करती हैं। अगर मर्दों को घर के काम करने के लिए बाहर पैसे दिए जाए तो वो ये करने को तैयार है। ऐसा क्यों होता है? क्यों? इसका जवाब भी हमारे पास है। क्योंकि यह हमारी गलती है, हम अपनी जिम्मेदारियों को नहीं समझ रहे हैं। हम मर्दों को बढ़ावा दे रहे हैं जबकि आज हमारे पास कानून है, सरकारी नियम है जो इनका विरोध करने में सहायक हैं। लड़की होने के नाते मैं ये कहूंगी की हमारे जीवन के अनुभव हमारे हाथ में हैं। हमें जिम्मेदारियों को समझना होगा और भविष्य को बेहतर बनाने के लिए बहुत कुछ करना होगा।

सालनी सिंहा,
अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

वो लड़का है, तुम लड़की हो

मैं एक लड़की हूं। मेरे अनुभव अच्छे भी हैं और बुरे भी। मैं एक लड़की हूं इस बात का मुझे गर्व भी होता है और दुख भी। इस दुनिया में महिलाओं से पहले और कोई नहीं है, महिलाएं हीं सर्वप्रथम है, पर इस बात को दुनिया वाले शायद नहीं समझते। दुनिया की बात छोड़िये ये बात तो हमारे समाज और यहां तक कि हमारे परिवार वाले भी नहीं समझते। जब मुझे मेरे अपने घर में अपने भाई के बराबर का दर्जा नहीं मिलता है तो मुझे बहुत बुरा लगता है। आखिर ऐसा क्यों होता है? हमारे समाज में, हमारे घर में लड़का और लड़की में अंतर क्यों समझा जाता है? जब मैं अपनी मां से कहती हूं कि मुझे भी खाना निकाल कर दो क्योंकि तुमने भैया को दिया है, तो मां कहती- हम नहीं देंगे, तुम खुद जाकर लो। वो लड़का है, तुम लड़की हो।

मां, जो खुद स्त्री है, स्त्री (बेटी) को बराबरी का दर्जा देने से इंकार करती है, ऐसा क्यों होता है? जब मैं इन सब के बारे में सोचती हूं तो मैं बहुत रोती हूं कि ऐसा अन्याय क्यों होता है? मैं भगवान से पूछती हूं कि मुझे लड़की क्यों बनाया? मुझे अपने घर में वो आजादी नहीं मिलती जो मेरे भाई को। मेरा भाई जब चाहे जहां चाहे जा सकता है लेकिन मैं नहीं क्यों? हम पर यह दबाव डाला जाता है कि तुम यही पहनो, ऐसा क्यों? ऐसी बहुत सारी बातें है जो मुझे रुलाती है। फिर मैं अपने आप को समझाती हूं कि मुझे पूरी तरह आजादी नहीं मिली तो क्या हुआ मुझे उन लड़कियों से थोड़ा ज्यादा आजादी तो मिली है जिनके अरमान पूरी तरह कुचले जाते हैं। मैं सोचती हूं कि जो मुझे आज नहीं मिला है, वो कल जरूर लेकर आऊंगी। मैं आगे पढ़कर कुछ करूंगी और ऐसा वक्त लाऊंगी जब लड़के और लड़की को बराबर का दर्जा मिलेगा।

निशा मालध्यार,
अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

वास्तविक सम्मान से वंचित हैं लड़कियां

मेरा अनुभव यह है कि हम लड़कियां हर वो काम कर सकती हैं, जो आजकल के लड़के करते हैं। हमें कभी भी अपने को कमजोर या नाजुक नहीं समझना चाहिए। यह बात और है कि समाज हमें मौके नहीं देता। अक्सर देखा जाता है कि लड़कियों को पढ़ने न दे कर उनकी शादी करा दी जाती है। घर और बाहर में उन्हें जलील किया जाता है। घरेलू काम में उलझा दिया जाता है। उनको लड़के के साथ कम तौला जाता है। शायद हालात के आगे विवश ऐसी ढेर सारी लड़कियों में से एक मैं भी हूं।

जब से मेरा जन्म हुआ तब से लेकर आज तक मुझे ना ही दी गयी आजादी और ना ही वो सम्मान मिला है, जो आज मेरे भाई को मिल रहा है। कभी-कभी मैं अपने मां-बाप से पूछती हूं- क्या मुझे अपने सपने सच करने का कोई अधिकार नहीं? तब मुझे जवाब मिलता है कि - ''नहीं, तुम एक लड़की हो।'' क्या हम (लड़की) एक बोझ हैं? हमारे मां-बाप हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं? यदि विवाह में कन्या और वर पक्ष का मान बराबर होता और लड़की के परिवार को दहेज न देना पड़ता,तब शायद ये चुभते सवाल नहीं खड़े होते। स्त्री समानता की राह में दहेज की प्रथा सबसे बड़ा रोड़ा है।

एक तरफ व्यवहार में लड़की या महिला का अपमान होता है, दूसरी तरफ उसे देवी बताने जैसी बड़ी-बड़ी बातें की जाती हैं। कहावत तो यह है कि हर आदमी की सफलता के पीछे किसी न किसी औरत का हाथ होता है। दूसरी तरफ उसके साथ कदम-कदम पर दुर्व्यवहार होता है। मुझे आजतक मेरे घर में मुझे वो प्यार नहीं मिला, जिसके लिए मैं आजतक तरस रही हूँ। क्या हमारी जिन्दगी, जिन्दगी नहीं है ? देखा जाए तो लड़कियां कई क्षेत्रों में लड़कों से आगे निकल चुकी हैं। आज लड़कियां वो कर दिखा रही हैं, जो शायद लड़के कभी सोच भी नहीं सकते। इसके बावजूद पक्षपात पूर्ण परिवार व्यवस्था और दहेज-प्रथा के चलते लड़कियों को उनका वास्तविक सम्मान नहीं मिल सका है। हमें पूरा हक है अपनी जिन्दगी अपने अनुसार जीने का, अपने सपने को पूरा करने का और कुछ बनकर अपने देश का नाम रोशन करने का।

अगर हम कुछ बनकर दिखा दें तो हमारे मां-बाप को गर्व होगा, और साथ-ही-साथ एहसास होगा कि अगर उन्होंने हमें आगे बढ़ने से रोका होता तो शायद उनका सर गर्व से ऊंचा नहीं होता। आज हमें भी अपने आप पर गर्व होता है।

रिचा अग्रवाल,
अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

मां-बाप का सहारा बनकर जीना चाहती हूं

मुझे अपने लड़की होने पर गर्व है। लोगों की सोच या परिवार वालों की सोच होती है कि लड़की एक बोझ के समान होती है। जितना जल्दी इस बोझ को हटाएं, उतना ही अच्छा है। सभी से अलग मां की सोच होती है, जिसने दर्द को सहन कर अपनी बेटी को जन्म दिया। उन्हें कोई शिकायत नहीं होती कि बेटा हुआ या बेटी लेकिन परिवार को फर्क पड़ता है। वह दहेज देने की बात सोच कर कन्या के जन्म को मन ही मन अप्रिय मानने लगता है। उत्सव नहीं मनाया जाता।

स्त्री का जीवन संघर्षपूर्ण हो गया है। हालांकि आज आधुनिक सोच के फलस्वरूप नारियों को भी ऊंचे-ऊंचे पदों पर बिठाया जा रहा है, लेकिन अधिकतर जगह नारियों को पुरुष का खिलौना ही माना जाता है। मैं ऐसी कुरीतियों को खत्म करना चाहती हूं। मैं समाज को यह दिखाना चाहती हूं कि नारी वास्तव में शक्ति की देवी होती है। हमेशा नारियों को दबाया जाता है। उन्हें अपने हक के लिए दो शब्द भी कहने नहीं दिया जाता है। उन्हें पिछड़े वर्ग की तरह माना जाता है। बेसहारा नारी को हमेशा पैरों तले रौंद दिया जाता है। उनकी कल्पनाओं को नष्ट कर दिया जाता है। मैं नारी शोषण की व्यवस्था का विरोध करूंगी। अशिक्षित नारियों को नई दिशा के बारे में बताऊंगी, जहां उन्हें शिक्षा के साथ-साथ अपने हक के लिए लड़ने के लिए बताया जाएगा।

हम तीन बहनें हैं। मां-पिता को हमेशा यह लगता है कि उनकी सिर्फ बेटियां है, एक बेटा होता तो उनका वंश आगे बढ़ता। मेरे मम्मी-पापा तो कभी यह भी सोचते कि जाने दो बेटा हो या बेटी, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन परिवार वाले हमेशा उकसाते हैं कि अगर आपका एक बेटा होता तो आपके बुढ़ापे का सहारा बनता, बेटियां तो अपने-अपने घर चली जाएंगी। आपकी सेवा कौन करेगा? इस पर मां-पापा भी उदास हो जाते लेकिन मैं उन्हें हमेशा यह बताती हूं कि आप मुझे पढ़ने लिखने में मदद कीजिए, मैं कुछ बन कर दिखाना चाहती हूं और आपका बेटा बनकर जीना चाहती हूं। मैं यह दिखाना चाहती हूं कि मैं लड़की हो कर भी अपने परिवार को अच्छे तरीके से चला सकती हूं, ताकि परिवार का सिर हमेशा गर्व से उठा रहे कि हां हमारी बेटियां भी बेटे से कम नहीं हैं। मैं कड़ी मेहनत करके अपने सपनों को पूरा करना चाहती हूँ।

भारती कुमारी,
अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

कितनी ही लड़कियां दबायी जा रही हैं

जब मैं छोटी बालिका थी, दुनिया से मतलब नहीं था। जैसे-जैसे बड़ी होती चली गई परिवार, समाज के उत्तरदायित्वों को बड़े-बुजुर्ग बताने लगे। यह काम नहीं करो, वह काम नहीं करों, समाज क्या कहेगा। मेरे मन में लाखों प्रश्नों ने जन्म लेना शुरू कर दिया। क्या ये नियम सिर्फ हमारे लिए हैं? इसके बोझ के नीचे मैं और ना जाने कितनी लड़कियां दबी जा रही हैं। जब आज मैं आगे की पढ़ाई करना चाहती हूं तो फिर ये समाज, यह परिवार मार्ग के सबसे बड़े पत्थर बने हैं। इस जगह पर पहुंचकर मेरे मन में फिर से प्रश्नों ने उथल-पुथल मचाना शुरू कर दिया, ना जाने कितनी लड़कियां इन्हीं समाज और परिवार के कारण अपने रास्ते, अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच पाती हैं। मैंने माता-पिता से मन की सारी बातें कह डालीं हैं , इसलिए आज वे साथ दे रहे हैं। मैं आगे पढ़कर अपने माता-पिता का नाम रौशन करना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि सभी लड़कियों के माता-पिता उन्हें पढ़ा लिखाकर स्वावलंवी बनाएं। परन्तु आज कुछ बदलाव भी देखने को मिल रहे हैं। गांव की लड़कियां भी पढ़ाई करने लगी है। यह संभव तब हुआ, जब आवाज उठाई गई। आगे भी यह जारी रहना चाहिए। आज तक के अनुभवों से मुझे कुछ बातें बुरी लगीं, तो कुछ अच्छी भी लगी। अच्छी यह लगी की मेरे माता-पिता मेरे साथ, यानी लड़की के साथ, अपनी बेटी के साथ हैं।

रागनी कुमारी,
अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

खुद पर गर्व होना चाहिए वो लड़की है, लड़का नहीं

मैं एक लड़की के साथ-साथ एक ऐसी नारी शक्ति हूं, जो समाज में हो रहे अत्याचारों का डट कर सामना कर सकती है। समाज में लड़कियों को लड़कों से नीचा दिखाया भी जाता है और समझा भी जाता है। समाज को यह नहीं मालूम कि जो काम लड़के कर सकते हैं, वो काम आज लड़कियां भी कर रही हैं, और उनसे कही अच्छे ढंग से। मैं लड़की हूं, और मुझे लड़की के रूप में जन्म देने के लिए मैं भगवान को शत्-शत् नमन् करती हूं। और यह भी चाहती हूं कि लड़की के रूप में ही, मैं प्रगति करूं और दुनिया में अपना एक स्थान बनाऊं। समाज में ऐसे बहुत सारे लोग हैं, जिन्हें बेटी है, और बेटा नहीं, इस बात को लेकर हमेशा मां अपनी बेटी को कोसती और गालियां ही देती रहती हैं, पर वे यह नहीं जानती है कि कभी वो भी लड़की थी। आज वर्तमान समय में लड़की लड़के के साथ कंधे-से-कंधा मिला कर चल रही है और उनसे आगे निकल रही है। अगर देखा जाए तो समाज के किसी भी क्षेत्र में किसी अत्याचार के विरुद्ध पहला कदम लड़की का ही होता है। उसकी एक आवाज पर पूरा समाज उसके साथ हो जाता है, बाद में वहीं समाज उस पर लाछंन लगाने में जरा भी कतराता नहीं है। प्राचीन काल से ही यह समाज पुरुष प्रधान है। हमें इस सोच को बदलना है। बदलाव हुआ भी है। आज महिलाएं खेल कूद, पॉलिटेक्निक, इंजीनियरिंग या फिर डॉक्टरी में आगे आयी हैं।

अंत में मैं बस इतना ही कहूंगी कि सभी लड़कियों को सबसे पहले खुद पर विश्वास होना चाहिए, खुद से प्यार होना चाहिए और खुद पर गर्व होना चाहिए कि वो लड़की है, लड़का नहीं।

चांदनी कुमारी,
अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

लोग लड़कों को ज्यादा तरजीह देकर प्रकृति की व्यवस्था बिगाड़ रहे हैं

मैं एक लड़की हूं। किसी लड़के से कम नहीं, क्योंकि लड़की भी उसी मां के कोख से पैदा होती है, जिससे लड़का पैदा होता है। लड़की हो या लड़का, दोनों प्रकृति की ही तो देन है। दोनों परस्पर पूरक हैं। दोनों के बीच प्रेम और समन्वय से चलती है दुनिया, लेकिन लोग लड़कों को ज्यादा तरजीह देकर प्रकृति की व्यवस्था बिगाड़ रहे हैं। भगवान ने तो ये नहीं बताया कि लड़कों को ज्यादा लाड़ प्यार करना और लड़कियों को झाड़ू से मारना। लेकिन पुरुष प्रधान व्यवस्था में ऐसा अत्याचार होता है। भगवान ने नहीं, हमारे पूर्वजों ने ही ऐसा भेदभाव बना दिया है। शादी में लड़की वाले ही दहेज दें, यह भगवान की व्यवस्था नहीं है। इस पक्षपाती विवाह व्यवस्था के चलते लड़कियां उपेक्षा, प्रताड़ना और हत्या तक का शिकार हो रही हैं। गर्भ में भी वे सुरक्षित नहीं हैं।

इस अन्यायपूर्ण प्रथा को खत्म करना होगा। भेदभाव का ही नतीजा है कि लड़की को घर के काम के सिवा कोई बाहर का काम नहीं करने दिया जाता है। भाई, हम लड़की हैं तो क्या इंसान नहीं हैं? तुम भी अपना काम करो और हम भी अपना काम करते हैं, लेकिन ऐसा नहीं होने दिया जाता। लड़की को उसके माता-पिता बोलते हैं तुम बर्तन धोओ, खाना बनाओ, झाड़ू लगाओ और लड़का आराम से जाएगा खाना खाएगा. थाली में हाथ धो लेगा. ये भी नहीं कि कम से कम खाकर अपनी थाली उठाकर बर्तन धोने वाली जगह पर रख दें।

इसके पीछे सारी की सारी गलती उसके माता-पिता की है, समाज की है, क्योंकि वह लड़के को उपयोगी, कामकाजी, बुढ़ापे का सहारा, दहेज लाने वाला आदि-आदि मानता है। इस स्वार्थपरक मानसिकता के चलते लड़का जन्मजात वीआईपी हो जाता है और लड़की जन्मजात चेरी। कोई विरोध नहीं होता। परिवार की औरतें भी सिर झुका कर इस पुरुषवादी सोच का पालन करती हैं। यह सब इतने लंबे समय से हो रहा है कि कन्या से महिला और मां बनने वाली स्त्री भी अपने बेटे को ज्यादा और बेटी को कम तरजीह देती है।

अगर माता-पिता अपनी लड़की को छोटा कपड़ा पहनने के लिए देते हैं तो समाज के लोग बुरा मानते हैं। अगर वहीं लड़का नंगा चले तो कोई कुछ नहीं बोलेगा। वाह, बेटा वाह, बहुत अच्छा काम किया तुने। लड़का अगर छेड़खानी करे, तो उसे बोलने की हिम्मत शायद ही कोई करता है। लड़की पैदा होते ही दहेज आधारित विवाहप्रथा के कारण चिंता का सबब बन जाती है। और लड़का जन्म लेते ही जश्न का बहाना बनता है। आप जरा सोचिए, लड़का पढ़ लिखकर नौकरी करता है, परिवार के काम आता है, तो क्या लड़की नौकरी नहीं कर सकती? क्यूं नहीं करेगी? आप जैसे लड़के को पढ़ाते हैं, जितनी छूट उसे देते हैं, वह सब लड़की को भी देकर देखिए। अगर लड़की 99.99 प्रतिशत अच्छा नहीं करके दिखाए, तो मेरा नाम आज से अलका नहीं। हम भी करेंगे हर काम करेंगे। चाहे पत्थर तोड़ना हो या आटो चलाना हो या और कोई भी कठिन से कठिन काम, मगर लड़का लड़की से छेड़खानी करना छोड़ दें। मैं भी अपने माता-पिता की एकलौती लड़की हूं, पर मुझे अपने भाई से कोई लाड़-

प्यार नहीं मिलता, फिर भी हम बेडशीट बदलते हैं, वो गंदा कर देता। मम्मी एक दो बार डांटती है फिर छोड़ देती है, बोलती है जाने दो, जो कर रहा है करने दो, लेकिन अगर हम कोई गंदी हरकतें करें तो मम्मी पापा तो डांटेंगे, वो अलग, छोटा भाई भी बोलने लगेगा। लेकिन हम भविष्य हैं, और मेरी सोच बहुत अच्छी है, मैं जो करूँगी सही करूँगी।

अलका कुमारी,
अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

सुरूची राज, मगध महिला कॉलेज, पटना

लड़कियां जरूर आगे बढ़ेंगी

जिंदगी जन्नत, कर्म ही निष्ठा
चाहत है इसे सजाना
गर्व से कुछ कर जाना
चाहत अनेक है
दिल पर रोक है;
कभी ईश्वर, कभी अल्लाह है।
मुमताजमहल अनेक है
ताजमहल एक है लेकिन,
नारी हजारों में एक है।
धरती का स्वर्ग कश्मीर है,
इंसान की जिंदगी
का स्वर्ग नारी है।

मैं एक लड़की हूं। मुझे ये जीवन बहुत अच्छा लगता है। इच्छाएं किसकी नहीं होती? सपने कौन नहीं देखता? चाहे वो लड़का हो या लड़की, जज्बात सबके मन में पैदा होता है। लड़का अच्छा है या लड़की, यह प्रश्न आखिर उठा ही क्यों? जवाब बिल्कुल साफ है। हम खुद ही दूसरों को ये मौका देते हैं कि वे हमारे बारे में प्रश्न पूछते हैं।

दोष किसी का नहीं। हम लड़के और लड़की में कोई फर्क नहीं करते हैं। अब यह सवाल कभी पैदा नहीं होगा लेकिन वो हम हैं, जो खुद इन सवालों को उठाते हैं। सरकार का नियम दोनों के लिए बराबर होना चाहिए था लेकिन फिर भी सरकार ने हमें बहुत सारे अधिकार लड़कों से ज्यादा दिये हैं। लड़कियों का हर क्षेत्र में कोई जबाव नहीं है। भारत ने रानी लक्ष्मी बाई, इंदिरा गांधी, किरण बेदी जैसी लड़कियों को पैदा किया है, इसलिए मुझे अपने आप पर गर्व है कि मैं एक लड़की हूं।
लड़कियां जरूर आगे बढ़ेंगी चाहे उन्हें कोई कितना भी रोके। अंत में मैं एक कविता लिखना चाहूंगी, जो मेरी है।

जब-जब जीवन में कष्ट होगे;
तब-तब मैं मुस्कुराऊंगी;
जब-जब मुझे खुशी होगी;
तब-तब मैं खिलखिलाऊंगी।
मुझे कोई न रोक सकेगा;
मुझे कोई न टोक सकेगा;
मैं आगे बढ़ती ही जाऊंगी।
रास्ते में कितने कांटे हों;
फूल हम उन्हें बनाएंगे;

हम क्यों ये भूल गए हैं;
कीचड़ में ही कमल खिले हैं।

अनुराधा चौरसिया,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

दीपा रानी, जे.डी. विमेन्स कॉलेज, पटना

जवाब देना चाहती हूं स्त्री विरोधियों को

''नारी तुम दुर्गा हो, शक्ति हो, तुम सर्वशक्तिमान हो फिर भी तुम्हें अबला कहा जाता है। यह दर्द नारी के सिवा दूसरा कौन महसूस कर सकता है।''

मेरे जीवन में कुछ अच्छी घटना भी घटी और कुछ बुरी भी। मेरा अच्छा अनुभव यह है कि मैं हमेशा पढ़ाई में अच्छी रही और लड़कों के मुकाबले हमेशा प्रथम आती थी। मैं सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं की प्रिय थी। तब मुझे अपने आप पर गर्व होता था कि लड़कों से ज्यादा तारीफ लड़की की हो रही है। पढ़ाई में ही नहीं, खेल में भी सभी लड़कों से आगे थी। जब भी मेरे विद्यालय में क्रिकेट होता था, सबसे पहले मेरा नाम पुकारा जाता था। मैं अपने आप को धन्य समझती थी। अगले जन्म में भी लड़की के रूप ही पैदा होने की इच्छा रखती थी। इस तरह मैं बड़ी होती हुई विद्यालय से महाविद्यालय में आ गई।

मेरा अनुभव बुरा यह है कि लड़की होने के कारण काफी जगह उपेक्षित किया गया। मुझ में काबिलियत होते हुए भी वे काम मै न कर सकी जो मैं करना चाहती थी। मेरे विद्यालय से एक बार सभी छात्र-छात्राओं को प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय के अवशेष देखने ले जाया गया। मैं उस में न जा सकी, क्योंकि मेरे माता-पिता मुझे अकेले कहीं नहीं भेजना चाहते थे। उस पल मुझे अहसास हुआ कि एक लड़की होने के कारण मैं सभी छात्र-छात्राओं के साथ बाहर नहीं जा सकी। और यह अपना दर्द किसी के साथ बांट भी नहीं सकती थी।

मैं गांव की लड़की हूं। जब मैं पढ़ने के लिए पटना आई तो हमारे सभी रिश्तेदार मेरे माता-पिता से कहने लगे कि लड़की को ज्यादा पढ़ा-लिखा कर क्या करोगे, एक दिन तो इसकी शादी ही कर देनी है। पढ़ाई और दहेज दोनों का खर्च ज्यादा हो जाएगा, इसलिए इसकी पढ़ाई बंद कर दो। ये सब सुन कर मैं सुन्न हो गई। अपने-आप को कहने लगी क्या लड़की होना गुनाह है? उस समय मैंने संकल्प किया की मेरे जीवन का सिर्फ एक ही लक्ष्य है, वो है आई.ए.एस. ऑफिसर बनना। मैं उन लोगों को जबाव देना चाहती हूं जो लड़की होने (और दहेज प्रथा) के कारण मुझे पढ़ने से रोकने पर तुले थे ।

* लड़की होने का कटु अनुभव सड़क पर छेड़छाड़ के रूप में भी हुआ और इसका जवाब दिया तो उल्टे हमें ही लोगों ने गलत नजर से देखा। दुख होता है कि जमाना इतना बदला, फैशन बदला लेकिन लड़कियों के प्रति समाज का नजरिया क्यों नहीं बदला?

''लड़की परिवार सम्भालती है। वह एक नये समाज का निर्माण करती है, लेकिन समाज उसके साथ इतना क्रूर व्यवहार करता हैं। क्या उसे शर्म नहीं आती है कि जिस लड़की को वह छेड़ रहा है या ताने दे रहा है,वह मां दुर्गा का रूप है और जिसकी वह कृपा पाना चाहता है?''

गौरया कुमारी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

दहेजप्रथा बड़ी बुराई, लेने-देने वालों को सजा दिलाऊंगी

लड़की ही संसार की रचना कर सकती है। औरत के बिना हम इस दुनिया की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। एक लड़की जब तक कमजोर होती है, तब तक उसे सताया जाता है लेकिन जब एक बार वह निर्णय ले लेती है, तो वह कुछ भी कर सकती है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में बर्दाश्त करने की शक्ति अधिक होती है। आज दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है और अब पहले की अपेक्षा लड़कियों की स्थिति में भी सुधार हुआ है। लेकिन आज भी ऐसे बहुत से गांव हैं, ऐसे बहुत से मां-बाप हैं जो लड़कियों के पैदा होने से दुःखी हो जाते हैं। वे लड़कों के जन्म पर खुशी मनाते हैं और लड़कियों के पैदा होने पर दुःखी हो जाते हैं। ऐसे बहुत से गांव हैं जहां लड़कियों की शादी छोटी उम्र में कर दी जाती है जिससे उनका बचपन, उनकी जिंदगी बर्बाद हो जाती है। जब उसका बचपन होता है जब उसकी खेलने की उम्र होती है, तभी उसकी शादी कराके उसके कंधों पर घर की जिम्मेदारियों को डाल दिया जाता है। और जब तक उसकी जवानी आती है तब तक वह मां बन जाती है, और उसका शरीर कमजोर हो जाता है। मैं हर मां-बाप से कहना चाहती हूं कि वे अपनी बेटी की शादी छोटी उम्र में नहीं करें।

अगर मैं कुछ बन जाऊं तो सबसे पहले दहेज लेने वालों और दहेज देने वालों को सजा दिलाऊंगी क्योंकि बाल विवाह होने का प्रमुख कारण दहेज ही है। जब एक लड़की पैदा होती है तो बचपन से ही वह कुर्बानी ही देती रहती है। उसे अपने बारे में सोचने का मौका ही नहीं दिया जाता है। कोई लड़की अगर पढ़ना चाहती है तो उसे यह कहकर माना कर दिया जाता हे कि उसे तो दूसरे घर जाना है, वह तो लड़की है इसलिए वह पढ़ कर क्या करेगी। वह कुछ बोल नहीं पाती है फिर जब उसकी शादी होती है तो वह अपने पति और अपने ससुराल वालों के सामने अपनी इच्छा को दवा देती है। मैं चाहती हूं कि हर लड़की को अपने सपनों को पूरा करने का मौका देना चाहिए, उसे बार-बार यह एहसास नहीं दिलाना चाहिए कि वह लड़की है।

अब मैं अपने गांव के बारे में कुछ लिखना चाहती हूं। मैं भी एक गांव की ही लड़की हूं जहां लड़कियों की शादी छोटी उम्र में ही कर दी जाती है, उसे पढ़ने नहीं दिया जाता है। मेरे बगल में एक लड़की की शादी छोटी उम्र में ही कर दी गई और उस लड़के से उसकी शादी हुई वह उम्र में उससे बहुत बड़ा था। उस लड़की को पढ़ने नहीं दिया गया। वह अपने भाईयों को स्कूल जाते देखती तो वह भी सोचती थी कि काश मैं भी स्कूल जा पाती, मैं भी पढ़ सकती। उस समय वह यही सोचती होगी कि उसने लड़की के रूप में जन्म लेकर पाप किया है। उसका बचपन तो खराब हो ही गया और जब तक वह जवान हुई, तब तक वह दो बच्चों की मां भी बन चुकी थी। इतनी कम उम्र में वह इतना बड़ा बोझ नहीं संभाल सकी और उसे एक ऐसी बीमारी हो गई, जिसका कोई इलाज नहीं था। उसे अपनी जान गंवानी पड़ी, क्योंकि वह लड़की थी। सिर्फ एक लड़की होने के कारण उसे अपनी जिंदगी जीने का मौका नहीं दिया गया।

मैं सबसे यह कहना चाहती हूँ कि वे अपनी बेटियों को बोझ नहीं समझें क्योंकि अब लड़कियाँ

लड़कों से पीछे नहीं हैं और वह चाहे तो कुछ भी कर सकती है। मैं जानती हूँ कि आज दुनिया बदल गई है लेकिन आज भी लड़कियों की स्थिति उतनी अच्छी नहीं हुई है। आज भी अगर कोई लड़की शाम के बाद अपने घर से निकलती है तो उसे गलत नजरों से देखा जाता है। अगर कोई लड़की कहीं अकेले रहती है, तो उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मैं चाहती हूँ कि यह समाज बदले और हर लड़की को इज्जत दे, उसे अच्छी नजरों से देखें।

हर लड़की को अपना सपना पूरा करने का पूरा हक है और उसे यह मौका देना चाहिए। कुछ माँ-बाप अपने लड़कों को इसलिए पढ़ाते हैं कि उनका बेटा बड़ा होकर नौकरी करेगा और उनके बुढ़ापे का सहारा बनेगा और अपनी बेटियों को इसलिए नहीं पढ़ाते हैं क्योंकि वे उसे पराया धन समझते हैं। लेकिन शायद उन्हें यह पता नहीं होता है कि एक लड़की के मन में जितना प्यार, जितनी दया होती है, उतनी किसी और में नहीं। बहुत से लोग दुर्गा माता, काली माता, सरस्वती माता इत्यादि की पूजा करते हैं लेकिन अपनी बेटियों को बोझ समझते हैं। उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि एक लड़के को पैदा करने वाली माँ भी तो एक औरत ही है। उन्हें औरत का सम्मान करना चाहिए। आखिर एक बेटी है, तभी तो बेटा है अगर बेटी ही नहीं रहेगी तो बेटा कहाँ से आएगा। लेकिन इन सब के बावजूद भी मैं अपने आपको खुशनसीब समझती हूं कि मैं एक लड़की हूं क्योंकि जो शक्ति एक लड़की में होती है वह किसी और में नहीं। मैं जिस घर में पैदा हुई हूं वहां लड़कों और लड़कियों को एक समान समझा जाता है। मैं भगवान से प्रार्थना करना चाहती हूं कि वे हर लड़की को ऐसे माता-पिता दें।

सुधा कुमारी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

शादी के लिए लड़कियों को सामान की तरह परखना शर्मनाक

मैं बहुत खुशनसीब हूं कि मेरा जन्म होने पर मेरे मां-बाप को इस बात का कोई दुःख नहीं था कि मैं लड़की हूं। उन्होंने मुझे वही प्यार दिया जो मेरे भाइयों को मिला। यह मेरे लिए एक अच्छा एवं सुखद अनुभव था कि मुझे भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ा। मेरे जन्म लेने पर मेरे मां-बाप खुश थे। उन्हें कोई मलाल (पछतावा) न था लेकिन लड़की होने के कारण मेरी दादी मुझसे खुश न थी। वह मुझे पापा पर बोझ समझती थी, जो मेरे लिए काफी बुरा अनुभव था। मैं कभी-कभी सोचने लगती थी क्या सचमुच लड़कियां मां-बाप पर बोझ होती है? लड़की होने का बुरा अनुभव मुझे उस समय जयादा महसूस हुआ, जब मैं मैट्रिक की परीक्षा पास कर आई.एस.सी. के लिए कोचिंग संस्थान जाने लगी। राह चलते लड़कियों को कोई भी लड़का कुछ भी बोल देता। लड़कियां विरोध करती भी थीं, पर उसमें लड़कियों को ही दोषी कहा जाता था।

मुझे पता चलने लगा कि जैसे-जैसे लड़कियां बड़ी होती हैं, उन्हें लड़की होने पर शर्म महसूस होने लगती है। शादी से लेकर हर छोटी-बड़ी बातों पर लड़कियों को ज्यादा कठिनाई होती है। उनकी शादी के लिए उनको लड़केएवं उसके परिवार के सामने वस्तु की भांति दिखाने की परम्परा है। इस परम्परा का लाभ उठाते हुए वह लड़की को कभी सलवार-कमीज में देखने की मांग करता है तो कभी साड़ी में। लड़के के परिवार वाले कभी चलकर दिखाने के लिए कहते हैं, तो कभी गाने के लिए। इन सबके पीछे उनका कोई मकसद अच्छा नहीं होता। उसकी देह,चाल-ढाल, आवाज को परखा जाता है। लड़कों को तो इस तरह नहीं देखा-जांचा जाता। यह सब सुनकर लगता है कि हमें लड़की नहीं पैदा होना चाहिए। यह तो सामाजिक कुरीतियां हैं। इसके चलते हम लड़की होने के गर्व को नहीं छोड़ सकते। हमें अपनी जिन्दगी को महत्वपूर्ण बनाना है, ताकि लड़कियां मजबूत हों और उन्हें पाने के लिए लड़कों को स्वयंवर जैसे इम्तिहान से गुजरना पड़े। इस युग में लड़कियां कहीं भी लड़कों से पीछे नहीं, बल्कि वह आगे ही हैं।

मिनी कुमारी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

शिक्षित स्त्री ही परिवार को आगे बढ़ा सकती है

हमारे समाज में लड़की होना एक अभिशाप है, क्योंकि हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज है। यहां नारियों के प्रति लोगों का नजरिया भेदभाव पूर्ण है। नारी शिक्षा पर विशेष महत्व नहीं दिया गया है। पहले भी लोग लड़की पैदा होने पर दुःख जताते थे और आज भी यही होता है। आज भी लड़कियों को स्कूल जाने नहीं दिया जाता है, उन्हें बाहर नौकरी नहीं करने दिया जाता है, उसे किसी के साथ स्वतंत्र रूप से बातचीत भी नहीं करने दिया जाता है। लड़कियों के जीवन में अनेक कठिनाई होती हैं। इन सबके बावजूद वो अपने दायित्व को पूरा करती हैं। मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे ऐसे मां-बाप मिले हैं जिन्होंने मेरे और मेरे भाई के बीच कभी भेदभाव नहीं किया। उन्होंने हमेशा मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। आज मैं अपने भाई और अपने मां-बाप की बदौलत ही यहां तक पहुंची।

लड़कियां अपने परिवार की देखभाल करने के साथ ही अपने पति की आय को अपनी नौकरी के द्वारा बढ़ा सकती है। इन सबको करने के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाएं हैं, लेकिन उसको सफल बनाने के लिए हम सबको आगे आना पड़ेगा। शिक्षित स्त्री ही अपने परिवार का, देश का नाम आगे बढ़ा सकती है। लड़कियों को इतना शिक्षित रहना जरूरी है कि वह अपने मुश्किल क्षणों में अपने जीवन को चला सके। हमें ये समझना होगा कि हम जो लड़कियों को दहेज पाने के लिए जला रहे हैं, उसे प्रताड़ित कर रहे हैं, कल को वह उनकी बेटियों के साथ हो सकता है। इसलिए पहले खुद बदलें, तभी देश बदलेगा। कहने के लिए संविधान में नारियों को मौलिक अधिकार दिया गया है, लेकिन इन सबके बावजूद नारियों को ही अपमानित क्यों किया जाता है?

मुझे लड़की होने पर गर्व है कि भगवान ने मुझे इस धरती पर लड़की बनाकर भेजा और अगले जन्म में भी मुझे लड़की ही बनाएँ क्योंकि आज की लड़कियां बहुत ही आगे पहुंच चुकी हैं। आज हमारे देश की बागडोर एक महिला के हाथ में है जो भारत की राष्ट्रपति है। आज लड़कियां लड़कों के साथ समाज में कंधे से कंधे मिलाकर चल रही हैं।

स्वाती बैशाखी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

सपने को पूरा करने के लिए हमेशा सचेत हूं

मैं एक लड़की हूं। मुझे इस बात पर गर्व होता है कि ईश्वर ने मुझे इस भूमि पर लड़की के रूप में भेजा है। मैं अपने देश की एक सभ्य नागरिक हूं। मेरे अंदर अपने भविष्य को लेकर कई वो सुनहरे ख्वाब हैं. जिसे मैं पूरा करने की चाह रखती हूं। आई.ए.एस. आफिसर बनने का सपना पूरा करने के लिए मैं अभी से ही काफी मेहनत कर रही हूं। मेरे परिवार में तो पढ़ाई के लिए सहयोग देने में मेरे सभी रिश्तेदार एवं अभिभावक मेरा हौसला बढ़ाते हैं। मगर मेरे पिताजी मेरे सपने को पूरा करने के लिए मुझे हर तरह से सहायता प्रदान करते हैं साथ ही यह हौसला एवं यह दिलासा भी देते है कि तुम अपने सपनों के टूटने के डर से सपने देखना मत छोड़ों। बल्कि खुली आखों से सपने देखों और उसे पूरा करने के लिए अधिक से अधिक प्रयास करो। आज समाज में उन्हीं लोगों का सिर ऊंचा रहता है जो कि पढ़-लिखकर एक सभ्य नागरिक बनते हैं। उन्हीं का सर समाज के सभी वर्गों में फक्र से ऊंचा रहता है। प्राचीन समय में न तो लड़कियां को यह सुविधा ही प्राप्त थी की वो अपनी पढ़ाई अपने अनुसार करे और ना ही उन्हें पढ़ने का एवं कुछ करने का अवसर ही प्राप्त होता था। परन्तु वर्तमान में सरकार ने भी हर लड़कियों को पढ़ाने का एवं एक सशक्त नागरिक बनाने का प्रयास किया है। लड़कियों को 'सर्व शिक्षा अभियान' के तहत निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है। जिससे वो भी अपने सपने को साकार कर सकें। आज इस तरह से लड़कियों को आगे बढ़ने के लिए और कुछ कर दिखाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है एवं सभी को आगे बढ़ाने के लिए हर सम्भव प्रयास किया जा रहा है। अपने पिताजी के इस बात का असर मुझ परइतना गहरा पड़ा कि मैं अपने इस सपने को पूरा करने के लिए हमेशा सचेत रहती हूं।

स्वाती कुमारी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

ससुराल में अनेक यातनाएं सहती हैं लड़कियां

महिलाओ एवं पुरुषों को कदम से कदम मिलाकर चलने का समान अधिकार दिया गया है। दोनों ही एक दूसरे से कम नहीं हैं। हर क्षेत्र में लड़कियां अपना परचम लहरा चुकी हैं। हमारे देश में किरण बेदी, कल्पना चावला, इंदिरा गांधी, सरोजनी नायडू, मीरा कुमार तथा ऐसी ही बहुत सी महान हस्तियों ने अपना एक अलग मुकाम बनाकर रखा हैं। नारी पर तो जन्म से ही पीड़ा उबलती रहती है। कितने घरों में तो यह जान लेने पर कि गर्भ में लड़की है, उसे खत्म ही कर दिया जाता है। नारी हमेशा अपने परिवार के प्रति समर्पित रहती है। वह जब छोटी होती है तो उसे खिलौने की जगह गुड़िया दी जाती है ताकि वह अपनी गुड़िया का विवाह करे और परिवार की सारी जिम्मेदारी को समझे। उसे ससुराल में जाकर अनेक प्रकार की यातनाएं सहनी पड़ती हैं, चाहे वह कितनी भी अच्छी स्त्री क्यों न हो। फिर जब वह मां बनती है तो उसे मातृ धर्म का पालन करना पड़ता है।

चूंकि मैं एक लड़की हूं इसलिए मैं भी अपने समाज और परिवार के सभी कार्यों को भली-भांति समझती हूं और उसे पूरा करने की कोशिश भी करती रहती हूं ताकि मैं अपने देश और परिवार का सिर गौरव से ऊंचा कर सकूं। मैं कोई भी ऐसा गलत काम नहीं करना चाहती जो हमारे परिवार और समाज के विरुद्ध हो। मैं आई.ए.एस. आफिसर बन कर अपने परिवार का नाम रौशन करना चाहती हूं। अगर मेरा सपना पूरा नहीं हुआ तो मैं समाज के कल्याण में अपना हाथ बटाऊंगी तथा नारियों को जागरूक करूंगी ताकि वह पढ़े-लिखे और अपने पैर पर खड़ी हो सके। वह किसी पर बोझ बन कर नहीं रहे। वह पढ़-लिखकर कुछ ऐसा बने जो देश के लिए एक मिसाल बनें।

लड़कियां अब हर चुनौती को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ती जा रही हैं। वे बंदिशों को तोड़कर आगे निकल चुकी हैं।

थोड़ी अलग हूं मैं, मुझे दिखाई देती है दुनिया की खुबसूरती
अच्छा लगता है कुछ नया करना
खुश रहना, जिंदगी को खुलकर जीना
क्योंकि मैं अतीत नहीं हूं
वर्तमान और भविष्य हूं मैं।
मुझे विश्वास है अपनी
क्षमताओं पर और गर्व है अपनी
पहचान पर।

स्वाती कुमारी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

लड़कियों पर थोड़ी पाबंदी जरूरी

मैं एक लड़की हूं। और यह मेरे लिए बहुत गर्व की बात है। आज की लड़कियां किसी भी तरह लड़कों से कम नहीं है। भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी बनी। मदर टरेसा, पी.टी.ऊषा,सोनिया गांधी, सुषमा स्वराज, मायावती आदि महिलाओं ने अपने-अपने क्षेत्र में नाम रोशन किया। ऐसा कोई भी काम नहीं, जो लड़कियाँ नहीं कर रही हैं । दूसरी तरफ लड़के और लड़कियों में भेदभाव जारी है। लड़कों की पढ़ाई-लिखाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मगर धीरे-धीरे सोच में बदलाव आ रहा है। बहुत से परिवार लड़कियों को बेहतर या समान अवसर देने लगे हैं। अगर ऐसा नहीं होता तो लड़कियां इतना तरक्की कैसे कर पातीं। हम लड़की हैं और समाज पुरुष प्रधान है तो थोड़ा-सा संयम, थोड़ी पाबंदी तो जरूर होनी चाहिए। अगर यह नहीं होता तो शायद हम कुछ गलत कदम उठा सकते थे। जहां लड़कियों को असीमित आजादी मिलती है, वहां दूसरी समस्याएं भी खड़ी होती हैं। भले यह सुनने में खराब लगे, लेकिन व्यवहार में लड़कियों पर थोड़ी पाबंदी जरूरी है। मुझे गर्व है कि मैं एक लड़की हूं। मैं अपने परिवार से संतुष्ट हूं। मैं उसके भरोसे को कायम रखूंगी। मुझे अपने आप पर गर्व और मेरे माता-पिता को भी एक दिन मुझ पर गर्व होगा।

अलका कुमारी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

खुशबु कुमारी, मिर्जा गालिब कॉलेज, गया

सैकड़ों लड़कियां पी रही हैं छेड़छाड़ से अपमान का जहर

मेरे पापा-मम्मी ने हमेशा मुझे और मेरे दोनों भाइयों को अच्छे संस्कार दिए। उन्होंने हमेशा मुझे अपने भाइयों के बराबर ही समझा और वैसी ही शिक्षा दी। घर में सारे लोग बिल्कुल सब को एक जैसा ही समझते हैं। पापा तो मुझे ही सबसे जयादा मानते हैं।

मुझे इस बात का बेहद गर्व है कि मैं एक लड़की हूं, एक लड़की होने के साथ-साथ मैं अपने पापा का सपना भी हूं। मेरे पापा चाहते हैं कि मैं एक आई.ए.एस. बनूं। जब भी किसी गरीब, दुःखी, निर्बल का अपमान होता है, तो मुझे बड़ा गुस्सा आता है। मुझे लगता है कि यह सब रुक सकता है अगर प्रशासन चुस्त और नागरिकों के बारे में सोचने वाला हो। मेरे पिता बेरोजगार हैं। बड़ी मुश्किल से मेरा और परिवार का खर्च चलता है। फिर भी मुझे विश्वास है कि मैं अपना सपना जरूर पूरा करूंगी और सारे लोगों को दिखाऊंगी कि जीत तो सिर्फ कड़ी मेहनत, पढ़ाई के प्रति जुनून और हिम्ममत वालों की होती है। मैं जब भी गांव जाती हूं, मुझे लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं लगता है। वे सब मुझे शहरी कह कर ताने देते हैं और मानते हैं कि शहरी लड़कियों के लिए सुरक्षित नहीं हैं। सच्चाई यह है कि लड़कियों के लिए शहर और गांव, हर जगह समस्याएं हैं। पटना में हालत फिर भी उतनी बुरी नहीं है। पुरुषवादी समाज में स्कूल -कालेज जाती लड़कियों से छेड़छाड़ की जो आम समस्याएं हैं, वह पटना में भी होती हैं। पुलिस इसे रोक सकती है। लड़कियों का घर बैठना या गांव लौटना समस्या का हल नहीं है। मेरी कुछ दोस्तो की हालात तो बहुत ही खराब है। उनके साथ जो हुआ, वह तो बहुत ही बदतर था। उन्हें तो उनके शिक्षक ने ही तंग किया था, अभद्र व्यवहार किया था। ऐसी बात तो उन्होंने कुछ दोस्तों के अलावा किसी को नहीं बतायी थी। मां-बाप को तो बिल्कुल भी नहीं। यह हालात सिर्फ उनकी ही नहीं, उन सैकड़ों लड़कियों की होगी जो सिर्फ चुपचाप यह तमाशा देखती हैं और बदनामी के डर से किसी को बताती नहीं। मेरे साथ भले ही आज तक कुछ न हुआ हो, पर उन सहेलियों की हालत मुझे झकझोर देती है। आज भी उन्हें सिर्फ एक लड़की के अलावा कुछ भी नहीं समझा जाता। ऐसा क्यों होता है? आज हम इक्कीसवी सदी में हैं- जब हमारी राष्ट्रपति भी एक महिला ही है, फिर भी आखिर ऐसा कब तक होता रहेगा, क्या इसका कोई अंत नहीं है? कहने के लिए तो हमारे देश में 'महिला आयोग' तक है, जो महिलाओं की मदद करने के लिए है, पर वह भी सही ध्यान नहीं दे पा रही हैं। हां, अगर कोई आशा की किरण है, तो वह मीडिया जगत है।

दीपा,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

लड़कियों के हक में बदला है समय

नारी ही है शक्ति, लेकिन व्यवहार में हम देखते हैं कि इन्हें शिक्षा से वंचित कर दिया जाता है। आज फिर से समय बदला है। नारी हर जगह पर अपनी जगह बना रही है। चाहे वो रेलवे स्टेशन हो, चिकित्सालय, विद्यालय, बैंक, रेडियो स्टेशन या फिर कोई और जगह, नारी हर जगह मौजूद है। यह नारी शक्ति का प्रमाण ही तो है। दूसरी तरफ कुछ अप्रिय परिस्थितियां भी हैं। बाल विवाह और दहेज प्रथा के चलते लड़कियों को मुसीबत का सामना करना पड़ता है। एक घटना सासाराम जिले की है, जहां एक नाबालिग लड़की की शादी कराई जा रही थी। लड़की ने अपने पूरे समाज के सामने आकर उसका विरोध किया, और कहा ''बाबूजी पहले पढ़ाई, फिर सगाई'' यह एक ऐसा वाक्य था, जिसने सबको झुका दिया। फिर न सिर्फ एक अनुचित कार्य (बाल विवाह) होने से रुक गया, बल्कि उस लड़की की पढ़ाई जारी रह सकी। अच्छी बात है कि लड़कियां अपने हित के सवाल पर अड़ने लगी हैं। इतना ही नहीं ,नारी हर जगह पर अव्वल स्थान पा रही है, चाहे वो कोई प्रतियोगिता हो या खेल कूद सब में अव्वल स्थान पा रही है। 2008 की आई.ए.एस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने वाली गुड़गांव की महिला ही थी। इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है। गर्व है कि मैं एक लड़की हूं। नारी शिक्षा और मीडिया का बड़ा ही गहरा नाता है। जागरण समूह ने महिला सशक्तीकरण का मुद्दा जोरदार ढंग से बार-बार उठाया है।

श्वेता कुमारी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

औरतों ने हर क्षेत्र में खुद को साबित किया

ये मेरा अनुभव है कि लड़कियां हर चीज में सक्षम हैं, पर आज भी लड़कियों को हर चीज में दबाया जाता, कम समझा जाता है, उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। आज भी मेरे गांव में छोटी उम्र में मेरी कई सहेलियों की शादी कर दी गई, ताकि वे बड़ी होकर कोई गलती न कर बैठें और उसकी शादी में दहेज भी कम हो सके। इन सोच से नुकसान तो हम लड़कियों का ही है न? आज भी कितने मां-बाप के लिए बेटी पढ़े न पढ़े, पर बेटा जरूर पढ़ना चाहिए, ऐसा क्यों? इसके पीछे व्यावहारिक सोच यही है कि बेटा पढ़कर कमाएगा, परिवार का सहारा बनेगा, पर लड़की शादी कर चली जाएगी और दहेज भी देना पड़ेगा। वे यह नहीं समझना चाहते कि बेटा मां-बाप का पालन पोषण बुढ़ापे में करे ना करे, बेटी हमेशा मां-बाप का साथ देती है।

आज भी मैंने देखा है कि कई जगहों पर लड़कियों के पैदा होने पर पूरा परिवार उस मां को कोसने लगता है। नवजात कन्या को कोसा जाता है, पर क्या कन्या के बिना समाज चल सकता है? क्या लड़की इंसान नहीं? महिला को बेटा पैदा करने के लिए जबरदस्ती बार-बार प्रयास करने को कहां जाता है। इससे एक स्त्री का मानसिक और शारीरिक शोषण होता है। बाल विवाह के कारण कम उम्र में मां बनना भी उस पर भारी पड़ता है।

मुझे खुशी है कि आज आधुनिक समाज की धारा से कुछ परिवर्तन आया है। शिक्षा प्रणाली में सुधार आया है। आज अनेक प्रकार के संस्थान स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा के लिए सक्रिय हैं। वे उन्हें उनके अधिकारों से अवगत कराते हैं पर ये फायदा ज्यादातर शहर की महिलाओं को ही होता है। ग्रामीण महिलाएं आज भी उतनी शिक्षित नहीं कि इसका लाभ उठा सकें। आज हम लड़कियों और औरतों ने अपने आप को हर क्षेत्र में साबित किया है, चाहे वह राजनीति हो, खेल-कूद हो या पुलिस सेवा। एक लड़की अच्छी तरह से राज्य, समाज और देश को चला सकती है। लड़कियों का सबसे महत्वपूर्ण हथियार उनकी शिक्षा है। उन्हें अगर अवसर मिले पढ़ने का, तो उसका जरूर लाभ उठाएं। लड़कियों को उन महिलाओं जैसा बनना चाहिए जो आज एक मुकाम पर हैं।

रिचा कुमारी,
मगध महिला कॉलेज, पटना

महिलाओं की कमजोरी बन गई है उसकी सहनशक्ति

जब मैं इस दुनिया में आई तो मेरे कानों में सबसे पहले यही आवाज सुनाई दी कि मैं एक लड़की हूं। 'लड़की' शब्द सुनते ही मेरे परिवार को खुशी हुई या नहीं, यह तो मैं नहीं जानती हूं। उस समय मेरे लिए यह शब्द बिल्कुल ही अपरिचित था। धीरे-धीरे समय बीतता चला गया। जब मैं स्कूल जाने लगी तब मैंने यह बात समझा कि लड़की आखिर लड़की क्यों है? विद्यालय जाने के समय सौ हिदायतें कि समय से घर लौटना, बाहर कहीं नहीं घूमना, लड़कों के साथ बिल्कुल ही दोस्ती नहीं करना, लंच के समय लंच कर वर्ग में ही रहना, अच्छी लड़कियों से दोस्ती करना आदि आदि। मुझे तो उस समय यह समझ भी नहीं थी कि अच्छी और बुरी लड़कियां कौन-कौन होती हैं? जब भी मैंने अपनी इन सारी हिदायतों को मां से जानना चाहा, तो बदले में मुझे कहा गया कि तुम लड़की हो। यह लड़की शब्द सुनते ही मैं मां से उलझना शुरू कर देती जो मैं बिल्कुल भी नहीं चाहती थी। हर बार मां मुझे अधूरे जवाब दे पाती और मैं अपने सवालों के साथ टका सा मुंह लिए खड़ी रह जाती। अक्सर मैंने अपनी मां से पूछा है कि तुम भी तो एक लड़की हो। क्या कभी तुम्हारे मन में यह बात नहीं आई कि लड़की के लिए इतने सारे नियम क्यों बनाए गये हैं? मां कुछ नहीं कह पाती।

आज भी मैं इन सवालों के जवाब में भटक रही हूं। लेकिन मैंने अपने मन में यह ठाना है कि मैं अपने सवालों का जवाब अवश्य जानकर रहूंगी। हम लड़कियों, औरतों या महिलाओं की सबसे बड़ी कमजोरी उसकी सहनशक्ति है जो पुरुषों की सबसे बड़ी ताकत है। जिस दिन महिलाएं अपनी इस कमजोरी को छोड़ देंगी तब से महिलाओं (लड़कियों) को कोई अबला नहीं कहेगा। 'अबला' शब्द कह-कहकर ही उसे हमेशा तिरस्कृत किया जाता है।

मेरी उम्र सत्रह वर्ष ही है। मैं अभी कालेज की छात्रा हूं। अभी मुझे अपनी जिंदगी में बहुत कुछ देखना और सहना है। मैं एक लड़की हूं इस नाते मैं अपने परिवार की इज्जत, उनका मान-सम्मान सब कुछ हूं। मुझे अपनी पढ़ाई भी करनी है और घर का काम भी। कोई शिकायत नहीं है। मुझे यह सब काम करते हुए बहुत खुशी मिलती है और जब मेरे कामों की प्रशंसा होती है तो मुझे और भी खुशी मिलती है। पर दुःख इस बात के लिए है कि जैसे मुझे घरेलू कामों में लगाया जाता है, वैसे ही बाहरी कामों को क्यों नहीं करने दिया जाता है?

आज मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि 'जागरण पहल' द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जहां मुझे अपने सवालों का जवाब मिल रहा है। 'सपनों को चली छूने' कार्यक्रम के तहत लड़कियों को जागरूक और आत्मनिर्भर बनने को प्रेरित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में लड़कों, पुरुषों, महिलाओं, वृद्धों- सभी को समान रूप से सहभागी होन पड़ेगा। जब एक-एक हाथ मिलेंगे तभी तो हमारे उद्देश्य को साकार किया जा सकेगा।

कुमारी आरती,
मगध महिला कॉलेज, पटना

कन्या विरोधी है माहौल और विवाह व्यवस्था

जीवन में बहुत सी कठिनाइयां मिली हैं। मुझे तो ऐसा एहसास होता है कि लड़की होने के नाते ये सभी कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं। इन्हें झेलते हुए आज मैं यहां तक हूं। मुझे पढ़ने का बहुत दिल करता है। मम्मी-पापा पैसे देने में सक्षम भी हैं, लेकिन अपने से दूर नहीं रहने देना चाहते हैं। मेरे भैया ने कम पढ़ाई की है, फिर भी मम्मी-पापा उससे बहुत अच्छे से बातें करते हैं(लड़का होने के कारण)। भैया से ज्यादा पढ़ाई कर रही हूं फिर भी मुझे ज्यादा प्यार नहीं मिलता। दिल करता था कि मैं विज्ञान पढ़ूं लेकिन मेरे घर से समर्थन नहीं मिला। इससे ऐसा महसूस होता है कि लड़की होने के नाते हीं ऐसा होता है। मेरे सारे रिश्तेदार (जैसे चाचा-चाची, दादा-दादी)चाहते हैं कि घर की बेटी ज्यादा पढ़ाई न करे। इस कन्या विरोधी माहौल में भी पढ़ाई कर रही हूं। मैं घर का भी कोई काम करती हूं तो सोच-समझकर करती हूं। मेरी मम्मी बात-बात पर कहती है कि तुम लड़की हो।

लड़कियों को पहले समाज में श्रेष्ठ माना जाता था। जब लड़कियां जन्म लेती थीं, तो कहा जाता था कि घर में लक्ष्मी आई है। कारण यह था कि तब दहेजप्रथा बस रस्म तक सीमित थी। यह प्रथा ज्यादा से ज्यादा धन पाने की लड़के वाले की लिप्सा को तृप्त करने का बेशर्म बहाना नहीं बनती थी। अब तो हिंदू समाज में लड़कियों की शादी के नाम पर बढ़-चढ़ कर दहेज मांगा जा रहा है और बहुओं को क्रूर प्रताड़नाएं तक दी जा रही हैं। फिर भी, धर्म के मठाधीश मौन हैं। संस्कृति के रखवालों का ध्यान इस कुरीति की तरफ नहीं जाता। चूंकि लड़की की शादी में मांग के मुताबिक धन देना सामाजिक चलन के हिसाब से बाध्यकारी हो गया है, इसलिए लड़की का जन्म अमंगल माना जाने लगा है। प्रथा के दबाव की मजबूरी में कन्या भ्रूण हत्याएं हो रही हैं। जो जन्म लेती हैं, उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है। शादी के बाद लड़कियों को मूल परिवार से अलग होना पड़ता है। इस रिवाज के कारण वे भेदभाव का शिकार होती हैं। इसी वजह से भाई कैसा भी हो, उसे ज्यादा दुलार मिलता है। इस तरह स्त्री की बहुत सारी समस्याओं की जड़ अकेले हमारी वह विवाह-व्यवस्था है, जो पुरुष वर्चस्व या स्वामित्व का अंध समर्थन करती है। इसमें व्यापक सुधार की जरूरत है, पर आज समाज सुधारक हैं कहां? इसके लिए संघर्ष का बीड़ा खुद लड़कियों-महिलाओं को ही उठाना होगा। आगे का रास्ता कठिन है।

ललिता भारती,
मगध महिला कॉलेज, पटना

मैं भी लड़कों से कम नहीं

पापा को चार बेटियां रहने पर भी बेटा और बेटियों में कोई फर्क नहीं है। वे बेटियों को मानते और ख्याल रखते हैं। गांवों में उच्च शिक्षा की सुविधा नहीं रहने के कारण मैं रोज ट्रेन या आटो से कालेज जाती हूं। इस दौरान लड़कियों को तरह-तरह की मुसीबतों का सामना करना पड़ता है।

सपनों को चली छूने जैसे शब्द सुनकर हम सब लड़कियों का हौसला बढ़ गया है। मैं पापा को बेटों की तरह कुछ बन कर दिखलाऊंगी। मुझे बेटी होने का नाज है। मैं हर जन्म में बेटी ही रहना चाहती हूं। मुझे विश्वास है कि मैं भी लड़कों से कम नहीं हूं। पहले मुझे लगता था कि लड़की सिर्फ घर का ही काम कर सकती है, लेकिन इस प्रोग्राम(सपनों को चली छूने) को देखकर लगा कि लड़की बहुत कुछ कर सकती है।

राजकुमारी,
मगध महिला कॉलेज, पटना

शिवानी कुमारी, मगध महिला कॉलेज, पटना

रूढ़ीवादी परम्पराओं को तोड़ूंगी मैं

जब मेरा जन्म हुआ तो मेरे मां-बाप और परिवार के लोग खुश नहीं हो सके, क्योंकि मेरे जन्म के पहले मेरी दो बहनों का जन्म हुआ था। आम धारणा की तरह उनका भी मानना था कि वंश चलाने के लिए लड़के की जरूरत होती है। ये परंपरा सदियों से चलती आ रही है। हमारे खानदान में आज भी लड़कियों को लड़कों के कॉलेज या स्कूल में पढ़ने की इजाजत नहीं दी जाती। लड़कियों को बोझ समझा जाता है। उनका विचार है कि लड़कियों को सिर्फ घर के काम करने चाहिए। मुझे भी इजाजत नहीं मिली, पर मेरा भाई रोज बाहर खेलने जाता है।

एक बार की बात है, मैंने मम्मी से कहा कि मैं भी बाहर खेलने जाऊं, क्योंकि मुझे क्रिकेट खेलना बहुत पसंद था। मम्मी ने मुझे नहीं जाने दिया। मेरे भाई को वह कहीं भी बाहर जाने की अनुमति दे देती हैं। जब कॉलेज में एडमिशन की बात आई तो मैंने कहा कि मम्मी मैं भी बाहर जाकर आई.ए.एस बनने की तैयारी करना चाहती हूं। मेरा सपना था कि मैं भी आई.ए.एस ऑफिसर बनूं। 12वीं में मैंने टॉप भी किया था। फिर भी मेरे सपने को कुचल दिया गया। क्या लड़की होना अभिशाप है? मेरे परिवार में मेरे भाई को दिल्ली में रहकर पढ़ने की अनुमति भी मिल गई।

अगर मैं चाहूं तो खेल नहीं सकती। किसी से बाहर निकलकर बात नहीं कर सकती। अगर घर में कोई मेहमान आ जाए तो मैं ही चाय या पानी दूंगी। इसके लिए मेरे भाई को कभी नहीं बोला जाता। हमारे गांव में अभी भी लड़कियों को पढ़ने के लिए स्कूल नहीं भेजा जाता। हमारे परिवार में ये समझा जाता है कि लड़कियां पढ़-लिख कर क्या करेंगी? इन्हें तो शादी करके बच्चे की परवरिश ही करनी है न। लड़की के पैदा होने पर ही हमारे घर में मातम का माहौल छा जाता है। पैदा होते ही उनकी शादी की चिंता लोग करने लगते हैं। आज समाज इतना बदल रहा है। फिर भी हमारे घर में लड़कियों के सपने को कुचलकर लड़कों को बढ़ावा दिया जाता है।

हमारे घर में थोड़ा बदलाव आया है। अब हमारे घर में लड़कियों को भी लड़कों के बराबर आका जाता है। इसमें मेरे पिता की भूमिका प्रमुख है। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम जो बनना चाहती हो, मैं तुम्हारे सपने को साकार करने की कोशिश करूंगा। ये बदलाव आज समाज में नारी सशक्तिकरण के कारण आया है। अब मैं भी किसी प्रतियोगिता में भाग ले सकती हूं। मेरे घर में अब लड़कियों को बाहर जाकर पढ़ने की इजाजत है। मेरे पापा की सोच काफी बदल गई है। मैं भी लड़की होकर पूरे देश में अपना परचम लहराऊंगी और समाज की उन रूढ़ीवादी परम्पराओं को तोड़ूंगी, जो लड़के और लड़कियों में भेदभाव करते हैं।

एकता कुमारी,
मगध महिला कॉलेज, पटना

अधिकारों और अवसरों का उपयोग करें लड़कियां

जब मैं तीन वर्ष की थी तभी मैंने पढ़ाई करनी शुरू की थी। मेरे माता-पिता ने पूरा समर्थन किया, उत्साहित किया और मैं आगे बढ़ती रही हूं। जब मैं छोटी थी, तभी मैंने यह संकल्प कर लिया था कि मुझे पढ़ना है, केवल पढ़ना है, इसलिए भी मैं आगे बढ़ती रही हूं। मैं एक लड़की हूं, इस बात से मैं दुःखी नहीं बल्कि गौरवान्वित महसूस करती हूं। जो लड़कियां कर सकती हैं, मुझे नहीं लगता कि पुरुष उसे अच्छी तरह निभा पाते हैं।

आज तक मैं देखती आई हूं कि हमारे समाज में लड़कियां पुरुष से बहुत पीछे नहीं हैं। कुछ क्षेत्र में लड़कियों की स्थिति अच्छी नहीं है। मैं भी एक लड़की हूं। मेरी भी एक दोस्त थी, जिसकी शादी उसके माता-पिता ने दशम् वर्ग पास करने के बाद ही कर दी। मैं बहुत दुःखी थी क्योंकि वो आगे भी पढ़ना चाहती थी। उसने अपने माता-पिता को समझाया तथा वे मान गये। आज वह मेरे समान बी.ए. पार्ट-।। में पढ़ रही है। यह हालात से संघर्ष करने का एक उदाहरण है।

अतः मुझे नहीं लगता कि लड़कियां कमजोर होती हैं। वे हर क्षेत्र में योगदान दे रही है। चाहे वह समाजिक क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो, सांस्कृतिक क्षेत्र हो, राजनीतिक क्षेत्र हो। सभी क्षेत्रों में लड़कियां आगे रही हैं। लड़कियों को आगे लाने के लिए हमारी सरकारों ने भी कई समितियों और आयोगों का गठन किया है। पहले कुछ और था और आज की स्थिति कुछ और है। सरकार ने लड़कियों को स्वतंत्रता, समानता शिक्षा सभी तरह के अधिकार भी दिए हैं। अतः मेरा मानना है कि लड़कियां अधिकारों और अवसरों का सही ढंग से उपयोग करें तो वे कभी भी पीछे नहीं रह सकती हैं।

अखंड मोहनी,
मगध महिला कॉलेज, पटना

स्त्रियों को मिले बराबरी का वास्तविक अधिकार

मैं एक लड़की हूं- यह विषय मुझे बहुत अच्छा लगा। इसके जरिये मुझे अपने विचारों को प्रकट करने का एक सुनहरा अवसर प्रदान किया गया है। स्त्री-पुरुष के मिलन से ही स्त्री बच्चे उत्पन्न करती है। इसमें जितनी भूमिका स्त्री की होती है, उतनी ही पुरुष की। उन सब के बावजूद हमारा समाज केवल कन्याओं के पैदा होने पर स्त्रियों को ही दोषी मानता है। इस अवैज्ञानिक धारणा के चलते बेटा चाहने वाले परिवारों में स्त्रियों को प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। 70 प्रतिशत लोगों की यही विचारधारा है। उन्हें इसके विरुद्ध जागरूक करना होगा। मेरे कॉलेज में दो दिन से इस विषय पर बहुत समझाया जा रहा है। दिखाया जा रहा है कि किस तरह लड़कियां आजकल के समाज में आगे बढ़ रही हैं। यह सब देखकर मुझे अपने लड़की होने का बहुत गर्व है। मैं भी आने वाले कल में कुछ न कुछ जरूर कर दिखाऊंगी और अपने पूरे परिवार का नाम रोशन करूंगी। मेरे पापा मुझे बहुत मानते हैं। मम्मी से ज्यादा पापा ही मेरे ऊपर विश्वास करते हैं। इस पर बहुत गर्व है क्योंकि हमारे देश में एक से बढ़कर एक महिलाएं हुईं, जिन्होंने अपना ही नहीं बल्कि पूरे भारत देश का नाम रौशन किया- जैसे की रानी लक्ष्मीबाई। भारत का संविधान बनाने में भी पांच महिलाओं का योगदान रहा लेकिन इनके नाम नेपथ्य में हैं। देश की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटील तक अनेक महिलाए मुझे लड़की होने पर गर्व करने का अवसर देती हैं। मैं आगे चलकर मंत्री या अगर कुछ बनूं, तो पूरे समाज को जागरूक करूंगी। उन्हें बताऊंगी कि आप सब मिलकर स्त्री को बराबरी का वास्तविक अधिकार दें। ऐसे कानून बनाऊंगी कि शादी में दहेज लेने वालों पर कड़ी कार्रवाई हो। मैं ऐसे कानून का पालन सुनिश्चित करूंगी। धीरे-धीरे समाज बदल रहा है, अभी काफी वक्त लगेगा।

मुझे तो बहुत कुछ लिखने का मन है लेकिन समय की पाबंदी के कारण बहुत से विचारों को नहीं लिख पा रही हूं लेकिन लड़की होने का मुझे बहुत गर्व है। मेरे मम्मी-पापा मुझे बहुत मानते हैं इसलिए आगे की पीढ़ी में पुरानी परंपरा को जरूर बदलूंगी यह मेर वादा है। मैं अपने सपनों को छूने की कोशिश जरूर करूंगी तथा मंजिल को जरूर पाउंगी। अगर कुछ नहीं भी बनी, तो किसी संस्था में महिलाओं को जागरूक करने का काम करना पसंद करूंगी।

रागनी राय,
महिला कॉलेज, खगोल, पटना

मैं किसी पर बोझ नहीं बनना चाहती

मेरा सपना है कि मैं उस ऊंचाई को छू लूं और दुनिया को दिखा दूं कि लड़की भी किसी लड़के से कम नहीं है। मैं चाहती हूं कि मैं मन लगाकर पढ़ूं और अपनी जिन्दगी को उस मुकाम पर पहुंचा दूं कि मेरे मम्मी-पापा फक्र महसुस करें। मैं अपनी जिन्दगी को खुद चलाना जानती हूं। तकदीर खुद लिख सकती हूं। जो मैं सोचती हूं, बस वही करती हूं। मैं गांव के लोगों को नहीं देखती कि वे क्या कह रहे हैं? मैं किसी पर बोझ नहीं बनना चाहती। मैं आज भी अपने लिए थोड़ें बहुत पैसे कमा लेती हूं। सिलाई करती हूं और सिलाई सिखाती हूं। बच्चों को पढ़ाती हूं। इससे जो पैसा होता है,पढ़ाई के लिए लगाती हूं। कभी कम पड़ जाए तो पापा से पैसे ले लेती हूं। अपनी तकदीर को बदल दूंगी और सब लड़कियों को भी सिखाऊंगी कि अपनी मेहनत से वे सपनों को छू सकती हैं। इसमें हमारी महिला कॉलेज की टीचर मुझे सहयता दे रही हैं।

रुचि कुमारी,
महिला कॉलेज, खगोल, पटना

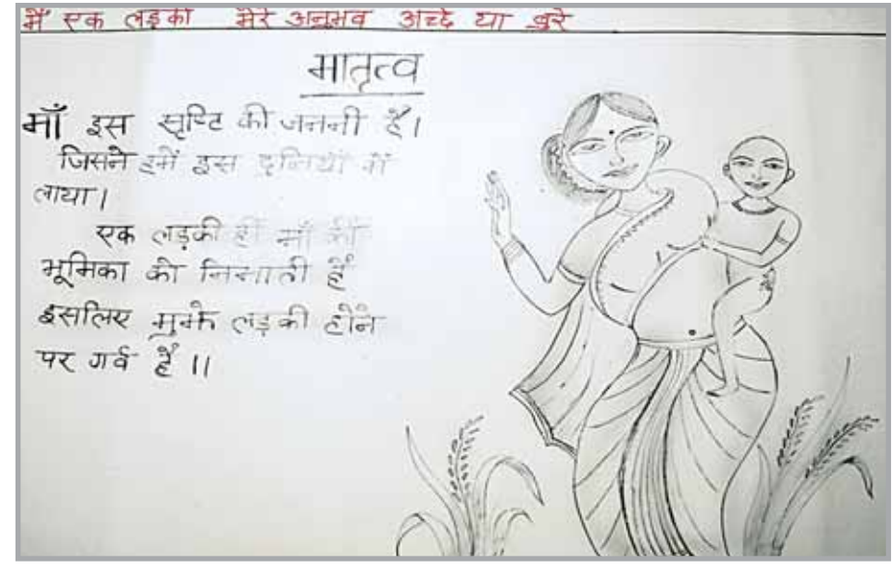

दीपमाला भारती, मगध महिला कॉलेज, पटना

समाज बदला है पर लिंग भेद कायम है

लड़के को उसके माता-पिता पढ़ने के लिए बाहर भेजते हैं। अच्छे-अच्छे कपड़े और बढ़िया खाना देते हैं, जबकि लड़कियों के लिए सिर्फ रूखा-सूखा खाना। कहते हैं कि तुम लड़की हो इसलिए सिर्फ घर का काम करने के लिए हो, बाहर के काम करने के लिए लड़के हैं। इस भेद-भाव से लड़कियों के दिल पर क्या बीतती है, यह कौन सोचता है? लड़की (यानी पराया धन) मान कर उसे प्रताड़ित किया जाता है। लड़के के जन्म पर खूब मिठाइयां, बधाइयां। लड़की के जन्म पर मायूसी। यह फर्क दहेज वाली विवाह व्यवस्था के चलते किया जाता है। ये रीति-रिवाज, पर्दा प्रथा सब तो समाज की लिंगभेद आधारित व्यवस्था का हिस्सा हैं। इन सब से लड़ना होगा, तभी जाकर इन कुरीतियों को हटाया जा सकता है। तभी देश में लड़कियों के अस्तित्व को महत्व मिलेगा। वे खुली हवा में सांस ले पाएंगी। समाज बदला है, लोगों की सोच बदली है, लड़कियां पढ़ने भी जा रही हैं, लेकिन लड़कियों को हेय दृष्टि से देखने वाला नजरिया नहीं बदला है। नीचे तबके के लोग आर्थिक अभाव के कारण अपनी बेटी को पढ़ा नहीं पाते हैं। ऐसे परिवार की लड़कियों को अपनी इच्छाओं से समझौता करना पड़ता है। हर हाल में लड़की ही समझौता करे, लड़के नहीं- यह सूरत बदलनी चाहिए।

जूली कुमारी,
महिला कॉलेज, खगोल, पटना

प्रिति कुमारी, मिर्जा गालिब कॉलेज, गया

क्या लड़की होना गुनाह है?

मैं अभी इंटर की पढ़ाई कर रही हूं। कम्प्यूटर भी सीख रही हूं। मेरा सपना है नर्स बनने का। लेकिन दुख की बात है कि लोग लड़की को हमेशा लड़कों से नीचा समझते हैं। बेटा और बेटी के लालन-पालन और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देने में अंतर नहीं होना चाहिए। इसके विपरीत लड़कों को पढ़ने के लिए पहले और बेहतर स्कूल में भेजा जाता है, जबकि लड़कियों को घर में रखकर काम करवाया जाता है। उन्हें पढ़ने नहीं दिया जाता । लड़कियां कम उम्र में ही ब्याह दी जाती हैं। हालांकि शहरीकरण और विकास के साथ अब हमारे देश में काफी बदलाव आया है।

माता-पिता बेटा-बेटियों में ज्यादा भेदभाव नहीं करते हैं। अनेक परिवारों में दोनों को एक समान पढ़ाई-लिखाई व रहन-सहन का मौका मिलता है। इसके फलस्वरूप पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या बढ़ रही है। लोग हम जैसी लड़कियों को आगे बढ़ने में सहायता कर रहे हैं। लड़कियां डॉक्टर, नर्स, इंजीनियर, पुलिस, वकील, टीचर, पायलट आदि बन कर आगे बढ़ी हैं। मैं एक लड़की हूं। इसी बात पर गर्व है कि आगे बढ़ने वाली लड़कियों को देखकर मेरे भी मम्मी-पापा मुझे आगे पढ़ने-लिखने में सहायता करते हैं। मेरी मम्मी बहुत अच्छी हैं। वे हमेशा कहती हैं कि मेरी बेटी भी पढ़-लिखकर कुछ बनेगी। मेरी मां मुझे आर्शीवाद से आगे बढ़ाती हैं और पापा प्यार के साथ-साथ पढ़ाई के खर्च देकर।

लेकिन एक बात हमेशा लड़कियों का पीछा नहीं छोड़ती है। वह है असुरक्षा का भाव। कहीं हमलोग अकेले नहीं जा सकते हैं। हमेशा लड़के पीछे पड़ जाते हैं। अभद्र टिप्पणी का सामना करना पड़ता है। ऐसे ही समय में बड़ा आफसोस होता है कि मैं आखिर लड़की क्यों हूं? आखिर लड़कियों के साथ ही ऐसा क्यों होता है? क्या लड़की होना गुनाह है? मैं इस बात से हमेशा परेशान रहती हूं। इसके बावजूद परिवार और सरकार जिस तरह से लड़कियों को आगे बढ़ने में सहायता कर रही है, उससे हौसला बढ़ा है। पुरुष प्रधान व्यवस्था की चुनौतियों के बावजूद मुझे लड़की होने पर गर्व है।

रानी कुमारी,
महिला कॉलेज, खगोल, पटना

नारी सशक्तिकरण के लिए बिहार में अच्छी पहल

मैं एक लड़की हूं। मेरे मम्मी-पापा मेरी पढ़ाई में बाधा नहीं डालते। मेरे विचार से नारी शिक्षा बहुत जरूरी है। नर और नारी समाज के दो पहिए हैं। अगर एक पहिया कमजोर हुआ तो गाड़ी ठीक से नहीं चलती है। हमारे देश में नारी को देवी कहा जाता है। गार्गी, मैत्रेयी, विद्यातमा जैसी विदुषी नारियों ने अपना ज्ञान का सिक्का जमाया, लेकिन मध्ययुग में नारी शिक्षा की धारा सूखी रह गई। कुछ नारियों ने अपने ज्ञान का विकास किया, लेकिन उस दौर में आक्रमणकारियों के भय से लड़कियों को पर्दा में रहने के लिए बाध्य किया गया। फलस्वरूप भारतीय समाज का विकास रुक गया। आज नारियां हर क्षेत्र में परचम लहरा रही हैं। इसके बावजूद दहेज प्रथा हमारे समाज पर कलंक है। इसे रोकने के लिए लड़के और लड़कियों को बराबर सहयोग करना होगा। दहेज पाने के लिए लोग लड़कियों(बहुओं)की निर्ममता के साथ हत्या कर रहे हैं या इसके भय से बेटियों को जन्म ही नहीं देना चाहते हैं। लिंग चयन की हत्या से स्त्री-पुरुष अनुपात बिगड़ रहा है, लेकिन यदि दहेज प्रथा बंद नहीं हुई तो लिंग चयन को रोक पाना भी कठिन होगा।

नारी सशक्तीकरण के लिए अनेक तरह की योजनाओं को प्रारंभ किया गया है। महिला आयोग का गठन किया गया। स्वरोजगार से जुड़ी महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। पंचायत में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण तथा स्कूली लड़कियों को पोशाक और साइकिल तक देकर बिहार सरकार महिलाओं को आगे बढ़ाने में योगदान कर रही है। यह अच्छी शुरूआत है। लड़कों और लड़कियों में बरते जाने वाले भेदभाव से उनके मानसिक तथा शारीरिक विकास में रूकावट होती है। आज लड़कियों की स्थिति में बहुत हद तक सुधार आया। हमें ग्रामीण क्षेत्रों में नारी शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए, क्योंकि एक पढ़ी-लिखी नारी ही बेहतर परिवार और समाज बना सकती है।

रेनू कुमारी,
महिला कॉलेज, खगोल, पटना

शिक्षा से वंचित हैं अधिकतर ग्रामीण लड़कियां

लड़की होने पर मुझे गर्व होता हैं, अब मैं ये नहीं जानती कि समाज को मुझ पर गर्व है कि नहीं। समाज तो हमेशा लड़कियों के जन्म पर दुखी हो जाता है। लड़कियां भी लड़कों से कदम-से-कदम मिलाकर चल रही हैं, बल्कि बेहतर काम करती हैं फिर भी हिंदू समाज में जारी दहेज प्रथा के चलते लड़कियों की स्थिति दोयम स्तर की बनी हुई है। फिर भी अच्छी बात है कि पढ़े-लिखे अभिभावक अपने बेटे-बेटी में कोई फर्क नहीं करते। मम्मी-पापा ने मेरे भाई-बहनों या मुझमें आज तक कोई फर्क नहीं किया है। मैंने एक अच्छे परिवार में जन्म लिया, इसलिए सौभाग्यशाली हूं। लेकिन मैं जब उन लड़कियों को देखती हूं, जो गरीब और कम पढ़े-लिखे परिवार में जन्म लेती हैं, तो मुझे बहुत ही दुःख होता है। वे संसाधन की कमी या लिंगभेद के चलते पढ़ नहीं पातीं। मै ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगी की उन्हें भी थोड़ा सहयोग करें। मुझसे जितना हो पाता है, उतनी तो मदद करती हूं। अपनी पुरानी किताबें, कुछ पेंसिलें, कॉपी इत्यादि गरीब लड़कियों को देती हूं। उन्हें कुछ अपने पुराने कपड़े भी देती हूं, ताकि वो किसी भी तरह पढ़ सकें।

मैं एक बार अपने गांव गई हुई थी, वहां पर मैंने देखा कि अधिकांश लड़कियां स्कूल नहीं जाती हैं और उनके माता-पिता उनकी शादी बहुत ही जल्द कर देते हैं, जबकि उनके माता-पिता गरीब भी नहीं हैं। यह देख कर मुझे बहुत ही दुःख हुआ, मैंने उन लड़कियों को यह समझाने की कोशिश की कि आजकल सभी लड़कियां पढ़ना-लिखना चाहती हैं ताकि वे किसी पर बोझ न बनें, इसलिए तुम लोग भी स्कूल जाओ। उनका कहना था कि स्कूल बहुत दूर है और इतनी दूर हमारे मां-बाबूजी हमें पढ़ने के लिए नहीं भेजेंगे। मैंने उनसे कहा कि तुम लोग अपने मां-बाबूजी को समझाओ कि जब तक हम पढ़ेंगे-लिखेंगे नहीं, तब तक हमें अच्छा वर नहीं मिलेगा, और जब हम इतनी दूर स्कूल जाने को तैयार हैं तो आपको क्या परेशानी है? फिर बिना पढ़े-लिखे लोग हमेशा ठगे जाते हैं, उन्हें कोई भी उल्लू बना देता है। तब जाकर वे स्कूल जाने के लिए तैयार हुई और अपने माता-पिता को भी समझाया कि वे उन्हें स्कूल भेजने के लिए तैयार हो जाएं। उन लड़कियों को पढ़ने का महत्व समझा कर मैं बहुत ही खुशी महसूस कर रही हूं। सरकार को चाहिए कि वह उन स्कूलों में शिक्षक उपलब्ध करवाए जहां सभी लड़कियां शिक्षा प्राप्त कर सकें। आधुनिक युग लड़कियों का है। जब राष्ट्रपति के पद पर एक औरत हो सकती है तो किसी भी क्षेत्र में ऊंचे पदों पर लड़कियां हो सकती हैं, लेकिन इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए योग्य बनना होगा।

नीतू कुमारी,
अनुग्रह नारायण कॉलेज, पटना

लड़की होने के कारण मेरे ऊपर सारी पाबंदियां हैं

मैं अपने परिवार में दो बहनों में से छोटी हूं। जब मेरा जन्म हुआ तब मेरे घर में खुशी नहीं हुई क्योंकि घर वाले एक लड़का चाहते थे। यह अनुभव मुझे मम्मी ने बताया। जब मैं थोड़ी बड़ी हुई तो मेरे भाई का जन्म हुआ। घर में खुशी आ गयी। मेरे जन्म होने के तुरंत बाद ही पापा का प्रमोशन हो गया और उसके बाद भाई का भी जन्म हुआ। तब से मेरे पापा-मम्मी, दादी-बुआ सब कोई मुझे प्यार करने लगे। जब मैं दस से बारह साल की हुई, तो मेरे शरीर में परिवर्तन होने लगा। दसवीं कक्षा तक जाते ही मैं एक पूर्ण लड़की के रूप में हो गई। इसके बाद से मेरे ऊपर बहुत सारा प्रतिबंध लागू हो गया। मेरी मम्मी ने मुझे पहले की तरह स्वतंत्र नहीं रहने दिया। अब मैं जब भी कहीं जाती हूं तो मेरे मम्मी-पापा (सुरक्षा के लिहाज से) मुझे अकेले जाने से रोकते हैं और उस जगह की विस्तृत जानकारी लेने के बाद ही वहां जाने के लिए कभी-कभी आज्ञा देते हैं। जब मैं कॉलेज से भी कभी देर से घर पहुंचती हूँ तो भी काफी पूछताछ होने लगती है। ऐसे मौके पर मैं कभी-कभी अपने-आप को लड़की होने की वजह से बहुत ही कोसती हूँ कि मेरे ऊपर इतनी सारी पाबंदियां क्यों हैं। इस आधुनिक युग में कोई भी लड़की शिक्षा के माध्यम से अपने को और परिवार की मानसिकता बदलने की कोशिश करती है। मैं भी जब अपने घर में अपने मम्मी-पापा को बताती हूं कि देखो वह लड़की इंजीनियर बनी है या वह डॉक्टर बनी है या फिर अन्य सारे पद पर गई है, जहां पहले लड़कियों को जाने से रोका जाता था, तब मेरे माता-पिता भी सोचते हैं और मेरा उत्साह बढ़ाते हैं। लेकिन जहां तक मेरे लड़की होने की बात है, मैं कभी-कभी घर से स्वतंत्रता तो पा लेती हूं, लेकिन कभी-कभी पुरानी मानसिकता वाला समाज किसी-किसी बात को लेकर घर को मेरे खिलाफ भड़काने में सफल हो जाता है। अतः मैं खुद को नियंत्रित रखती हूँ। मैं ग्रेजुएशन करके बैंक में प्रोबेशनरी आफिसर बनना चाहती हूं।

मैं एक लड़की हूं तो मेरे ऊपर इतनी सारी पाबंदियां है, जो मुझे आगे बढ़ने को रोकती है। मैं हर मुश्किल का सामना करने के लिए तैयार हूं और एक शिक्षित-सफल नारी बनना चाहती हूं।

जब तक लड़कियां मिलकर अपने आप को जागरूक नहीं करेंगी तब तक समाज और मेरा देश विकसित नहीं होगा। हम सभी लड़कियां मिलकर नारी सशक्तीकरण की मुहिम को तेज कर भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाएँगे।

ज्योति कुमारी,
अनुग्रह नारायण कॉलेज, पटना

लड़कियों को आजादी क्यों नहीं मिलती?

कहा जाता है कि जहां महिलाएं सम्मान पाती हैं, वहां देवताओं (सकारात्मक ऊर्जा) का निवास होता है। दूसरी तरफ लड़की होने के कारण आज मैं ये देख रही हूं कि समाज में महिलाओं और लड़कियों की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। पुरुष प्रधान समाज में लड़कियों को पैरों की जूती के समान समझा जा रहा है। पर मैं ये सवाल समाज के हर नागरिक से करती हूं कि ऐसा क्यों? क्यों नहीं लड़कियों को ऊंचा स्थान दिया गया? क्या लड़की में वो हुनर नहीं कि अपने बल पर कुछ कर सके?

मैं भी एक लड़की हूं और मैं अपने हक को पाने के लिए दायित्व को निभाने की क्षमता रखती हूं। और जरूरत पड़े तो अपने हक के लिए लड़ना भी जानती हूं। आज लड़कियां कई ऊंचे स्थान पा चुकी हैं, फिर भी हमारा घिनौना समाज लड़की को दबा कर रख देता है। अगर बेटा की जगह बेटी होने वाली रहती है, तो इसकी भ्रूण हत्या करवा दी जाती है। लड़की होने के नाते जब मैं भी थोड़ा अच्छे ढंग से कपड़े पहनकर निकलती हूं तो दो-चार लड़के पीछे पड़ जाते हैं। छेड़खानी करते हैं। ऐसा क्यों होता है या होने दिया जाता है? मुझे लड़कों के साथ-बातचीत करने की इजाजत नहीं दी जाती है। बाहर आने जाने पर प्रतिबंध लगाया जाता है। अगर कुछ पाने की चाह रखती हूं, तो इसे खत्म कर दिया जाता है। क्यों नहीं लड़कियों को आजादी मिलती है? एक लड़की होने के नाते मैं हर संभव प्रयास करती हूं कि लड़कों के मुकाबले आगे रहूं। लिंग आधारित फर्क करना छोड़ दें, तभी हमारा समाज, हमारा देश एक विकसित समाज बन सकता है।

रिंकी कुमारी,
गंगा देवी महिला कॉलेज, पटना

बाधाओं के बावजूद नदी से प्रेरणा लेती हूँ

लड़की हूं मैं, मगर प्रकृति की इस देन से कभी बहुत खुश हो जाती हूं तो कभी दुख होता है। कभी सोचती हूं कि क्या ईश्वर ने मुझे संघर्ष के लिए ही बनाया है? मैं काफी चितनशील हूं इसलिए जब भी मेरे जीवन में कोई घटना घटती है तो मैं उसे अपनी पंक्ति में व्यक्त करती हूं। मैं सब सहकर चुप रहती हूं। मेरा रास्ता काफी कठिन है। घर से लेकर समाज तक भेदभाव का एहसास होता है। अपने घर में भाई से पढ़ाई में सदैव अच्छी रही पर जितनी सुविधा मेरे भाई को दी गई वो मुझे नहीं मिली। मैंने मैट्रिक तक सरकारी स्कूल से पढ़ कर बिना किसी ट्यूशन के पास की, वो भी प्रथम श्रेणी में। मेरे पिता एक सरकारी कर्मचारी हैं। उन्होंने मेरे भाई को ट्यूशन की सुविधा प्रदान की, पर मुझे इण्टर में भी यह सुविधा नहीं मिली। बी.ए. अर्थशास्त्र में मैने अपने वर्ग में सबसे अधिक अंक प्राप्त किए। मन से सोचती हूं कि नदी भी तो इसी तरह से कितने ही कठिन रास्तों को पार कर सदैव बहती रहती है। उसके मार्ग में कितनी ही बाधाएं आए वो पत्थर-रोड़ को हटा देती है। मैं भी नदी से प्रेरणा लेती हूं और उनकी तरह सदैव अपने धुन में बहना चाहती हूं।

भावना,
जे.डी.विमेंस कॉलेज, पटना

विजया लक्ष्मी, मगध महिला कॉलेज, पटना

हर जगह होती है छेड़खानी

मैं इस समाज में एक स्वतंत्र नागरिक की तरह अपना जीवन व्यतीत करना चाहती हूं लेकिन लड़कियों को आज भी ऐसी आजादी नहीं मिल पाती। उन्हें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। गांवों में लड़कियों को आज भी शिक्षा से वंचित रखा जाता है, जबकि जीवन में यह काफी जरूरी है। उन्हें लड़कों से हर चीज में काफी पीछे रखा जाता है। उन्हें घर से अकेले निकलने की अनुमति नहीं दी जाती। बस, टेम्पू या कोई भी अन्य सवारी हो, कालेज या स्कूल जाते समय लड़कियों के साथ आज भी काफी छेड़खानी की जाती है। जैसे लड़के अपने घर से मस्त हो कर निकलते हैं, वैसे ही हम लड़कियां चाहती हैं कि हम भी उसी प्रकार अपने घर से निकले।

मेरा अनुभव यह है कि आज की नारी लड़कों से काफी आगे बढ़ रही है। दूसरी तरफ ऐसा देखा जाता है कि लड़कियों को काफी प्रताड़ित किया जाता है। मैं एक लड़की हूं और मेरा अनुभव यह है कि लड़कियों को भी लड़कों की तरह सम्मान प्राप्त हो और उन्हें भी अपना हक प्राप्त हो।

रीतु कुमारी,
ए.एन. कॉलेज, पटना

ज्योति कुमारी, जे.डी. विमेन्स कॉलेज, पटना

समाज की कठपुतलियां नहीं हैं लड़कियां

मैं एक साहसी लड़की हूं। जब मैं बड़ी हुई तो मुझे लगा लड़की का जीवन कितना कष्टमय होता है। जब 10वीं पास की, तो मैं बाहर पढ़ना चाहती थी लेकिन कोई मुझे बाहर नहीं जाने देना चाहता था और बार-बार यह एहसास कराया जाता कि तुम लड़की हो। क्या लड़कियों को खुल कर जीने का कोई हक नहीं है? मैंने अपने पापा से कहा कि जब मेरा भाई बाहर पढ़ सकता है, तो मैं क्यों नहीं? आज लड़कियां बहुत कुछ कर रही हैं, तो मुझे भी कुछ करना है, ताकि अपने पैर पर खड़ी हो सकूं और मुझे किसी से कुछ मांगना न पड़े। इसके बाद पापा ने मुझे कहा कि ठीक है, हम देखते हैं।

मैं लड़कों के कालेज में पढ़ना चाहती थी लेकिन पापा ने कहा कि लड़कियों के कालेज में पढ़ना है और जहां मैं रहती थी वहां लड़कियों के कालेज में अच्छी पढ़ाई नहीं होती थी। घर के लोगों ने कहा कि लड़कों के कालेज जाकर बिगड़ना है क्या? आखिर क्यों, इस जीवन में जितना हक लड़कों का है, उतना ही हक लड़कियों का नहीं है। तब मैंने बहुत कोशिश की तब जाकर मेरा नामांकन हुआ और अब मैं 12वीं पास कर चुकी हूं। मैं बीएससी बायोटेक द्वितीय वर्ष में हूँ। और बहुत पढ़ना चाहती हूं।

"मैं भूत नहीं, वर्तमान नहीं
मैं तो भारत की भविष्य हूं।"

और मैं आगे चलकर शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करना चाहती हूं। आज भी मैंने अपने गांव में देखा कि कम उम्र में ही लड़कियों की शादी हो जाती है। उन्हें बताना होगा कि वे भी शक्तिशाली हैं, उन्हें भी लड़कों की तरह कुछ करना होगा। उन घरों में जाकर मैं यह बताना चाहती हूं कि लड़कियां पुरुषपरस्त समाज की कठपुतलियां नहीं हैं, वे भी आगे बढ़ें। मैने देखा कि रास्ते चलते लड़कियों को छेड़ा जाता है। अगर लड़कियां आवाज उठाएं तो ऐसा कुछ नहीं होगा। दुर्भाग्यवश, मैंने अनुभव किया है कि लड़की ही लड़की की बुराई करती है और अपमान करती है। पहले लड़कियां ही मिलकर रहें। उसके बाद सब ठीक हो जाएगा।

आज मैं जो भी हूं अपने माता-पिता की बदौलत हूं। मैं उनके सपनों को साकार करना चाहती हूँ। मैं लड़कियों पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ लड़ने की कोशिश करूंगी।

प्रेरणा कुमारी,
ए.एन. कॉलेज, पटना

क्या इस दहेज के पैसे से उनकी जिंदगी कट जाती है?

मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि मैं एक लड़की हूं। लड़की को साक्षात मां लक्ष्मी के अवतार का दर्जा दिया जाता है। लड़की शादी से पहले अपने मां-बाप, भाई-बहन को संवार कर रखती है और शादी के बाद ससुराल के लोगों का ध्यान रखती है। वो अपना कर्तव्य कभी नहीं भूलती। यहां तक तो लड़की होना ठीक है। ये सारी जिम्मेदारियां निभाना हमें अच्छा लगता है, पर मन में सवाल भी उठते हैं। क्या सारी जिम्मेदारियां सिर्फ लड़की के लिए ही बनी हैं? मुझे सारे संसार का तो नहीं पता, पर मैं बिहार में रहती हूं। यहां लड़की की जो स्थिति है, वो बहुत दयनीय है। बहुत विकास हुआ है, पर अभी भी बहुत से परिवार ऐसे हैं, जो पिछड़े हुए हैं। जो लड़कियों को पढ़ाना नहीं चाहते। बाहर नहीं भेजना चाहते। पाबंदी रखते हैं अर्थात् लड़कों की अपेक्षा उन्हें बहुत कम छूट देते हैं। अगर मां-बाप ने अपनी बेटी को पढ़ाया भी तो थोड़ा-बहुत और जल्दी से उसकी शादी कर दी और सोच लिया कि चलो भाई बेटी की शादी करना मेरी जिम्मेदारी थी, जिसे मैंने निभाया। पर क्या वे ये नहीं सोचते कि क्या बेटी के प्रति मेरी इतनी सी जिम्मेदारी थी। क्या लड़की पढ़ लिख कर इंजीनियर डॉक्टर नहीं बन सकती? क्या लड़की बाजार नहीं जा सकती है? क्या लड़की क्रिकेटर नहीं बन सकती है, जो इतनी जल्दी उनकी शादी कर उनके महत्वाकांक्षा को खत्म कर दिया है। क्यों, क्या उन्हें सपने देखने का हक नहीं है? लड़के वाले दहेज क्यों मांगते हैं? क्या इस दहेज के पैसे से उनकी सारी जिंदगी कट जाती है? क्या लड़की के मां-बाप को अपनी बेटी को पालने में खर्च नहीं होता? इसी दहेज की वजह से परिवार हमें बोझ समझा जाता है और भाव यह होता है कि इसे जितना जल्दी निपटाओ उतना ही बेहतर है। इसी के चलते होते हैं बाल विवाह या लिंग चयन। एक दहेज प्रथा कई बुराइयों की जड़ है।

बेवक्त विवाह थोपते समय लोग एक बार भी यह जानने की कोशिश नहीं करते कि हम लड़कियां क्या चाहती हैं? हम क्या सोचते हैं। शायद हम भी तो अपने जीवन में बहुत सारी खुशियां चाहते होंगे, शायद हमने भी तो बहुत सारे सपने देखें होंगे और उसे पूरा करना चाहते होंगे? क्यों मां-बाप रास्ते को ही बन्द कर देना चाहते हैं? क्या हम एक लड़की हैं सिर्फ इसलिए। हर जगह लड़की का अपमान क्यों होता है, क्यों लड़की इतनी असहाय है? क्या भगवान ने हमें यही सब सहने के लिए बनाया है? हर मोड़ पर एक चुनौती का सामना करना पड़ता है, आखिर क्यों? आखिर हम भी यह सब कब तक सहते रहेंगे? लड़की रात में बाहर नहीं निकल सकती, क्योंकि लड़के छेड़ते हैं। यहां तक कि उन्हें अपनी इज्जत भी गंवानी पड़ती है। आखिर हमारे देश का प्रशासन इतना कमजोर क्यों है कि दिन दहाड़े सड़क पर लड़की का बलात्कार भी हो जाता है और शिकायत दर्ज कराने पर भी कोई सुनवाई नहीं होती।

पिंकी कुमारी,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनबाग, पटना

आज भी ये सब (लड़कियां) ताड़न के अधिकारी ही हैं?

लड़की होने के कारण हम लोगों को पीछे रह जाना पड़ता है। लड़कों को जितनी छूट है, उतनी यदि लड़कियों को भी मिले हो तो वे भी पीछे नहीं रहेंगी। आप यह भी जानते है कि यदि लड़कियां नहीं रहें तो इस सृष्टि की रचना कौन करेगा। हम जैसी लड़कियां ही तो मर्दो को आगे बढ़ाती हैं। इसके विपरीत दहेज देने की प्रथा के कारण आज भी लड़कियों का जन्म अशुभ माना जाता है। पुराने विचार के लोग कहते हैं कि लड़कियां पढ़ कर क्या करेंगी? खाना ही तो बनाना है, लेकिन मैं कहती हूं कि हम जैसी लड़कियां घर का सभी काम करते हुए पढ़ने को तैयार हैं।

लोग तुलसीदास की चौपाई का उल्लेख कर कहते थे कि :-

"ढोल, गंवार, शूद्र पशु नारी,
ये सब ताड़न के अधिकारी"

क्या आप भी यह मानते हैं कि लड़कियां मारने तथा डाटने के लिए हैं? हो सकता है कि अब ज्यादातर लोग इस बात से सहमत न हों, लेकिन व्यवहार में आज भी लड़कियां अनेक घरों में प्रताड़ना झेल रही हैं। उन्हें जन्म से पहले मार दिया जाता है। जो मां-बहने ऐसा करती हैं,उनसे निवेदन है कि वो ऐसा काम न करें। उनको पता होना चाहिए कि वो भी किसी की बच्ची हीं हैं।

रूची कुमारी,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनबाग, पटना

कुमारी सुदीपा, जे.डी. विमेन्स कॉलेज, पटना

लड़कियों की स्थिति पहले से काफी बेहतर हुई

मैं एक लड़की हूं, इसका अनुभव मेरे लिए बहुत ही अच्छा रहा। बचपन से लेकर आज तक मुझे कभी भी इस बात को लेकर कोई दुख नहीं हुआ कि मैं एक लड़की हूं क्योंकि मेरा मानना है अगर किसी व्यक्ति में कुछ करने की दृढ़ इच्छाशक्ति हो, कुछ प्राप्त करने की मन में सच्ची लगन हो और मेहनत के साथ वह कुछ भी कार्य करें तो उसे सफलता अवश्य मिलेगी।

आज के वर्त्तमान समय में लड़कियां भी हर क्षेत्र में सफल हो रही है। अतीत की तुलना में लड़के-लड़कियों में भेदभाव, लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को उच्च शिक्षा प्राप्त कराना, बाल-विवाह करने जैसे कुरीतियों में कमी आई है। आज हमारा समाज भी धीरे-धीरे इन सब को पीछे छोड़कर आगे बढ़ रहा है। कई लोग ऐसे हैं जो ऐसी विचारधाराओं को पूरी तरह से भुलाकर लड़के-लड़की को समान शिक्षा तथा सुअवसर दे रहे हैं।

यह हमारे लिए बहुत ही खुशी की बात है कि आज जो स्थिति हमारे समाज में लड़कियों की है और कुछ समय पहले जो स्थिति थी उसमें काफी सुधार हुआ है। हमारे समाज में लड़कियों को लेकर यह आम धारणा बन चुकी है कि लड़कियां परिवार का सहारा नहीं बन सकती लेकिन धीरे-धीरे इस धारणा में भी बदलाव आ रहा है क्योंकि लड़कियां भी पढ़-लिख कर अपने जीवन को सफल बना रही है और अपने परिवार का सहारा बन रही हैं। हमारे समाज में आज भी कई ऐसी महिलाएं हैं जो अपने मकाम को हासिल कर चुकी है। हम सभी को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। और हमें भी अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

ताकि कल हम जब पीछे मुड़कर देखे तो हमें इस बात का जरा भी अफसोस न हो कि मैं एक लड़की हूं।

अंजली कुमारी,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनबाग, पटना

हक की लड़ाई घर से शुरू होनी चाहिए

मैं एक लड़की हूं और मुझे लड़की होने पर बहुत गर्व महसूस होता है क्योंकि इसके लिए मुझे मेरे परिवार से बहुत सहयोग मिला है। हर वह सहूलियत दी गई जो एक लड़की को मिलनी चाहिए या यूं कहें कि हर वह सुख मिला जो एक लड़के को मिलता है। मुझे मेरे मां-पिता की तरफ से कभी यह नहीं लगा कि मुझे दबकर रहना चाहिए क्योंकि मैं एक लड़की हूं। और मैं चाहती हूं कि हर मां-बाप को ऐसे ही होना चाहिए क्योंकि सब उनकी ही संतान हैं चाहे वह लड़की हो या लड़का।

पता नहीं लोग कैसे लड़के-लड़की में भेदभाव करते हैं क्योंकि लड़कियां भी किसी मामले में लड़कों से कम नहीं होतीं। बस जरूरत है उन्हें प्रोत्साहित करने की उन्हें यह बताने की कि तुम्हें दब कर नहीं रहना है, तुम्हें इस दुनिया के साथ कदम से कदम बढ़ाकर चलना है ताकि तुम अपनी मंजिल को आसानी से पा सको, अपने सपनों को पूरा कर सको।

मेरी भी एक बेटी है लेकिन मैं उसे किसी मामले में लड़कों से कम नहीं समझती। मैं जानती हूं कि वो बड़ी होकर मां-बाप का ज्यादा सहारा बन सकती है। शादी से पहले अगर लड़कियां नौकरी करती हैं तो पूरी तरह से अपने घर की मदद करती हैं और शादी के बाद भी वो माता-पिता हों या सास-ससुर, उनकी बेहतर देखभाल करती हैं। आमतौर पर यह देखा जाता है कि लड़के ऐसा नहीं कर पाते। लड़कियां ज्यादा अच्छे से दोनों परिवारों का प्रबंधन कर पाती है इसलिए तो कहा जाता है कि लड़के एक कुल को रोशन करते हैं, जबकि लड़कियां दो कुलों को रोशन करती हैं। नारी को अबला नहीं, सबला समझना चाहिए।

मैंने अपने आस-पड़ोस में ही देखा है कि लोग लड़के-लड़की में कितना अंतर करते हैं। उन्हें पढ़ने नहीं देते, अच्छा कपड़ा नहीं देते, अच्छे से खाना नहीं देते घर का सारा काम करवाते हैं तथा मारते-पीटते भी हैं। अगर कभी पढ़ने की इजाजत देते हैं तो थोड़ी देर हो जाने पर शक करने लगते हैं और सौ तरह के सवाल करते हैं। फिर जल्दी शादी करने की सोचने लगते हैं ताकि एक बोझ उतर जाए।

अगर हमें महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ना है तो इसकी शुरूआत घर से होनी चाहिए। मां को सबसे पहले अपने लिए, अपनी बेटी के लिए आवाज उठानी होगी तभी यह क्रांति हम आगे बढ़ा सकते हैं। अगर घर से शुरूआत होगी तो बाहर भी लड़कियों को इज्जत व अधिकार मिलेंगे और हम लड़कियों पर होने-वाले शोषण को रोक पाएंगे। पुरुषों को भी महिलाओं के लिए आगे आना होगा।

प्रान्शु मिश्रा,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनबाग, पटना

मुझे किसी पर निर्भर होना बुरा लगता है

लड़की होना एक सौभाग्य की बात है। लड़की लक्ष्मी, दुर्गा आदि के रूप में पूजी जाती है। मैं जिस परिवार में जन्मी हूं, उसमें मेरे माता-पिता लड़की और लड़के में ज्यादा फर्क नहीं करते। मेरे दोनों भाई भी मुझसे बहुत प्यार करते हैं। मुझे हमेशा इस बात पर गर्व महसूस होता है कि मुझे ऐसा परिवार मिला है। पर सामाजिक व्यक्ति होने के कारण समाज के कुछ नियमों का हमें पालन करना पड़ता है। समाज में कुछ ऐसी कुरीतियां बनी हुई हैं, जिनसे लड़कियां बाहर आने-जाने में, किसी पुरुष से बातचीत करने या नौकरी करने में हिचकिचाती हैं। जैसे मेरे परिवार में मेरे माता-पिता तो मुझसे बहुत प्यार करते हैं लेकिन समाज से डरते हुए मुझे कभी अकेले बाहर नहीं भेजना चाहते हैं। इन सब चीजों के कारण कभी-कभी मुझे बहुत बुरा महसूस होता है कि काश मैं एक लड़का होती तो मुझे किसी पर निर्भर नहीं होना पड़ता। मुझे अगर कोई चीज खरीदनी हो, तो अपने भाइयों या मम्मी-पापा पर निर्भर रहना पड़ता है। मुझे घर से अकेले निकलने के लिए नहीं मिलता है। जहां तक शिक्षा की बात है तो मैं बहुत खुशनसीब हूँ। लड़की होने में मुझे कोई दुःख नहीं, लेकिन मैं अपने परिवार में, जो समाज के प्रति डर बना है, उसे दूर करना चाहती हूं ताकि लड़की होने की कामकाजी कठिनाइयां दूर हों। परावलंबन वाली जिंदगी किसी के लिए अच्छी नहीं होती, चाहे वह लड़का हो या लड़की। तुलसी दास ने भी मानस में लिखा है- पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।

श्वेता कुमारी,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनबाग, पटना

बबिता कुमारी, जे.डी. विमेन्स कॉलेज, पटना

जिस भी क्षेत्र में जाऊंगी अच्छा ही करूंगी

अनुभवों ने यह तो मुझ पर स्पष्ट किया है कि लड़कियों के जीवन में कठिनाइयां होती हैं मगर असफलता से डर कर या हारकर चुप बैठना मेरी आदतों में शुमार नहीं है। मैं असफलता को भी सफलता की ही एक सीढ़ी मानती हूँ और अपने विश्वास को जीताने के लिए अपने डर को भूल जाती हूँ। मैंने अपने जीवन में सफलता पाने के लिए कुछ आदर्शों को अपनाया है।

i) 'असफलता' – मतलब अ + सफलता।

अ = और, सफलता। मतलब कि असफलता को मैंने पराजय नहीं बल्कि अपनी जीत मानती हूँ।

ii) 'डर के आगे जीत है' – मैंने डर पर काबू पाकर अपनी जीत और सफलतायें पाई है।

iii) मेरे लिए जीतने का मतलब 'जंग (आखिरी पड़ाव) जीतना है' ना कि हर एक छोटी लड़ाईयां।

मैं खुशनसीब हूं कि मैं एक लड़की हूं और मैंने एक ऐसे परिवार में जन्म लिया है जहां लड़कियों को लड़की होने के लिए प्रताड़ित नहीं किया जाता।

मेरे जीवन में ऐसा नहीं है कि सिर्फ अच्छाईयां ही है, मेरे जीवन में भी दुखद पहलू हैं।

''जब मैंने बारहवीं किया तो मैंने अपने मां-बाप को बोला कि मैं पर्यटन का कोर्स करना चाहती हूँ और इसी में अपना भविष्य बनाना चाहती हूँ। मेरे मां-बाप को तो इस पर ऐतराज नहीं था। उन्होंने मुझे रजामंदी दे दी और कहा ''बेटी, मुझे तुम पर विश्वास है, कि तुम जिस भी क्षेत्र में जाओगी जो भी करोगी, उसमें सर्व-श्रेष्ठ प्रदर्शन करोगी, इसलिए तुम चाहो तो जाओ।'' मैंने पुणे की एक संस्था के लिए प्रवेश-परीक्षा दी और मेरा उसमें चयन भी हो गया। लेकिन मेरा हौसला तब टूट गया जब मेरे चाचा ने ये कहा कि ''ये क्षेत्र लड़कियों के लिए नहीं है।'' मुझे उस वक्त कुछ देर के लिए लड़की होने पर अपनी मजबूरी पर अफसोस हो आया था। पर मैं जानती थी कि अगर मुझमें क्षमता है, तो जिस भी क्षेत्र में जाऊंगी अच्छा ही करूंगी। और तब से आज तक मैंने जो भी किया अच्छा किया। आज मेरे चाचा अपनी कंपनी का सारा काम मेरे जिम्मे छोड़ कर निश्चिंत हो जाते हैं, और कहते हैं ''तुम्हारी जैसी अगर एक भी बेटी हो तो उस पर हमारे सौ बेटे भी न्यौछावर हैं। मुझे गर्व है कि तुम मेरी बेटी हो।''

कुमारी आकांक्षा,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनबाग, पटना

हम भी कुछ करने की हिम्मत रखते हैं

मैं एक लड़की हूँ। मैं चाहती हूँ कि आगे पढ़ूं और कुछ करूं। पर मेरी हर कोशिश को दबा दिया जाता है क्यों? क्योंकि मैं एक लड़की हूँ? मुझे खुलकर जीने का हक नहीं है। क्या मैं लड़कों की तरह बाहर नहीं जा सकती। लड़की का कुछ भी चाहरदीवारी से बाहर की दुनिया के बारे में सोचना गलत है? यदि हां तो क्यों? अगर लड़की नहीं होती तो लड़कों का कोई अस्तित्व होता? ये तो रहा दुनिया की सारी लड़कियों की बात। मैं कुछ अपने बारे में कहना चाहती हूं और पूछना चाहती हूँ कि मेरा अनुभव सही है या गलत? मैं इंटर द्वितीय वर्ष की छात्रा हूं। यूं तो मेरी पढ़ाई मैट्रिक के बाद ही खत्म होने वाली थी। पर मेरी जबरदस्ती करने पर मुझे आगे पढ़ाया गया। घर वालों का कहना है कि लड़की जात हो मैट्रीक पढ़ लिया बहुत हो गया। अब आगे पढ़कर क्या करोगी? क्या लड़कियां कुछ नहीं करती? अरे आजकल की लड़कियां तो चांद पर चली गई। फिर भी अभी तक ऐसी सोच क्यों। मेरे घरवाले का कहना है कि तुम खुद सोच सकती हो कि तुमने इंटर कर ली, तुम्हारी शादी हो जाएगी और अपने घर खुशी से रहोगी। तुम्हारा भाई आगे पढ़ेगा तो हमलोगों को सहारा मिलेगा। ऐसे वक्त मेरा दिल कहता है कि क्या लड़कियां मां-बाप का सहारा नहीं बन सकती। क्या सिर्फ लड़के ही सब कर सकते हैं। मैं चाहती हूं कि हर लड़की को आजादी मिले। देश तो 1947 को ही आजाद हो गया था। पर कहाँ है लड़कियों को आजादी। मेरे ख्याल से तो जब तक लड़कियों की आजादी नहीं मिलेगी तब तक पूर्ण रूप से देश आजाद होगा ही नहीं। लड़कियों को मां-बाप का बोझ समझा जाता है। क्यों? हम लड़कियों को अगर थोड़ी सी भी मदद मिले तो हम दिखा सकते हैं कि हम भी कुछ करने की हिम्मत रखते हैं। पर सिर्फ हमारे सोचने से क्या होगा। हम आगे निकलना चाहते हैं और समाज पीछे ढकेल रहा है कि अरे क्या कर रही है ये तो लड़की है। अगर ये कुछ अच्छा करेगी तो समाज क्या कहेगा? मेरा अनुभव है कि अगर एक लड़का शिक्षित होता है तो एक व्यक्ति शिक्षित होगा पर एक लड़की शिक्षित होगी तो पूरा परिवार शिक्षित होगा। मेरे अनुभव से वही लड़की आगे निकल सकती है जिसे घर से समर्थन मिलता हो और समाज भी साथ दे रहा हो। यहीं नहीं एक लड़की अगर चाहे कि कुछ करे तो अकेले कुछ नहीं कर पाएगी। मैं सोचती हूं कि मैं पढ़ूं आगे कुछ करूं और अपने मम्मी-पापा, अपने समाज और अपने देश का नाम ऊंचा करूं।

नीतू प्रिया,
राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनबाग, पटना

प्लीज हेल्प मी, ताकि मां को बेटा बनकर दिखा सकूं

मैं एक लड़की हूं, वह भी एक पिछड़ी जाति की। कम उम्र में बहुत कुछ देखा और शायद देखना अभी बाकी है। मैं एक मुस्लिम परिवार से हूं। मैं अपने ननिहाल में रहती हूं क्योंकि दादा-दादी अब नहीं रहे। गांव में अच्छी सुविधा नही होने के कारण मेरी मां अपनी बेटियों का भविष्य संवारने के लिए दुनिया में कुछ कर दिखाने के लिए कुछ सपने बुनकर आई थी। नानी-मामी से कोई मदद नहीं मिली है। जो हैं, मेरे पापा हैं। नाम के हैं नानी, नाना और मामा। मेरे पापा की एक पान की दुकान है। मुझे काफी अफसोस होता है कि इस दुकान से पापा हम सब को कैसे चला रहे हैं।

हम पांच बहनें और दो भाई हैं। पापा ने बेटी-बेटे में फर्क नहीं किया। हम लोगों को बोझ नहीं समझा। मेरी शिक्षा पहले अंग्रेजी माध्यम से शुरू हुई। मुझे अंग्रेजी बोलने का बहुत शौक है। कुछ कर दिखाने का सपना है, लेकिन पापा की मजबूरी देखकर मैंने अपनी शिक्षा सरकारी स्कूल से शुरू कर दी। मेरा शौक था कि पढ़-लिखकर एयरहोस्टेस बनने के लिए कोर्स करूं या मैनेजमेंट करूं, लेकिन गरीबी को देख कर पापा से कुछ नहीं कहा। और अपने सपने को दिल में दबा दिया। अब मैं बड़ी हो गई हूं और मां को मेरी शादी की फिक्र हो रही है। कहती है तुम एक नहीं हो और सबको भी देखना है। मैं आप लोगों से निवेदन करती हूं कि आगे की पढ़ाई पूरी करने में कृपया मेरी मदद करें। मैं अभी शादी नहीं करना चाहती। मैंने देखा है कि शादी के बाद गरीब लड़कियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। मैं शादी न करके स्नातक करना चाहती हूं और कोई जाब करना चाहती हूं जिससे मैं अपने आप को मां-बाप की नजर में बेटा बनकर दिखा सकूं। खासकर मां को, जो बेटा-बेटा की रट लगाए रहती है। सपने तो बहुत कुछ हैं लेकिन बताने के लिए शब्द नहीं इसलिए कृपया मेरी सहायता करें।

रुकशार बानो,
जे.डी.विमेंस कॉलेज, पटना

लड़की को गाली देना अपनी मां की निंदा करना है

हम लड़कियां जब जन्म लेती हैं तभी से हमारे घरों में, हमारे समाज में भेद-भाव होना शुरू हो जाता है। आज फैशन का दौर है और इस दौर में ये फैशन हो गया है कि हम लड़के और लड़कियों में अंतर नहीं करते हैं, लेकिन क्या यह सच है? नहीं। आज हर माँ-बाप एक बेटे की इच्छा जरूर रखते हैं। मेरे घर में छः बहनें हैं और कभी-भी मेरे मम्मी-पापा ने ये महसूस नहीं होने दिया कि हम लड़कियां हैं। लेकिन हर वक्त मेरे मम्मी-पापा को यह एहसास जरूर दिलाया जाता है कि आपके घर सिर्फ लड़कियां हैं और आगे आपको परेशानीयां महसूस होगी। बहुत से लोग कहते हैं कि मेरे मम्मी-पापा को आग भी देने वाला कोई नहीं है। मैं ये पूछती हूं, क्या हम बेटियां नहीं हैं? क्या हम उन्हें आग नहीं दे सकते हैं? आज उन लोगों से पूछना चाहती हूँ, जिनके बेटे हैं कि क्या उन्हें हर वो खुशी मिलती है, हर वो आराम मिलती है, क्या उनके हर वो सपने पूरे हुए हैं, जो उन्होंने अपने बेटे के जन्म के बाद देखे थे? शायद ऐसे कोई मां-बाप नहीं होंगे, जिनकी ये सारी बातें पूरी हुई होंगी। लेकिन मेरे मम्मी-पापा को हमने कभी ये महसूस नहीं होने दिया है कि हम लड़कियां हैं और हम उनके सपनों को पूरा नहीं कर सकते हैं। मैं और मेरी बहनें हर कोशिश करती हैं कि हमारी वजह से उन्हें परेशानियां न हों और न ही उन्हें इस पुरुष प्रधान समाज से ये सुनना पड़े कि उनकी लड़कियों ने उनकी नाक कटवा दी। मैं इस समाज से पूछना चाहती हूं, आखिर क्यों हम लड़कियों को इतने हीनभाव से देखते हैं? क्या हम उनके बराबर नहीं हैं? शायद नहीं, उनकी (पुरुषों) नजरों में तो बिल्कुल भी नहीं।

लेकिन क्या ये पुरुष खुद के भीतर झांक कर देखते हैं कि हम जिसे कमजोर समझते हैं, अपने को बेहतर समझते हैं, वो भी औरत से ही जन्म का प्रसाद पाते हैं। माँ ही उन्हें पालती-पोसती हैं। जब उन्हें बोलना नहीं आता था, तब उनकी बातों को समझ कर उसकी माँ, यानी कि एक औरत ही उनकी बातों को पूरा करती है। लेकिन जब हम घर से बाहर निकलते हैं तो वो पुरुष ही हम औरतों को, हम लड़कियों को देख कर तरह-तरह की गंदी बाते कहते हैं। तब उन्हें समझ में नहीं आता है कि वो पुरुष उस लड़की को नहीं बल्कि अपनी माँ को भी गालियां दे रहे हैं। क्योंकि वो लड़की भी एक औरत है और उसे जन्म देने वाली माँ भी एक औरत है। किसी औरत को गाली देना, मतलब समाज की हर औरत को गाली देना है। मैं भी एक लड़की हूं और मुझे भी हर जगह लड़की होने का एहसास दिलाया जाता है, लेकिन मैं इस एहसास से कमजोर नहीं पड़ती हूं बल्कि उन एहसासों को अपने दिल में समेट कर अपने-आप को और भी मजबूत बनाती हूं। जब मैं शुरू-शुरू में कालेज आती थी तो मुझे बहुत डर लगता था, लेकिन अब मैं अपने डर को ही अपनी हिम्मत बना कर हर रोज कालेज आती हूं और अब किसी भी लड़के में इतनी हिम्मत नहीं है कि मुझे कुछ कह कर निकल जाए। मैं अपनी ही तरह अपनी बहन को भी समझाती हूं कि जितना हम इन लड़कों से डरेंगे, वो हमें उतना ही डराएगे, इसलिए डरना छोड़ कर उनसे और उनकी बातों का सामना करों, तभी वो तुम्हें डराना छोड़ेंगे। धन्यवाद, जो आपने हमें ये मौका दिया कि हम अपने अनुभवों को इस भेदभाव वाले समाज के सामने रख सके।

प्रिया सहाय,
जे.डी.विमेंस कॉलेज, पटना

समर्थ होते हुए भी उपेक्षित हैं लड़कियां

'लड़की' यह एक ऐसा शब्द है जिससे हमें गर्व अनुभव होता है। ईश्वर ने हमें संसार में लड़की बनाया जिससे सृष्टि की रचना हो सके। हमें ईश्वर ने सर्वशक्तिमान बनाया है, हमें वो शक्ति प्रदान की है जो पुरुषों में भी नहीं है। हम इतने समर्थ होते हुए भी समाज में उपेक्षित हैं। समाज में हमें वो दर्जा, वो सम्मान नही दिया जाता जो पुरुषों को दिया जाता है। क्यों यह समाज पुरुष प्रधान है? महिला प्रधान क्यों नहीं। आज आजादी के 60 वर्षों बाद भी हमारी स्थिति पहले जैसी ही है। कहने को तो हम 21वीं सदी में जी रहे हैं परन्तु आज भी बेटा-बेटी में फर्क किया जाता है। एक मां जो खुद एक लड़की है, उसे लड़की को पैदा करना बोझ लगता है। यह संसार कितना निर्दयी है और उससे भी निर्दयी है माँ जो अपने गर्भ में पल रही बच्ची को मार डालती है। यदि ईश्वर की असीम कृपा से हम बच गए और हमारा जन्म हो गया तो समाज के दिये कष्ट खत्म नहीं होते। हमें यह महसूस कराया जाने लगता है कि हम लड़की हैं और हमें हमारे भाई की तरह स्वतंत्रता के साथ जीने का कोई अधिकार नहीं है। पढ़ाई-लिखाई, खेल-खिलौने, कपड़े तथा खाने-पीने में भी भेद किया जाता है। हमसे कहा जाने लगता है कि तुम पढ़कर क्या करोगी, ससुराल जाकर रोटी ही तो बनानी है या पति, सास-ससुर की सेवा ही करनी है।

इतने से ही हमारा कष्ट कम नहीं होता। शादी के बाद शुरू होती है जुल्मों की दूसरी कहानी। यदि पिता ने दहेज मांग के अनुसार नहीं दिया तो हमारे ऊपर अत्याचारों की वर्षा शुरू हो जाती है। कहीं हमें पंखे से लटकाया जाता है तो कहीं स्टोव से जिंदा जला कर मार दिया जाता है। और यदि नहीं जलाया गया तो भी हमें तरह-तरह की यातनाएं दी जाती हैं। इन सभी चीजों के लिए हम भी उतने ही जिम्मेवार हैं, जितना पुरुषवादी समाज । अगर पं. जवाहर लाल नेहरू जी ने इंदिरा गांधी को एक लड़की कहकर उनका साथ न दिया होता तो कौन भारत की पहली प्रधानमंत्री बनकर हमारे भारत का इतिहास रचता। अंतरिक्ष में जाने वाली पहली लड़की कल्पना चावला, तिहाड़ जेल में कैदियों के छक्के छुड़ातीं पहली आई.पी.एस. अधिकारी किरण बेदी और भारत की पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल भी न होतीं, यदि उन्हें उनकी माताओं ने गर्भ में मार दिया होता। हम हर कार्य को करने में लड़कों से कहीं अधिक सक्षम हैं, इस लिए हमें लड़की होने पर गर्व है। और मैं ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद देती हूं कि हमें लड़की बनाया, और एक ही प्रार्थना करूंगी कि-

"अगले जनम मोहे बिटिया ही किजौ।"

कात्यायनी कुमारी,
जे.डी.विमेंस कॉलेज, पटना

Whenever Father Calls Me "Beta", the Truth Hits Me

Before a child is born, every parent dreams of having a boy. When a girl is born, the first feelings around her are always negative and frustrated. But, with time, parents realize how much happier they are because of their daughters. The same thing happened to my sister and me when we were born. I don't think my parents were unhappy because they wanted a son, but because they know the world and don't want their child to face discrimination by society. During my childhood, I never felt welcome. I was always discouraged by relatives whenever I tried to do something. History itself has witnessed how much women in India have been demoralized.

Our culture is full of traditions that have made life even more difficult for women - the "parda" system in Rajasthan, the "devdasi" system, "sati pratha" which was prevalent across the country and more. Even though most of these customs have been abolished by national heroes, women today still face a lot of hurdles.

I cannot say that I am treated badly by my parents. They have always loved me more than my brothers. But, whenever a question of expenditure arises, their sons are always given preference. Many rules and regulations are also exclusively for me. I have to reach home as soon as it is evening, but my brothers can even come back late at night. Of course, my safety is the concern here. But, who is the enemy? The society which supposedly protects me is what is ruining my life.

Some things definitely need to change in today's world. Today's woman has a new face. She cannot be treated the way women were treated earlier. She is determined, successful and progressive. Above all, she is an ocean of dedication and worship. Today's woman is not limited to living under a man. We can look at women like Kalpana Chawla, Sania Mirza, Pratibha Patil, Sonia Gandhi, Priyanka Chopra, Kiran Bedi and many more such women in India for inspiration.

At times, I feel much honored to be a girl, especially when I see girls performing better than boys every year in the field of education.

My mother is a working woman and she says that I may be a daughter, but I am much better than a son. I like everything about being a girl, except when my father calls me 'beta'. I am his 'beti' and he should accept that instead of trying to make me a son.

समर्थ होते हुए भी उपेक्षित हैं लड़कियां

'लड़की' यह एक ऐसा शब्द है जिससे हमें गर्व अनुभव होता है। ईश्वर ने हमें संसार में लड़की बनाया जिससे सृष्टि की रचना हो सके। हमें ईश्वर ने सर्वशक्तिमान बनाया है, हमें वो शक्ति प्रदान की है जो पुरुषों में भी नहीं है। हम इतने समर्थ होते हुए भी समाज में उपेक्षित हैं। समाज में हमें वो दर्जा, वो सम्मान नही दिया जाता जो पुरुषों को दिया जाता है। क्यों यह समाज पुरुष प्रधान है? महिला प्रधान क्यों नहीं। आज आजादी के 60 वर्षों बाद भी हमारी स्थिति पहले जैसी ही है। कहने को तो हम 21वीं सदी में जी रहे हैं परन्तु आज भी बेटा-बेटी में फर्क किया जाता है। एक मां जो खुद एक लड़की है, उसे लड़की को पैदा करना बोझ लगता है। यह संसार कितना निर्दयी है और उससे भी निर्दयी है माँ जो अपने गर्भ में पल रही बच्ची को मार डालती है। यदि ईश्वर की असीम कृपा से हम बच गए और हमारा जन्म हो गया तो समाज के दिये कष्ट खत्म नहीं होते। हमें यह महसूस कराया जाने लगता है कि हम लड़की हैं और हमें हमारे भाई की तरह स्वतंत्रता के साथ जीने का कोई अधिकार नहीं है। पढ़ाई-लिखाई, खेल-खिलौने, कपड़े तथा खाने-पीने में भी भेद किया जाता है। हमसे कहा जाने लगता है कि तुम पढ़कर क्या करोगी, ससुराल जाकर रोटी ही तो बनानी है या पति, सास-ससुर की सेवा ही करनी है।

इतने से ही हमारा कष्ट कम नहीं होता। शादी के बाद शुरू होती है जुल्मों की दूसरी कहानी। यदि पिता ने दहेज मांग के अनुसार नहीं दिया तो हमारे ऊपर अत्याचारों की वर्षा शुरू हो जाती है। कहीं हमें पंखे से लटकाया जाता है तो कहीं स्टोव से जिंदा जला कर मार दिया जाता है। और यदि नहीं जलाया गया तो भी हमें तरह-तरह की यातनाएं दी जाती हैं। इन सभी चीजों के लिए हम भी उतने ही जिम्मेवार हैं, जितना पुरुषवादी समाज । अगर पं. जवाहर लाल नेहरू जी ने इंदिरा गांधी को एक लड़की कहकर उनका साथ न दिया होता तो कौन भारत की पहली प्रधानमंत्री बनकर हमारे भारत का इतिहास रचता। अंतरिक्ष में जाने वाली पहली लड़की कल्पना चावला, तिहाड़ जेल में कैदियों के छक्के छुड़ातीं पहली आई.पी.एस. अधिकारी किरण बेदी और भारत की पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल भी न होतीं, यदि उन्हें उनकी माताओं ने गर्भ में मार दिया होता। हम हर कार्य को करने में लड़कों से कहीं अधिक सक्षम हैं, इस लिए हमें लड़की होने पर गर्व है। और मैं ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद देती हूं कि हमें लड़की बनाया, और एक ही प्रार्थना करूंगी कि-

"अगले जनम मोहे बिटिया ही किजौ।"

कात्यायनी कुमारी,
जे.डी.विमेंस कॉलेज, पटना

Whenever Father Calls Me "Beta", the Truth Hits Me

Before a child is born, every parent dreams of having a boy. When a girl is born, the first feelings around her are always negative and frustrated. But, with time, parents realize how much happier they are because of their daughters. The same thing happened to my sister and me when we were born. I don't think my parents were unhappy because they wanted a son, but because they know the world and don't want their child to face discrimination by society. During my childhood, I never felt welcome. I was always discouraged by relatives whenever I tried to do something. History itself has witnessed how much women in India have been demoralized.

Our culture is full of traditions that have made life even more difficult for women - the "parda" system in Rajasthan, the "devdasi" system, "sati pratha" which was prevalent across the country and more. Even though most of these customs have been abolished by national heroes, women today still face a lot of hurdles.

I cannot say that I am treated badly by my parents. They have always loved me more than my brothers. But, whenever a question of expenditure arises, their sons are always given preference. Many rules and regulations are also exclusively for me. I have to reach home as soon as it is evening, but my brothers can even come back late at night. Of course, my safety is the concern here. But, who is the enemy? The society which supposedly protects me is what is ruining my life.

Some things definitely need to change in today's world. Today's woman has a new face. She cannot be treated the way women were treated earlier. She is determined, successful and progressive. Above all, she is an ocean of dedication and worship. Today's woman is not limited to living under a man. We can look at women like Kalpana Chawla, Sania Mirza, Pratibha Patil, Sonia Gandhi, Priyanka Chopra, Kiran Bedi and many more such women in India for inspiration.

At times, I feel much honored to be a girl, especially when I see girls performing better than boys every year in the field of education.

My mother is a working woman and she says that I may be a daughter, but I am much better than a son. I like everything about being a girl, except when my father calls me 'beta'. I am his 'beti' and he should accept that instead of trying to make me a son.

Let me be a daughter with the softness, beauty and dedication which comes with that.

At last but not the least, I would like to say s few lines:

"I am a daughter,
I am a sister,
I am a wife,
And am a mother.
Why the power is so strange,
Why the beauty is wee.
When you all protect yours,
Then why I am not free...."

Ruhi,
J.D. Women's College, Patna

कुमारी अंजना सिंह, जे.डी. विमेन्स कॉलेज, पटना

My Father Was For First Time Sorry For His Deeds.

I was born in a conservative family. I was an unwanted child and my father and grandmother wanted to abort me. They wanted a son; so after three girls followed three female foeticide, my great mother showed courage and there I was. None of my sisters were literate and one already married at a tender age of 13. When I used to see other children going to school, I used to be curious at the same time there was a feeling that somewhere I was inferior to them. Making some or the other excuse at home every morning I used to visit the government school but one day the teacher (master ji) caught me hiding and studying and he formally came to my house and talked to my mother about admission. My father was against it and we could not afford that little fee because he was a regular drinker. But my mother was determined she gave me the confidence, the will power and was my greatest confidante ever. I started my primary education and then went to high school and all went well. My father was still against my studies. Suddenly, the news of third sister's cold-blooded murder for dowry shook us all. It broke my mother she breathed her last. I did Gradation by doing tuitions, at last to become a teacher. I was proud, because it was not merely an achievement for me but also it was a repayment for my late mother's sacrifices. My father was for first time sorry for his deeds. The very next day I performed all the last rites and rituals for my mother. Both my father's and my eyes were red, we knew each other's pains-for the first time.

Sushmita Jha,
Patna Women's College, Patna

Many Rights Are Not For Girls

Every girl in her life faces and tackles many difficulties and problems. Her life is full of challenges and she is compared to the boys at every stage and almost don't have any rights. At every step she is told that she is a girl so she can't do this.

I am a 'marwari' girl from a rich family and from the very first breath of my life I have seen many things which I didn't want to see.... but not anymore. I know what my rights are and I know where I want to go in my life.

My family has been searching for a suitable boy for me from the time I was in Class 11. When I was taking my pre-boards in Class 12, my grandmother selected a boy and everyone was ready but luckily he was not up to my father's expectations. Nobody cared to ask what I wanted, or what my desires were.

I have lots of restrictions on me like I am not allowed to wear tight clothes, my hair should always be tied and many more. Everyday my mother reminds me that since I am a girl I can't do things as per my wishes. I object and try to explain my point of view to her, but no one listens. Today I am studying for my B.A, but I didn't want to do this. I got admission into a very nice college for BBA (as per my wish) but I was not allowed to go there, since it was in Ranchi.

Even today I have no right over my own life. I can't dream, I can't plan anything. I had planned for my career but my dreams were always crushed by saying "Tum Khana to bana nai Sakti, thik se, padhai kya karogi? Zyada Hawa mein mat udo..." I want to stand on my feet and touch the endless sky. I fight for my rights, I get the title 'ZIDDI' I have not lost all hope and I still dream about reaching my goals. I know that I have got just two more years to study but the candle of hope never goes out... it glows, glows, and shines like a twinkling star.

This is not my pain alone. I know that most girls in India face this problem. Why don't parents and other family members understand our feeling and pain? Are we made just to fulfill other's demand??

On behalf of every victim (girl), I want to raise my voice and ask -

"Kyun hamein apni marzi se jeene nahi diya jata?!

Kyun saare umeedon par pani pher diya jata hai?!

Kya hum sirf gulami karne aaye hain?

Apne Sapne ko hakikat bante dekh lene do hamein...

mai udna chahti hun, udne do ma...

udne do maa...

Noone should allow anyone to dominate them. So lets promise ourself that -

'Man mein hai vishwas, pura hai vishwas...

Hum honge Kamyab ek din....!!!!

Shweta Goyal,
Patna Women's College, Patna

I Have the Power

I am proud of myself but my existence has been questioned, and not just once. I belong to a progressive family. My parents are very well educated. I have been sent to the finest schools and my parents have been very supportive of me and want me to be a successful career woman. I have never been denied any rights, but there have been times when I have fought or buried my face into a pillow and cried.

My father, a keen supporter of women's empowerment and independence, has always encouraged me to outdo others and be the best. But, he himself has openly regretted not having a son and told me that I cannot call myself a boy because I can't even go to the marketplace alone.

My family says that I am good enough to be an I.A.S. officer; but sympathizes with my parents for having two daughters. Once, a motorcyclist hit my car and went away grinning. Was it because I am a girl? A boy had once tried to molest me. I had caught hold of him and dragged him to the principal of my school. I was very proud of this deed.

I know, I have the power; the power to compete with anyone and be the best and I believe I am no less than anyone.

Vasundhara Shanker,
Patna Women's College, Patna

There Is No World without Girls

When I think that "I am a girl", a picture of 'Maa Durga' or 'Parvati comes to my mind and I feel an enormous energy within me. When we usually come across the word 'girl' then a picture of a smiling, little, pretty girl who is playing with her dolls comes to the mind…

I realized that I was a girl when I was 2 or 3 years old, when my younger brother called me 'didi'. I remember feeling immense joy then. Everyone loves his or her mother in this world. My mother's picture remains in my heart every day. When I was in VIII class, I was selected for the science quiz competition which was to be held in another district but my father forbade me from going there. But my mother managed to convince him to let me go and I won 1st prize by defeating many boys. My mother was very happy and proud of me.

I have also passed through some difficulties in life but I feel that life is about struggle. Dr. A.P.J. Kalam, although a man, but, his speech are in favor of women if understood well. He says that if we have a strong will power then we can achieve whatever we want. I admire Dr. A.P.J Kalam's sayings. He respects women even though he is a man. Most of his sayings are about women. He says that if we have strong willpower, we can achieve whatever we want.

A woman teaches society moral values. She can remove societal evils and struggles for other women. I want to dedicate myself to this cause. I know that it is not so easy but I will try again and again. There is no world without girls.

If girls are given a chance, they can do everything that they want. It has happened and been proved by women till now and in future it will happen.

Madhushri Mishra,
Magadh Mahila College

No Girl Can Escape Hardship

"The hardships of a male ends when he starts to earn...The hardships of a female start the moment she is conceived in her mother's womb and ends with her life" observes Mani Shankara, a great social activities.

The above quoted lines are my favorite, because they are an exact portrayal of the life of a woman in this world. Going by my experience, it is absolutely and painfully true in the place where I live my India. Man is a social being, and even though some of the hardships which I will bring to light here may not be directly mine - it affects me, and it affects me deeply to see such things happening to people.

God has given me everything- to be more precise, the best of everything, - family wise. I don't have to go through hardships, and thank God for that. But, facing the world is a different story altogether. I have been subjected to harassment and abuse, not once but twice. I was 12 years old when it happened and I couldn't discuss it with anybody. Such was my state that I hated to admit it even to myself. Such was the pain. The incidents left me emotionally crippled and mentally traumatized. I still feel suicidal when I recall the incidents and it almost invariably comes to my mind each day. I've been through it all alone and I know the pain and don't want any other girl to feel it. I try to be a part of groups which help girls to overcome such pain. I know that such support groups can help. I was a part of one and when I talked about it, read about it, heard many other cases it left me with a comparatively lighter heart.

Comments on the roadside and 'accidental' touching and pinching are something no girl can escape. It happens to all and every girl has learnt to live with it. However I believe that it should be stopped because it affects us emotionally and physically in the most destructive way. Being a girl I know it is almost impossible to stay safe unless we become self-sufficient. Self-sufficiency has become a 'hot word' and more of a cliché, if you ask me. However, the 'self sufficiency I am talking about is physical. We all should learn how to protect ourselves. I wanted to learn 'martial arts' to become self sufficient but the pressure of studies didn't allow it. I however, wish to learn it someday to become my own bodyguard.

May God help all girls!

Farheen Aziz,
Patna Women College, Patna

Girls Are the Big Power

We can't imagine the world without girls.In earlier days people believed that the birth of a girl was a sin, a crime. Often, girl child were killed soon after birth. The girls who survived were mostly not treated like human and were not given any rights. Mostly they were not educated and also not given proper food or clothes. In those days, girls were only meant to do household work.

Things have improved today but even now many girls are tortured in different ways. We saw this reality in the movie "Lajja" which portrays how girls are treated in both, villages and cities. The girls in cities have problems like sexual or emotional harassment but the root cause is the same - that, they are born as girls.

However, things have improved and girls are also being educated and are competing, and at times, doing better than boys in every field. They are present in every field of work, like offices, hospitals, even the armed forces and space research. They spend their life as in their own way.

I feel that girls should be respected in every way as they start the life cycle by giving birth to a child be it a boy or girl. Without their presence the human race will end. So, a woman can do a man's job but a man can't do a woman's job.

The Government should work in every possible way to uplift and improve the condition of women. There should be girls' school and colleges in villages so that each girl can study and make her dreams come true. I feel the country which develops its women power will develop itself. Hence the world will develop.

Girls are the biggest power of our country and of the world.

Sakshi,
Arvind Mahila College, Patna

Women Will Be Powerful Too

The topic that has been given to us is "I am a girl - my experiences, good or bad". I understand that we have to narrate our personal experiences, some which have wounded us and some which have filled our hearts with warmth. As a girl I have experienced many tragic situations, where I have been unable to react to the circumstances. I have gone through many adversities in life - mental, physical and emotional. I can only say this, that, there is a lot of 'human pollution' which has just entered our society.

Surely, after the long struggle our country faced to gain independence, no Indian should come in the way of another Indian's freedom and independence. I think that every woman in Indian Society should get an equal opportunity to enhance her skills so that she can contribute to society. Through this step our country will be even more powerful. There is a need to bring about a change in the state of women in India. Every woman here should emerge as a centre of power. There are times in life when we are all alone, without parents, friends and relatives. During times like these, no woman should be without a voice. Every woman should be able to stand up for herself and defend her rights and honor.

We live in a patriarchal society. Men dominate women in every manner. This is not limited to our country alone. I was watching a movie about a woman in America who was raped and emotionally harassed. Despite being a rich, powerful and educated nation, American woman also have to face similar problems. Even in America, one or two girls are raped every minute. I wonder if India is in this state because we are following their culture. If we look at metros like Delhi, there are several rape calls every minute. Maybe this is because men all over the world are the same. Men who do not have knowledge are no different from an animal. There is a popular proverb in hindi which on translating means, "A man is a beast by his body and God by his soul"

Rural women who live in conservative families have hardly any rights of their own. They should be educated and groomed compassionately to be aware of and to avoid the miseries of the world, such as poverty, disease, molestation and many other issues. Every girl in Indian society should be empowered and enabled to pursue her dreams. As they say in hindi "Sapno ko chali chunne", which if translated means, going to grab my dreams. India is a developing country, but we have to be careful in our development and have to face certain issues. Every woman should feel safe. There is no reason for women

to feel threatened and unprotected. This should actually not be limited to India alone. If we look at women in Muslim countries, very few have the right to study or work. They are limited by traditions and have to wear limiting outfits. But, do they feel protected just because of the traditional attire? I don't think so. It is just about power. Power being used by men over women.

Today men have the power and they rule society. Some day women will be powerful too. Woman will rule over society to make it a better place and will get rid of misery and face all challenges. I hope that day is not far.

I have a slogan - "It is WOMEN'S empowerment, not WE-MEN empowerment.

All weak sections of society should be empowered enough to rise and grab power and opportunities.

Ashima Singh,
Magadh Mahila College, Patna

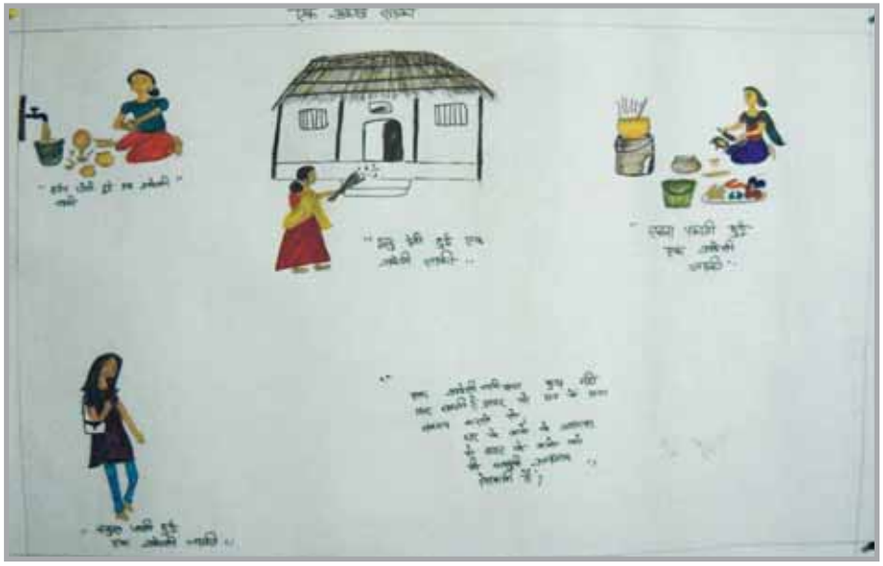

ईशरत जहाँ, आर.पी.एम. कॉलेज, पटना

I Feel Vulnerable On the Road

India in its constitution promises that there will be no bias based on gender.

However my question is, does it really hold true? My experience as a girl, on this great sacred land, does not reflect that! India's behavior towards the fairer sex is as varied as itself. It varies from women being a mere source of gratification to that of a goddess.

I am blessed with a doting family and protective environment. Being an only child I am pampered and protected. However once I am out on the road I feel vulnerable. Eve teasing, lecherous looks and comments are a regular and everyday incident. In colleges, most of our professors are respectable but there are still a few who take advantage and are always on the lookout for a "Chance". The situation gets uglier in crowded places, especially during social functions when you are jostled and pawed. All these incidents make you feel cheap and degraded.

My experiences with men outside my family have always been bad and I am yet to meet someone who treats women with respect. I am yet to venture out in the word on my own as an independent woman and I feel I am ready for the world and take up any challenge it throws at me…

Khushboo Mishra,
Magadh Mahila College

Take Her Right from the Society

I am student of BCA (1st year) and I have seen the world a little bit. I realize even if I am a girl my parents have given me all the rights as they have given to my brother.I am very lucky that I was born in this family but my family also has two sides like a coin. One side of the coin are my parents and the other side are my relatives like my grand-mother. I have struggled to take admission in BCA.

My grandmother told my mother "why are you giving so much freedom to your daughter and why you are giving such high education to her?" I asked my grandmother and mother that why are you discriminating against girls. Boys & girls are equal in all the ways. Then my mother agreed and I took admission in BCA.

This is my story. I have seen many girls who are my friends who want to study but their family, society and several other reasons don't allow them to study. I want to say something to those parents who don't allow their daughters to study - to give all the rights to their daughters as they give to their sons as only then will they become independent.

I also want to tell the girls that they should argue, be ready to struggle and take their rights from the society in general and from the family in particular.

So, at last but not the least I want to write something on the importance of girls:

"Precious Girl"

Girls: precious Pearls

Girls: a sign of Love, a ray of light,

She can soar up, to any height,

She can do a lot for her nation.

Brightening the way for her coming generation.

She is not a blemish on the family's name;

Rather she can die for its name and fame

So, love your daughters because girls are very precious.

After reading these lines we should give all the inspiration and freedom to the girls as we give to the boys.

I am very happy and very lucky because I have got all the freedom as my brother has got. My society does not discriminate between boys & girls. I wish that every parent

and every society will become like my parents and society.

I am a girl and my experience is that for becoming successful, a girl should dream and struggle for her dreams, only then her dreams will come true.

Fauzia Jamil,
Mirza Galib College

आमरिन, आर.पी.एम. कॉलेज, पटना

Girls are Divine Creatures

I am a girl. I will be a woman - a wife, daughter and mother. I am very lucky that God has made me a girl. I am also very lucky that I am the daughter of my parents. I am the only child of my parents and they have always shared that I am like their son. My parents are very proud of me. They have always helped me face difficulties and overcome obstacles.

I can say that my parents trust me. They consult me before taking all decisions. I have seen many problems and also a lot of happiness in my life. Problems have never scared me -I face all of them happily. I trust myself. I am an ideal girl because I obey everyone. I learn all good things from everyone - my elders as well as people who are younger than me. I always help people who are in need and they give me their blessings.

In the olden days, people said that a girl is a divine creature who is blessed by God. These days, girls can do all types of activities - indoor and outdoor. The number of girls has increased in comparison to olden times. Earlier, people did not want to educate their daughters because they thought that girls should lived inside the house not outside. But now, girls are more educated than boys. 95% of the girls are educated and have jobs.

I am always thankful to God for making me a girl, so that in the future I can spread the light of my parent's name as well as my name in the world.

Zaheda Kahtoon,
Mirza Galib College , Gaya

Marriage is Not the Only Motive of Life

When I was born my parents were happy because I was their second child. The first was my elder brother. They wanted a daughter after their first born son.

I have five siblings - three brothers and two sisters. My parents have never discriminated between the six of us. We all went to the same school; Everything that has been provided to my brothers has been provided to me as well. I have been lucky to have such parents. My parents always encouraged me towards academic excellence and extracurricular activities. But, they are insecure about sending me outside for further studies because of the evils that prevail in society. My mother is constantly worried about my safety. She thinks that every girl should get married after graduation. I have been trying to make her understand that in today's world, it is necessary for all children, irrespective of sex, to have access to higher studies.

I used to say that if I would have been a son, they would surely have sent me outside for further studies. Marriage is not the only goal of life. There is a well known proverb that "If a man is educated, only one person is educated but if a woman is educated, the society is educated." She can provide her children with better education and good moral values.

According to my experiences in life, girls are discriminated against even today. They are not provided with good education and are forced to marry at the early age. A girl must know to value herself. She must believe that she can do everything that a man does. I can do any job, become a doctor, manager, engineer or whatever I want. The aim of my life is to be an M.B.A. graduate. I don't know how, but I want and I will do it.

Samreen,
Mirza Galib college, Gaya

I Am Like a Son and It Is a Good Thing

Yes, I am a girl, and proud to be one. I am happy that I have a chance to share my experiences, views and feelings.

Girls constitute half the nation's population, but still lag behind boys in important areas. We may have entered the 21st century, but are still as superstitious as before. Even though there are steps being taken for the welfare of women, I have not seen any changes yet.

My life has had sweet as well as bitter moments. Even though I am a girl and don't have any brothers, my parents love me a lot. They have fulfilled all my wishes and desires. I am like a son to them, and it is good to be treated like that. I help my father with his business deals and my mother in the kitchen. My parents say, "Every girl should be given the opportunity to study, they treat their parents much better than boys do." They allow me to visit places alone as well. My freedom to travel has never been restricted by them. At times, I feel that my parents worry about me getting married and leaving them.

There are times when I feel the limitations of being a girl. When I go to the market to shop or my institute to study, boys make distasteful comments about me. At times, they even grab my purse, or clothes. It is times like these that make me feel that I should have been a boy. If I was a boy, I would have scolded these boys, or beaten them up. But, being a girl, I have to tolerate such things because people around me will not help if I scold them and my parents are waiting for me to come back home safely. It is not parents but society which makes you feel like a helpless girl.

Things must change. Awareness must be spread. Girls should be provided with compulsory education. There is a wise saying, "if you educate a man, you educate one person. When you educate a woman, you educate the entire family." People should stop saying that there is a woman standing behind every successful man. The new saying should be, "standing by the side of every man is a woman trying to succeed as well."

Heena Khurshid
Govt. Mahila College, Gardanibagh, Patna

I Too Have Faced Physical Abuse

I am a regular 20 year old girl who has faced almost everything that life can throw at a girl in Indian society. I can best express my feelings about myself as -

A bird with winds,
Soft and short,
A nest to protect
And parents to escort

Till recently, my world comprised of the small circle of people who surrounded me; loving parents, bright siblings and helpful friends. As long as I am within this circle, I know that there will be no discrimination. Male dominance starts with games and competitions. I felt discriminated against for the first time when I was selected to go to a different state for a debate competition, but was not allowed to go by my parents. I wonder if it would have been the same if I were a boy. I felt that -

I am free to fly
Yet my wings feel hard.
The more I try,
The more I retard.

Each time I watch the news and come across stories of sex selection, rape cases and Islamic restrictions for women, I find myself questioning the consequences of being a girl. My parents are very open about their fears for me and my sisters. They worry about us whenever we leave home.

I know they worry because of the crimes that are committed towards women, but society and the narrow mindedness of the people who surround them also adds to their fears. I have faced mental and physical abuse many times while shopping in markets or travelling in local buses. But, I make it a point to defend myself whenever I can. Women need to recognize their powers and overcome their fears. That is what I have always done and will keep doing all life long, no matter what it takes.

Mean ways of world,
Lowly looked upon,
A 'girl', I am a power
A new face of dawn.
Try to discard,
Try to lower my name,
I 'Will' survive,
Cause a 'girl' I am!

Shubhra Apurva
J.D. Women's College, Patna

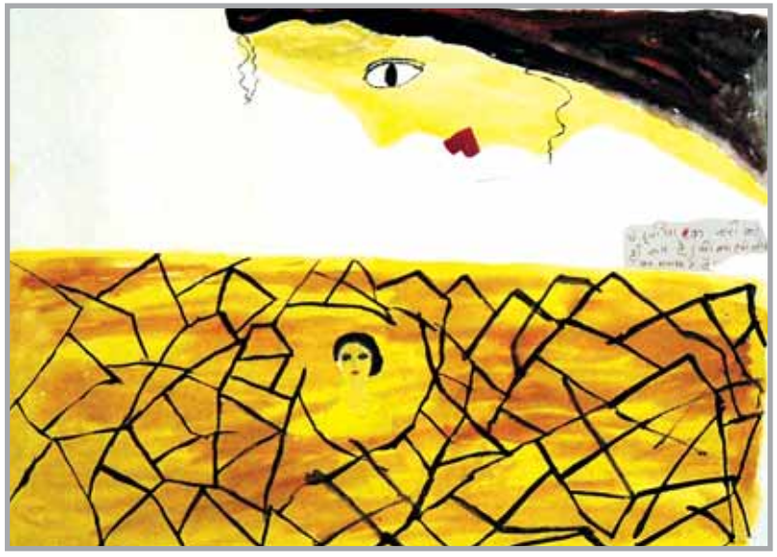

नदिया परवीन, जे.डी. विमेन्स कॉलेज, पटना

I "Aakho Me Aakash" acknowledge and thank, the support extended for my existence...

Hon'ble Justice Mridula Mishra	Patna High Court
Hon'ble Justice Seema Ali Khan	Patna High Court
Mr. Anajani Kumar Singh,	IAS, Principal Secretary, HRD, GoB
Mr. V. K. Verma,	IAS, Principal Secretary, Social Welfare, GoB
Mr. Vijay Prakash,	IAS, Principal Secretary, Development and Planning, Gob
Mr. Deepak Prasad,	IAS, Secretary, Panchayati Raj, GoB
Mr. Mahesh Bhatt	Film Director and Producer
Ms. Nafisa Ali	Social Worker and Film Actress

SKCC Team

Dr. Neeti Sethi Bose,	Consultant
Dr. Rabindra Kumar Murari,	District Project Coordinator
Nilesh Kumar Jha,	District Project Coordinator
Amar Kumar Pandey,	Administration and Accountants
Deepak Mishra,	Ex. State Project Coordinator
Priyadarshini Trivedi,	Ex. Project Consultant
Sudhakar Vishwas,	Ex. District Project Coordinator
Shilpi Sinha,	Ex. District Project Coordinator
Arvind Kumar,	Assistant
Praveen Kumar,	Assistant

College Principals

Dr. Arun Kumar	Swami Sahjanand College, Jehanabad
Dr. Asha Singh	Sri Arvind Mahila College, Patna
Dr. Chandra Bhushan Sharma(Rtd.)	Swami Sahjanand College, Jehanabad
Dr. Dolly Sinha	Magadh Mahila College, Patna
Dr. Haridwar Singh	Anugrah Narayan College, Patna
Dr. Himanshu Sharma	Mahant Mahadevanand Mahila College, Ara
Dr. Jai Shree Dhar	Rameshwardas Pannalal Mahila College, Patna City

Dr. Juhila Mishra	Sharda Jhunjhunwala Mahila College, Bhagalpur
Dr. Krishna Roy	Ram Briksha Benipuri Mahila College, Muzaffarpur
Dr. Meena Kumari	Gautam Budha Mahila College, Gaya
Dr. Nirmala Kr. Jha	Ram Briksha Benipuri Mahila College, Muzaffarpur
Dr. Nirmala Kumari Singh	Mahant Darshan Das Mahila College, Muzaffarpur
Dr. Nisha Roy	Sundarwati Mahila College, Bhagalpur
Dr. Parmila Singh	Mahant Darshan Das Mahila College, Muzaffarpur
Dr. Ramdayal Singh (Rtd.)	Sundarwati Mahila College, Bhagalpur
Dr. Rupa Prasad	Govt. Mahila College, Patna
Dr. Sanjay Kumar	Shri Krishna Mahila College, Jehanabad
Dr. Savita Kumari	Tapeshwar Singh Indu Mahila College, Ara
Dr. Shrikant Sharma	Gaya College, Gaya
Dr. Usha Singh	J.D.Women's College, Patna
Dr. Usha Vidyarthi	Mahila College, Khagaul, Patna
Dr. Vasundhra Sinha (Rtd.)	Govt. Mahila College, Patna
Dr.Usha Puri (Principal in Charge)	Sundarwati Mahila College, Bhagalpur
Late Dr. Kumari Savita	Rameshwardas Pannalal Mahila College,Patna City
Ms.Lajo Kedia	Ganga Vatsa Chowkhani Mahila College, Muzaffarpur
Prof. G Samdani	Mirza Ghalib College, Gaya
Sister Dr. Doris D'souza, AC	Patna Women's College, Patna

Resource Persons

Ms. Abha Jha	Freelance consultant
Ms. Adi Shakti	Mahila Samakhya, Ara
Dr. Anju Rani,	Advocate, Member Women Commission, Patna
Dr. N.R.Mohanty	Director, JIMMC, NOIDA
Dr. Shefali Roy	Associate Professor, Pol. Sc, Patna Women's College, Patna
Dr. Vidya Rani	Associate Professor, Hindi, Sundarwati Mahila College ,Bhagalpur
Ms. Indu Sinha	Executive Director, CENCORD
Ms. Nafisa Ali	Social Worker and Film Actress
Mr. Rajat Ray	Communication Specialists, UNFPA
Mr. Bipin Kumar, IAS	D.M., Muzaffarpur
Ms. Amita Paul, IAS	Member Revenue Board
Ms. Amrita Pitre	Gender Specialists, UNFPA

Ms. Archana	Member SCERT
Ms. Medha Shekhar	Trustee, PURWA
Ms. Mridula Prakash	Principal, School of Creative Learning, Patna
Ms. Vandana Preyasi, IAS	Director, Urban Development Deptt.
Ms. Namrata Jha	Country Programme Manager, IIE
Ms. Neena Shrivastav	Executive Director, Equity Foundation, Patna
Ms. Nishat Fatima	DEEPAYATAN, Patna
Ms. Nivedita Jha	Journalists
Padma Shree Sudha Varghese	Social Worker
Ms. Sheela Irani	Dy. S.P., Patna
Ms. Sunita Sharma	PACKARD Fellow
Dr. Bharti Kumar	Rtd. Professor of History, PU
Sister Dr. Doris D'souza, AC	Patna Women's College, Patna

Civil Society Organisations

ADITHI
Agragami India
Bihar Domestic Welfare Workers Trust
Care India
CEDPA
Deepayatan
Equity Foundation
Gramin Evum Nagar Vikas Parishad
Integrated Development Foundation (IDF)
IRAC
Janani
Karambhumi
Mahila Samakhya
PURWA
Sankalp Jyoti
Shakti Wardhini
Socio Economic and Educational Development Society (SEEDS)
UNICEF

Nodal Officers (Teachers)

Mr. Abdul Moquesit Karimi	Mirza Ghalib College, Gaya
Ms. Ameeta Jaiswal	Patna Women's College, Patna

Ms. Anima Prasad	Government Mahila College, Gardanibagh, Patna
Ms. Anjali Prasad	Arvind Mahila College, Patna
Ms. Sonu Annapurna	Gaya College, Gaya
Ms. Archana Anupam	Ganga Vatsa Chowkhani Mahila Mahavidyalaya, Muzaffarpur
Mr. Arun Kumar	Swami Sahjanand Mahavidyalaya, Jehanabad
Ms. Benu Roy	Ram Briksha Benipuri Mahila Mahavidyalaya, Muzaffarpur
Ms. Farida Bano	Mahant Mahadevanand Mahila Mahavidyalaya , Ara
Ms. Indu Sinha	Sharda Jhunjhunwala Mahila College, Bhagalpur
Ms. Jay Shree Mishra	Magadh Mahila College, Patna
Ms. Krishna Kumari	Ganga Devi Mahila College, Patna
Ms. Latika Verma	Mahant Mahadevanand Mahila Mahavidyalaya , Ara
Ms. Mala Sinha	Sunder wati Mahila Mahavidyalaya, Bhagalpur
Ms. Manibala	Ganga Devi Mahila College, Patna
Ms. Manju Kumari	Government Mahila College, Gardanibagh, Patna
Ms. Manju Sharma	Gautum Buddha Mahila College, Gaya
Ms. Meena Kumari	Mahila College, Khagaul, Patna
Ms. Meena Singh	Tapeshwar Singh Indu Mahila College, Ara
Ms. Minakshi Prasad	Mahila College, Khagaul, Patna
Ms. Nalani Rathor	Gautam Buddha Mahila College, Gaya
Mr. Nand Kishore Prasad	Shri Krishna Mahila College, Jehanabd
Ms. Neelima Prasad	Sunderwati Mahila Mahavidyalaya, Bhagalpur
Ms. Nidhi Sinha	Sharda Jhunjhunwala Mahila College, Bhagalpur
Ms. Poornima Shekhar Singh	Anugrah Narayan College, Patna
Ms. Pratibha Sahaya	Arvind Mahila College, Patna
Ms. Punam Singh	Mahant Darshan Das Mahila Mahavidyalaya, Muzaffarpur
Mr. Rameshwar Singh	Tapeshwar Singh Indu Mahila College, Ara
Ms. Ranjana Srivastava	Mahila College, Khagaul, Patna
Ms. Rekha Mishra	Janki Devi Women's College, Patna
Ms. Rekha Singh	Ganga Vatsa Chowkhani Mahila Mahavidyalaya, Muzaffarpur
Ms. Renu Ranjan	Magadh Mahila College, Patna
Ms. Rita Kumari Bhagat	Janki Devi Women's College, Patna

Mr. Sanjay Kumar	Gaya College, Gaya
Mr. Sanjay Kumar	Shri Krishna Mahila College, Jehanabad
Ms. Sarwatshamshi	Mirza Ghalib College, Gaya
Ms. Shashi Jain Gupta	Rameshwardas Pannalal Mahila Mahavidyalaya, Patna City
Ms. Shefali Roy	Patna Women's College, Patna
Ms. Shyama Sinha	Ram Briksha Benipuri Mahila Mahavidyalaya, Muzaffarpur
Mr. Subhash Prasad Singh	Anugrah Narayan College , Patna
Mr. Sujat Ali Khan	Mirza Ghalib College, Gaya
Ms. Sunita Singh	Rameshwardas Pannalal Mahila Mahavidyalaya, Patna City
Mr. Surendra Kumar	Swami Sahjanand Mahavidyalaya, Jehanabad
Ms. Usha Kumari Das	Mahant Darshan Das Mahila Mahavidyalaya, Muzaffarpur
Mr. Vinay Kr. Vimal	Magadh Mahila College, Patna

Dainik Jagran / I Next

Anand Tripathi	Sr. G.M. Bihar
Shailendra Dixit	Resident Editor, Bihar-Jharkhnad
Rajaram Tiwari	Unit Manager, Bhagalpur
Kamlesh Tripathi	News Editor, Bhagalpur
S.K.Singh	Unit Manger, Muzaffarpur
Umesh Shukla	News Editor, Muzaffarpur
Shashi Bhushan	Journalist
Bhartiya Basant	Journalist
Manoj Kumar	Journalist
Kamal Nayan	Journalist
Prabhanjay Kumar	Journalist
Madan Sharma	Journalist
Satish Kumar	Journalist
Ashutosh Kr. Nirala	Journalist
Mritunjay Kr. Sinha	Journalist
Samshad Prem	Journalist
Vivek Kumar	Journalist
Sunil Kumar	Journalist
Dinkar Jha	Journalist

Vijaya Singh	Journalist
Smita Choudhary	Journalist

Photographers

Shyam Kumar
Ajit Kumar
Tahir Hadi
Virendra Vishwakarma
Rajiv Mishra
Rajesh Singh
Shyam Bhandari
Veer Bhadra
Arjun Chandele (Free Lance)

Creative Agencies

Vishakha Communications Private Limited, New Delhi

Back Office (Jagran Pehel)

Rashmi	Patna
Neeraj Kumar	Graphic Designer, Patna
Vishwamohan Prasad	New Delhi
Pooja Singh	New Delhi
Arpan Tulasyan	New Delhi
Iqbal Ahmad	New Delhi
Mukesh Rohila	New Delhi
Niraj Singla	New Delhi
Prabhas Singh	New Delhi

Others

Revathy Radhakrishnan
Manisha Jagnani

सहयोग राशि ₹270.00

A Project on Women's Empowerment by
Jagran Pehel in assoclation with UNFPA and WDC, Bihar

Contact Details:
Jagran Pehel, A Division of Shri Puranchandra Gupta Smarak Trust
Jagran House, B-50, Okhla Industrial Estate, Phase III, New Delhi-110 020
Telefax-+91-11-30820300 Email: pehel@jagranpehel.com,
Website: www.jagranpehel.com

UNFPA

दैनिक जागरण

Pehel
A Jagran Social Initiative